स्वर्गीय साधुचरित श्रीमान् डालचन्दजी सिंघी



जन्म
वि. स. १९२१, मार्ग-वदि ६

स्वर्गवास
वि. सं. १९८४, पोष सुदि ६

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

卐 ॥ ग्रन्थाङ्क १० ॥ 卐



श्रीजिनप्रभसूरिविरचित

विविध तीर्थकल्प

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, कथात्मक-इत्यादि विविधविषयगुम्फित
प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूर्जर, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
बहु उपयुक्त पुरातनवाङ्मय तथा नवीन संशोधनात्मक
साहित्यप्रकाशिनी जैन ग्रन्थावलि ।

कलकत्तानिवासी स्वर्गीय **श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी** की पुण्यस्मृतिनिमित्त
तत्पुत्र **श्रीमान् बहादुरसिंहजी सिंघी** द्वारा संस्थापित

मुख्य सम्पादक

जिन विजय

अधिष्ठाता, सिंघी जैन ज्ञानपीठ, शान्तिनिकेतन

सम्मान्य सभासद-भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर पूना, और गूजरात साहित्यसभा अहमदावाद;
भूतपूर्वाचार्य-गूजरात पुरातत्त्वमन्दिर अहमदावाद; तथा अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, पाली,
प्राचीनगूर्जर आदि ग्रंथ संशोधक और सम्पादक।

ग्रन्थांक १०

प्राप्तिस्थान

संचालक, सिंघी जैन ग्रन्थमाला.

शान्तिनिकेतन. (बंगाल)

स्थापनाब्द] सर्वाधिकार संरक्षित. [वि० सं० १९८६

श्रीजिनप्रभसूरिविरचित

विविध तीर्थकल्प

भिन्न भिन्न पाठभेद और विशेषनामानुक्रम समन्वित मूल ग्रन्थ, सरल और सारगर्भित
हिन्दी भाषान्तर, ऐतिहासिक और भौगोलिक वस्तु विवेचक अनेकानेक
टिप्पनियों द्वारा सुविवेचित, तथा सुविस्तृत प्रस्तावना समलङ्कृत

सम्पादक

जिन विजय

जैन वाङ्मयाध्यापक, विश्वभारती.

शान्तिनिकेतन

प्रथम भाग

विविधपाठान्तर-विशेषनामानुक्रमादियुक्त मूलग्रन्थ

प्रकाशक

अधिष्ठाता, सिंघी जैन ज्ञानपीठ.

शान्तिनिकेतन. (बंगाल)

विक्रमाब्द १९९०] प्रथमावृत्ति, एक सहस्र प्रति [१९३४ ख्रिस्ताब्द

SINGHI JAINA SERIES

A COLLECTION OF CRITICAL EDITIONS OF MOST IMPORTANT CANONICAL, PHILOSOPHICAL, HISTORICAL, LITERARY, NARRATIVE ETC WORKS OF JAINA LITERATURE IN PRĀKRIT, SANSKRIT, APABHRAṂŚA AND OLD VERNACULAR LANGUAGES, AND STUDIES BY COMPETENT RESEARCH SCHOLARS

FOUNDED
BY

ŚRĪMĀN BAHĀDUR SIṄGHJĪ SIṄGHĪ OF CALCUTTA

IN MEMORY OF HIS LATE FATHER

ŚRĪ DĀLCANDJĪ SIṄGHĪ.

GENERAL EDITOR

JINA VIJAYA

ADHIṢṬHĀTĀ: SIṄGHĪ JAINA JÑĀNAPĪṬHA, ŚĀNTINIKETAN.

HONORARY MEMBER OF THE BHANDARKAR ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE OF POONA AND GUJRAT SAHITYA SABHA OF AHMEDABAD; FORMERLY PRINCIPAL OF GUJRAT PURATATTVAMANDIR OF AHMEDABAD; EDITOR OF MANY SANSKRIT, PRAKRIT, PALI, APABHRAMSHA, AND OLD GUJRATI WORKS.

NUMBER 10

TO BE HAD FROM

SAÑCĀLAKA, SIṄGHĪ JAINA GRANTHAMĀLĀ

ŚĀNTINIKETAN. (BENGĀL)

Founded] 1931. A. D.

VIVIDHA TĪRTHA KALPA

OF

JINAPRABHA SŪRI

CRITICALLY EDITED IN THE ORIGINAL SANSKRIT AND PRĀKRIT WITH VARIANTS HINDI TRANSLATION NOTES AND ELABORATE INTRODUCTION ETC

BY

JINA VIJAYA

SINGHI PROFESSOR OF JAINA CULTURE AT VISVABHĀRATĪ

ŚĀNTINIKETAN

PART I

TEXT IN SANSKRIT AND PRĀKRIT WITH VARIANTS, AND AN ALPHABETICAL INDEX OF ALL PROPER NAMES

PUBLISHED BY

THE ADHISTHĀTĀ, SINGHĪ JAINA JÑĀNAPĪTHA

ŚĀNTINIKETAN. (BENGĀL)

V E 1990] *First edition One Thousand Copies* [1934 A. D

॥ सिंघीजैनग्रन्थमालासंस्थापकप्रशस्तिः ॥

अस्ति बङ्गाभिधे देशे सुप्रसिद्धा मनोरमा । मुर्शिदाबाद इत्याख्या पुरी वैभवशालिनी ॥
निवसन्त्यनेके तत्र जैना ऊकेशवंशजाः । धनाढ्या नृपसदृशा धर्मकर्मपरायणाः ॥
श्रीडालचन्द इत्यासीत् तेष्वेको बहुभाग्यवान् । साधुवत् सच्चरित्रो यः सिंघीकुलप्रभाकरः ॥
बाल्य एवागतो यो हि कर्तुं व्यापारविस्तृतिम् । कलिकातामहापुर्यां धृतधर्मार्थनिश्चयः ॥
कुशाग्रया स्वबुद्ध्यैव सद्वृत्त्या च सुनिष्ठया । उपार्ज्य विपुलां लक्ष्मीं जातो कोट्यधिपो हि सः ॥
तस्य मन्नुकुमारीति सन्नारीकुलमण्डना । पतिव्रता प्रिया जाता शीलसौभाग्यभूषणा ॥
श्रीबहादुरसिंहाख्यः सद्गुणी सुपुत्रस्तयोः । अस्त्येष सुकृती दानी धर्मप्रियो धियांनिधिः ॥
प्राप्ता पुण्यवताऽनेन प्रिया तिलकसुन्दरी । यस्याः सौभाग्यदीपेन प्रदीप्तं यद्गृहाङ्गणम् ॥
श्रीमान् राजेन्द्रसिंहोऽस्ति ज्येष्ठपुत्रः सुशिक्षितः । यः सर्वकार्यदक्षत्वात् बाहुर्यस्य हि दक्षिणः ॥
नरेन्द्रसिंह इत्याख्यस्तेजस्वी मध्यमः सुतः । सूनुर्वीरेन्द्रसिंहश्च कनिष्ठः सौम्यदर्शनः ॥
सन्ति त्रयोऽपि सत्पुत्रा आप्तभक्तिपरायणाः । विनीताः सरला भव्याः पितुर्मार्गानुगामिनः ॥
अन्येऽपि बहवश्चास्य सन्ति स्वस्रादिबान्धवाः । धनैर्जनैः समृद्धोऽयं ततो राजेव राजते ॥

अन्यच्च–

सरस्वत्यां सदासक्तो भूत्वा लक्ष्मीप्रियोऽप्ययम् । तत्राप्येष सदाचारी तच्चित्रं विदुषां खलु ॥
न गर्वो नाप्यहंकारो न विलासो न दुष्कृतिः । दृश्यतेऽस्य गृहे क्वापि सतां तद् विस्मयास्पदम् ॥
भक्तो गुरुजनानां यो विनीतः सज्जनान् प्रति । बन्धुजनेऽनुरक्तोऽस्ति प्रीतः पोष्यगणेष्वपि ॥
देश-कालस्थितिज्ञोऽयं विद्या-विज्ञानपूजकः । इतिहासादिसाहित्य-संस्कृति-सत्कलाप्रियः ॥
समुन्नत्यै समाजस्य धर्मस्योत्कर्षहेतवे । प्रचारार्थं सुशिक्षाया व्ययत्येष धनं घनम् ॥
गत्वा सभा-समित्यादौ भूत्वाऽध्यक्षपदाङ्कितः । दत्त्वा दानं यथायोग्यं प्रोत्साहयति कर्मठान् ॥
एवं धनेन देहेन ज्ञानेन शुभनिष्ठया । करोत्ययं यथाशक्ति सत्कर्माणि सदाशयः ॥
अथान्यदा प्रसङ्गेन स्वपितुः स्मृतिहेतवे । कर्तुं किञ्चिद् विशिष्टं यः कार्यं मनस्यचिन्तयत् ॥
पूज्यः पिता सदैवासीत् सम्यग्-ज्ञानरुचिः परम् । तस्मात्तज्ज्ञानवृद्ध्यर्थं यतनीयं मया वरम् ॥
विचार्यैवं स्वयं चित्ते पुनः प्राप्य सुसम्मतिम् । श्रद्धास्पदस्वमित्राणां विदुषां चापि तादृशाम् ॥
जैनज्ञानप्रसारार्थं स्थाने शान्तिनिकेतने । सिंघीपदाङ्कितं जैनज्ञानपीठमतीष्ठिपत् ॥
श्रीजिनविजयो विज्ञो तस्याधिष्ठातृसत्पदम् । स्वीकर्तुं प्रार्थितोऽनेन शास्त्रोद्धाराभिलाषिणा ॥
अस्य सौजन्य-सौहार्द-स्थैर्यौदार्यादिसद्गुणैः । वशीभूयाति मुदा येन स्वीकृतं तत्पदं वरम् ॥
तस्यैव प्रेरणां प्राप्य श्रीसिंघीकुलकेतुना । स्वपितृश्रेयसे चैषा ग्रन्थमाला प्रकाश्यते ॥
विद्वज्जनकृताह्लादा सच्चिदानन्ददा सदा । चिरं नन्दत्वियं लोके जिनविजयभारती ॥

विविधतीर्थकल्पसूचिः–सङ्ग्रहानुक्रमेण ।

विविधतीर्थकल्पसूचिः—अकाराद्यनुक्रमेण ।

P० प्रतिका ५१वां और ५३ वां पत्र.

प्रास्ताविक निवेदन ।



§१. विविध तीर्थकल्प

श्री जिनप्रभसूरि रचित **कल्पप्रदीप**–अथवा विशेषतया प्रसिद्ध **विविध तीर्थकल्प**–नामका यह ग्रन्थ जैन साहित्यकी एक विशिष्ट वस्तु है । ऐतिहासिक और भौगोलिक दोनों प्रकारके विषयोंकी दृष्टिसे इस ग्रन्थका बहुत कुछ महत्त्व है । जैन साहित्य-ही-मे नहीं, समग्र भारतीय साहित्यमे भी इस प्रकारका कोई दूसरा ग्रन्थ अभी तक ज्ञात नहीं हुआ । यह ग्रन्थ, विक्रमकी १४ वीं शताब्दीमे, जेन धर्मके जितने पुरातन और विद्यमान प्रसिद्ध प्रसिद्ध तीर्थस्थान थे उनके सम्बन्धकी प्राय एक प्रकारकी 'गाईड बुक' है । इसमे वर्णित उन उन तीर्थोंका सक्षिप्त रूपसे स्थानवर्णन भी है और यथाज्ञात इतिहास भी है ।

§२ ग्रन्थकार आचार्य

ग्रन्थकार अपने समयके एक बडे भारी विद्वान् और प्रभावशाली जैन आचार्य थे । जिस तरह, विक्रमकी १७ वीं शताब्दीमे, मुगल सम्राट् अकबर बादशाहके दरबारमे जैन जगद्गुरु हीरविजय सूरिने शाही सन्मान प्राप्त किया था, उसी तरह जिनप्रभ सूरिने भी, १४ वीं शताब्दीमे तुघलक सुलतान महम्मद शाहके दरबारमे बडा गौरव प्राप्त किया था । भारतके मुसल्मान बादशाहोंके दरबारमे, जैन धर्मका महत्त्व बतलानेवाले और उसका गौरव बढानेवाले, शायद, सबसे पहले ये ही आचार्य हुए ।

इनकी प्रस्तुत रचनाके अवलोकनसे ज्ञात होता है, कि इतिहास और स्थल-भ्रमणसे इनको बडा प्रेम था । इन्होंने अपने जीवनमे भारतके बहुतसे भागोंमे परिभ्रमण किया था । गूजरात, राजपूताना, मालवा, मध्यप्रदेश, वराड, दक्षिण, कर्णाटक, तेलग, विहार, कोशल, अवध, युक्तप्रात और पजाब आदिके कई पुरातन और प्रसिद्ध स्थानोंकी उन्होंने यात्रा की थी । इस यात्राके समय, उस उस स्थानके बारेमे, जो जो साहित्यगत और परपराश्रुत बातें उन्हें ज्ञात हुई उनको उन्होंने संक्षेपमे लिपिबद्ध कर लिया और इस तरह उस स्थान या तीर्थका एक कल्प बना दिया । और साथ-ही मे, ग्रन्थकारको सस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओंमे, गद्य और पद्य दोनों ही प्रकारसे, ग्रन्थरचना करनेका ऐसा अभ्यास होनेके कारण, कभी कोई कल्प उन्होंने सस्कृत भाषामे लिख लिया तो कोई प्राकृतमे, और इसी तरह कभी किसी कल्पकी रचना गद्यमे कर ली तो किसीकी पद्यमे । किसी एक स्थानके बारेमे पहले एक छोटीसी रचना कर ली और फिर पीछेसे कुछ अधिक वृत्त ज्ञात हुआ, और वह लिपिबद्ध करने जैसा प्रतीत हुआ, तो उसके लिये परिशिष्टके तौर पर और एक कल्प या प्रकरण लिख लिया गया । इस प्रकार भिन्न भिन्न समयमे और भिन्न भिन्न स्थानोंमे, इन कल्पोंकी रचना होनेसे, इनमे किसी प्रकारका कोई क्रम नहीं रह सका ।

§ ३. ग्रन्थरचनाकी कालावधि

ग्रन्थकी इस प्रकार खण्डशः रचना होते रहनेके कारण सारे ही संग्रहके संपूर्ण होनेमें बहुत दीर्घ समय व्यतीत हुआ मालूम देता है। कमसे कम ३० से अधिक वर्ष जितना काल लगा हुआ होगा। क्यों कि, जिन कल्पोंमें रचनाका समय-सूचन करनेवाला संवत् आदिका उल्लेख है, उनमें सबसे पुराना संवत् १३६४ मिलता है जो **वैभारगिरि**कल्प [क्र० ११, पृ० २३] के अन्तमें दिया हुआ है। ग्रन्थकारका किया हुआ ग्रन्थकी समाप्तिका सूचक जो अन्तिमोल्लेख है, उसमें संवत् १३८९ का निर्देश है। इससे २५ वर्षोंके जितने कालका सूचन तो, स्वयं ग्रन्थके इन दो उल्लेखोंसे ही ज्ञात हो जाता है; लेकिन वैभारगिरि कल्पके पहले भी कुछ कल्पोंकी रचना हो गई थी, और संवत् १३८९ के बाद भी कुछ और कल्प या कृति अवश्य बनी थी, जिसका कुछ स्पष्ट सूचन ग्रन्थगत अन्यान्य उल्लेखोंसे होता है। इसी कारणसे, ग्रन्थ-समाप्ति-सूचक जो कथन है वह, किसी प्रतिमें तो कहीं मिलता है और किसीमें कहीं। और यही कारण, प्रतियोंमें कल्पोंकी संख्याका न्यूनाधिकत्व होनेमें भी है।

§ ४. ग्रन्थगत विषय-विभाग

इस ग्रन्थमें, भिन्न भिन्न विषय या स्थानोंके साथ सम्बन्ध रखनेवाले सब मिला कर ६०–६१ कल्प या प्रकरण हैं। इनमें से, कोई ११–१२ तो स्तुति-स्तवनके रूपमें हैं, ६–७ चरित्र या कथाके रूपमें हैं, और शेष ४०–४१, न्यूनाधिकतया, स्थानवर्णनात्मक हैं। पुनः, इन स्थानवर्णनात्मक कल्पोंमेंसे, **चतुरशीति महातीर्थनामसंग्रह** जो कल्प [क्रमांक ४५] है उसमें तो प्रायः सभी प्रसिद्ध और ज्ञात तीर्थस्थानोंका मात्र नाम-निर्देश किया गया है। **पार्श्वनाथ**कल्प [क्र० ६] में पार्श्वनाथके नामसे सम्बद्ध ऐसे कई स्थानोंका उल्लेख है। **उज्जयन्त** अर्थात् **रैवतगिरि**का वर्णन करने वाले भिन्न भिन्न ४ कल्प [क्र० २–३–४–५] हैं। **स्तंभनक तीर्थ** और **कन्यानयमहावीर तीर्थ**के सम्बन्धमें दो दो कल्प हैं। इस प्रकार, अन्य विषय वाले तथा पुनरावृत्ति वाले जितने कल्प हैं उनको छोड कर, केवल स्थानोंकी दृष्टिसे विचार किया जाय तो, इस ग्रन्थमें कुल कोई ३७–३८ तीर्थ या तीर्थभूत स्थानोंका, कुछ इतिहास या स्थानपरिचय-गर्भित वर्णन दिया हुआ मिलता है।

§ ५. स्थानोंका प्रान्तीय विभाग

यदि इन सब स्थानोंको प्रान्त या प्रदेशकी दृष्टिसे विभक्त किये जायं तो इनका पृथक्करण कुछ इस प्रकार होगा–

गूजरात और काठियावाड

शत्रुंजयमहातीर्थ [क्र० १]
उज्जयन्त (रैवतगिरि) तीर्थ [क्र० २–३–४–५]
अश्वावबोधतीर्थ [क्र० १०]
स्तंभनकपुर [क्र० ६, ५९]
अणहिलपुरस्थित अरिष्टनेमि [क्र० २६]
,, कोकावसति [क्र० ४०]
शंखपुरतीर्थ [क्र० २७]
हरिकंखीनगर [क्र० २९]

युक्तप्रान्त और पंजाब

अहिच्छत्रपुर [क्र० ७]
हस्तिनापुर [क्र० १६, ५०]

राजपूताना और मालवा

अर्बुदाचलतीर्थ [क्र० ८]
सत्यपुरतीर्थ [क्र० १७]
शुद्धदन्तीनगरी [क्र० ३१]
फलवर्द्धितीर्थ [क्र० ६०]
ढींपुरीतीर्थ [क्र०४३–४४]
कुडुंगेश्वरतीर्थ [क्र० ४७]
अभिनंदनदेवतीर्थ [क्र० ३२]

अवध और बिहार

वैभारगिरि [क्र० ११]
पावा या अपापापुरी [क्र० २१, १४]
पाटलीपुत्र [क्र० ३६]

ढिल्ली या दिल्ली [क्र० ५१]
मथुरा [क्र० ९]
वाराणसी [क्र० ३८]
कौशाम्बी [क्र० १२]

चपापुरी [क्र० ३५]
कोटिशिला [क्र० ४१]
कलिकुंडकुर्कुटेश्वर [क्र० १५]
मिथिला [क्र० १९]
रत्नपुर [क्र० २०]
कांपिल्यपुर [क्र० २५]
अयोध्यापुरी [क्र० १३]
श्रावस्तीनगरी [क्र० ३७]

दक्षिण और वराड

नासिक्यपुर [क्र० २८]
प्रतिष्ठानपत्तन [क्र० २३]
अन्तरिक्षपार्श्वतीर्थ [क्र० ५८]

कर्णाटक और तेलगण

कुल्यपाक माणिक्यदेव [क्र० ५२, ५७]
आमरकुंड पद्मावती [क्र० ५३]
कन्यानयमहावीर [क्र० २२, ५१]

§६ विस्तृत विवेचन दूसरे भागमें

ग्रन्थगत इन सब स्थानोंका विस्तृत परिचय, इतिहास और हिंदी भाषान्तर आदि दूसरे भागमें देनेका हमारा सकल्प है। ग्रन्थकारका विशेष परिचय भी वहीं दिया जायगा। अत: यहां पर अधिक लिखना अनावश्यक होगा।

§७ प्रतियोंका परिचय

प्रस्तुत आवृत्तिके सशोधन और सम्पादन करनेमें हमने जिन पुरातन हस्तलिखित प्रतियोंका उपयोग किया है उनका परिचय इस प्रकार है—

A प्रति—अहमदाबादके डेलाके नामसे प्रसिद्ध जैन उपाश्रयमें सरक्षित ग्रन्थ भाण्डारकी प्रति । पत्र सख्या ५८। इस प्रतिमें सब कल्पोंका पूरा सग्रह है। कलिकुंड-कुर्कुटेश्वर नामका कल्प—प्रस्तुत आवृत्तिका क्रमांक १५—दो दफह लिखा हुआ है। प्रतिकी लिखावट साधारण ढगकी है और पाठ शुद्धि भी प्राय साधारण ही है। हमने जितनी प्रतियोंका सग्रह किया उनमें यह सबसे पुरानी है। विक्रम सवत् १४६६ में यह लिखी गई है। इसके अंतमें जो पुष्पिका लेख है वह पृष्ठ १३५ पर मुद्रित है। उससे ज्ञात होता है कि 'श्रीमालीवशमें पैदा होनेवाले देवा व्यवहारी और उसकी पत्नी हासलदेवीके माडण, पद्मसिंह और मालदेव नामके तीन पुत्रोंने अपने माता-पिताके श्रेयोऽर्थ इस ग्रथकी यह प्रति लिखवाई ।' इस प्रतिके अंतिम पृष्ठ पर ग्रन्थगत सब कल्पोकी सूचि भी लिखी हुई है जो अन्य किसी प्रतिमें उपलब्ध नहीं होती।

B प्रति—उक्त भाण्डारकी दूसरी प्रति, जिसकी पत्र सख्या ३८ है । इस प्रतिमें कुल २९ कल्प लिखे हुए मिलते हैं। प्रस्तुत आवृत्तिके क्रमांक १४ १९ २३ २५ २९ ३१ से ३३, और ३५ से ५८ तकके कल्प इसमें अनुपलब्ध हैं। ग्रन्थकी समाप्तिका सूचक जो कथन है वह भी इसमें अनुल्लिखित है। प्रतिकी लिखावट सुदर है और पाठ भी कुछ अधिक शुद्ध है। अंतमें लिखने-लिखाने वालेका कोई निर्देश नहीं है। 'शुभ भवतु श्रीश्रमण-सघस्य ॥श्री॥' इतना ही उल्लेख किया हुआ है। इससे प्रतिके लिखे जानेके समयका कोई सूचन नहीं मिलता। पत्रोंकी स्थिति देखते हुए अनुमान किया जा सकता है कि प्राय ४०० वर्ष जितनी पुरानी यह अवश्य होगी।

C प्रति—इसी भाण्डागारमें की तीसरी प्रति । पत्र सख्या ४१ । इसमें कुल मिला कर ५२ कल्प लिखे हुए हैं। इसका प्रारभ उज्जयततीर्थकल्प—इस आवृत्तिके ४ थे कल्प—से होता है । पहले तीन कल्प इसमें बिल्कुल

ही नहीं है। वीचमें, **अपापावृहत्कल्प,** जो इस ग्रंथमें सबसे बडा कल्प है, वह भी नहीं है। तदुपरांत, **चतुरशीति महातीर्थनामसंग्रहकल्प** (क्रमांक ४५) और **अष्टापदगिरिकल्प** (क्रमांक ४९) भी इसमें सम्मीलित नहीं है। ग्रंथकारका किया हुआ ग्रंथ समाप्ति-सूचक जो कथन है, वह इस प्रतिमें, **व्याघ्रीकल्प-** (क्रमांक ४८) के अन्तमें–प्रति पत्र ३६ की प्रथम पृष्टिपर–लिखा हुआ है। उसके बाद फिर **हस्तिनापुर स्तवन** आदि कल्प लिखे गये हैं (–द्रष्टव्य कोष्टक)। इस प्रतिके कल्पक्रमसे, इस वातका कुछ आभास मिल सकता है कि यह ग्रंथ किस क्रमसे वना हुआ होगा। इसके अक्षर सुन्दर, और स्पष्ट है। पाठ भी वहुत कुछ शुद्ध है। अंतमें लिखने-लिखाने वालेका कोई निर्देश नहीं है। सम्भवतः यह भी चार सौ वर्ष जितनी पुरानी होगी।

D प्रति–उसी स्थानकी ४ थी प्रति। पत्र संख्या ४५। अक्षर अच्छे और सुवाच्य हैं परंतु पाठ साधारण है। इसमें कोई ३२ प्रकरण लिखे हुए हैं। इसका प्रारंभ **मथुराकल्प** (क्रमांक ९) से, और अंत **कोकावसतिपार्श्वनाथकल्प** (क्रमांक ४०) से होता है। इस प्रकार इसमें आदिके ८ और अंतके २१ कल्प या प्रकरण नहीं हैं, अतः यह एक प्रकारका अपूर्ण संग्रह है। इस प्रतिमें भी लिखने-लिखाने वालेका कोई पुष्पिका लेख नहीं है; इससे यह नहीं ज्ञात हो सकता कि यह प्रति कब लिखी गई है। परंतु, इसके अंतमें जो ५ पद्योंका एक छोटासा प्रशस्ति-लेख, जो कि पीछेसे लिखा गया मालूम देता है, उससे इतना ज्ञात हो सकता है कि विक्रम संवत्की १७ वीं शताब्दीके शेप चरणके पहले यह कभी लिखी गई होगी। इस प्रशस्ति-लेखसे विदित होता है कि–अकवर वादशाहने जिनको जगद्गुरुका पद प्रदान किया उन आचार्य हीरविजय सूरिके शिष्य आचार्य विजयसेनके पट्टधर आचार्य विजयतिलक सूरिके समयमें, विजयसेन सूरि-ही-के शिष्य रामविजय विवुधने, जो हैमव्याकरण, काव्यप्रकाश आदि शास्त्रोंके निष्णात पंडित थे, इस प्रतिको उस ज्ञानभंडारमें स्थापित की, जिसमें पंदरह लाख पुस्तकें[†] संगृहीत की गई थीं।

Pa प्रति–पूनाके भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधन मन्दिरमें संरक्षित राजकीय-ग्रंथ-संग्रहकी ६२ पत्र वाली प्रति। यह प्रति संपूर्ण है और इसमें A प्रतिके समान ही सब कल्पोंका संग्रह है। सिर्फ **पंचकल्याणकस्तवन** (क्रमांक ५६) जो सोमसूरिकी कृति है, वह इसमें नहीं है। इस प्रकार इसमें कुल ५८ प्रकरण उपलब्ध हैं। **कलिकुंड-कुर्कुटेश्वर** नामका कल्प (क्रमांक १५) इसमें भी A प्रतिके समान दो दफह लिखा हुआ है। ग्रन्थ-समाप्ति-सूचक कथन इसमें **अष्टापदकल्प** (क्रमांक ४९) के अन्तमें–पृष्ठ ५३ की दूसरी पूंठी पर–लिखा हुआ है। इसके वाद फिर **हस्तिनापुरतीर्थस्तवन** आदि प्रकरण लिखे हुए हैं। अन्तमें फिर कोई दूसरा निर्देश नहीं है। लिपिकारने **"सं० १५२७ वर्षे आषाढ सुदि ७ गुरौ सर्वत्र संख्या अलावा ग्रंथाग्रं २६०२५ संख्या ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥"** इस प्रकारका उल्लेख किया है जिससे यह प्रति कब लिखी गई इसका मात्र सूचन मिलता है। इसकी लिखावट अच्छी और स्पष्ट है। पाठ भी प्रायः वहुत कुछ शुद्ध मिलता है।

Pb प्रति–यह प्रति भी पूनाके उक्त संग्रहकी है। इसकी पत्र संख्या ८५ है। इसमें आदिसे लेकर ५५ वें क्रमांक तकके प्रकरणोंका संग्रह है, और इसी क्रममें है। अन्तके ५ कल्प इसमें नहीं हैं। ग्रन्थ-समाप्ति-सूचक जो कथन है वह इसमें दो जगह लिखा हुआ मिलता है। एक तो Pa प्रतिकी तरह **अष्टापदकल्प** (क्रमांक ४९) के अंतमें–पत्र ७८ की द्वितीय पूंठी पर–और दूसरा अन्तिम पत्र पर, जहां **कल्याणकस्तवन** समाप्त

[†] इन पंदरह लाख पुस्तकोसे मतलव पंदरह लाख श्लोकका मालूम देता है; न कि पंदरह लाख प्रतियों या पोथियोंका। रामविजय विवुधने अपने परिश्रमसे एक ऐसा ज्ञानभंडार स्थापित किया था जिसमें जितने ग्रंथ या प्रतियां थी उनकी सब श्लोक संख्या, गिनने पर पंदरह लाख जितनी होती थी। शायद यह भंडार पाटणमें था।

होता है। प्रति है तो पुरातन, लेकिन अन्तमें समय इत्यादिका सूचक कोई उल्लेख न होनेसे निश्चयात्मक कुछ नहीं कहा जा सकता। यह प्रति बिल्कुल बेपर्वाईसे लिखी गई प्रतीत होती है। लिपिकार कोई नया सिखाऊ और अपठित मालूम देता है। उसको पुरानी लिपिका बहुत कम परिचय है। संस्कृत-प्राकृत भाषाका उसको किञ्चित् भी ज्ञान नहीं है। भाषानभिज्ञताके कारण आकृतिसाम्यवाले अक्षरोंकी नकल करनेमें वह बारबार गलती करता है और एक अक्षरकी जगह दूसरा अक्षर लिख डालता है। कहीं **तीर्थराज** के स्थान पर **नीर्घराज** लिख देता है तो कहीं **तत्र** की जगह **तव** या **नव** बना देता है। ५ वें प्रकरणका पहला पद **पच्छिमदिसाए** है जिसको उसने **एत्थिमहिसाण** लिखा है–**प** का **ए**, **च्छि** का **त्थि**, **दि** का **हि** और **ए** का **ण** में परिवर्तन कर ६ अक्षर वाले एक ही पदमें ४ अक्षर उसने बदल दिये हैं। कहीं **द्रष्टव्यं** की जगह **द्रव्यं** और **गतव्यं** की जगह **गव्यं** लिख कर शब्दके बीचके अक्षर ही उडा देता है, तो कहीं अनुस्वारको आगे पीछे लिख कर **एत रचयां** का **एतरंचयां** बना डालता है। किस अक्षरका कौन काना है और कौन मात्रा है इसका भी उसको ठीक ठीक खयाल नहीं रहता, इस लिये **अवरजे**की जगह **अवराज** कर देता है और **पात्र**के बदले **पत्रे** लिख लेता है। इस तरह लिपिकर्ताके अज्ञानके कारण इस प्रतिका पाठ बहुत जगह भ्रष्ट हो गया है। हमने इसका उपयोग प्रायः वहीं किया है जहां और और प्रतियोंमें खास सन्देह उत्पन्न हुआ है। पंचकल्याणक स्तवन, जो सोमसूरिकी कृति है, A प्रतिके सिवा इसी प्रतिमें उपलब्ध है। उसका पाठ निश्चित करनेमें इसीका सहारा मिला।

P प्रति–पूनावाले उसी संग्रहमेंकी एक तीसरी प्रति जिसकी पत्रसंख्या ३७ है। इस प्रतिमें कुल ४८ कल्प लिखे हुए हैं। इसमें **पंचपरमेष्ठिनमस्कार** नामका जो कल्प है वह ऊपरवाली और और प्रतियोंमें नहीं मिलता। यह कल्प इसमें **चतुरशीति तीर्थनामसंग्रहकल्प**के अन्तमें–पत्र २६ की पहली पूठी पर–लिखा हुआ है। हमने इसको परिशिष्टके रूपमें सबके अन्तमें रखा है। इसके सिवा इस संग्रहका जो क्रम है वह सब प्रतियोंसे भिन्न है। कई कल्प, अन्यान्य प्रतियोंके हिसाबसे, आगे-पीछे लिखे हुए हैं। उदाहरणके लिये, अन्य सब प्रतियोंमें **उज्जयन्तस्तव**का क्रमांक ३ रा है, इसमें उसका ५ वा है। इसके बाद ही **अंबिकाकल्प** लिखा हुआ है जो A B और Pa प्रतिमें सबके अन्तमें दिया हुआ है। **अंबिकाकल्प**के बाद **कपर्दियक्षकल्प** लिखा गया है जिसका क्रमांक अन्यान्य प्रतियोंके मुताबिक ३० वा है। **अर्बुदकल्प** जिसका क्रमांक अन्य संग्रहानुसार ८ वा है उसका इसमें ३८ वा है। इस प्रकार प्रायः बहुतसे कल्प इसमें आगे-पीछे लिखे हुए हैं। संपूर्ण तालिका कोष्ठकमें दी गई है जिससे जिज्ञासु पाठक मिलान कर सकते हैं। **वस्तुपाल-तेजःपालमन्त्रिकल्प** (क्रमांक ४७) इसमें लिखा हुआ नहीं है लेकिन उसके स्थानपर, उस कल्पमें जो अन्तमें ३ श्लोक लिखे हुए हैं [देखो पृष्ठ० ८०, पंक्ति १८–२०] वे इसमें दिये हुए हैं। **अन्तरिक्षपार्श्वनाथकल्प** अन्यान्य संग्रहोंमें प्राकृत भाषामें लिखा हुआ है, इसमें उसका संस्कृत रूपान्तर है। इसी तरह **हरीकंखीनगरस्थितपार्श्वनाथकल्प** (क्रमांक २९) का भी इसमें संस्कृत भाषान्तर दिया हुआ है। इस कल्पके अन्तमें लिखा है कि–

इति श्री [हरि] कखीनगरमंडनश्रीपार्श्वनाथकल्पः प्रभुश्रीजिनप्रभसूरिभिः कृतयो (?) प्राकृते। न वा० गुणक [ल?] श श्रीराजगच्छीय संस्कृते मज्झवच (?)॥ (पत्र १३, पूठी २, पंक्ति १९–२०)

इस अशुद्धिबहुल पंक्तिका तात्पर्यार्थ यह मालूम देता है, कि राजगच्छीय वा० (वाचक) गुणक [ल] श नामके किसी पंडितने, जिनप्रभसूरिकृत प्राकृत कल्पको संस्कृतमें बनाया। इससे प्रतीत होता है कि उक्त **अन्तरिक्षपार्श्वनाथकल्प**को भी उसीने संस्कृतमें रूपान्तरित किया होगा। क्यों कि ये दोनों कल्प इस प्रतिमें एक

साथ लिखे हुए हैं। इस संग्रहमें १५. १६. १८. ३३. ३४. ४२. ४६. ५१ से ५६ तक–इस प्रकार १३ कल्प अनुपलब्ध हैं।

यद्यपि इस प्रतिमें कल्पोंका क्रम, अन्य सब प्रतियोंसे भिन्न प्रकारका है; तथापि वह कुछ अधिक संगत मालूम देता है। गिरनार अर्थात् उज्जयंत अथवा रैवतक पर्वतसे संबंध रखनेवाले जो ४ कल्प प्रस्तुत ग्रन्थमें हैं, वे जिस क्रमसे इस प्रतिमें लिखे गये हैं वह क्रम अधिक ठीक लगता है। उन्हींके बाद इसमें **अंबिकादेवी**-का कल्प है जिसका भी सम्बन्ध एक प्रकारसे रैवतक पर्वतके साथ होनेसे, उसका यह स्थान ठीक सम्बन्धयुक्त मालूम देता है। अम्बिकाकल्पके बाद ही जो **कपर्दियक्षकल्प** लिखा हुआ है वह भी उचित स्थानस्थित दिखाई दे रहा है। बल्कि इस कल्पके अन्तमें तो ग्रन्थकारका कथन भी इस बातको सूचित करता है कि उन्होंने **अम्बादेवी** और **कपर्दियक्ष,** इस **कल्पयुग**की (देखो पृष्ठ ५६ का अन्तिम उल्लेख) एक साथ रचना की। ऐसा उल्लेख होने पर भी ये दोनों कल्प, और सब प्रतियोंमें क्यों भिन्न-क्रममें लिखे गये मिलते हैं इसका कोई कारण समझमें नहीं आता। उसमें भी अम्बिकाकल्प तो बिल्कुल ग्रन्थके अन्तमें जा पडा है जिससे बहुतसी प्रतियोंमें तो वह अनुल्लिखित ही रह जाता है। इसी तरह क्रमांक २६ और ४० वाले कल्प इस प्रतिमें साथ साथ लिखे हुए मिलते हैं जो अधिक यथास्थित कहे जा सकते हैं। क्यों कि दोनोंका स्थान एक ही (पाटण) है। सबके अन्तमें **कन्यानयनीयमहावीरप्रतिमाकल्प** (क्रमांक २२) रखा है और उसके अंतमें ग्रन्थ-समाप्तिसूचक कथन दिया है–सो भी एक प्रकारसे सम्बन्धयुक्त दिखाई देता है।

इस प्रतिमें जिन कल्पोंका संग्रह है उनके अवलोकनसे मालूम देता है कि प्रायः मुख्य मुख्य कल्प इसमें सब आगये हैं। जो इसमें संगृहीत नहीं है उनमें **कलिकुंडकुर्कुटेश्वर** (१५), **हस्तिनापुर** (१६), **प्रतिष्ठानपुर** (३३), **सातवाहनचरित्र** (३४), **वस्तुपाल-तेजःपाल** (४२), **कन्यानयनीयपरिशेष** (५१) और **अमरकुंडपद्मावती** (५३) नामके कल्प कुछ महत्त्वके हैं। बाकीके कल्प तो नाम मात्रके कल्प हैं। वास्तवमें वे तो स्तुति-स्तोत्र हैं जिनका ग्रन्थगत उद्देश्यके साथ कोई खास सम्बन्ध नहीं है। इससे यह ज्ञात होता है कि जिसने इस प्रतिको तैयार किया है उसने कुछ विचारपूर्वक प्रयत्न किया है। इस प्रयत्नका कर्ता कौन है उसका कोई निर्णायक उल्लेख नहीं प्राप्त होता। क्या जिस राजगच्छीय वाचक गुणकलश (?) ने उक्त दो कल्पोंका संस्कृत रूपांतर करनेका प्रयत्न किया है उसीने तो यह संग्रह इस क्रममें नहीं ग्रथित किया हो?।

इस प्रति के अक्षर यद्यपि स्पष्ट और सुवाच्य हैं तथापि पाठशुद्धि कोई विशेष उल्लेखयोग्य नहीं है। हां, कहीं कहीं इसका पाठ, अन्य प्रतियोंकी अपेक्षा अधिक उपयुक्त मिल जाता है जो सन्दिग्ध स्थानमें ठीक मदद-गार हो जाता है।

प्रतिके अन्तमें जो पुष्पिकालेख है उससे विदित होता है कि–संवत् १५६९ के आषाढ महिनेमें–सुदि १ सोमवार और पुनर्वसुनक्षत्रवाले दिनको–वैरिसिंहपुरके रहनेवाले श्रीमाली ज्ञातिके वहकटा गोत्रीय महं० जिणदत्तके पुत्र, महं० भाजाके पुत्र, महं० रायमल नामक श्रावकने इस ग्रन्थको लिखवा कर, खरतर गच्छके आचार्य श्रीजिनभद्र सूरिके शिष्य आचार्य श्रीजिनचंद्र सूरिके शिष्य आचार्य श्रीजिनेश्वर सूरिके शिष्य वाचक साधुकीर्ति गणीको समर्पित किया। यह पुष्पिकालेख ग्रन्थान्तमें, पृष्ठ ११० पर, मुद्रित है।

Pc प्रति- उपर्युक्त स्थानमेंकी एक चौथी प्रति। इसकी पत्र संख्या २४ है। यह एक अपूर्ण संग्रह है। इसका प्रथम पत्र है उस पर ३० का क्रमांक लिखा हुआ है। ३० से लेकर ५३ तकके पत्रे इसमें उपलब्ध हैं। इसका प्रारंभ **चम्पापुरीकल्प** (क्रमांक ३५) से होता है, और समापन **कन्यानयनीयमहावीरप्रतिमाकल्प** (क्र० २२) के साथ होता है। इसमें सब मिलाकर १६ कल्प लिखे हुए हैं और उनका क्रम इस प्रकार है–

१ चम्पापुरीकल्प
२ पाटलीपुत्रपुरकल्प
३ वाणारसी नगरीकल्प
४ मन्त्रिद्वयकल्प, (मात्र ३ श्लोक)
५ कुडुंगेश्वरनाभेयकल्प
६ अर्बुदकल्प
७ अभिनन्दनदेवकल्प
८ प्रतिष्ठानपुरकल्प (स्तोत्र)
९ ढींपुरीस्तोत्र
१० नन्दीश्वरकल्प
११ महावीरगणधरकल्प
१२ चतुरशीति तीर्थनामसंग्रहकल्प
१३ पंचपरमेष्ठिनमस्कारकल्प
१४ रत्नवाहपुरकल्प
१५ पावापुरीकल्प (बृहत्)
१६ कन्यानयनीयमहावीरकल्प

इस क्रमके देखनेसे ज्ञात होता है कि, सिर्फ पहले कल्पको छोड कर, बाकी ये १५ ही कल्प, ठीक उसी क्रममें लिखे हुए हैं, जिस तरह उपर्युल्लिखित P प्रतिमें लिखे हुए हैं। १ से २८ तकके पत्र अनुपलब्ध होनेसे, इस संग्रहमें कुल कितने कल्प होंगे और वे सब किस क्रममें होंगे, उसका कुछ निर्णय नहीं किया जा सकता और निश्चयात्मक रूपसे यह भी नहीं कहा जा सकता कि यह संग्रह ठीक P संग्रह-ही-का अनुसरण करनेवाला है। ग्रन्थ-समाप्ति-सूचक कथन इसमें अन्तिम कल्पके अन्तमें लिखा हुआ है। लेकिन लिखावट और अक्षरोंके देखनेसे मालूम पडता है कि यह कल्प–जो दो पत्रोंमें है–पीछेसे लिख कर इस प्रतिमें मिलाया गया है। क्यों कि असल लिपिकर्ताने अपनी यह प्रति ५१ वें पत्रमें समाप्त कर दी है और उसका सूचक पुष्पिकालेख भी अन्तमें इस तरह लिख दिया है–

॥ समाप्तः श्रीअपापाकल्पः। श्रीदीपोत्सवकल्पश्च ॥ संवत् १५०५ वर्षे फागुणवदि ११ गुरौ। धधूकानगरस्थाने वा० धर्मसुंदर गणिना ल(लि)खितं ॥

इस प्रतिमें दो-तीन तरह की लिखावट दिखाई देती है, इससे मालूम होता है कि दो-तीन व्यक्तियोंने मिल कर इसे लिखा है। पाठशुद्धि साधारण है।

E प्रति–पूना ही के उक्त संग्रहमेंकी पांचवीं प्रति जिसमें केवल एक अपापाबृहत्कल्प (क्र० २०) लिखा हुआ है। प्रति पुरातन और अच्छी है। लिखे जानेके समयका कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन 'ऋषि भरमा–ऋषि मोकाके पढनेके लिये मुनि चापाने पींडरवाडा ग्राममें इस प्रतिको लिखा' इतना पता अन्तिम पुष्पिका-लेखसे जरूर लगता है।

§८ पाठभेद-संग्रहकी पद्धति

पाठभेदोंके संग्रह करनेकी हमारी जो पद्धति है उसका परिचय हमने प्रबन्धचिन्तामणिके प्रथम भागकी प्रस्तावनामें कुछ दे दिया है। इस ग्रन्थमें भी हमने उसी पद्धतिका अनुसरण किया है। व्याकरण या शब्दके स्वरूपकी दृष्टिसे जो जो पाठ हमें शुद्ध मालूम देते हैं उन्हें हम पाठभेदके रूपमें संगृहीत कर लेते हैं। लिपि-कर्ताओंकी अज्ञानता अथवा अनवधानताके कारण जो अगणित शब्द-अशुद्धियां जहां तहां प्रतियोंमें दृष्टिगोचर होती रहतीं हैं उन सबका संचय कर, ग्रन्थकी केवल पाद-टिप्पनियोंका कलेवर बढाना हम निरर्थक समझते हैं।

§९ तीर्थकल्पकी प्रसिद्धि

स्वर्गीय प्रोफेसर पी. पीटर्सनने, बम्बई इलाकेमें संस्कृत ग्रन्थोंका अन्वेषण कर उस विषयकी जो ६ रीपोर्ट पुस्तकें लिखीं, उनमेंकी ४ थी रीपोर्टमें, जिनप्रभसूरि रचित इस तीर्थकल्पका उन्होंने कुछ परिचय दिया और

कल्पोंकी नामावली प्रकाशित की*; तबसे इतिहासान्वेषक विद्वानोंका लक्ष्य इस ग्रन्थकी ओर आकर्षित हुआ। स्वर्गवासी शंकर पाण्डुरंग पण्डित एम्. ए. ने स्वसम्पादित **गउडवहो** नामक प्राकृत काव्य-ग्रन्थकी प्रस्तावनामें, तीर्थकल्पगत मथुराकल्पमेंसे आमराज और बप्पभट्टी सूरिके सम्बन्धका एक उल्लेख उद्धृत किया†। तदनन्तर, प्रवर पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. जी. व्युह्लरने, मथुराके जैन शिला-लेखोंका सम्पादन और विवेचन करते समय, इस ग्रन्थका साद्यन्त अवलोकन किया और उसीके सिलसिलेमें मथुराकल्पपर एक स्वतंत्र निबन्ध लिखकर, वह मूल कल्प, उसके अंग्रेजी भाषान्तरके साथ, विएना (आस्ट्रिया) से प्रकट होनेवाले प्राच्यविद्याविषयक राजकीय वृत्तपत्र (जर्नल) में प्रकाशित किया‡। बादमें और भी कई विद्वानोंने इस ग्रन्थके ऐतिहासिक अवतरणोंका जहां तहां उल्लेखादि करके इसकी उपयोगिता तर्फ तज्ज्ञोंके मनमें उत्सुकता उत्पन्न की।

§१०. प्रस्तुत प्रकाशन

कोई २० वर्ष पहले, जब हमने वडोदामें पूज्यपाद प्रवर्तक श्रीमान् कान्तिविजयजी महाराजकी चरणसेवामें रहते हुए, विज्ञप्तित्रिवेणि आदि अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थोंका संशोधन-संपादन-प्रकाशनादिका कार्य शुरू किया, तभी, इस ग्रन्थको भी प्रकाशमें लानेके लिये हमारा प्रयत्न शुरू हुआ था। प्रवर्तकजी महाराजके शिष्यप्रवर और ग्रन्थ-संशोधन-सम्पादनादिकार्यमें अविरत परिश्रम करनेवाले तथा पाटण आदिके ज्ञानभाण्डारोंकी सुव्यवस्था करनेमें अथक उद्यम करनेवाले, यथार्थ जिनप्रवचनोपासक, सुचतुर मुनिवर श्रीचतुरविजयजी महाराजके प्रयत्नसे, सुरतके श्रीमन्मुनिमोहनलालजी ज्ञानभंडारमेंसे इस ग्रन्थकी ताडपत्र पर लिखी हुई एक पुरातन प्रति, तथा वडोदा खंभायत आदिके भंडारोंमेंसे कुछ और प्रतियां भी प्राप्त की गई। इस प्रकार प्रतियां इकट्ठी होने पर, प्रेसके लिये, उन परसे कॉपी तैयार करनेका हम उपक्रम करना ही चाहते थे कि, उसी बीचमें, पूनासे, प्रो० देवदत्त रामकृष्ण भाण्डारकर, जो उन दिनोंमें आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इन्डिया वेस्टर्न सर्कलके सुप्रीन्टेन्डेन्ट थे, प्रसंगवश वडौदामें आये और जैन उपाश्रयमें हम लोगोंसे मिले। बातचीतमें उन्होंने कहा कि हम और जयपुरवाले पण्डित केदारनाथजी मिलकर तीर्थकल्पका संपादन करना चाहते हैं और कलकत्ताकी एशियाटिक सोसायटी द्वारा उसे प्रकाशित कराना चाहते हैं। अध्यापक भाण्डारकर जैसे समर्थ विद्वानके हाथसे इस ग्रन्थका सम्पादन होना जान-सुन कर हमको बडा आनन्द हुआ और हमने अपना उक्त कार्य स्थगित कर दिया; इतना ही नहीं लेकिन, उनके अनुरोध करने पर, उनकी करवाई हुई जो प्रेसकॉपी थी उसे हमने और प्रवर्तकजी महाराजके विद्वान् प्रशिष्य पुण्यमूर्ति मुनिवर श्रीपुण्यविजयजीने मिलकर, उक्त ताडपत्रकी प्रतिके साथ मिलान कर तथा पाठान्तरादि दे कर शुद्ध भी कर दिया। इसके कुछ वर्ष बाद, उक्त सोसायटी द्वारा, इस ग्रन्थका ९६ पृष्ठ जितना एक हिस्सा प्रकाशित हुआ जिसमें प्रस्तुत आवृत्तिके पृष्ठ ३० जितना भाग मुद्रित हुआ है। तदनन्तर, आज कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये, लेकिन उसके आगेका कोई हिस्सा अभी तक प्रकाशित नही हुआ; और न मालूम भविष्यमें कब होगा। भाण्डारकर महाशय सम्पादित आवृत्तिका इस प्रकार अनिश्चित भविष्य देख कर, हमने अपने ढंगसे, इस ग्रन्थको, उसी पुराने संकल्पके अनुसार, तैयार कर, सिंघी जैन ग्रन्थमालाके एक पुष्पके रूपमें, जिज्ञासु विद्वानोंके हाथमें समर्पित करना समुचित समझा है।

---

* द्रष्टव्य—P. Peterson. A fourth Report of operations in search of sanskrit Mss. in the Bombay Circle, 1886-92.

† देखो बॉम्बे संस्कृतसिरीझमें प्रकाशित गउडवहो. Introduction. P. Clii.

‡ G. BÜHLER. A Legend of the Jaina Stūpa at Mathura.—Sitzungsberichte der phil.-hist. Class der kais. Akademie der Wissenschaften Wien, 1897.

§ ११ तीर्थकल्पके समविषयक अन्य ग्रन्थ

विस्तृत जैन इतिहासकी रचनाके लिये, जिन ग्रन्थोंमेंसे, विशिष्ट सामग्री प्राप्त हो सकती है उनमें (१) **प्रभावकचरित्र**, (२) **प्रबन्धचिन्तामणि**, (३) **प्रबन्धकोष** और (४) **विविधतीर्थकल्प** ये ४ ग्रन्थ मुख्य हैं । ये चारों ग्रन्थ परस्पर बहुत कुछ समान विषयक हैं और एक दूसरेकी पूर्ति करने वाले हैं । जैन धर्मके ऐतिहासिक प्रभावको प्रकट करनेवाली, प्राचीनकालीन प्राय सभी प्रसिद्ध प्रसिद्ध व्यक्तियोंका थोडा-बहुत परिचय इन ४ चारों ग्रन्थोंके संकलित अवलोकन और अनुसन्धान द्वारा हो सकता है । इस लिये हमने इन चारों ग्रन्थोंको एक साथ, एक ही रूपमें, एक ही आकारमें, और एक ही पद्धतिसे सम्पादित और विवेचित कर, इस ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित करनेका आयोजन किया है । इनमेंसे प्रबन्धचिन्तामणिका, मूल-ग्रन्थात्मक पहला भाग, गत वर्षमें प्रकट हो चुका है और उसका सम्पूरक **'पुरातनप्रबन्धसंग्रह'** नामका दूसरा भाग इस ग्रन्थके साथ ही प्रकट हो रहा है । **प्रबन्धकोष**का मूलग्रन्थात्मक पहला भाग भी इसका सहगामी है । **प्रभावकचरित्र** अभी प्रेसमें है सो भी थोडे ही समयमें, अपने इन समवयस्कोंके साथ, विद्वानोंके करकमलोंमें इतस्तत सञ्चरमाण दिखाई देगा । इन चारों ग्रन्थोंका, इस प्रकार शुद्धिसंस्कारपूर्वक मूलस्वरूपका अवतार-कार्य पूरा होने पर, फिर इनका वर्तमान राष्ट्रभाषा (हिन्दी) में द्वितीय अवतार होगा, जो ऐतिहासिक अन्वेषणवाले विवेचनादिसे अलकृत और स्थानविशेषोंके चित्रादिसे विभूषित होगा ।

वैशाखी पूर्णिमा संवत् १९९० ।
अनेकान्तविहार; भारतीनिवास ।
अहमदाबाद

जिन विजय

भिन्न भिन्न प्रतियोंमें प्राप्त कल्पोंका क्रमनिदर्शक तुलनात्मक कोष्ठक

क्रमाक	A प्रतिगत कल्पानुक्रम	Pa प्रति. कल्पानुक्रम	Pb प्रति. कल्पानुक्रम	B प्रति. कल्पानुक्रम	C प्रति.	D प्रति.		P प्रतिगतकल्पानुक्रम
१	शत्रुंजयतीर्थकल्प	,,	,,	,,	×	×	१	शत्रुंजयकल्प [१]
२	रैवतकगिरिकल्पसंक्षेप	,,	,,	,,	×	×	२	रैवतगिरिकल्पसंक्षेप [२]
३	उज्जयन्तस्तव	,,	,,	,,	×	×	३	उज्जयन्तमहातीर्थकल्प [४]
४	उज्जयन्तमहातीर्थकल्प	,,	,,	,,	,,	×	४	रैवतगिरिकल्प [५]
५	रैवतकगिरिकल्प	,,	,,	,,	,,	×	५	उज्जयन्तस्तव [३]
६	पार्श्वनाथकल्प	,,	,,	,,	,,	×	६	अम्बिकादेवीकल्प [६१]
	स्तंभनककल्प	,,	,,	,,	,,	×	७	कपर्दियक्षकल्प [३०]
७	अहिच्छत्रानगरीकल्प	,,	,,	,,	,,	×	८	पार्श्वनाथकल्प [६]
८	अर्बुदाद्रिकल्प	,,	,,	,,	,,	×		स्तंभनककल्प ,,
९	मथुरापुरीकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	९	अहिच्छत्रा कल्प [७]
१०	अश्वावबोधकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१०	मथुरा कल्प [९]
११	वैभारगिरिकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	११	अश्वावबोध कल्प [१०]
१२	कौशाम्बीनगरीकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१२	वैभारगिरिकल्प [११]
१३	अयोध्यानगरीकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१३	सत्यपुरकल्प [१७]
१४	अपापापुरी [संक्षिप्त] कल्प	,,	,,	×	,,	,,	१४	कोल्पाकमाणिक्यदेव कल्प [५७]
१५	कलिकुण्डकुर्कुटेश्वरकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१५	अणहिलपुर अरिष्टनेमि कल्प [२६]
१६	हस्तिनापुरकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१६	कोकावसतिपार्श्वकल्प [४०]
१७	सत्यपुरतीर्थकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१७	शुद्धदन्तीपार्श्व कल्प [३१]
१८	अष्टापदमहातीर्थकल्प (१)	,,	,,	,,	,,	,,	१८	शंखपुरपार्श्व कल्प [२७]
१९	मिथिलातीर्थकल्प	,,	,,	×	,,	,,	१९	श्रीपुरअन्तरिक्षपार्श्व कल्प [५८]
२०	रत्नवाहपुरकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२०	हरिकंखीनगरपार्श्वकल्प [२९]
२१	अपापाबृहत्कल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२१	कोटिशिलातीर्थ कल्प [४१]
२२	कन्यानयनीयम० प्र० कल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२२	चंपापुरी कल्प [३५]
२३	प्रतिष्ठानपत्तनकल्प (स्तुति)	,,	,,	×	×	,,	२३	नासिक्यपुरी कल्प [२८]
२४	नन्दीश्वरद्वीपकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२४	फलवर्द्धिपार्श्व कल्प [६०]
२५	काम्पिल्यपुरतीर्थकल्प	,,	,,	×	,,	,,	२५	व्याघ्री कल्प [४८]
२६	अणहिलपुर–अरिष्टनेमिकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२६	अष्टापदकल्प [४९]
२७	शंखपुरपार्श्वकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२७	हस्तिनापुरस्तवन [५०]
२८	नासिक्यपुरकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२८	अयोध्यानगरीकल्प [१३]
२९	हरिकंखीनगर पार्श्वकल्प	,,	,,	×	,,	,,	२९	अपापा [संक्षिप्त] कल्प [१४]
३०	कपर्दियक्षकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	३०	कौशाम्बी नगरी कल्प [१२]
३१	शुद्धदन्ती पार्श्वकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३१	श्रावस्तीनगरी कल्प [३७]
३२	अवन्तिदेशस्थ–अभिनन्दनकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३२	मिथिलापुरीकल्प [१९]

३३	प्रतिष्ठानपुरकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३३	काम्पिल्यपुरकल्प [२५]
३४	प्र० सातवाहननृपचरित	,,	,,	,,	,,	,,	३४	पाटलीपुत्रकल्प [३६]
३५	चम्पापुरीकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३५	वाणारसीनगरीकल्प [३८]
३६	पाटलिपुत्रनगरकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३६	कुडुंगेश्वरनाभेयकल्प [४७]
३७	श्रावस्तीनगरीकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३७	अर्बुदाद्रिकल्प [८]
३८	वाराणसीनगरीकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३८	अवन्तिदेशस्थ–अभिनंदनकल्प [३२]
३९	महावीरगणधरकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३९	प्रतिष्ठानपत्तनकल्प (स्तवन) [२३]
४०	कोकावसतिपार्श्वकल्प	,,	,,	×	,,	,,	४०	नन्दीश्वरकल्प [२४]
४१	कोटिशिलातीर्थकल्प	,,	,,	×	,,		४१	वीरगणधरकल्प [३९]
४२	वस्तुपाल–तेजःपालमन्त्रिकल्प	,,	,,	×	,,		४२	चतुरशीतितीर्थनामसंग्रहकल्प [४५]
४३	ढिंपुरीतीर्थकल्प	,,	,,	×	,,		४३	पञ्चपरमेष्ठिनमस्कारकल्प †
४४	ढिंपुरीस्तव	,,	,,	×	,,		४४	रत्नवाहपुरकल्प [२०]
४५	चतुरशीतितीर्थनामसंग्रह	,,	,,	×	×		४५	पावापुरीवृहत्कल्प [२१]
४६	समवसरणरचनाकल्प	,,	,,	×	,,		४६	कन्यानयनीयम० प्र० कल्प [२२]
४७	कुडुंगेश्वरनाभेयदेवकल्प	,,	,,	×	,,			ग्रन्थसमाप्तिसूचककथन
४८	व्याघ्रीकल्प	,,	,,	×	,,			
४९	अष्टापदगिरिकल्प (२)	,,†	,,†	×	×			
५०	हस्तिनापुरतीर्थस्तवन	,,	,,	×	,,			
५१	कन्यानयम० कल्पपरिशेष	,,	,,	×	,,			
५२	कुल्यपाकऋषभस्तुति	,,	,,	×	,,			
५३	आमरकुण्डपद्मावतीकल्प	,,	,,	×	,,			
५४	चतुर्विंशतिजिनकल्याणक (१)	,,	,,	×	,,			
५५	तीर्थंकरअतिशयविचार	,,	,,	×	,,			
५६	पञ्चकल्याणकस्तवन (२)	×	,,	×	×			
५७	कोल्लपाकमाणिक्यदेवकल्प	,,	×	×	,,			
५८	श्रीपुर अन्तरिक्षपार्श्वकल्प	,,	×	×	×			
५९	स्तम्भनककल्पशिलोञ्छ	,,	×	,,	,,			
६०	फलवर्द्धिपार्श्वकल्प	,,	×	,,	,,			
६१	अम्बिकादेवीकल्प	,,	×	,,	×			
	ग्रन्थसमाप्तिसूचककथन	×	,,	×	×			

† इस कल्पके अन्तमें ग्रन्थसमाप्तिसूचक कथन दिया हुआ है ।

† इस प्रतिमें यहां पर भी ग्रन्थसमाप्ति कथन है और फिर अन्तमें भी है ।

† Po प्रतिको छोड कर यह कल्प और किसी प्रतिमें उपलब्ध नहीं होता ।

॥ सिंघीजैनग्रन्थमालासम्पादकप्रशस्तिः ॥

स्वस्ति श्रीमेदपाटाख्यो देशो भारतविश्रुतः । रूपाहेलीति सन्नाम्नी पुरिका तत्र सुस्थिता ॥
सदाचार-विचाराभ्यां प्राचीननृपतेः समः । श्रीमच्चतुरसिंहोऽत्र राठोडान्वयभूमिपः ॥
तत्र श्रीवृद्धिसिंहोऽभूत् राजपुत्रः प्रसिद्धिमान् । क्षात्रधर्मधनो यश्च परमारकुलाग्रणीः ॥
मुञ्ज-भोजमुखा भूपा जाता यस्मिन्महाकुले । किं वर्ण्यते कुलीनत्वं तत्कुलजातजन्मनः ॥
पत्नी राजकुमारीति तस्याभूद् गुणसंहिता । चातुर्य-रूप-लावण्य-सुवाक्सौजन्यभूषिता ॥
क्षत्रियाणीप्रभापूर्णां शौर्यदीप्तमुखाकृतिम् । यां दृष्ट्वैव जनो मेने राजन्यकुलजा त्वियम् ॥
सूनुः किसनसिंहाख्यो जातस्तयोरति प्रियः । रणमल्ल इति ह्यन्यद् यन्नाम जननीकृतम् ॥
श्रीदेवीहंसनामात्र राजपूज्यो यतीश्वरः । ज्योतिर्भैषज्यविद्यानां पारगामी जनप्रियः ॥
अष्टोत्तरशताब्दानामायुर्यस्य महामतेः । स चासीद् वृद्धिसिंहस्य प्रीति-श्रद्धास्पदं परम् ॥
तेनाथाप्रतिमप्रेम्णा स तत्सूनुः स्वसन्निधौ । रक्षितः, शिक्षितः सम्यक्, कृतो जैनमतानुगः ॥
दौर्भाग्यात्तच्छिशोर्बाल्ये गुरु-तातौ दिवंगतौ । विमूढेन ततस्तेन त्यक्तं सर्वं गृहादिकम् ॥

तथा च–

परिभ्रम्याथ देशेषु संसेव्य च बहून् नरान् । दीक्षितो मुण्डितो भूत्वा कृत्वाऽऽचारान् सुदुष्करान् ॥
ज्ञातान्यनेकशास्त्राणि नानाधर्ममतानि च । मध्यस्थवृत्तिना तेन तत्त्वातत्त्वगवेषिणा ॥
अधीता विविधा भाषा भारतीया युरोपजाः । अनेका लिपयोऽप्येवं प्रत्न-नूतनकालिकाः ॥
येन प्रकाशिता नैका ग्रन्था विद्वत्प्रशंसिताः । लिखिता बहवो लेखा ऐतिह्यतथ्यगुम्फिताः ॥
यो बहुभिः सुविद्वद्भिस्तन्मण्डलैश्च सत्कृतः । जातः स्वान्यसमाजेषु माननीयो मनीषिणाम् ॥
यस्य तां विश्रुतिं ज्ञात्वा श्रीमद्गान्धीमहात्मना । आहूतः सादरं पुण्यपत्तनात्स्वयमन्यदा ॥
पुरे चाहम्मदाबादे राष्ट्रीयशिक्षणालयः । विद्यापीठ इतिख्यातः प्रतिष्ठितो यदाऽभवत् ॥
आचार्यत्वेन तत्रोच्चैर्नियुक्तो यो महात्मना । विद्वज्जनकृतश्लाघे पुरातत्त्वाख्यमन्दिरे ॥
वर्षाणामष्टकं यावत् सम्भूष्य तत्पदं ततः । गत्वा जर्मनराष्ट्रे यस्तत्संस्कृतिमधीतवान् ॥
तत आगत्य सँल्लग्नो राष्ट्रकार्ये च सक्रियम् । कारावासोऽपि सम्प्राप्तः येन स्वराज्यपर्वणि ॥
क्रमात्तस्माद् विनिर्मुक्तः प्राप्तः शान्तिनिकेतने । विश्ववन्द्यकवीन्द्रश्रीरवीन्द्रनाथभूषिते ॥
सिंघीपदयुतं जैनज्ञानपीठं यदाश्रितम् । स्थापितं तत्र सिंघीश्रीडालचन्दस्य सूनुना ॥
श्रीबहादुरसिंहेन दानवीरेण धीमता । स्मृत्यर्थं निजतातस्य जैनज्ञानप्रसारकम् ॥
प्रतिष्ठितश्च यस्तस्य पदेऽधिष्ठातृसञ्ज्ञके । अध्यापयन् वरान् शिष्यान् शोधयन् जैनवाङ्मयम् ॥
तस्यैव प्रेरणां प्राप्य श्रीसिंघीकुलकेतुना । स्वपितृश्रेयसे चैषा ग्रन्थमाला प्रकाश्यते ॥
विद्वज्जनकृताल्हादा सच्चिदानन्ददा सदा । चिरं नन्दत्वियं लोके जिनविजयभारती ॥

यस्याः क्षेत्रं वनं वापी कूपस्सरित् सरोवरम् ।
ग्राम-नगर-गिर्यादि सर्वं तीर्थमयं स्थितम् ॥
मेवाडाख्या प्रसिद्धा या स्वर्गादपि गरीयसी ।
जन्मभूमिर्मदीया सा मातृतुल्या प्रियंकरा ॥
तस्याः पुण्यपवित्रायाः सत्कीर्तिमूर्तिमन्दिरे ।
करोम्यहं कृतेरस्याः सद्भक्त्या वै समर्पणम् ॥

श्रीजिनप्रभसूरिविरचितः

॥ विविधतीर्थकल्पः ॥

श्रीजिनप्रभसूरिविरचितः

कल्पप्रदीपापरनामा

॥ विविधतीर्थकल्पः ॥



॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्यः ॥

१. शत्रुञ्जयतीर्थकल्पः ।

देवं¹ श्रीपुण्डरीकाख्यभूभृच्छिखरशेखरम् । अलङ्करिष्णु प्रासादं श्रीनाभेयः श्रियेऽस्तु वः ॥ १ ॥
श्रीशत्रुञ्जयतीर्थस्य माहात्म्यमतिमुक्तकः² । केवली यदुवाच प्राक्(ग्) नारदस्य ऋषेः³ पुरः ॥ २ ॥
तदहं लेशतो वक्ष्ये स्वपरस्मृतिहेतवे । श्रोतुमर्हन्ति भव्यास्तत् पापनाशनकाम्यया ॥ ३ ॥–युगलम् ।
शत्रुञ्जये पुण्डरीकस्तपोभृत् पञ्चकोटियुक् । चैत्र्यां सिद्धस्ततः सोऽपि पुण्डरीक इति स्मृतः ॥ ४ ॥
सिद्धिक्षेत्रं⁴ तीर्थराजो मरुदेवो भगीरथः । विमलाद्रिर्बाहुबली सहस्रकमलस्तथा ॥ ५ ॥
तालध्वजः कदम्बश्च शतपत्रो नगाधिराट् । अष्टोत्तरशतकूटः सहस्रपत्र इत्यपि ॥ ६ ॥
ढङ्को लौहित्यः कपर्दिनिवासः सिद्धिशेखरः । शत्रुञ्जयस्तथा मुक्तिनिलयः सिद्धिपर्वतः ॥ ७ ॥
पुण्डरीकश्चेति नामधेयानामेकविंशतिः । गीयते तस्य तीर्थस्य कृता सुरनरर्षिभिः ॥ ८ ॥–कलापकम् ।
ढङ्कादयः पञ्च कूटास्तत्र सन्ति सदैवताः । रसकूपीरत्नखनिविवरौषधिराजिताः ॥ ९ ॥
ढङ्कः कदम्बो लौहित्यस्तालध्वज-कपर्दिनौ । पञ्चेति ते कालवशान्मिथ्यादृग्भिरलीकृताः ॥ १० ॥
अशीतिं योजनान्याद्ये⁵ द्वितीयके तु⁶ सप्ततिम् । षष्टिं तृतीये तुर्ये चारके पञ्चाशतं तथा ॥ ११ ॥
पञ्चमे द्वादशैतानि सप्तरत्नी तथान्तिमे । इत्यासीदवसर्पिण्यां विस्तारस्तस्य कीर्तितः ॥ १२ ॥–युग्मम् ।
पञ्चाशतं योजनानि मूलेऽस्य दश चोपरि । विस्तार उच्छ्रयस्त्वष्टौ **युगादीशे** तपस्यभूत् ॥ १३ ॥
अस्मिन्नृ**षभसेना**द्या असंख्याः समवासरन् । तीर्थाधिराजाः सिद्धाश्चातीते काले महर्षयः ॥ १४ ॥
श्रीपद्मनाभप्रमुखा भाविनो जिननायकाः । अस्मिन् समवसर्तारः कीर्तिपावितविष्टपाः ॥ १५ ॥
श्रीनाभेयादि-वीरान्ता श्रीनेमीश्वरवर्जिताः । त्रयोविंशतिरर्हन्तः समवासार्षुरत्र च ॥ १६ ॥
हेमरूप्यादिजद्वाविंशत्यर्हत्स्थानिकान्वितम् । अङ्करत्न**नाभेय**प्रतिमालङ्कृतं महत् ॥ १७ ॥
द्वाविंशतिसुदेवकुलिकायुक्तमुच्चकैः । योजनप्रमितं रत्नमयमुत्पन्नकेवले⁷ ॥ १८ ॥
आदीश्वरे श्रीभरतश्चक्री चैत्यमचीकरत् । एतस्यामवसर्पिण्यां पूर्वमत्र पवित्रधीः ॥ १९ ॥–त्रिभिर्विशेषकम् ।
द्वाविंशतेर्जिनेन्द्राणां यथास्वं पादुकायुता । भात्यत्रायतनश्रेणी लेप्यनिर्मितबिम्बयुक् ॥ २० ॥
प्राकारि चात्र समवसरणेन सहोदये । प्रासादो **मरुदेवाया श्रीबाहुबलिमुना** ॥ २१ ॥

---

1 A देव°। 2 B °तिमुनिः। 3 B ऋषे। 4 A सिद्धि°। 5 A B योजनानाद्ये। 6 A तु। 7 B केवले।

प्रथमोऽत्रावसर्प्पिण्यां गणभृत् प्रथमार्हतः । प्रथमं प्रथमः सूनुः सिद्धः प्रथमचक्रिणः ॥ २२ ॥
अस्मिन् **नमि-विनम्या**ख्यौ खेचरेन्द्रमहाऋषी । कोटिद्वय्या महर्षीणां सहितौ सिद्धिमीयतुः ॥ २३ ॥
सम्प्रापुरत्र **द्रविड-वालिखिल्या**दयो नृपाः । कोटीभिर्दशभिर्युक्ताः साधूनां परमं पदम् ॥ २४ ॥
जयरामादिराजर्षिकोटित्रयमिहागमत् । **नारदा**दिमुनीनां च लक्षैकनवतिः शिवम् ॥ २५ ॥
5 **प्रद्युम्न-शाम्ब**प्रमुखाः कुमाराश्चात्र निर्वृतिम्[1] । परास्रवन्तः[2] सार्द्धाष्टकोटिसाधुसमन्विताः ॥ २६ ॥
मनुप्रमितलक्षादिसंख्याभिः श्रेणिभिस्तथा । असंख्याताभिः सर्वार्थसिद्धान्तरितमासदन्[3] ॥ २७ ॥
पञ्चाशत्कोटिलक्षाब्धीन् यावन्ना**भेय**वंशजाः । अत्रा**दित्ययशो**मुख्याः **सगरा**न्ताः शिवं नृपाः ॥ २८ ॥—युग्मम् ।
भरतस्यापत्याः पुत्रश्री**शैलक-शुका**दयः । अत्र सिद्धा असंख्यातकोटाकोटिमिता यताः[4] ॥ २९ ॥
मुनीनां कोटिविंशत्या **कुन्त्या** च सह निर्वृताः । कृतार्हत्प्रतिमोद्धारा अत्र ते पञ्च **पाण्डवाः** ॥ ३० ॥
10 द्वितीयषोडशावत्रा**जित-शान्ती** जिनेश्वरौ । वर्षारात्रचतुर्मासीं तस्थतुः स्थितिदेशिनौ ॥ ३१ ॥
श्री**नेमि**वचनाद् यात्रागतः सर्वरुजापहम् । **नन्दिषेण**गणेशोऽत्रा**जितशान्ति**स्तवं व्यधात् ॥ ३२ ॥
पैँस्ना असंख्या उद्धारा असंख्याः प्रतिमास्तथा । असंख्यानि च चैत्यानि[5] महातीर्थेऽत्र जज्ञिरे ॥ ३३ ॥
अर्चाः क्षुल्लतडागस्थास्तथा [6]**भरत**कारिताः । गुहास्थाश्च नमन् भक्त्या स्यादत्रैकावतारभाक् ॥ ३४ ॥
संप्रतिर्विक्रमादित्यः सातवाहन-वाग्भटौ । पादलिप्ता-ऽऽम-दत्ताश्च तस्योद्धारकृतः स्मृताः ॥ ३५ ॥
15 **विदेहे**ष्वपि वास्तव्याः सरन्त्येनं सुदृष्टयः । इति श्री**कालिका**चार्यपुरः **शक्रः** किलाब्रवीत् ॥ ३६ ॥
अत्र श्री**जावडे**र्बिम्बोद्धारे जाते क्रमेण वै । **अजिता**यतनस्थाने बभूवा**नुपमा**सरः ॥ ३७ ॥
अत्र श्री**मरुदेवा**याः श्री**शान्ते**श्चोद्धरिष्यति । **मेघघोष**नृपः[7] **कल्कि**प्रपौत्रो भवने सुधीः ॥ ३८ ॥
अस्यापश्चिममुद्धारं राजा **विमलवाहनः** । श्री**दुष्प्रसह**सूरीणामुपदेशाद्विधास्यति ॥ ३९ ॥
तीर्थोच्छेदेऽपि **ऋषभकूटा**ख्योऽयं सुरार्चितः । यावत् **पद्मनाभ**तीर्थं पूजायुक्तो भविष्यति ॥ ४० ॥
20 प्रायः पापपरित्यक्तास्तिर्यञ्चोऽप्यत्र वासिनः । प्रयान्ति सुगतिं तीर्थमाहात्म्याद् विशदाशयाः ॥ ४१ ॥
सिंहाग्निजलधिव्यालभूपालविषयुद्धजम् । चौरारिमारिजं चास्य स्मृतेर्नश्येद्भयं नृणाम् ॥ ४२ ॥
भरतेशकृतेर्लेप्यमयस्या**द्यजिनेशितुः** । ध्यायन्नुत्सङ्गशय्यास्थं स्वं सर्वभयजिद्भवेत् ॥ ४३ ॥
उग्रेण तपसा ब्रह्मचर्येण च यदाप्नुयात् । **शत्रुञ्जये** तन्निवसन् प्रयतः पुण्यमश्नुते ॥ ४४ ॥
प्रदद्यात् [8]कामिकाहारं तीर्थे कोटिव्ययेन यः । तत्पुण्यमेकोपवासेनाप्नोति **विमलाचले** ॥ ४५ ॥
25 भूर्भुवःस्वस्त्रये तीर्थं यत्किञ्चिन्नाम विद्यते । तत्सर्वमेव दृष्टं स्यात् **पुण्डरीके**ऽभिवन्दिते ॥ ४६ ॥
अत्राद्यापि विनारिष्टं सम्पातोऽरिष्टपक्षिणाम् । न जातु जायते सत्रागारभोज्येषु सत्स्वपि ॥ ४७ ॥
भोज्यदानेऽत्र यात्रायै याते कोटिगुणं शुभम् । कृतयात्राय वलते तत्रानन्तगुणं पुनः ॥ ४८ ॥
प्रतिलाभयतः सङ्घमदृष्टे **विमलाचले** । कोटीगुणं भवेत् पुण्यं दृष्टेऽनन्तगुणं पुनः ॥ ४९ ॥
केवलोत्पत्ति-निर्वाणे यत्राभूतां महात्मनाम् । तानि सर्वाणि तीर्थानि वन्दितानीह वन्दिते ॥ ५० ॥
30 जन्म-निष्क्रमण-ज्ञानोत्पत्ति-मुक्तिगमोत्सवाः । वैयस्त्यात् क्वापि सामस्त्याज्जिनानां यत्र जज्ञिरे ॥ ५१ ॥

अयोध्या-मिथिला-चम्पा-श्रावस्ती-हस्तिनापुरे ।
कौशाम्बी-काशि-काकन्दी-काम्पिल्ये भद्रिलाभिधे ॥ ५२ ॥

---

1 A निवृत्तिम् । 2 A परापूर्वतः । 3 B °सदत् । 4 A यतः । 5 B चैत्यादि । 6 B भारत° । 7 A नृपं । 8 A कालिका° ।

रत्नवाहे शौर्यपुरे कुण्डग्रामेऽप्यपापया ।
चन्द्रानना-सिंहपुरे तथा **राजगृहे** पुरे ॥ ५३ ॥
श्रीरैवतक-संमेत-वैभारा-ऽष्टापदाद्रिषु ।
यात्रयास्मिंस्तेषु यात्राफलाच्छतगुण फलम् ॥ ५४ ॥—चतुर्भि कलापकम् ।

पूजापुण्याच्छतगुण पुण्य बिम्बविधापने । चैत्येऽत्र सहस्रगुण पालनेऽनन्तसङ्गुणम् ॥ ५५ ॥
य कारयेदस्य मौलौ प्रतिमा चैत्यवेश्म वा । भुक्त्वा भारतवर्षर्द्धी स स्वर्गश्रियमश्नुते ॥ ५६ ॥
नमस्कारसहितादितपासि विदधन्नर । उत्तरोत्तरतपसा **पुण्डरीक**स्मृतेर्लभेत् ॥ ५७ ॥
तीर्थमेतत्स्मरन्मर्त्य करणत्रयशुद्धिमान् । षष्ठादिमासिकान्ताना तपसा फलमाप्नुयात् ॥ ५८ ॥
अद्यापि **पुण्डरीका**द्रौ कृतानशनमुत्तमम् । भूत्वा शीलविहीनोऽपि सुखेन स्वर्गमृच्छति ॥ ५९ ॥
छत्रचामरभृङ्गारध्वजस्थालप्रदानत । विद्याधरो जायतेऽत्र चक्री स्याद्रथदानत ॥ ६० ॥
दशात्र पुष्पदामानि ददानो भावशुद्धित । भुञ्जानोऽपि लभेतैव चतुर्थतपस फलम् ॥ ६१ ॥
द्विगुणानि तु षष्ठस्याष्टमस्य त्रिगुणानि तु । चतुर्गुणानि दशममभ्येति तानि ददत् पुन ॥ ६२ ॥
फल भवेद्द्वादशस्य ददत् पञ्चगुणानि तु । तेषा यथोत्तर वृद्ध्या फलवृद्धिरपि स्मृता ॥ ६३ ॥
पूजास्नपनमात्रेण यत् पुण्य **विमला**चले । नान्यतीर्थेषु तत् स्वर्णभूमिभूषणदानत ॥ ६४ ॥
धूपोत्क्षेपणत पक्षोपवासस्य लभेत् फलम् । कर्पूरपूजया चात्र मासक्षपणज फलम् ॥ ६५ ॥
निर्दोषैरत्र भक्ताद्यैर्य साधून् प्रतिलाभयेत् । फलेन कार्तिकमासक्षपणस्य स युज्यते ॥ ६६ ॥
त्रिसन्ध्य मत्रवा स्नातो[1] मासानाश्वान् मधूर्जयो । नमोऽर्हद्भ्य पद ध्यायन्निहार्जेत् तीर्थकृत्पदम् ॥ ६७ ॥
पादलिप्तपुरे भात प्रासादौ **पार्श्व-वीर**यो । अधोभागे चास्य **नेमिनाथ**स्यायतन महत् ॥ ६८ ॥
तिस्र कोटीस्त्रिलक्षोना व्ययित्वा वसु **वाग्भटः** । मन्त्रीश्वरो **युगादीश**प्रासादमुददीधरत् ॥ ६९ ॥
दृष्टेव तीर्थप्रथमप्रवेशेऽत्रा**दिमार्हत्तः** । विगदा मूर्तिराधत्ते दृशोरमृतपारणम् ॥ ७० ॥
अष्टोत्तरे वर्षशतेऽतीते श्री**विक्रमा**दिह । बहुद्रव्यव्ययाद् बिम्ब **जावडिः** स न्यवीविशत् ॥ ७१ ॥
भास्वद्द्युतिमम्माणमणिशैलतटोत्थितम् । **ज्योतीरसा**ख्य यद्रत्न तत्तेन घटित किल ॥ ७२ ॥
मधुमत्यां पुरि श्रेष्ठी वास्तव्यो **जावडिः** पुरा । श्री**शत्रुञ्जय**माहात्म्य श्री**वैरस्वामि**तोऽशृणोत् ॥ ७३ ॥
गन्धोदकस्नात्ररुचिर्लेप्यबिम्ब शुशोच स । स्मृत्वा **चक्रेश्वरीं** सैष **मम्माणा**द्रिखनीमगात् ॥ ७४ ॥
निर्माप्येहाश्मनीं मूर्ति रथमारोप्य चाचलत् । **विमला**द्रिं सभार्योऽसौ पद्यया ह्यया दिने ॥ ७५ ॥
ययौ यावन्तमध्वान दिवा [2]समतिमो रथ । रात्रौ तावन्तमेवासौ पश्चाद् व्यावर्ततोद्भुतम् ॥ ७६ ॥
खिन्न **कपर्दिनं** स्मृत्वा दृष्ट्वा हेतु च तद्विधौ । रथमार्गेऽपतत्तिर्यक् प्रयत सह जायया ॥ ७७ ॥
तत्साहसप्रसन्नेन दैवतेनाधिरोपित । रथ सबिम्बोऽद्रिशृङ्गे दु साध सात्त्विकेषु किम् ॥ ७८ ॥
मूलनायकमुत्थाप्य न्यस्ते बिम्बे तदास्पदे । लेप्यबिम्बारटितेन पर्वत खण्डशोऽदलत् ॥ ७९ ॥
तन्मुक्ताऽथ तडिच्छ्रेष्ठिबिम्बेन करमर्दिता । सोपानानि च्छिद्रयन्ती निर्ययौ शैलदेशभित् ॥ ८० ॥
आरुह्य चैत्यशिखर सकलत्र प्रमोदत । **जावडि**र्नर्निर्नर्ति स चञ्चद्रोमाञ्चकञ्चुक ॥ ८१ ॥
अपतीर्थिकनोहित्थान्यब्देऽष्टादश आपतन् । तद्द्रव्यव्ययत श्रेष्ठी तत्र चक्रे [3]प्रभावनाम् ॥ ८२ ॥
इत्थ **जावडिराद्यार्हत्-पुण्डरीक-कपर्दिनाम्** । मूर्तीर्निवेश्य सञ्जज्ञे स्वर्विमानातिथित्वभाक् ॥ ८३ ॥

---

1 B °वास्नातो । 2 A स प्रथमो, B दिवसे प्रथमे । 3 A स भावना ।

दक्षिणाङ्गे भगवतः **पुण्डरीक** इहादिमः । वामाङ्गे दीप्यते तस्य **जावडि**स्थापितोऽपरः ॥ ८४ ॥
इक्ष्वाकु-वृष्णिवंश्यानामसंख्याः कोटिकोटयः । अत्र सिद्धाः कोटिकोटीतिलकं सूचयत्यदः ॥ ८५ ॥
पाण्डवाः पञ्च **कुन्ती** च तन्माता च[1] शिवं ययुः । इति शासति तीर्थेऽत्र षडेषां लेप्यमूर्तयः ॥ ८६ ॥
राजादनश्चैत्यशाखी श्रीसङ्घाद्भुतभाग्यतः । दुग्धं वर्षति पीयूषमिव चन्द्रकरोत्करः ॥ ८७ ॥
5 व्याघ्रीमयूरप्रमुखास्तिर्यञ्चो भक्तमुक्तितः । सुरलोकमिह प्राप्ताः प्रणताद्**दीश**पादुकाः ॥ ८८ ॥
वामे **सत्यपुर**स्यावतारो **मूलजिनौ**कसः । दक्षिणे **सकुनी**-चैत्यपृष्ठे **चाष्टापद**[:] स्थितः ॥ ८९ ॥
नन्दीश्वर-स्तम्भनकोज्जयन्तानामकच्छूतः । भव्येषु पुण्यवृद्ध्यर्थमवतारा इहासते ॥ ९० ॥
आत्तासिना **विनमिना नमि**ना च निषेवितः । स्वर्गारोहणचैत्ये च श्री**नाभेयः** प्रभासते ॥ ९१ ॥
तुङ्गं शृङ्गं द्वितीयं च **श्रेयांसः शान्ति-नेमिनौ** । अन्येऽप्यृषभ-**वीरा**द्या अस्यालङ्कुर्वते जिनाः ॥ ९२ ॥
10 **मरुदेवां** भगवतीं भवनेऽत्र भवच्छिदम् । नमस्कृत्य कृती स्वस्य मन्यते कृतकृत्यताम् ॥ ९३ ॥
यक्षराजः **कपर्दी**ह कल्पवृक्षः प्रणेमुषाम् । चित्रान् यात्रिकसङ्घस्य विघ्नान् मर्दयति स्फुटम् ॥ ९४ ॥
श्री**नेम्या**देशतः **कृष्णो** दिनान्यष्टावुपोषितः । **कपर्दि**यक्षमाराध्य पर्वतान्तर्गुहान्तरे ॥ ९५ ॥
अद्यापि पूज्यं **शक्रेण** बिम्बत्रयमगोपयत् । अद्यापि श्रूयते तत्र किल **शक्र**समागमः ॥ ९६ ॥—युग्मम् ।
पाण्डवस्थापितश्रीमद्**ऋषभो**त्तरदिग्गता । सा गुहा विद्यतेऽद्यापि यावत् क्षुल्लतडागिका ॥ ९७ ॥
15 यक्षस्यादेशतस्तत्र दृश्यन्ते प्रतिमाः किल । तत्रैव**ाजित-शान्तीशौ** वर्षारात्रमवस्थितौ ॥ ९८ ॥
तयोश्चैत्यद्वयं पूर्वाभिमुखं तत्र चाभवत् । निकषा**जित**चैत्यं च बभूवा**नुपमा**सरः ॥ ९९ ॥
मरुदेव्यन्तिके **शान्ते**श्चैत्यं शैत्यकरं दृशाम् । भवति स भवभ्रान्तिभिदुरं भव्यदेहिनाम् ॥ १०० ॥
श्री**शान्ति**चैत्यस्य पुरो हस्तानां त्रिंशता पुनः । पुरुषैः सप्तभिरदः खानी द्वे स्वर्णरूप्ययोः ॥ १०१ ॥
ततो हस्तशतं गत्वा पूर्वद्वाराऽस्ति कूपिका । अधस्तादष्टभिर्हस्तैः श्रीसिद्धरसपूरिता ॥ १०२ ॥
20 श्री**पादलिप्ता**चार्येण तीर्थोद्धारकृते किल । अस्ति संस्थापितं रत्नसुवर्णं तत्समीपगम् ॥ १०३ ॥
पूर्वस्यां [2]**वृषभ**बिम्बादधश्च**र्षभकूट**तः । धनूंषि त्रिंशतिं (तं?) गत्वोपवासांस्त्रीन् समाचरेत् ॥ १०४ ॥
कृते बलिविधानादौ **वैरोट्या** स्वं प्रदर्शयेत् । तदाज्ञयोद्धाट्य शिलां रात्रौ मध्ये प्रविश्यते ॥ १०५ ॥
तत्रोपवासतः सर्वाः संपद्यन्ते च सिद्धयः । तत्र**र्षभा**र्चनमनाद्भवेदेकावतारभाक् ॥ १०६ ॥
पुरो धनुष्पञ्चशत्या आस्ते पाषाणकुण्डिका । ततः सप्त क्रमान् गत्वा कुर्याद्बलिविधिं बुधः ॥ १०७ ॥
25 शिलोत्पाटनतस्तत्र कस्यचित् पुण्यशालिनः । उपवासद्वयेन स्यात् प्रत्यक्षा रसकूपिका ॥ १०८ ॥
कल्किपुत्रो धर्मदत्तो भावी स परमार्हतः । दिने दिने जिनबिम्बं प्रतिष्ठाप्य च भोक्ष्यते ॥ १०९ ॥
स श्री**शत्रुञ्जयो**द्धारं कर्ताथ **जितशत्रुराट्** । द्वात्रिंशद्वर्षराज्यश्रीर्भविष्यति तदात्मजः ॥ ११० ॥
तत्सूनु**र्मेघघोषा**ख्यः श्री**शान्ति-मरुदेव**योः । **कपर्दि**यक्षस्यादेशाच्चैत्यमत्रोद्धरिष्यति ॥ १११ ॥
नन्दिः सूरिरथार्यश्च **श्रीप्रभो माणिभद्रकः । यशोमित्रो धनमित्र**स्तथा **विकटधर्म्मकः** ॥ ११२ ॥
30 **सुमङ्गलः सूरसेन** इत्यस्योद्धारकारकाः । अर्वाक्(ग्?) **दुष्प्रसहा**दन्ते भावी **विमलवाहनः** ॥ ११३ ॥
यात्रिकान् येऽस्य बाधन्ते द्रव्यं वापहरन्ति ये । पतन्ति नरके घोरे सान्वयास्तेंऽहसां[3] भरात् ॥ ११४ ॥
यात्रां पूजां द्रव्यरक्षां यात्रिकस्तोमसत्कृतिम् । कुर्वाणोऽत्र सगोत्रोऽपि स्वर्गलोके महीयते ॥ ११५ ॥
श्री**वस्तुपालो**पज्ञानि [4]**पीथडा**दिकृतानि च । वक्ता पारं न यात्यत्र धर्मस्थानानि कीर्त्तयन् ॥ ११६ ॥
दुःख(ष्ष)मासचिवान् म्लेच्छाद्भङ्गं संभाव्य भाविनम् । मन्त्रीशः श्री**वस्तुपालस्तेजःपाला**ग्रजः सुधीः ॥ ११७ ॥

---

1 A ऽत्र । 2 B पूर्वस्यामृषभ° । 3 B °स्तेहसंभरात् । 4 B पेथडा° ।

मम्माणोपलरत्नेन निर्माप्यात्यन्तनिर्मले[1] । न्यधाद्धर्मिगृहे मूर्ती **आद्यार्हत्-पुण्डरीकयोः** ॥ ११८ ॥–युग्मम् ।
ही **ग्रहर्तुक्रियास्थान (१३६९)** सख्ये **विक्रमवत्सरे** । **जावडि**स्थापित बिम्ब म्लेच्छैर्भग्न कलेर्वशात् ११९
वैक्रमे वत्सरे चन्द्रहयाग्नीन्दु (१३७१) मिते सति । श्री**मूलनायको**द्धार साधु श्री**समरो** व्यधात् १२०
तीर्थेऽत्र सद्वपनयो ये बभूवुर्भवन्ति ये । ये भविष्यन्ति धन्यास्ते नन्यासुस्ते चिर श्रिया ॥ १२१ ॥
कल्पप्राभृतत पूर्व कृत श्री**भद्रबाहु**ना । श्री**वज्रेण** तत **पादलिप्ता**चार्यैस्तत परम् ॥ १२२ ॥ 5
इतोऽप्युद्धृत्य सक्षेपात् प्रणीत कामितप्रद । श्री**शत्रुञ्जय**कल्पोऽय श्री**जिनप्रभ**सूरिभि ॥ १२३ ॥
कल्पेऽस्मिन् वाचिते ध्याते[2] व्याख्याते पठिते श्रुते । स्यात्तृतीयभवे सिद्धिर्भव्याना भक्तिशालिनाम् ॥ १२४ ॥
श्री**शत्रुञ्जय**शैलेश! लेशतोऽपि गुणास्तव । कैर्व्यावर्णयितु नाम पार्यन्ते विदुषै(०बुधै?)रपि ॥ १२५ ॥
भवयात्रोपनम्राणा नृणा तीर्थानुभावत । प्रायो मन परीणाम शुभ एव प्रवर्द्धते ॥ १२६ ॥
त्वद्यात्राप्रचलत्सङ्घरथाश्वोष्ट्रनृपादज । रेणुरङ्गे लगन् भव्यपुसा पाप व्यपोहति ॥ १२७ ॥ 10
यावान् कर्मक्षयोऽन्यत्र मासक्षपणतो भवेत् । नमस्कारसहितादेरपि तावान् कृतात्त्वयि ॥ १२८ ॥
श्री**नाभेय**कृतावास! **वासव**स्तुत्यवैभव! । मनसा वचसा तन्वा **सिद्धिक्षेत्र!** नमोऽस्तु ते ॥ १२९ ॥
त्वत्कल्पमेत निर्माय निर्मायमनसा मया । यदार्जि पुण्य तेनास्तु विश्व वान्तरसौख्यवत् ॥ १३० ॥
पुस्तकन्यस्तमपि य कल्पमेन महिष्यति । न्यक्षेण काङ्क्षितास्तस्य सिद्धिमेष्यन्ति सपद ॥ १३१ ॥
प्रारम्भेऽप्यस्य राजाधिराज सङ्घे प्रसन्नवान् । अतो **राजप्रसादा**ख्य कल्पोऽय जयताच्चिरम् ॥ १३२ ॥ 15
श्रीविक्रमाब्दे बाणाष्टविश्वेदेव (१३८५) मिते शितौ । सप्तम्या तपस कान्यदिवसेऽय समर्थित ॥१३३॥

॥ इति श्री**जिनप्रभ**सूरिकृत श्री**शत्रुञ्जय**कल्प समाप्त ॥

॥ ग्रन्थाग्र० १३४, अक्षर १३ ॥

---

1 A निमल । 2 A ध्याने ।

२. रैवतकगिरिकल्पसंक्षेपः ।

सिरि**नेमि**जिणं सिरसा नमिउं **रेवय**गिरीसकप्पंमि । सिरि**वइर**सीसभणिअं जहा य [1]**पालित्त**एणं च ॥ १ ॥

छत्तसिलाइ समीवे सिलासणे दिक्खं पडिवन्नो **नेमी** । **सहसंब**वणे केवलनाणं । **लक्खारामे** देसणा । **अवलोअणे**[2] उद्धसिहरे निव्वाणं । **रेवय**मेहलाए **कण्हो** तत्थ कल्लाणतिगं काऊण सुवन्नरयणपडिमालंकिअं चेइअतिगं जीवंतसामिणो, **अंबा**देविं च कारेइ । **इंदो** वि वज्जेण गिरिं कोरेऊण सुवन्नबलाणयं रुप्पमयं चेइअं रयणमया पडिमा पमाणवन्नोववेया सिहरे **अंबा**रंगमंडवे [3]**अवलोणा**सिहरं(रे?) बलाणयमंडवे **संबो** एयाइं कारेइ । **सिद्धविणायगो** पडिहारो तप्पडिरूवं[4] श्री**नेमि**मुखात् निर्वाणस्थानं ज्ञात्वा निर्वाणादनन्तरं **कण्हेण** ठाविअं । तहा सत्त जायवा **दामोयरा**णुरूवा । **कालमेह १ मेहनाद २ गिरिविदारण ३ कपाट ४ सिंहनाद ५ खोडिक ६ रेवया** ७ तिव्वतवेणं कीडणेणं खित्तवाला उववन्ना । तत्थ य **मेहनादो** सम्मद्दिट्ठी **नेमि**पयभत्तिजुत्तो चिट्ठइ । **गिरिविदारणे**णं कंचणबलाणयंमि पंच उद्धारा विउव्विआ । तत्थेगं, **अंबा**पुरओ उत्तरदिसाए सत्तहिअसयकमेहिं गुहा; तत्थ य उववासतिगेणं वलिविहाणेणं सिलं उप्पाडिऊण मज्झे **गिरिविदारण**पडिमा । तत्थ य कमपण्णासं गए **बलदेवे**णं कारिअं सासयजिणपडिमारूवं नमिऊण उत्तरदिसाए पण्णासकमं[5] वारीतिगं । पढमवारिआए[6] कमसयतिगं गंतूण गोदोहिआसणेणं पविसिऊण उपवासपंचगं भमररूवं दारुणं सत्तेणं उप्पाडिऊणं कमसत्ताओं अहोमुहं पविसिऊण बलाणयमंडवे **इंदा**देसेण **धणय**जक्खकारिअं **अंबा**देविं पूइऊण सुवण्णजालीए ठायव्वं । तत्थ ठिएणं सिरिमूलनाहो **नेमि**जिणिंदो वंदिअव्वो । बीअवारीए एगं पायं पूइत्ता **सयंवर**वावीए अहो कमचालीसं गमित्ता तत्थ णं मज्झवारीए कमसत्तसएहिं कूवो । तत्थ वरहंसठिअत्तेण इहावि मूलनायगो वन्देअव्वो । तइअवारीए मूलदुवारपवेसो **अंबा**एसेण, न अन्नहा । एवं कंचणबलाणयमग्गो, तत्थ य **अंबा**पुरओं हत्थवीसाए विवरं । तत्थ य **अंबा**एसेणं उववासतिगेण सिलुग्घाडणेण हत्थवीसाए संपुडसत्तगं समुग्गयपंचगं अहो रसकूविआ अमावसाए अमावसाए उग्घडइ । तत्थ य उववासतिगं काऊण **अंबा**एसेण पूयणेण वलिविहाणेणं[7] गिण्हियव्वं । तहा य **जुण्णकूडे** उववासतिगं काऊण सरलमग्गेण वलिपूअणेणं **सिद्धविणायगो** उवलब्भइ । तत्थ य चिंतिया सिद्धी । दिणमेगं ठाएयव्वं । जइ तहा पच्चक्खो हवइ । तहा **रायमई**गुहाए कमसएणं[8] गोदोहियाए रसकूविआ, कसिणचित्तयवल्ली, **राईमई**ए पडिमा रयणमया, **अंबा** य; रुप्पमयाओं अणेगओसहीओं चिट्ठन्ति । तह **छत्तसिला–घंटसिला–कोडिसिला** सिलातिगं पण्णत्तं । **छत्तसिलं** मज्झं मज्झेणं कणयवल्ली । **सहस्संब**वणमज्झे रययसुवण्णमयचउवीसं, **लक्खारामे** बावत्तरी चउवीसजिणाण[9] गुहा पण्णत्ता । **कालमेह**स्स पुरओ **सुवन्नवालुआ**ए नईए सट्ठकमसयतिगेण उत्तरदिसाए[10] गमित्ता गिरिगुहं पविसिऊण उदए न्हवणं काऊण ठिए उववासपओएहिं दुवारमुग्घाडेइ । मज्झे पढमदुवारे सुवण्णखाणी, दुइअदुवारे रयणखाणी संघहेउं **अंबा**ए विउव्विआ । तत्थ पण **कण्ह**भंडारा । अण्णो **दामोदर**समीवे । अंजणसिलाए अहोभागे रययसुवण्णधूली पुरिसवीसेहिं पण्णत्ता ।

तस्सत्थमणे[11] मंगलयदेवदाली य संतु रससिद्धी । सिरि**वइरो**वक्खायं संघसमुद्धरणकज्जंमि ॥ १ ॥

सस्सकडाहं मज्झे गिण्हित्ता कोडिबिन्दुसंयोगे । **घंटसिला**चुण्णयजोअणाओं अंजणसिद्धी ॥ २ ॥

॥ **विज्जापाहुड्ड**देसाओ **रेवय**कप्पसंखेवो सम्मत्तो ॥

॥ ग्रन्थाग्रं० ३८ ॥

---

1 A पालत्तएणं । 2 B अवलोयणं । 3 B °लोअण° । 4 B तप्पडिरूप° । 5 A °कंमं । 6 A °वरिआए । 7 B °विहारेणं । 8 A कंमसुएणं । 9 B 'जिणाण' नास्ति । 10 A °दिसीए । 11 B तस्सत्थमाणे° ।

३. श्रीउज्जयन्तस्तवः ।

नाममि श्रीरैवतकोज्जयन्ताद्यै [1]प्रथामितम् । श्रीनेमिपावित स्तौमि गिरिनारं[2] गिरीश्वरम् ॥ १ ॥
स्थाने देश सुराष्ट्राख्या बिभर्ति भुवनेष्वसौ[3] । यद्भूमिकामिनीमाले गिरिरेष विशेषक ॥ २ ॥
शृङ्गारयन्ति [4]खगारदुर्गं श्रीऋषभादय । श्रीपार्श्वस्तेजलपुरं भूषितेतदुपत्यकम्[5] ॥ ३ ॥
योजनद्वयतुङ्गेऽस्य[6] शृङ्गे जिनगृहावलि । पुण्यराशिरिवाभाति शरच्चन्द्रांशुनिर्मला ॥ ४ ॥
सौवर्णदण्डकलशामलसारकशोभितम् । चारु चैत्य चकास्त्यस्योपरि श्रीनेमिन प्रभो ॥ ५ ॥
श्रीशिवासूनुदेवस्य पादुकात्र निरीक्षिता । स्पृष्टाऽर्चिता च शिष्टाना पापव्यूह व्यपोहति ॥ ६ ॥
प्राज्य राज्य परित्यज्य जरत्तृणमिव प्रभु । बन्धून् विधूय च स्निग्धान् प्रपेदेऽत्र महाव्रतम् ॥ ७ ॥
अत्रैव केवल देव स एव प्रतिलब्धवान् । जगज्जनहितैषी स पर्यणैषीच्च निर्वृतिम् ॥ ८ ॥
अत एवात्र कल्याणत्रयमन्दिरमादधे । श्रीवस्तुपालो मन्त्रीशश्चमत्कारितभव्यहृत्[7] ॥ ९ ॥
जिनेन्द्रबिम्बपूर्णेन्द्रमण्डपस्था जना इह । श्रीनेमेर्मज्जन कर्तुमिन्द्रा इव चकासति ॥ १० ॥
गजेन्द्रपदनामास्य कुण्ड मण्डयते शिर । सुधाविधैर्जलै पूर्णं स्नानार्हत्स्नपनक्षमै ॥ ११ ॥
शत्रुञ्जयावतारेऽत्र वस्तुपालेन कारिते । ऋषभः पुण्डरीकोऽष्टापदो नन्दीश्वरस्तथा ॥ १२ ॥
सिंहयाना हेमवर्णा सिद्ध-बुद्धसुतान्विता । कम्राम्रलुम्बिभृत्पाणिरत्राम्बा सङ्घविघ्नहृत् ॥ १३ ॥
श्रीनेमिपदपूतमवलोकननामकम् । विलोकयन्त शिखर यान्ति भव्या कृतार्थताम् ॥ १४ ॥
शाम्बो जाम्बवतीजातस्तुङ्गे शृङ्गेऽस्य कृष्णजः । प्रद्युम्नश्च महाद्युम्नस्तेपाते दुस्तप तप ॥ १५ ॥
नानाविधौषधिगणा जाज्वलन्त्यत्र रात्रिषु । किं च घण्टाक्षरच्छत्रशिलाः शान्त उच्चकै ॥ १६ ॥
सहस्राम्रवणं लक्षारामोऽन्येपि वनव्रजा । मयूरकोकिलाभृङ्गीसङ्गीतिसुभगा इह ॥ १७ ॥
न स वृक्षो न सा वल्ली न तत्पुष्प न तत्फलम् । नेक्ष्यते[8]ऽत्राभियुक्तैर्यदित्यैतिह्यविदो विद ॥ १८ ॥
राजीमती गुहागर्भे कैर्न नामात्र वन्द्यते । रथनेमिर्ययोन्मार्गात्सन्मार्गमवतारित[9] ॥ १९ ॥
पूजास्नपनदानानि तपश्चात्र कृतानि वै[10] । सपद्यन्ते मोक्षसौख्यहेतवो भव्यजन्मिनाम् ॥ २० ॥
दिग्भ्रमादपि[11] योऽत्राद्रौ काप्यमार्गेऽपि सञ्चरन् । सोऽपि पश्यति चैत्यस्था [12]जिनार्चा स्नापितार्चिता ॥ २१ ॥
काश्मीरागतरत्नेन कूष्माण्ड्यादेशतोऽत्र च । लेप्यबिम्बास्पदे न्यस्ता श्रीनेमेर्मूर्तिरश्मनी ॥ २२ ॥
नदीनिर्झरकुण्डाना खनीना वीरुधामपि । विदाकरोत्वत्र सख्या सख्यावानपि क खलु ॥ २३ ॥
आसेचनकरूपाय[13] महातीर्थाय तायिने । चैत्यालङ्कृतशीर्षाय नम श्रीरैवताद्रये ॥ २४ ॥
स्तुतो मयेति सूरीन्द्रवर्णितार्घजिनप्रभ । गिरिनारस्तारहेमसिद्धि[14]भूमिर्मुदेऽस्तु च ॥ २५ ॥

॥ इति श्रीउज्जयन्तस्तव ॥

॥ ग्रन्थाग्र २५ ॥

---

1 A प्रथा° । 2 B °नार-। 3 B भुवनेऽप्यसौ । 4 A °स्वपणार° । 5 A °पत्यका । 6 A °तुङ्गस्य । B 7 °भव्यहृद् । 8 A नेक्षते । 9 A °तारिता । 10 A वै । 11 A C °भूनावपि । 12 A जिनार्चास्तर्पिता° । 13 B आसवेचन° । 14 C सिद्ध° ।

४. उज्जयन्तमहातीर्थकल्पः ।

अत्थि **सुरद्वा**विसए **उज्जिंतो** नाम पव्वओ रम्मो । तस्सिहरे[1] आरुहिउं भत्तीए नमह **नेमिजिणं** ॥ १ ॥
अंबाइअं च देविं न्हवणच्चणगंधधूवदीवेहिं । पूइअ कयप्पणामा ता जोअह जेण अत्थत्थी ॥ २ ॥
गिरिसिहरकुहरकंदर[2]निज्झरणकवाडविअडकूवेहिं । जोएह **खत्तवायं** जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ ३ ॥
5 कंदप्पदप्पकप्पण[3]कुगइविद्दवण**नेमिनाह**स्स । **निव्वाणसिला**नामेण अत्थि भुवणंमि विक्खाया ॥ ४ ॥
तस्स य उत्तरपासे दसधणुहेहिं अहोमुहं विवरं । दारंमि तस्स लिङ्गं अवयाणे धणुह चत्तारि ॥ ५ ॥
तस्स पसुमुत्तगंधो अत्थि रसो पलसएण सयतंवं । विंधेति कुणइ तारं ससिकुंदसमुज्जलं सहसा ॥ ६ ॥
पुव्वदिसाए धणुहंतरेसु तस्सेव अत्थि जा गवई । पाहाणमया दाहिणदिसागए बारसधणूहिं ॥ ७ ॥
दिस्सइ अ तत्थ पयडो हिंगुलवण्णो अ दिव्वपवररसो । विंधेइ सव्वलोहे फरिसेणं अग्गिसंगेणं ॥ ८ ॥
10 **उज्जिंते** अत्थि नई **विहला**नामेण पव्वई पडिमा । दावेइ अंगुलीए फरिसरसो पव्वईदारं ॥ ९ ॥
सक्कावयार–उज्जितगिरिवरे तस्स उत्तरे पासे । सोवाणपंतिआए पारेवयवण्णिया पुढवी ॥ १० ॥
पंचगव्वेण वद्धा पिंडी धमिआ[4] करेइ वरतारं । फेडइ दरिद्दवाहिं उत्तारइ दुक्खकंतारं ॥ ११ ॥
सिहरे **विसालसिंगे** दीसंते पायकुट्टिमा जत्थ । तस्सासन्ने सिहरे **कच्चवडहढ** पामहो तारं ॥ १२ ॥
उज्जिंतरेवयवणे तत्थ य **सुद्दार**वानरो अत्थि । सो वामकण्णछित्तो उग्घाडइ विवरवरदारं ॥ १३ ॥
15 हत्थसएण पविट्ठो दिक्खइ सोवण्णवण्णिआ [5]रुक्खा । नीलरसेण सवंता[6] सहस्सवेही रसो नूणं ॥ १४ ॥
तं गहिऊण निअत्तो **हणुवंतं** छिवइ वामपाएण । सो ढक्कइ वरदारं जेण न जाणइ जणो कोवि ॥ १५ ॥
उज्जितसिहरउवरि **कोहंडिहरं** खु नाम विक्खायं । अवरेण तस्स य सिला तदुभयपासेसु ऊसंतु ॥ १६ ॥
तं अयसितिल[7]मीसं थंभइ पडिवायवंगिअं वंगं । दोगच्चवाहिहरणं परितुट्ठा **अंबिआ** जस्स ॥ १७ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णा य तत्थ पाहाणा । तो पिंडियमिअसंते समगुद्ध होइ वरतारं ॥ १८ ॥
20 **उज्जिंते नाणसिला** तस्स अहो कणयवण्णिआ पुढवी । वोक्कडयमुत्त-पिंडी-खइरंगारे भवे हेमं ॥ १९ ॥
नाणसिलाकयपुढवी पिंडीवद्धा य पंचगव्वेण । हढपाए वसइ रसो सहस्सवेही हवइ हेमं ॥ २० ॥
गिरिवरमासन्नठिअं आणीअं **तिलविसारणं** नाम । सिलवद्धगाढपीडे वेलक्खा तत्थ दम्माणं ॥ २१ ॥
सेणा नामेण नई सुवण्णतित्थंमि लड्डुअपहाणा । पडिवाएण य सुवं करंति[8] हेमं न संदेहो ॥ २२ ॥
बिल्लक्खयंमि नयरे **मउहहरं**[9] अत्थि सेलगं दिव्वं । तस्स य मज्झंमि ठिओ **गणवइरसकुंडओ** उवरि ॥२३॥
25 उववासी कयपूओ **गणवइ**ओ चलिऊण पवररसो । पामापेवी(?) अत्थि अ थंभइ वंगं न संदेहो ॥ २४ ॥
सहसासवं ति तित्थं करंजरुक्खेण मणहरं सम्मं । तत्थ य तुरयायारा पाहाणा तेसि दो भाया ॥ २५ ॥
इक्को पारयभाओ पिट्ठो मुत्तेण अंधमूसाए । धमिओ करेइ तारं उत्तारइ दुक्खकंतारं ॥ २६ ॥
अवलोअणसिहरसिलाअवरेणं तत्थ वररसो सवइ । सुअपक्खसरिसवण्णो करेइ सुव्वं वरं हेमं ॥ २७ ॥
गिरिपज्जुन्नवयारे **अंबिअआसमपयं** च नामेण[10] । तत्थ वि पीआ पुहवी हिमवाए होइ वरहेमं ॥ २८ ॥
30 **नाणसिला उज्जिंते** तस्स य मूलंमि मट्टिआ पीआ । साहामिअलेवेणं छायासुक्कं कुणइ हेमं ॥ २९ ॥
उज्जिंतपढमसिहरे आरुहिउं दाहिणेन अवयरिउं । तिण्णि धणूसयमित्ते **पूइकरं** जं विलं नाम ॥ ३० ॥
उग्घाडिउं विलं दिक्खिऊण निउणेन तत्थ गंतव्वं । दंडंतराणि वारस दिव्वरसो जंवुफलसरिसो ॥ ३१ ॥
जउवोलिअंमि भंडे सहस्सभाएण विंधए तारे । हेमं करइ अवस्सं हट्टंतं सुंदरं सहसा ॥ ३२ ॥

---

1 B तस्सिहरि। 2 A °कुंड्ड°। 3 A C °कप्परण°। 4 C धम्मिआ। 5 C रेखा। 6 C वसंता। 7 C °तल°। 8 B करिति। 9 C °हरंमि। 10 C नामेणं।

कोहंडिभवणपुव्वेण उत्तरे जाव तावसा भूमी । दीसइ अ तत्थ पडिमा सेलमया **वासुदेवस्स** ॥ ३३ ॥
तस्सुत्तरेण दीसइ हत्थेसु अ दससु **पव्वई**पडिमा । अवराहमुहरअगुट्ठिआइ[1] सा दानए विवरं ॥ ३४ ॥
नवधणुहाइ पविट्ठो दिक्खइ कूडाइ दाहिणुत्तरओ । हरिआलसन्निवण्णो सहस्सवेही रसो नूणं ॥ ३५ ॥
उज्जिंते नाणसिला विक्खाया तत्थ अत्थि पाहाणं[2] । ताणं उत्तरपासे दाहिणयअहोमुहो त्रिवरो ॥ ३६ ॥
तस्स य दाहिणभाए दसधणुभूमीइ हिंगुलयवण्णो । अत्थि रसो सयवेही विंधइ सुव्वं न संदेहो ॥ ३७ ॥
उसहरिसहाइकूडे पाहाणा ताण संगमो अत्थि । गयनरलिंडाकिण्णा[3] मज्झे फरिसेण ते वेही ॥ ३८ ॥
जिणभवणदाहिणेणं नउईधणुहेहिं भूमिजलुअयरी । तिरिमणुअरत्त[4]विद्धा पडिवाए तवए[5] हेमं ॥ ३९ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णा य तत्थ पाहाणा । सुव्वस्स[6] पच्चेद सवति धमिआ तयं[7] सिग्घं ॥ ४० ॥
इय **उज्जयन्त**कप्पं अविअप्पं जो करेइ जिणभत्तो । **कोहंडि**कयपणामो सो पावइ इच्छिअं सुक्खं ॥ ४१ ॥

॥ [†]श्रीउज्जयन्तमहातीर्थकल्पः समाप्तः ॥

---

५. रैवतकगिरिकल्पः ।

पच्छिमदिसाए **सुरट्ठाविसए रेवय**पव्वयरायसिहरे सिरि**नेमिनाह**स्स भवणं उत्तुङ्गसिहरं अच्छइ । तत्थ किर पुव्विं भयवओ **नेमिनाह**स्स लिप्पमई पडिमा आसि । अन्नया उत्तरदिसाविभूसणक**स्मीर**देसाओ **अजिय-रयण**-नामाणो दुन्नि बंधवा संघाहिवई होऊण **गिरिनार**मागया । तेहिं रहसवसाओ घणघुसिणरससपूरिअकलसेहिं ण्हवणं कयं । गलिआ लेवमई सिरि**नेमिनाह**पडिमा । तओ अईव अप्पाणं सोअंतेहिं तेहिं आहारो पच्चक्खाओ । इक्कवी-सइउववासाणंतरं सयमागया भगवई **अंबिआ** देवी । उट्ठाविओ संघाहिवई[8] । तेण य[9] देविं दट्ठूण जयजयसद्दो कओ । तओ भणिअं देवीए–इमं बिंबं गिण्हसु परं पच्छा न पिच्छिअव्वं[10] । तओ **अजिअ**संघाहिवइणा[11] एगतंतुकड्ढिय रयणमयं सिरि**नेमि**बिंबं कंचणबलाणए नीअं । पढमभवणस्स देहलीए आरोविता अइहरिसभरनिब्भरेण संघवइणा पच्छाभागो दिट्ठो । ठिअं तत्थेव बिंबं निच्चलं । देवीए कुसुमवुट्ठी कया । जयजयसद्दो अ कओ । एयं च बिंबं वइ-साहपुण्णिमाए अहिणवकारिअभवणे पच्छिमदिसामुहं ठविअं संघवइणा । ण्हवणाइमहूसवं काउं **अजिओ** सबंधवो निअदेसं पत्तो । कलिकाले कलुसचित्तं जणं जाणिऊण झलहलन्तमणिमयबिंबस्स कंती **अंबिआ**देवीए छाइआ ।

पुव्विं **गुज्जर**धराए **जयसिंहदेवेण**[12] **खंगारराय** हणित्ता **सज्जणो** दंडाहिवो ठाविओ । तेण अ अहिणवं **नेमि**जिणिन्दभवणं **इगारससयपंचासीए (११८५) विक्कमरायवच्छरे** काराविअं । **मालव**देसमुहमंडणेण साहु**भावडेण** सोवण्णं आमलसारं कारिअं । [13]**चालुक्कचक्किसिरिकुमारपालनरिंद**संठविअ**सोरट्ठ**दंडाहिवेण **सिरिसिरिमाल**कुलुब्भवेण[14] **बारससयवीसे (१२२०) विक्कमसवच्छरे** पज्जा काराविआ । तब्भावणा धवलेण अंतराले पवा भराविआ । पज्जाए चडंतेहिं जणेहिं दाहिणदिसाए **लक्खारामो** दीसइ ।

---

1 Pc °आई । 2 Pa पाहाणा । 3 Pa °लिंडाणि किण्णा । 4 Pa °रित्त° । 5 Pa तवय । 6 C सव्वस्स । 7 AB तयं । † Pa 'इउज्जयन्तकल्प ।' इत्येव । 8 B Pa b संघवई । 9 Pa 'य' नास्ति, Pb न । 10 PaC परिच्छ-यव्वं । 11 Pa b °संघवइणा । 12 Pb °देवेण । 13 B Pa चोलुक । 14 ACPb कुलुब्भवेण ।

अणहिल्लवाडयपट्टणे य **पोरवाड**कुलमंडणा **आसराय-कुमरदेवि**तणया **गुज्जर**धराहिवइसिरि**वीरधवल**रज्जधुरंधरा **वत्थुपाल-तेजपाल**नामधिज्जा दो भायरो मंतिवरा हुत्था। तत्थ **तेजपाल**मंतिणा **गिरिनार**तले निअनामंकिअं **तेजलपुरं** पवरगढमढपवामंदिरआरामरम्मं निम्माविअं। तत्थ य जणयनामंकिअं **आसरायविहारु** त्ति **पासनाह**भवणं काराविअं। जणणीनामेणं च **कुमरसरु** त्ति सरोवरं निम्माविअं। **तेजलपुरस्स** 5 पुव्वदिसाए **उग्गसेणगढं** नाम दुग्गं **जुगाइनाह**प्पमुहजिणमंदिररेहिल्लं विज्जइ। तस्स य तिण्णि नामधिज्जाइं पसिद्धाइं। तं जहा–**उग्गसेणगढं** ति वा, **खंगारगढं** ति वा, **जुण्णदुग्गं** ति वा। गढस्स बाहिं दाहिणदिसाए **चउरिआ-वेई-लड्डुअओवरिआ-पसुवाडया**इं ठाणाइं चिट्ठंति। उत्तरदिसाए विसालथंभसालासोहिओ **दसदसार**मंडवो गिरिदुवारे य पंचमो हरी **दामोअरो सुवण्णरेहा**नईपारे वट्टइ। **कालमेह**समीवे चिराणुवत्ता संघस्स बोलाविआ[1] †**तेजपाल**मंतिणा मिल्हाविआ कमेण **उज्जयंत**सेले। **वत्थुपाल**मंतिणा **सित्तुज्जावयार**भवणं **अट्ठावय-संमेअ**मंडवो **कवड्डिजक्ख-मरुदेवि**पासाया य कारविआ† । **तेजपाल**मंतिणा कल्लाणत्तयचेइअं कारिअं। **इंदमंडवो** अ **देपाल**मंतिणा उद्धराविओ। **एरावण**-गयपय-मुद्दाअलंकिअं **गइंदपयकुंडं** अच्छइ। तत्थ अंगं पक्खालित्ता दुक्खाण जलंजलिं दिंति जत्तागयलोआ। **छत्तसिला**कडणीए **सहस्संबवणारामो**। जत्थ भगवओ **जायव**कुलपईवस्स **सिवा-समुद्दविजय**नंदणस्स दिक्खा-नाण-निव्वाणकल्लाणयाइं[2] संजायाइं। गिरिसिहरे चडित्ता **अंबिआ**देवीए भवणं दीसइ। तत्तो **अवलोअण**सिहरं। तत्थ 15 ठिएहिं किर दसदिसाओ **नेमि**सामी अवलोइज्जइ त्ति[3]। तओ पढमसिहरे **संवकुमारो,** बीअसिहरे **पज्जुण्णो**। इत्थ पव्वए ठाणे ठाणे चेइएसु रयण-सुवण्णमयजिणबिंबाइं निच्चण्हविअच्चिआइं दीसंति। सुवण्णमेयणी अ अणेगधाउरसभेइणी दिप्पंती दीसइ। रत्तिं च दीवउ ब्व पज्जलंतीओ ओसहीओ अवलोइज्जंति। नाणाविहतरुवरवल्लिदलपुप्फफलाइं पए पए उवलब्भंति। अणवरयपझरंतनिज्झरणाणं खलहलारावयमत्तकोइल[4]भमरझंकारा य सुव्वंति त्ति।

उज्जयंतमहातित्थकप्पसेसलवो इमो। **जिणप्पह**मुणिंदेहिं लिहिओ त्थ जहासुअं॥ १॥

20 ॥ †**श्रीरैवतककल्पः समाप्तः** ॥

॥ ग्रं० १६१, अक्षर २७ ॥

---

1 Pa वालाविया। † एतद्दण्डान्तर्गता पंक्तिः पतिता C आदर्शे। 2 A कल्लाणजायाइं; Pa कल्लाणाइं जायाइं। 3 Pa °लोइज्जइ; Pb °लोइज्जंति। 4 Pb °कोयल°। † Pa इति श्रीरैवतकल्पः।

६. श्रीपार्श्वनाथकल्पः ।

सुरअसुरखयरकिन्नरजोईसरविसरमहुअराकलिअ । तिहुअणकमलागेह नमामि जिणचलणनीररुह ॥ १ ॥
ज पुव्वमुणिगणेण अविअप्पाणप्पकप्पमज्झमि । सुरनरफणिपहुमहिअ कहिअ[1] सिरि**पास**जिणचरिअ ॥ २ ॥
[2]सकिण्णसत्थनिक्खित्तचित्तवित्तीण धम्मिअजणाण । तोसकए त कप्प भणामि **पासस्स** लेसेण ॥ ३ ॥
भवभमणभेयणत्थ भविआ भवदुक्खभारभरिअगा । एय समासओ पुण पभणिज्जत मए सुणह ॥ ४ ॥ 5
विजया जया य कमठो पउमावइ-पासजक्ख-वइरुट्टा । धरणो विज्जादेवी सोलसऽहिट्ठायगा जस्स[3] ॥५
पडिमुप्पत्तिनियाण कप्पे कलिअ पि नेह सकलिअ । एयस्स गोरवभया पढिहिइ न हु को इम पच्छा ॥ ६ ॥
अह जलहिचुलुअमाण करेइ तारयविमाणसख जो । **पास**जिणपडिममहिम कहिउ न वि पारए सो वि ॥ ७ ॥
एसा पुराणपडिमा अणेगठाणेसु सठवेऊण । खयरसुरनरवरेहिं महिआ उवसग्गसमणत्थ ॥ ८ ॥
तह वि हु जणमणनिच्चलभावकए **पाससामि**पडिमाए । **इंदाई**कयमहिम कित्तिअमेयाइ[4] ता वुच्छ ॥ ९ ॥ 10
सुरअसुरवदिअपए सिरि**मुणिसुव्वय**दिणेसरे इत्थ । [5]भारहसरमि भविअणकमलाइ बोहयतमि ॥ १० ॥
चपाइ पुरवरीए एसा सिरि**पाससामि**णो पडिमा । रयणायरोवकठे जोईसरवन्निआ आसि ॥ ११ ॥
सक्कस्स कत्तिअभवे सयसखाभिग्गहा गया सिद्धि । एआए झाणाओ वयगहणाणतर तइया ॥ १२ ॥
सोहम्मवासवो त पडिमामाहप्पमोहिणा मुणिउ । अचइ तत्थेव ठिअ महाविभूईए दिव्वाए ॥ १३ ॥
एव वच्चइ कालो [6]कयवयनामेहि **राम**वणवासो । **राहव**पडिमादसणहेउ लोआण **हरि**वयणा ॥ १४ ॥ 15
रयणजडियखयरसजुअसुरजुअलेण[7] च **दडगारण्णे** । सतुरयरहो अ पडिमा दिन्नेसा **रामभद्दस्स** ॥ १५ ॥
सगमासे नवदिअहे[8] **विदेहदुहिआ**वणीयकुसुमेहि । भत्तिभरनिब्भरेण महिआ **रहुपुगवेण** तया[9] ॥ १६ ॥
रामस्स पवरकम्मयमलघणिज्ज च वसणमोडण्ण । नाऊण सुरा भुज्जो[10] त पडिम निंति त ठाण ॥ १७ ॥
पूअइ पुणो वि **सक्को** [11]पगिट्ठभत्तीइ दिव्वभोएहि । एव जा सपुण्णा एगारसवाससलक्खा य ॥ १८ ॥
तेण कालेण जउवसे **बलएव-कण्ह-जिणनाहा** । अवइन्ना सपत्ता जुव्वणमह **केसवो** रज्ज ॥ १९ ॥ 20
कण्हेण जरासधस्स विग्गहे निअदलोवसग्गेसु । पुट्ठो **नेमी** भयव पच्चूहविणासणोवाय ॥ २० ॥
तत्तो आइसइ पहू—पुरिसत्तम ! मज्झ सिद्धिगमणाओ । सगसयपण्णासाहिअतेसीसहस्सेहि वरिमाण ॥ २१ ॥
होही **पासो** अरिहा विविहाहिट्ठायगेहिं नयचलणो । जम्मच्चाण्हवणजलासित्ते लोए समइ असिव ॥ २२ ॥
सामी ! सपइ कत्थवि तस्स जिणिंदस्स चिट्ठए पडिमा ? । इअ चक्कधरेणुत्ते तमिंदमहिअ कहइ नाहो ॥ २३ ॥
इअ जिण-वयणाण अह सो मुणिउ मणोगय भाव । **मायलि**सारहिसहिअ रहमेय पडिममप्पेइ ॥ २४ ॥ 25
सुइओ मुरारिउ[12] पडिम ण्हवेइ[13] घणसारघणघणरसेहि । पूइअ[14] परिमलवहलामलचदणचारुकुसुमेहिं ॥ २५ ॥
पच्छागयगहदिन्न सिन्न सिंचेइ सामिसलिलेण । जतुवसग्गा विलय निलय जह जोगिचित्ताइ ॥ २६ ॥
नद्दुद्दवण[15] निहण पत्ते [16]पच्चद्धचक्कवट्टिमि । जाओ जयजयरावो[17] **जायव**निवनिविडभडसिन्ने ॥ २७ ॥
तत्थेव विजयठाणे निम्मानिअमहिणव जिणाएसा । **संखउर**नयरजुत्त ठविऊण **पास**पहुबिंब ॥ २८ ॥
पडिममिम सगिण्हिअ निअनयरमुवागयस्स **कण्हस्स** । भूवेहि **वासुदेव**त्तणाभिसेऊसवो विहिओ ॥ २९ ॥ 30
कण्हनरिंदेण तओ मणिकचणरयणरइअपासाए । सत्तयवाससआइ सठाविअ पूइआ पडिमा ॥ ३० ॥

---

1 Pb मइअ । 2 Pa b संखित्त°, A C P सत्ति । 3 Pa यस्स । 4 Pa कित्तियमित्ताइ । 5 P१ भरह° । 6 Pa कयवइ° 7 Pa °सयरसजुयलेण । 8 Pa °दिवसे । 9 Pa विना सर्वत्र 'तहा' । 10 Pa पुज्जो । 11 A B Pb पकिट्ठ° । 12 A Pa मुरारिउ, C ठिरिरिउ । 13 B Pb ण्हावइ । 14 Pa पूइइ, Pb पूइंअ । 15 A वट्टण । 16 Pb पच्चट्ठ° । 17 B C °रावो ।

जाए [1]**जायवजाई**पलए देवाउ **दारवइ**दाहे । सामिपहावा देवालयंमि न हु पावगो लग्गो ॥ ३१ ॥
सद्धिं [2]पुरीइ तइया जलनिहिणा रुइरमंदिरसमेओ । लोललहरीकरेहिं नाहो नीरन्तरे[3] नीओ ॥ ३२ ॥
तक्खयनागिंदेणं तइया रमणत्थमुरग[4]रमणीहिं । तत्थागएण दिट्ठा पहुपडिमा पावनिद्दलणी ॥ ३३ ॥
पमुइअमणेण तत्तो नायवहूविहिअनट्टकलहट्टं । महया महेण महिआ जावऽसिई[5]वाससहसाइं ॥ ३४ ॥
5 **वरुणो** वरहरिअवई तयवसरे सायरं पलोअंतो । **तक्खय**पूइज्जंतं पासइ तिहुअणपहुं **पासं** ॥ ३५ ॥
एसो सो गोसामी जो सुरनाहेण[6] पूइओ पुव्विं । इण्हिं मज्झवि जुज्जइ सहायणं सामिचलणाणं ॥ ३६ ॥
चिंतिअमत्थमहीणं पत्थिअ सेवइ जिणेसमणवरयं । जा चउवच्छरसहसा ठिआ य अह तेण समएणं ॥ ३७ ॥
सिरिवद्धमाणजलए तिलए लोअस्स **भरह** खित्तंमि । अविरलगोपूरेणं सिंचंते भव्वसस्साइं ॥ ३८ ॥
कंतिकलाकलुसीकयसुरपुरपउमाइ **कंति**नयरीए । वसइ सुहसत्थवाहो **धणेसरो** सत्थवाहु[7] त्ति ॥ ३९ ॥
10 सो अन्नया महिब्भो विणिग्गओ जाणवत्तजत्ताए । संजत्तिअवयजुत्तो **सिंहलदीवं**मि संपत्तो ॥ ४० ॥
तत्थ विढप्पिअ पणगणमागच्छंतस्स तस्स वेगेण । पवहणथंभो सहसा जाओ जलरासिमज्झंमि ॥ ४१ ॥
विमणमणो जा चिंतइ पयडीहोऊण सासणसुरी ता । **पउमावई** पयंपइ—मा बीहसु वच्छ ! सुण वयणं ॥ ४२ ॥
वरुणविणिम्मिअमहिमो महिमोहमरट्टमद्दणो भद्द ! । इह नीरतले चिट्ठइ **पास**जिणो नयसु सं ठाणं ॥ ४३ ॥
देवि ! कहं मह सत्ती जिणेसगहणे समुद्दजलमूला । एवं **धणेस**कहिए तो भासइ **सासणा**देवी ॥ ४४ ॥
15 पविस मह पुट्ठिलग्गो कड्ढसु पहुमामसुत्ततंतूहिं । आरोविअ पोअवरे सावय ! वय निअपुरिं सुत्थो ॥ ४५ ॥
काऊण सव्वमेयं लोगत्तयनायगं गहेऊण । संजायहरिसपगरिसपुलइअगत्तो महासत्तो ॥ ४६ ॥
खणमित्तेण सठाणं समागओ परिसरे पडकुडीओ । रइआविअ जाव ठिओ एइ जणो सम्मुहो ताव ॥ ४७ ॥
गंधव्वगीइवाइअरवेण [8]सूहवयनारिधवलेहिं । वहिरिअककुहो नाहं दाणं दिंतो पवेसेइ ॥ ४८ ॥
[9]रययामलसच्छायं पासायं कारिऊण **कंतीए** । विणिवेसिअ भुवणगुरुं निच्चं पूएइ भत्तीए ॥ ४९ ॥
20 कालंतरमावण्णे **धणेसरे** पउरनायरवरेहिं । वाससहस्से पहुणो पूइज्जंतस्स वक्कंते ॥ ५० ॥
देवाहिदेवमुत्तिं परिअररहिअं तया[10] य **कंतीए** । मेलिअ रसस्स थंभणनिमित्तमागासमग्गेण ॥ ५१ ॥
कलिअकलाकालत्तय**पालित्तय**गणहरोवएसाओ । **नागज्जुण**जोइंदो[11] आणेही अप्पणो ठाणे ॥ ५२ ॥
जोइणि गए कयत्थे नत्थं मुत्तूण नाहमडवीए । रसथंभाओ होही **थंभणयं** नाम तित्थं ति ॥ ५३ ॥
उब्भिन्नवंसयालंतरट्ठिओ सुरहिखीरण्हविअंगो । आकंठखिइनिमग्गो जणेण **जक्खु** त्ति कयनामो ॥ ५४ ॥
25 अच्चिस्सइ तयवत्थो जिणनाहो पणसयाइं वरिसाणं । तयणु **धरणिंद**निम्मिअसन्निज्झो विइअसुअसारो ॥ ५५ ॥
सिरिअभयदेवसूरी दूरीकयदुहिअरोगसंघाओ । पयडं तित्थं काही अहीणमाहप्पदिप्पंतं ॥ ५६ ॥
कंतीपुरीइ भयवं पुणो गमिस्सइ तओ अ जलहिंमि । बहुविहनयरेसु अ गड्डवगड्डव[12] महिमाइ दिप्पंतो ॥ ५७ ॥
अह को तीआणागयपडिमाठाणाण साहणसमत्थो । जइवि हु सो सहसमुहो[13] हविज्ज रसणासयसहस्सो ॥ ५८ ॥
पावा-चंप-ऽट्ठावय-रेवय-संमेअ-विमलसेलेसु । **कासी-नासिग-मिहिला-रायगिहि**प्पमुहतित्थेसु ॥ ५९ ॥
30 जत्ताइ पूअणेणं दाणेणं[14] जं फलं हवइ जीवो । तं **पास**पडिमदंसणमित्तेणं पावए इत्थ ॥ ६० ॥
मासक्खमणस्स फलं वंदणबुद्धीइ **पास**सामिस्स । छम्मासिअस्स पावइ नयणपहगयाइ पडिमाए ॥ ६१ ॥
निरवच्चो बहुतणओ धणहीणो धणयसंनिहो होइ । दोहग्गोवि हु सुहओ पहुदिट्ठीए जणो[15] दिट्ठो ॥ ६२ ॥

---

1 Pb जावण° । 2 Pa सिद्धिपुरीओ । 3 ABPa नीरतरे । 4 P °मुरगय° । 5 A B Pa जावसिवाई° । 6 P सुरलोगाहिवेण । 7 P सत्थवाहोत्थि । 8 P सूहवइ° । 9 P रइयाय° । 10 Pa तयाइ । 11 P जोगिंदो । 12 Pa गरुयगरुय । 13 C सहमुहो । 14 'दाणेणं' नास्ति C । 15 P जणे जिट्ठो ।

मुक्खत्त कुकलत्त कुजाइजम्मो कुरूव-दीणत्त । अन्नभवे पुरिमाण न हुति पहुपडिमपणयाण ॥ ६३ ॥
अडसट्ठितित्थजत्ताकए ममइ कह वि मोहिओ लोओ । तेहि तोऽणतगुण फलमप्पिंते जिणे पासे ॥ ६४ ॥
एगेण वि कुसुमेण जो पडिम महड तिव्वभावो सो । भूवालिमउलिमडलिअचरणो चक्काहिवो होइ* ॥ ६५ ॥
जे अट्ठविह पूअ कुणति पडिमाइ परमभत्तीए । तेसिं देविंदाईपयाइ[1] करपकयत्थाइ* ॥ ६६ ॥
जो वरकिरीडकुडलकेयूराईणि[2] कुणइ देवस्स । तिहुअणमडडो होऊण सो लहु लहइ सिवसुक्ख* ॥ ६७ ॥
तिहुअणचूडारयण जणनयणामयसलागिगा[3] एसा । जेहिं न दिट्ठा पडिमा निरत्थय ताण मणुअत्त* ॥ ६८ ॥
सिरिसघदास[4]मुणिणा लहुकप्पो निम्मिओ अ पडिमाए । गुरुकप्पाओ अ मया सनघलवेसमुद्धरिओ ॥ ६९ ॥
जो पढइ सुणइ चिंतइ एय कप्प स कप्पवासीसु । नाहो होऊण भवे सत्तमए पावए सिद्धिं ॥ ७० ॥
गिहचेइअमि जो पुण पुत्थयलिहिअ पि कप्पमच्चेइ । सो नारयतिरिएसु निअमा नो जाइ चिरवोही[5] ॥ ७१ ॥
हरिजलहिजलणगयगयचोरोरगगहनिवारियारिपेयाण । वेयालसाइणीण भयाइ नासति दिणि[6] भणणे ॥ ७२ ॥
भव्वाण पुत्तसोहा पाणीआइन्नहिअयठाण पि । कप्पो कप्पतरू इव विलसतो वछिअ देउ* ॥ ७३ ॥
जावय मेरुपईवो महिमल्लिअओ समुद्दजलतिल्लो । उज्जोअतो चिट्ठइ नरखित्त ता जयउ[7] कप्पो ॥ ७४ ॥

॥ इति श्रीपार्श्वनाथस्य कल्पसंक्षेपः† ॥ ५ ॥

§दढवाहिविहुरिअगा अणसणगहणत्थमाहविअसघा । नवसुत्तवुक्कुडि[8]विमोहणाय भणिआ निसि सुरीए ॥ १ ॥
दीनिअहत्थअसत्ती नवगविवरणकहाचमुक्करिआ । थंभणयपासवदणउवइट्ठारोगविहिणो अ ॥ २ ॥
संभाणयाउ चलिआ[9] धवलक्कपुरा पर[10] चरणचारी । थभणपुरंमि पत्ता सेढीतडजरपलासवणे ॥ ३ ॥
गोपयझरणुवरक्खिअ सुवि 'जयतिहुअण' थवद्धपच्चक्खे । पासे पूरिअथवणा गोविअसकलतविचदुगा ॥ ४ ॥
सघकरानिअभवणे गयरोगा ठविअ पासपहुपडिमा । सिरिअभयदेवसूरी विजयतु नवगविचिकरा ॥ ५ ॥

जन्माग्रेऽपि[11] चतु सहस्रशरदो देवालये योऽर्चित
स्वामी वासवनागुदेववरुणै सर्वाब्धिमध्ये तत ।
कान्त्यामिभ्यधनेश्वरेण महता नागार्जुनेनाञ्चित
पायात् स्तम्भनके पुरे स भवत श्रीपार्श्वनाथो जिन ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीस्तम्भनककल्पः ॥ ग्रं० १०० (प्रत्यन्तरे १११)

---

* एतत्तारकाङ्किता गाथा P आदर्श नोपलभ्यन्ते । 1 Pb °कयाइ । 2 C Pb केऊरा° । 3 Pb सिलागा । 4 Pb सघदास° । 5 P चिरवोहो । 6 P दिण° । 7 Pb जयइ । † P इति श्रीपार्श्वकल्प सक्षेपत । § पद्यपञ्चात्मिका एषा स्तुतिर्नोपलभ्यते A आदर्शे । 8 Pa कुक्कुडि° । 9 AP चलिआउ । 10 AP पुरं । 11 A B Pa b यन्मार्गेऽपि ।

७. अहिच्छत्रानगरीकल्पः ।

तिहुअणभाणु त्ति जए पयडं नमिऊण **पासजिणचंदं** । **अहिछत्ताए** कप्पं जहासुअं किंपि जंपेमि ॥ १ ॥

इहेव **जंबुद्दीवे** दीवे **भारहे** वासे मज्झिमखंडे **कुरुजंगल**जणवए **संखावई** नाम नयरी रिद्धिसमिद्धा हुत्था । तत्थ भयवं **पाससामी** छउमत्थविहारेणं विहरंतो काउस्सग्गे ठिओ । पुव्वनिबद्धवेरेण **कमठासुरेण** अविच्छि-
5 न्नधारापवाएहिं वरिसंतो अंबुहरो विउव्विओ । तेण सयले महिमंडले एगवण्णवीभूए आकंठमग्गंगं भगवंतं ओहिणा आभोएऊण पंचग्गिसाहणुज्जयकमढमुणिआणाविअकट्ठखोडीअंतरडज्झंतसप्पभवउवयारं सुमरंतेण धरणिंदेण नागराएण अग्गमहिसीहिं सह आगंतूण मणिरयणचिंचइअं सहस्ससंखफणामंडलछत्तं सामिणो उवरिं करेऊण[1] हिट्ठे कुंडलीकय-भोगेण संगिण्हिअ सो उवसग्गो निवारिओ। तओ परं तीसे नयरीए **अहिच्छत्त** त्ति नामं संजायं । तत्थ पायारकारएहिं[2] जहा जहा पुरओ ठिओ उरगरूवी धरणिंदो कुडिलगईए सप्पइ तहा तहा इट्टनिवेसो कओ । अज्ज वि तहेव पायार-
10 रयणा दीसइ । सिरि**पास**सामिणो चेइअं संवेण कारिअं । चेइआओ पुव्वदिसि अइमहुरपसन्नोदगाणि कमढजलहरु-ज्झिअजलपुन्नाणि सत्त कुंडाणि चिट्ठंति । तज्जलेसु विहिअण्हाणाओ निंदूओ थिरवच्छाओ हवंति[3] । तेसिं कुंडाणं मट्टिआए धाउवाइआ[4] धाउसिद्धिं भणंति । पाहाणलट्ठिमुद्दिअमुहा सिद्धरसकूविआ य इत्थ दीसइ । तत्थ **मिच्छरा-यस्स** अणेगे अग्गिदाणाईउग्घाडणोवक्कमा निप्फलीहूआ । तीसे पुरीए अंतो बहिं च पत्तेयं कूवाणं दीहिआणं च सवायं लक्खं अच्छइ[5] । महुरोदगाणं जत्तागयजणाणं **पास**सामिचेइए ण्हवणं कुणंताणं अज्ज वि कमढो खरपवणदुद्दि-
15 णवुट्ठिगज्जिअविज्जुमाइ दरिसेइ । मूलचेइआओ नाइदूरे **सिद्धखित्तं**मि **पास**सामिणो **धरणिंद-पउमावई**सेविअस्स चेइअं । पायारसमीवे सिरि**नेमि**मुत्तिसहिआ **सिद्ध-बुद्ध**कलिआ अंबलुंबिहत्था सिंहवाहणा **अंबा**देवी चिट्ठइ । ससिकरनिम्मलसलिलपडिपुन्ना **उत्तरा**भिहाणा वावी । तत्थ मज्जणे कए तम्मट्टिआलेवे अ कुट्ठीणं कुट्ठरोगोवसमो हवइ । **धन्नंतरि**कूवस्स य पिंजरवण्णाए मट्टिआए गुरूवएसा कंचणं उप्पज्जइ । **बंभकुंड**तडपरूढाए मंडुक्कबंभीए दलचुण्णेण एगवण्णगोखीरेण सगं पीएण पण्णामेहासंपण्णो नीरोगो किंनरसरो अ होइ । तत्थ य पाएणं उववणेसु सव्वमहीरुहाणं
20 चंदया उवलब्भंति । ताणि ताणि अ कज्जाणि साहिंति[6] । तहा **जयंती-नागदमणी-सहदेवी-अपराजि-आ-लक्खणा-तिवण्णी-नउली-सउली-सप्पक्खी[7]-सुवण्णसिला-मोहणी-सामली-रविभत्ता-निव्विसी-मोरसिहा-सल्ला-विसल्ला**पभिईओ महोसहीओ इत्थ वट्टंति । लोइआणि अ अणेगाणि **हरि-हर-हिरण्णगब्भ-चंडिआ**भवण-**बंभकुंडा**ईणि तित्थाणि । तहा एसा नयरी महातवस्सिस्स खुगिहीयनामधेअस्स **कण्ह-**रिसिणो जम्मभूमि त्ति । तप्पयपंकयपरागकणनिवाएण पवित्तीकया एयवत्थव्वस्स **पास**सामिस्स संभरणेणं आहि-वाहि-
25 सप्प-विस-हरि-करि-रण-चोर-जल-जलण-राय-दुट्ठ-गह-मारि-भूअ-पेअ-साइणिपमुहखुद्दोवद्दवा न पहवंति, भविआणं ति । †विसेसओ[8] सयलातिसयनिहाणं एसा पुरी† ।

इअ एस **अहिच्छत्ता**कप्पो उववण्णिओ समासेणं । सिरि**जिणपह**सूरीहिं **पउमावइ-धरण-कमढ**पिओ ॥ १॥

॥ अहिच्छत्राकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रंथाग्रं० ३६ ॥

---

1 P धारेऊण । 2 P विना सर्वत्र 'पायारएहिं' । 3 C भवंति । 4 A धाउवाई । 5 Pa विवट्टइ । 6 Pa साहंति । 7 A C सप्परक्खी । 8 P विना नास्त्यन्यत्रेदं पदम् । † P आदर्शे एवेदं वाक्यं दृश्यते ।

८. अर्बुदाद्रिकल्पः ।

अर्हन्तौ प्रणिपत्याहं श्रीमन्नाभेय-नेमिनौ । महाद्रेरर्बुदाख्यस्य कल्पं जल्पामि लेशतः ॥ १ ॥
देव्याः श्रीमातुरुत्पत्तिमादौ वक्ष्ये यथाश्रुतम् । [1]तदधिष्ठानतो ह्येष प्रख्यातो भुवि पर्वतः ॥ २ ॥
श्रीरत्नमालनगरे राजाभूद् रत्नशेखरः । सोऽनपत्यतया दूनः प्रैषीच्छाकुनिकान् बहिः ॥ ३ ॥
शिर[ ]स्था काष्ठभारिण्यास्ते दुर्गां दुर्गतस्त्रिया । वीक्ष्य व्यजिज्ञपन् राज्ञे भाव्यस्यास्त्वत्पदे सुतः ॥ ४ ॥ 5
राजादिष्टा सगर्भैव सा हन्तुं तन्नरैर्निशि । गर्ते क्षिप्ता कायचिन्ताव्याजात्तस्माद्बहिर्निरैत् ॥ ५ ॥
साऽसूत सूनुं मयार्त्ता द्राक् च झाटान्तरेऽमुचत् । गर्तं[2] चानीय तद्वृत्तानभिज्ञैस्तैरघाति सा ॥ ६ ॥
पुण्यैरितार्भं स्तन्य चार्पीपत्सन्ध्याद्वये मृगी । प्रवृद्धेऽसिंश्चङ्कमाला महालक्ष्म्या पुरोऽन्यदा ॥ ७ ॥
मृग्याश्चतुर्णां पादानामधो नूतननाणकम् । जातं श्रुत्वा शिशुरूपं लोके वार्ता व्यजृम्भत[3] ॥ ८ ॥
नव्यो[4] नृपोऽभूत्कोऽपीति श्रुत्वा प्रैषीद् भटान्नृपः । तद्वधायाथ तं दृष्ट्वा सायं ते पुरगोपुरे ॥ ९ ॥ 10
बालहत्याभियाऽमुञ्चन् गोयूथस्यायतः[5] पथि । तत्तथैव स्थितं भाग्यादेकस्तूक्षा पुरोऽभवत् ॥ १० ॥
तत्प्रेर्य स[6] चतुष्पादान्तराले तं शिशुं न्यधात् । तच्छ्रुत्वा मन्त्रिणोधाच्च राजाऽमस्तौरसं मुदा ॥ ११ ॥
श्रीपुञ्जाख्यः क्रमात्सोऽभूद् भूपस्तस्याऽभवत् सुता । श्रीमाता रूपसंपन्ना केवलं प्लवगानना ॥ १२ ॥
तद्वैराग्यान्निर्विषया जातु जातिस्मरा पितुः । न्यवेदयत् प्राग्भवं स्वं यदाऽऽस वानरी पुरा ॥ १३ ॥
सञ्चरन्त्यर्बुदे शाखिशाखा तालुनि केनचित् । विद्धा मृग्यथ रुण्डं मे कुण्डेऽपतत्तरोरधः ॥ १४ ॥ 15
तस्य कामिततीर्थस्य माहात्म्यान्नृतनुर्मम । मस्तकं तु तथैवास्तेऽध्याप्यत कपिमुख्यहम् ॥ १५ ॥
श्रीपुञ्जो[7]ऽक्षेपयच्छीर्षं कुण्डे प्रेष्य निजान्नरान् । ततः सा नृमुखी जज्ञेऽतपस्यच्चार्बुदे गिरौ ॥ १६ ॥
व्योमगाम्यन्यदा योगी दृष्ट्वा तां रूपमोहितः । स्वादुचीर्यालपत् प्रेम्णा—मां कथं वृणुषे शुभे† ! ॥ १७ ॥
सोचेऽत्यगाद्यामो रात्रेस्तावदतः परम् । ताम्रचूडरतादर्वाक् कयाचिद्विद्यया यदि ॥ १८ ॥
शैलेऽत्र कुरुषे हृद्याः पद्याः[8] द्वादश तर्हि मे । वरः स्या इति, चेटैः स्वैर्विद्ययाम्याचीकरत्स ताः ॥ १९ ॥ 20
स्वशक्त्या कुर्कुटरवे कृतके कारिते तया । निषिद्धोऽपि विवाहाय नास्थात्तत्कैतवं विदन् ॥ २० ॥
सरित्तीरेऽथ तं स्वला क्लृप्तवीवाहसम्भृतिम्[9] । सोचे त्रिशूलमुत्सृज्य विवोढुं सन्निधेहि मे ॥ २१ ॥
तथा कृत्वोपागतस्य पदयोर्विकृतान् शुनः । नियोज्य साऽस्य शूलेन हृद्यस्तेन[10] वधं व्यधात् ॥ २२ ॥
इत्याजन्माखण्डशीला जन्म नीत्वा स्वराप सा । श्रीपुञ्जोऽशिखरं[11] तत्र तत्प्रासादमचीकरत् ॥ २३ ॥
षण्मासान्तेऽर्बुदाख्योऽस्याधोभागेऽद्रेश्चलत्यहिः । ततोऽद्रिकम्पस्तत्सर्वे[12] प्रासादाः शिखरं विना ॥ २४ ॥ 25

लौकिकास्त्वाहुः –

'नन्दिवर्द्धन इत्यासीत् प्राक् शैलोऽयं हिमाद्रिजः । कालेनार्बुदनागाधिष्ठानात्त्वर्बुद इत्यभूत्' ॥ २५ ॥
वसन्ति द्वादश ग्रामा अस्योपरि [13]धनोद्धुराः । तपस्विनो गोग्गलिका राष्ट्रिकाश्च सहस्रशः ॥ २६ ॥
न स वृक्षो न सा वल्ली न तत् पुष्पं न तत् फलम् । न स कन्दो न सा खानिर्या नैवात्र निरीक्ष्यते ॥ २७ ॥
प्रदीपवन्महौषध्यो जाज्वलन्त्यत्र रात्रिषु । सुरभीणि रसाढ्यानि वनानि[14] द्विविधान्यपि ॥ २८ ॥ 30
स्वच्छन्दोच्छलदच्छोर्मिस्तीरद्रुकुसुमाञ्चिता । पिपासुक्लृप्तानन्दाऽत्र भाति मन्दाकिनी धुनी ॥ २९ ॥
चकासत्यस्य शिखराण्युत्तुङ्गानि सहस्रशः । परिस्खलन्ति सूर्यस्य येषु रथ्या अपि क्षणम् ॥ ३० ॥

---

1 P यदधि° । 2 Pa गर्भं । 3 C व्यजृम्भतेते । 4 Pa भव्यो । 5 A C गोयूथ । 6 A C तत्प्रेर्यं च स । 7 P विना सवन 'श्रीपुंज' । † P मां वृणीषे कथं शुभे । 8 'पद्या' पतित Pa । 9 Pb सम्भृतिम् । 10 P मां स्वशूलेना दल सेर वध । 11 P श्रीपुञ्ज शिखरे । 12 A B Pb °सर्वं° । 13 'धनो' पतित C आदर्श । 14 'वनानि' पतित P ।

चण्डाली-वज्रतैलेभकन्दाद्याः कन्दजातयः । दृश्यन्तेऽत्र प्रतिपदं तत्तत्कार्यप्रसाधिकाः ॥ ३१ ॥
प्रदेशाः पेशलाः कुण्डैस्तत्तदाश्चर्यकारिभिः । अस्य धातुखनीभिश्च निर्झरैश्चामृतोदकैः ॥ ३२ ॥
कोकूयिते कृतेऽत्रोच्चैर्द्राक् **कोकूयित**कुण्डतः । प्रादुर्भवति वाःपूरः कुर्वन् खलहलारवम् ॥ ३३ ॥
श्रीमाता-ऽचलेश्वरश्च **वशिष्ठाश्रम** एव च । अत्रामी लौकिकास्तीर्था **मन्दाकिन्या**दयोऽपि च ॥ ३४ ॥
5 महाद्रेरस्य नेतारः **परमार**नरेश्वराः । पुरी **चन्द्रावती** तेषां राजधानी निधिः श्रियाम् ॥ ३५ ॥
कलयन् विमलां बुद्धिं **विमलो** दण्डनायकः । चैत्यमत्र**र्षभ**स्याधात् पैत्तलप्रतिमान्वितम् ॥ ३६ ॥
आराध्या**म्बां** भगवतीं पुत्रसंपदपस्पृहः । तीर्थस्थापनमभ्यर्थ्य चम्पकद्रुमसंनिधौ ॥ ३७ ॥
पुष्पस्रग्दामरुचिरं दृष्ट्वा गोमयगोमुखम् । तत्राग्रहीद् भुवं दण्डेट् **श्रीमातु**र्भवनान्तिके ॥ ३८ ॥–युग्मम् ।
राजानकश्री**धान्धूके** क्रुद्धं श्री**गूर्जरेश्वरम्** । प्रसाद्य भक्त्या तं **चित्रकूटा**दानाय्य तद्गिरा ॥ ३९ ॥
10 **वैक्रमे वसुवस्वाशा (१०८८)** मितेऽब्दे भूरिरैव्ययात् । सत्प्रासादं[1] स **विमलवसत्या**ह्वं व्यधापयत् ॥४०॥
यात्रोपनम्रसंघस्यानिघ्नविघ्नविघातनम् । कुरुतेऽत्रा**म्बिका** देवी पूजिता बहुभिर्विधैः ॥ ४१ ॥
युगादिदेवचैत्यस्य पुरस्तादत्र चाश्मनः । एकरात्रेण घटितः शिल्पिना तुरगोत्तमः ॥ ४२ ॥
वैक्रमे वसुवस्वर्के (१२८८) मितेऽब्दे **नेमि**मन्दिरम् । निर्ममे **लूणिगवसत्या**ह्वयं सचिवेन्दुना ॥ ४३ ॥
कषोपलमयं बिम्बं श्री**तेजःपाल**मन्त्रिराट् । तत्र न्यास्थत् **स्तम्भतीर्थे** निष्पन्नं दृक्सुधाञ्जनम् ॥ ४४ ॥
15 मूर्त्तीः स्वपूर्ववंश्यानां हस्तिशालां च तत्र सः । न्यवीविशद्विशांपत्युः श्री**सोमस्य** निदेशतः ॥ ४५ ॥
अहो ! **शोभनदेव**स्य सूत्रधारशिरोमणेः । तच्चैत्यरचनाशिल्पान्नाम लेभे यथार्थताम् ॥ ४६ ॥
वज्रात्रातः समुद्रेण **मैनाको**ऽस्यानुजो गिरेः । समुद्रौ त्रातौ त्वनेन दण्डेन्मन्त्रीश्वरौ भवात् ॥ ४७ ॥
तीर्थद्वयेऽपि भग्नेऽस्मिन् दैवान्म्लेच्छैः प्रचक्रतुः । अस्योद्धारं द्वौ **शकाब्दे वह्निवेदार्कसंमिते (१२४३)** ॥४८॥
तत्राद्यतीर्थस्योद्धर्त्ता **लल्लो महणसिंह**भूः । **पीथड**स्त्वितरस्याभूद्व्यवहृ**च्चण्डसिंह**जः ॥ ४९ ॥
20 **कुमारपाल**भूपालश्चौलुक्यकुलचन्द्रमाः । श्री**वीर**चैत्यमस्योच्चैः शिखरे निरमीमपत् ॥ ५० ॥
तत्तत्कौतूहलाकीर्ण्णं तत्तदौषधिबन्धुरम् । धन्याः पश्यन्त्य**र्बुदा**द्रिं नैकतीर्थपवित्रितम् ॥ ५१ ॥
दृब्धः श्रोत्रसुधाकल्पः श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः । श्रीम**दर्बुदकल्पो**ऽयं चतुरैः परिचीयताम् ॥ ५२ ॥

॥ **श्रीअर्बुदकल्पः समाप्तः**[†] ॥

॥ ग्रन्थाग्रं ५२ अक्षर १६ ॥

---

1 A C प्रासाद । † P श्रीअर्बुदाचलस्य कल्पः ।

९. मथुरापुरीकल्पः ।

सत्तम-तेवीसइमे नमिऊण जिणेसरे जयमरणे । भवियजणमणह्कर **महुरा**कप्प पवक्खामि ॥ १ ॥
तित्थे **सुपासनाहस्स** वट्टमाणमि दुन्नि मुणिसीहा । [1]**धम्मरुइ-धम्मघोसा** नामेण आसि निस्सगा[2] ॥ २ ॥

ते य छट्ठट्ठमदसमदुवालसमपक्खोवनासमासिअदोमासिअतेमासिअचाउम्मासिअखमणाइ कुणिन्ता[3] भव्वे[4] पडिबोहिंता कयावि **महुराउरिं** विहरिआ । तया य **महुरा** बारहजोअणाइ दीहा, नवजोअणाइ वित्थिण्णा, पासट्ठिअज- 5
उणाजलपक्खालियनरप्पायारविभूसिआ धवलहरदेउलवाविकूवपुक्खरिणिजिणभवणहट्टोवसोहिआ, पढतविविहचाउव्विज्जविप्पसत्था हुत्था । तत्थ ते मुणिवरा अणेगतरुकुसुमफलल्याइण्णे **भूअरमणा**भिहाणे उववणे उग्गह अणुण्णविअ ठिआ वासारत्त चउमास कओनवासा । तेसिं सज्झायतवचरणपसमाइगुणेहि आवज्जिया उववणसामिणी **कुबेरदेवया** । तओ सा रत्तिं पयडीहोऊण भणइ—भयव ! तुम्ह गुणेहिं अईवाह हिट्ठा । ता कि पि वर वरेह[5] । ते भणति—अम्हे निस्सगा न कि पि मग्गेमो ।-तओ धम्म सुणाविचा अविरयसाविआ सा तेहि कया । अन्नया कत्तिअ- 10
धवलट्ठमिरयणीए सिज्जायरिं चि आपुच्छिया **कुबेरा** मुणिवरेहि । जहा—साविए ! दढसम्मत्ताए जिणवदणपूअणोवउत्ताए य होअव । वट्टमाणजोगेण चउमासग काउ अन्नगामे पारणत्थ विहरिस्सामो । तीए ससोगाए वुत्त—भयव ! इत्थेव उववणे कीस न सव्वकाल चिट्ठह । साहू भणति—

समणाण सउणाण[6] ममरकुलाण च गोउलाण च । अणियाओ वसहीओ सारद्याण च मेहाण ॥ १ ॥ ति ।

तीए विण्णत्त—जइ एव ता साहेह धम्मकज्ज, जहाऽह सपाडेमि । अमोह देवदसण ति । साहूहि वुत्त—जइ 15
ते अइनिब्बधो ता सघसहिए अम्हे मेरुमि नेऊण चेइयाइ वदावेहि । तीए भणिअ—तुम्हे दो जणे अह देवे तत्थ वदावेमि । **महुरा**सघे चालिए[7] मिच्छद्दिट्ठी देवा[8] कयावि अतराले विग्घ कुणति । साहू भणति—अम्हेहि आगमबलेण चेव मेरू दिट्ठो[9] । जइ[10] सघ नेउ न तुह सत्ती ता अलाहि अम्हे दुण्ह तत्थ गमणेण । तओ विलक्खीहूआए देवीए भणिअ—जइ एव ता पडिमाहि सोहिअ मेरुआगार काउ दावेमि । तत्थ सघसहिआ तुम्हे देवे वदह । †साहूहिं[11] पडिवन्न । तओ[12] तीए[13] देवीए† कचणघडिओ रयणचिंचईओ अणेगसुरपरिवरिओ तोरणझयमालालकिओ 20
सिहरोवरिछत्तत्तयमाली रत्ति थूभो निम्माविओ मेहलातिगमडिओ । इक्किक्काए मेहलाए चाउद्दिस पचवण्णरयणमयाइ बिंबाइ[14] । तत्थ मूलपडिमा सिरि**सुपास**सामिणो पइट्ठाविआ । पहाए लोआ विबुद्धा त थूभ पिच्छति परुप्पर कलहति अ । केई भणति—**वासुइलछणो** एस **सयंभू देवो** । अन्ने भणति*—**सेस**सिज्जा[15]ठिओ **नारायणो** एस । एव **बभ-धरणिंद-सूर-चंदाइसु** विभासा । **बुद्धा** भणति* न एस थूभो किंतु **बुद्धडउ**[16]त्ति । तओ मज्झत्थपुरिसेहि भणिअ—मा कलहेह । एस ताव देवनिम्मिओ ता सो चेव ससय भजिस्सइ त्ति । अप्पप्पणो देव पडेसु लिहित्ता 25
निअगुट्ठीमिआ अच्छह । जस्स देवो भविस्सइ तस्सेव इक्को पडो थक्किस्सइ । अन्नेसिं पडे देवो चेव नासेहिइ । सघेणावि **सुपास**सामिपडो लिहिओ । तओ लेहिअनिअनिअदेवपडा सगुट्ठीआ पूअ काउ नवमीरत्तीए सव्वदरिसणिणो गायन्ता ठिआ । अद्धरत्ते उद्दडपवणो तणसक्करपत्थरजुत्तो पसरिओ । तेण सव्वे वि पडा तोडित्ता नीया । पलयगज्जिरवेण नट्ठा दिसोदिसिं जणा । इक्को चेव **सुपास**पडो ठिओ । विम्हिआ लोआ । एस **अरिहंतो** देवो त्ति । सो पडो सयलपुरे भामिओ । पडजत्ता पवत्तिआ । तओ न्हवण पारद्ध । पढमन्हवणकए कलहता सावया महल्लपुरिसेहि 30

---

1 'धम्मरइ' पतित D आदर्शे । 2 C निसग्गा । 3 Pa कुणन्ता । 4 A भट्ठ । 5 एतद्वाक्य पतित C आदर्श । 6 D नास्ति एष शब्द । 7 Pa चडिए । 8 Pa सुरा । 9 A मेरु जाणामो C D Pc वन्दिअवे । 10 'जइ' नास्ति A आदर्श । 11 C साहूण । 12 'तओ' नास्ति C D । 13 C D रत्तीए । † एतत्पाठस्थाने Pa b 'साहूहिं पडिवन्ने देवीए' एष पाठ । 14 Pa 'बिंबाइ' नास्ति । * तारकान्तर्गता पक्ति Pa आदर्शे न विद्यते । 15 A विज्जा । 16 C D बुद्धिंडउ ।

⁰'गोलएसु नामगब्भेसु जस्स नाम पढमं कुमारीहत्थे एइ सो दरिद्दो ईसरो वा पढमं न्हवणं करेउ'-एवं दसमरयणीए ववत्था कया। तओ एगारसीए दुद्ध-दहि-घय-कुंकुम-चंदणाईहिं कलससहस्सेहिं सड्ढा न्हाविंसु। पच्छन्नठिआ सुरा न्हाविंति। अज्जवि तहे व जत्ताए⁰ आविंति। कमेण सव्वेहिं न्हवणे कए पुप्फ-धूव-वत्थ-महाधय-आहरणाइं आरोविंति। साहूणं वत्थ-घय-गुलाईणि दिंति। बारसिरत्तीए माला चडाविआ। एवं ते मुणिवरा देवे वंदिअ सयलसंघमाणंदिअ
5 चउमासं काउं अन्नत्थपारणं काऊण तित्थं पयासिअ धुअकम्मा कमेण सिद्धिं पत्ता। तत्थ सिद्धखित्तं जायं। तओ मुणिविओयदुहिआ देवी निच्चं जिणचणरया अद्धपलिओवमं आउअं भुंजित्ता चविऊण माणुसत्तं पाविऊण उत्तमपयं पत्ता। तीए ठाणे जा जा उप्पज्जइ सा सा **कुबेर** त्ति भण्णइ। तीए परिरक्खिज्जंतो थूभो बहुं कालं[1] उग्घाडओ ठिओ जाव **पास**सामी उप्पण्णो। इत्थंतरे **महुराए** रण्णा लोभपरव्वसेण जणो हक्कारिऊण भणिओ-एयं कणयमणिनिम्मिअं थूभं कड्ढिअ मह भंडारे खिवह। तओ सारघडिअकुहाडेहिं जाव लोओ कड्ढणत्थं घाए पदिण्णे ताव ते कुहाडा
10 न लग्गंति। तेसिं चेव घायदायगाणं अंगेसु घाया लग्गंति। तओ राइणा अपत्तिअंतेण सयं चिअ घाओ दिण्णो। कुहाडेणं उच्छलिअ रण्णो सीसं छिन्नं। तओ देवयाए कुद्धाए पयडीहोऊण भणिआ जाणवया-रे पावा! किमेयमाढत्तं। जहा राया तहा तुम्हे वि मरिस्सह। तओ तेहिं भीएहिं धूवकडच्छुअहत्थेहि देवया खामिआ। देवीए भणिअं-जइ जिणहरं अच्चेह ता उवसग्गाओ मुच्चेह[3]। जो जिणपडिमं सिद्धालयं वा पूइस्सइ तस्स घरं थिरं होही, अन्नहा पडिस्सइ। अओ चेव मंगलचेइअपरूवणाए **कप्पे** छेयगंथे **महुरा**भवणाइं निदंसणीकयाइं। पइवरिसं जिणपडो
15 पुरे भामेयव्वो त्ति। कुहाडयछट्टी य[4] कायव्वा। जो इत्थ राया भवइ तेण जिणपडिमा पइट्ठाविअ जिमिअव्वं, अन्नहा न जीविहि त्ति। तं सव्वं देवयावयणं तहेव काउमाढत्तं लोएहिं। अन्नया **पास**सामी केवलिविहारेण विहरंतो **महुरं** पत्तो। समोसरणे धम्मं साहइ। दूसमाणुभावं च भाविणं पयासेइ। तओ भगवंते अन्नत्थ विहरिए संघं हक्कारिअ भणिअं **कुबेराए;** जहा-आसन्ना दूसमा परूविआ सामिणा। लोओ राया य लोभग्घत्था[5] होहिन्ति। अहं च पमत्ता न य चिराउसा। तओ उग्घाडयं एयं थूभं सव्वकालं न सक्किस्सामि रक्खिउं। तओ संघाएसेण इट्टाहिं ढकेमि।
20 तुम्हेहि वि बाहिरे **पास**सामी सेलमइओ पुज्जिअव्वो। †जा य अम्ह बइसणए† अन्नावि देवी होही सा अब्भिंतरे पूअं करिस्सइ। तओ बहुगुणं ति अणुमन्निअं[6] संघेण। देवीए तहे व कयं। तओ **वीर**नाहे सिद्धिं गए **साहिएहिं तेरससएहिं** वरिसाणं **बप्पहट्टि**सूरी उप्पण्णो। तेण वि एयं तित्थं उद्धरिअं। **पास**जिणो पूआविओ। सासयपूअकरणत्थं काणणकूवकोट्टा[7] काराविआ। **चउरासीई** एणीओ दाविआओ। संघेण इट्टाओ खसंतीओ मुणिचा पत्थरेहि वेढाविओ उक्खिल्लाविउमाढत्तो थूभो। देवयाए सुमिणंतरे वारिओ। न उग्घाडेयव्वो एसु त्ति। तओ देव-
25 यावयणेणं न उग्घाडिओ, सुघडिअपत्थरेहि परिवेढिओ अ। अज्जवि देवेहिं रक्खिज्जइ। बहुपडिमसहस्सेहिं देउलेहिं आवासणिआपएसेहिं मणोहराए गंधउडीए **चिल्लणिआ-अंबाई-अणेगखित्तपालाईहिं**[8] अ संजुत्तं एयं जिणभवणं विरायइत्ति।

इत्थ नयरीए **कण्हवासुदेवस्स** भावितित्थंकरस्स जम्मो। **अज्जमंगू**आयरिअस्स जक्खभूअस्स **हुंडियजक्खस्स** य चोरजीवस्स इत्थ देउलं चिट्ठइ।

30 इत्थ पंच थलाइं। तं जहा-**अक्कथलं वीरथलं पउमत्थलं कुसत्थलं महाथलं**। दुवालसवणाइं। तं जहा-**लोहजंघवणं महुवणं बिल्लवणं तालवणं कुमुअवणं विंदावणं भंडीरवणं** [9]**खइरवणं कामिअवणं कोलवणं बहुलावणं महावणं**।

---

0 एतच्चिह्नान्तर्गताः पङ्क्तयः पतिताः Pa आदर्शे। 1 B बहुकालं। 2 D नास्ति। 3 Pa विनाऽन्यत्र 'मुंचह'। 4 'य' नास्ति A। 5 Pa लोहग्गत्था। † एतदन्तर्गताः शब्दाः पतिताः D आदर्शे। 6 Pa अणुमन्निए। 7 A D ०कुट्टा; Pb c ०कुड्डा। 8 A B अंबाइआखित्त०। 9 A खयर०।

इत्थ पंच लोइअतित्थाइं । तं जहा–विस्संतिअतित्थं असिकुंडतित्थं वेकुंठतित्थं कालिंजरतित्थं चक्कतित्थं ।

सित्तुंजे रिसहं, गिरिनारे नेमिं, भरुअच्छे मुणिसुव्वयं, मोढेरए वीरं, महुराए सुपास-पासे[1] घडिआदुगब्भंतरे नमित्ता सोरट्ठे दुढणं[2] विहरित्ता गोवालगिरिंमि जो भुंजेइ तेण आमरायसेविअ-कमकमलेण सिरिबप्पहट्टिसूरिणा अट्ठसयछव्वीसे (८२६) विक्कमसंवच्छरे सिरिवीरबिंबं महुराए ठाविअं। 5

इत्थ सिरिवीरवद्धमाणजीवेण विस्सभूइणा अपरिमिअबलत्तणकए नियाणं कयं ।

इत्थ जउणा वंकजउणराएण हयस्स दंडअणगारस्स केवले उप्पन्ने महिमत्थं इंदो आगओ ।

इत्थ जिअसत्तुनरिंदपुत्तो कालवेसिअमुणी अरिसरोगट्टिओ मुग्गिलगिरिंमि संदेहे वि निप्पडो उव-सग्गे अहिआसिंसु ।

इत्थ संखरायरिसितवप्पहावं दट्ठु सोमदेवदिओ गयउरे दिक्खं घेत्तूण सग्गं गंतूण कासीए हरि-10 एसबलरिसी देवपुज्जो जाओ ।

इत्थ उप्पण्णा रायकन्ना निव्वुई नाम राहावेहिणो सुरिंददत्तस्स सयंवरा जाया ।

इत्थ कुवेरदत्ताए कुवेरसेणाजणणी कुवेरदत्तो अ भाया ओहिन्नाणेण नाउं अट्ठारसनत्तएहिं पडिबोहिया ।

इत्थ अज्जमंगू सुअसागरपारगो इड्ढिरससायगारवेहिं जक्खत्तमुवागम्म जीहापसारणेण साहूणं अप्पमायकरणत्थं पडिबोहमकासी । 15

इत्थ कंबल-संबलनामाणो वसहपोआ जिणदाससंसग्गीए पडिबुद्धा नागकुमारा होऊण वीरवरस्स भगवओ नावारूढस्स उवसग्गं निवारिंसु ।

इत्थ अन्निआपुत्तो पुप्फचूलं पव्वाविअ संसारसायराओ उत्तारित्था ।

इत्थ इंददत्तो पुरोहिओ गवक्खट्ठिओ मिच्छद्दिट्ठी अहोवच्चतस्स साहुस्स मत्थयउवरिं पायं कुणंतो सड्ढेण गुरुभत्तीए पयहीणो कओ । 20

इत्थ भूअघरे ठिआ निगोअवत्तव्वयं निआउपरिमाणं च पुच्छिअ तुट्ठचित्तेण सक्केण अज्जरक्खिअसूरी वंदिआ । उवस्सयस्स अ अन्नओहुत्तं दारं कयं ।

इत्थ वत्थपूसमित्तो घयपूसमित्तो दुब्बलियापूसमित्तो अ लद्धिसंपन्ना विहरिआ ।

इत्थ दूसमदुब्भिक्खे दुवालसवारिसिए नियत्ते सयलसंघं मेलिअ आगमाणुओगो पवत्तिओ खंदिलायरिएण।

इत्थ देवनिम्मिअथूभे पक्खक्खमणेण देवयं आराहित्ता जिणभद्दखमासमणेहिं उद्देहिआभक्खियपुत्थयपत्त-25 त्तणेण तुट्टं भग्गं महानिसीहं संधिअं ।

इत्थ जगम्स तवेण तुट्ठा सासणदेवया तच्चणिअपरिग्गहिअं इमं तित्थं संघवयणाओ आरहतयापच्च अकासी। देवीए अद्धरत्तेभयरवंसं जग नाउ सोवण्णिअं थूभं पच्छन्नं काउं इट्टमयं कयं । तओ बप्पहट्टिवयणाओ आमराए-ण उवरिं सिलामयचिइ कारिअं ।

इत्थ सगराओ कलावई अ पंचमनम्मे देवसीह-कणयसुंदरीनामाणो समणोवासया रज्जसिरिं भुंजित्या। 30

एवंविहाण अणेगेसिं संविहाणाणमेसा नयरी उप्पत्तिभूमी । इत्थ कुवेरा नरवाहणा अंबिआ य सीहवाहणा खित्तवालो अ सारमेअवाहणो तित्थस्स रक्खं कुणंति ।

---

1 B युगलो । 2 A दुण्णं ।

इय एस **महुरकप्पो जिणप**हसूरीहिं वण्णिओ किं पि । भविएहिं सइ पढिज्जउ इह परलोइअनुहत्थीहिं ॥ १ ॥
भविआण पुण्णरिद्धी जा जायइ **महुर**तित्थजत्ताए । अस्सिं कप्पे निसुए सा जायइ अवहिअमणाणं ॥ २ ॥

॥ श्रीमथुराकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० ११३, अ० २९ ॥

---

१०. अश्वावबोधतीर्थकल्पः ।

नमिऊण **सुव्वय**जिणं परोवयारिकरसिअमसिअरुइं । **अस्सावबोह**तित्थस्स कप्पमप्पं भणामि अहं ॥ १ ॥

सिरिमुणि**सुव्वय**सामी उप्पन्नकेवलो विहरंतो एगया **पइट्ठाण**पुराओ एगरयणीए सट्ठिजोअणाणि लंघिअ पारद्धअस्समेहजण्णेण **जिअसत्तु**राइणा निआसणतुरंगमं सव्वलक्खणसंपुन्नं होमिउमिच्छिओ । मा अट्टज्झाणाओ दुग्गइं जाहि त्ति पडिबोहेउं **लाड**देसमंडणे **नम्मया**नईअलंकिए **भरुअच्छ**नयरे **कोरिंट**वणं पत्तो । समवसरणे गया लोआ वंदिउं । राया वि गयारूढो आगम्म भगवंतं पणमिओ । इत्थंतरे सो हरी सिच्छाए विहरंतो निवत्तपुरिसेहिं समं तत्थागओ सामिणो रूवमप्पडिरूवं पासिंतो निच्चलो संजाओ । सुआ य धम्मदेसणा तेण । भणिओ अ से पुव्वभवो भगवया । जहा—पुव्वभवे इहेव **जंबुद्दीवे** दीवे[1] अवर**विदेहे पुक्खलविजए चंपाए** नयरीए **सुरसिद्धो** नाम राया अहमासि । मज्झ परममित्तं तुमं **मइसारो** नाम मंती हुत्था । अहं **नंदण**गुरुपायमूले दिक्खं पडिवज्जिय पत्तो **पाणयकप्पे** । तत्थ वीसं सागरोवमाइं आउं परिवालित्ता तओ चुओऽहं तित्थयरो जाओ । तुमं च उवज्जिअनराऊ **भारहे** वासे **पउमिणिसंड**नयरे **सागरदत्तो** नाम सत्थवाहो अहेसि । मिच्छद्दिट्ठी विणीओ अ । अन्नया तुमए कारिअं सिवाययणं । तप्पूयणत्थं च आरामो रोविओ । तावसो अ एगो तस्स चिंताकरणे निउत्तो । गुरुआएसेणं सव्वओवि किरिआओ सच्चाविंतो तुमं कालं गमेसि । **जिणधम्म**नामएणं सावएणं तुज्झ जाया परमा मित्ती । तेण सद्धिं एगया गओ तुमं साहुसगासे । तेहिं देसणंतरे भणिअं—

जो कारवेइ पडिमं जिणाण अंगुट्ठपव्वमित्तं पि । तिरिनरयगइदुवारे नूणं तेणग्गला दिन्ना ॥ १ ॥

एवं सोऊण तुमे गिहमागंतूण कारिआ हेममई जिणिंदपडिमा । पइट्ठाविऊण तिसंझं पूएउमाढत्तो तं । अन्नदिअहे संपत्ते माहमासे लिंगपूरणपव्वं आराहेउं तुमं सिवाययणं पत्तो । तओ जडाधारीहिं चिरसंचिअं घयं कुंभीओ उद्धरिअं लिंगपूरणत्थं । तत्थ लग्गाओ घयपिप्पीलियाओ जडिएहिं णिद्दयं पाएहिं मद्दिज्जमाणाओ दट्ठूणं सिरं धूणित्ता सोइउं लग्गो तुमं । अहो एएसिं दंसणीण वि निद्दयया । अम्हारिसा गिहिणो वराया कहं जीवदयं पालइस्संति । तओ निअचेलंचलेहिं ताओ पमज्जिउमारद्धो तुमं । तेहिं निब्भच्छिओ—रे धम्मसंकर ! कायर ! **अरहंत**पासंडीहिं तं विडंबिओ सि त्ति । तओ सो सव्वधम्मविमुहो जाओ । परमकिविणो धम्मरसिअं लोअं हसंतो मायारंभेहिं तिरिआउअं बंधित्ता भवं भमिऊण जाओ तुमं रायवाहणं तुरंगमो । तुज्झ चेव पडिबोहणत्थं अम्हाणमित्थागमणं ति सामिणो वयणं सुच्चा तस्स जायं जाईसरणं । गहिआ य सम्मत्तमूला देसविरई । पच्चक्खायं सच्चित्तं । फासुअं तणं नीरं च गिण्हइ । छम्मासे निव्वाहिअनियमो मरिऊण **सोहम्मे** [2]महड्ढिओ सुरो जाओ । सो ओहिणा मुणिअपुव्वभवो सामिसमोसरणट्ठाणे रयणमयं चेइअमकासी । तत्थ **सुव्वय**सामिणो पडिमं अप्पाणं च अस्सरूवं ठाविअ गओ सुरालयं । तओ **अस्सावबोह**तित्थं तं पसिद्धं । सो देवो जत्तिअसंघविग्घहरणेणं तित्थं पभाविंतो कालेण नरभवे सिज्झिहिइ ।

कालंतरेण **सउलिआविहारु** त्ति तं तित्थं पसिद्धं । कहं ?—इहेव **जंबुद्दीवे सिंहलदीवे रयणासयदेसे सिरिपुर**नयरे **चंदगुत्तो** राया । तस्स **चंदलेहा** भारिआ । तीसे सत्तण्हं पुत्ताणं उवरि **नरदत्ता**-

---

1 A नास्ति । 2 A महि० ।

देवीआराहणेण **सुदंसणा** नाम धूआ जाया । अहीअकलाविज्जा पत्ता जुव्वणं । अन्नया अत्थाणे पिउच्छंगगयाए तीसे **धणेसरो**[1] नाम नेगमो **भरुअच्छाओ** आगओ । विज्झपसट्ठिअतिअड्डअगंधे वाणिएण छीयंतेण 'नमो अरहंताणं' ति पढिअं । सोउं मुच्छिआ सा । कुट्टिओ अ वाणियओ । पच्चेयण्णा य जाईसरणमुवगया एसा । दट्ठूण धम्मबंधु त्ति मोइओ । रण्णा मुच्छाकारणं पुच्छिआए तीए भणिअं—जहाऽहं पुव्वभवे **भरुअच्छे नम्मयातीरे कोरिंट**[2]वणे वडपायवे सउलिया आसि । पाउसे अ सत्तरत्तं महावुट्ठी जाया । अट्ठमदिणे छुहाकिलंता पुरे भमंती अहं 5
वाहस्स घरंगणाओ आमिसं घित्तुं उड्डीणा । वडमाहानिविट्ठा य अणुपयमागएण वाहेण सरेण विद्धा । मुहाओ पडिअं पल सरं च गिण्हित्ता गओ सो सट्ठाणं । तत्थ करुणं रसंती उव्वत्तण-परिअत्तणपरा दिट्ठा एगेण सूरिणा । सित्ता य जलपत्तजलेण । दिन्नो पचनमुक्कारो । सद्दहिओ अ मए । मरिऊण अहं तुम्ह धूआ जाय त्ति । तओ सा विसयविरत्ता महानिब्बंधेण पिअरे आपुच्छिअ तेणेव सजत्तिएण सद्धिं पट्ठिआ वाहणाणं सत्तसएहिं **भरुअच्छे** । तत्थ पोअमय[3] च वत्थाणं[4], पोअसय दव्वनिचयाणं, एवं चंदणागुरुदारूणं, धन्नजलिंधणाणं, नाणाविहपक्कन्नफलाणं, पहरणाणं । एवं छसया 10
पोआणं । पण्णास सत्थधराणं, पण्णास पाहुडाणं । एवं सत्तसयवाहणजुत्ता पत्ता समुद्दतीरं । तओ रण्णा तं वाहणवूहं[5] दट्ठुं **सिंहलेसर**अरक्खदसकिण्णा सज्जिआए सेणाए, पुरक्खोभनिवारणाय गंतुं पाहुडं च दाउं **सुदंसणा**आगमणेण विन्नवो राया तेण सजत्तिएण । तओ सो पच्चोणीए निग्गओ । पाहुडं दाऊण पणमिओ कन्नाए । पवेसमहूसवो अ जाओ । दिट्ठं तं चेइअं । विहिणा वंदिअं पूइयं च । तित्थोववासो अ कओ । रण्णा दिण्णे पासाए ठिआ । रायणा य अट्ठ वेलाउलाइं अट्ठसया गामाणं, अट्ठसया वप्पाणं, अट्ठसया पुराणं दिण्णा । एगदिणे अ जित्तिअं भूमिं तुरगमो सचरइ 15
तित्तिआ पुव्वदिसाए, जित्तिअं च हत्थी जाइ तत्तिआ पच्छिमाए दिण्णा । उत्तरोहेण सव्वं पडिवन्नं । अन्नया तस्सेवायरिअस्स पासे निअपुव्वभवं पुच्छइ । जहा—भयवं ! केण कम्मुणा अहं सउलिआ जाया । कहं च तेण वाहेण अहं निहय त्ति[6] । आयरिएहिं भणिअं—भद्दे ! **वेयड्ढपव्वए** उत्तरसेढीए **सुरम्मा** नाम नयरी । तत्थ विज्जाहरिंदो **संखो** नाम राया । तस्स **विजया**भिहाणा तुमं धूआ आसि । अन्नया दाहिणसेढीए **महिसगामे** वच्चतीए तुमए नईतडे **कुक्कुडसप्पो** दिट्ठो । सो य रोसवसेण तए मारिओ । तत्थ नईए तीरे जिणाययणं दट्ठूण वंदिअ भयवओ जिन 20
परम[7]भत्तिपरवसाए तुमए । जाओ परमाणंदो । तओ चेईयाओ बाहिं निग्गच्छतीए तुमए दिट्ठा एगा पहपरिस्समखिन्ना साहुणी । तीए पाए वंदित्ता धम्मगाहिआ अज्जाए तुमं । तुमए वि तीसे विस्सामणाईहिं सुस्सूसा कया । चिरं गिहमागया । कालेण कालधम्मं पत्ता अट्टज्झाणपरा इह **कोरिंटय**वणे सउणी जाया तुमं । सो अ **कुक्कुडसप्पो** मरिऊण वाहो संजाओ । तेण पुव्ववेरेण सउणीभवे तुमं वाणेण पहया । पुव्वभवकयाए जिणभत्तीए गिलाणसुस्सूसाए अ अंते बोहिं पत्ता सि तुमं । संपयं पि कुणसु जिणप्पणीअं दाणाइधम्मं ति । एवं गुरूणं वयणं सुच्चा सव्वं 25
तं दव्वं सत्तखित्तीए निवेइ । चेइयस्स उद्धारं कारेइ । चउवीसं च देवकुलियाओ पोसहसाला-दाणसाला-अज्झयणसालाओ कारेइ[7] । अओ तं तित्थं पुव्वभवनामेण **सउलिआविहारु** त्ति भण्णइ । अंते य सलेहणं दव्व-भावभेयभिन्नं काउं पयाणमणा वइसाहसुद्धपंचमीए **ईसाणं** देवलोगं पत्ता । सिरिसुव्वयसामिसिद्धिगमणाणंतरं इक्कारसेहिं लक्खेहिं चुलसीईसहस्सेहिं चउसयसत्तरेहिं च वासाणं अईएहिं **विक्कमाइच्च**संवच्छरो पवट्टो । जीवंत**सुव्वयसामि**-जविस्सा पुण एगारसलक्खेहिं अट्ठावीसूणपंचणवइसहस्सेहिं च वासाणं **विक्कमो** भावी । एसा **सउलिआवि**- 30
हारस्स उप्पत्ती ।

रोइअतित्थाणि अणेगाणि **भरुअच्छे** वट्टंति । कमेण **उदयणपुत्तेण वाहडदेवेण** सित्तुंजपासायउद्धारे कारिए तदणुजेण **अंबडेण** विउणो पुण्णत्थं **सउलिआविहारस्स** उद्धारो कारिओ । मिच्छदिट्ठीए **सिंघवादेवीए**

---

1 A धणपरो । 2 A कोरंट० । 3 नास्ति D आदर्शे । 4 A ०रुइ । 5 'परम' नास्ति B । 6 नास्ति B । 7 A करेइ ।

अंडबस्स पासायसिहरे नच्चंतस्स उवसग्गो कओ। सो अ निवारिओ विज्जाबलेण सिरि**हेमचंद**सूरीहिं।
अस्सावबोहतित्थस्स एस कप्पो समासओ रइओ। सिरि**जिणपह**सूरीहिं भविएहिं पढिज्जउ तिकालं॥ १॥

॥ अश्वावबोधतीर्थकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० ८२, अ० २० ॥

---

११. वैभारगिरिकल्पः।

5
अथ **वैभारकल्पो**ऽयं स्तवरूपेण तन्यते। संक्षिप्तरुचितोषाय श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः॥ १॥
वभार **वैभार**गिरेर्गुणप्राग्भारवर्णने। निर्भरं भारता[1] बुद्धिं भारती तत्र के वयम्॥ २॥
तीर्थभक्त्या तरलितास्तथापि व्यापिभिर्गुणैः। राजन्तं तीर्थराजं तं स्तुमः किंचिज्जडा अपि॥ ३॥
अत्र दारिद्र्यविद्राविरूपिका **रसकूपिका**। **तप्त-शीताम्बुकुण्डानि** कुर्युः कस्य न कौतुकम्॥ ४॥
10 **त्रिकूट-खण्डिका**दीनि शृङ्गाण्यस्य चकासति। निःशेष**करण**ग्रामस्यावनानि वनानि च॥ ५॥
ओषध्यो विविधव्याधिविध्वंसादिगुणोर्जिताः। नद्यो हृद्योदकाश्चात्र **सरस्वत्या**दयोऽनघाः॥ ६॥
बहुधा लौकिकं तीर्थं **मगधा-लोचना**दिकम्। यत्र चैत्येषु बिम्बानि ध्वस्तडिम्बानि चार्हताम्॥ ७॥
मेरूद्यानचतुष्कस्य पुष्पसंख्यां विदन्ति ये। अमुष्मिन् सर्वतीर्थानां विदांकुर्वन्तु ते मितम्॥ ८॥
श्री**शालिभद्र-धन्य**र्षी इह तप्तशिलोपरि। दृष्टौ कृततनूत्सर्गौ पुंसां पापमपोहतः॥ ९॥
15 श्वापदाः सिंह-शार्दूल-भाल्लूक-गवलादयः। न जातु तीर्थमाहात्म्यादिह कुर्वन्त्युपप्लवम्॥ १०॥
प्रतिदेशं विलोक्यन्ते विहाराश्चात्र सौगताः। आरुह्यैनं च निर्वाणं प्रापुस्ते ते महर्षयः॥ ११॥
रौहिणेयादिवीराणां प्राग् निवासतया श्रुताः। निचाय्यन्ते तमस्काण्ड[2]दुर्विगाहा गुहा इह॥ १२॥
उपत्यकायामस्याद्रेर्भाति **राजगृहं** पुरम्। **क्षितिप्रतिष्ठा**दिनामान्यन्वभूद्यत्तदा तदा॥ १३॥
क्षितिप्रतिष्ठ-चणकपुर-र्षभपुराभिधम्। **कुशाग्रपुर**संज्ञं च क्रमाद्**राजगृहा**ह्वयम्॥ १४॥
20 अत्र चासीद्**गुणसि(शि)लं** चैत्यं शैत्यकरं दृशाम्। श्री**वीरो** यत्र समवससार गणशः प्रभुः॥ १५॥
प्राकारं यत्र **मेतार्यः** शातकौम्भमचीकरत्। सुरेण प्राच्यसुहृदा मणींश्चाजीहदच्छगम्॥ १६॥
शालिभद्रादयोऽनेके महेभ्या यत्र जज्ञिरे। जगच्चमत्कारकरी येषां श्रीर्भोगशालिनी॥ १७॥
सहस्राः किल षड्त्रिंशद्यत्रासन् वणिजां गृहाः। तत्र चार्धाः सौगतानां मध्ये चार्हतसंज्ञिनाम्॥ १८॥
यस्य प्रासादपङ्क्तीनां श्रियः प्रेक्ष्यातिशायिनीः। त्यक्तमाना विमानाख्यामापुर्मन्ये सुरालयाः॥ १९॥
25 जगन्मित्रं यत्र मित्रः **सुमित्रा**न्वयपङ्कजे। **अश्वावबोध**निर्व्यूढव्रतोऽभूत् **सुव्रतो** जिनः॥ २०॥
यत्र श्रीमान् **जरासन्धः श्रेणिकः कूणिकोऽभयः**। **मेघ-हल्ल-विहल्लाः** श्री**नन्दिषेणो**ऽपि चाभवन्॥ २१॥
जम्बूस्वामि-कृतपुण्य-शय्यंभवपुरस्सराः। जज्ञुर्यतीश्वरा यत्र **नन्दा**द्याश्च पतिव्रताः॥ २२॥
यत्र श्रीमन्**महावीर**स्यैकादश गणाधिपाः। पादपोपगमान् मासं सिद्धावासं समासदन्॥ २३॥
एकादशो गणधरः श्री**वीर**स्य गणेशितुः। **प्रभासो** नाम पावित्र्यं यस्य चक्रे स्वजन्मना॥ २४॥
30 **नालन्दा**लंकृते यत्र वर्षारात्रांश्चतुर्दश। अवतस्थे प्रभु**र्वीर**स्तत्कथं नास्तु पावनम्॥ २५॥
यस्यां नैकानि तीर्थानि नालन्दा नायनश्रियाम्। भव्यानां जनितानन्दा **नालन्दा** नः पुनातु सा॥ २६॥

---

1 B भरता; A भारती। 2 C A तमस्काण्ड०।

मेघनादः स्फुरन्नाद शात्रवाणा रणाङ्गणे । क्षेत्रपालाग्रणी कामान् कास्कान् पुसा पिपर्ति न ॥ २७ ॥
श्री**गौतम**स्यायतन कल्याणस्तूपसंनिधौ । दृष्टमात्रमपि प्रीतिं पुष्णाति प्रणतात्मनाम् ॥ २९ ॥

वर्षे सिद्धा **सरस्वद्रसशिखिकुमिते (१३६४)** वैक्रमे तीर्थमौले
सेवाहेवाकिला श्रीवितर सुरतरो ! देवतासेवितस्य ।
वैभारक्षोणिभर्तुर्गुणगणभणनव्यापृता भक्तियुक्तै
सूक्ति**र्जैनप्रभी**य मृदुविशदपदाऽधीयता धीरधीभि ॥ २७ ॥

॥ श्रीवैभारगिरिमहातीर्थकल्पः ॥

॥ ग्र० ३१, अ० २ ॥

---

१२. कोशाम्बीनगरीकल्पः ।

वच्छाजणवए **कोसंबी** नाम नयरी[1] । जत्थ चन्द-सूरा सविमाणा सिरि**वद्धमाणं** नमसिउ समागया । तत्थ तदुज्जोएण वेल अयाणती[2] अज्जा **मिगावई** समोसरणे पच्छा ठिआ । चंदाइचेसु सट्ठाण गएसु अज्ज**चंदणा**ऽऽसाहुणीसु कयावस्सयासु पडिस्सय हवमागया । अज्जचंदणाए उवालद्धा निआनराह खमिंती पायपडिया चेव केवल सपत्ता ।

जत्थ य **उज्जेणी**ओ पुरिसपरपराणीयइट्टयाहिं **पज्जोअ**रण्णा **मियावई**अज्झोववण्णेन दुग्ग कारिअ अज्ज वि चिट्ठइ ।

जत्थ य **मिगावई**कुक्खिसभवो गधव्ववेयनिउणो **सयाणी**अपुत्तो **उदयणो** **वच्छा**हिवो अहेसि ।

जत्थ चेइएसु पिक्खगजणनयणअमयजणरूवाओ जिनपडिमाओ ।

जत्थ य **कालिंदी**जल्लहरिआलिंगिज्जमाणाणि वणाणि ।

जत्थ पोसबहुलपडिवयपडिवन्नाभिग्गहस्स सिरि**महावीर**स्स **चंदणबालाए** पचदिवमूणछम्मासेहिं सुप्पकोणट्ठिअकुम्मासेहिं पारण कारिय । वसुहारा य अद्धतेरसकोडिपमाणा देवेहि वुट्ठा । अओ चेव **वसुहार** त्ति गामो नयरीसंनिहिओ पसिद्धो वसइ । पचदिव्वाणि अ पाउब्भूआणि । इत्तु च्चिअ तद्दिणाओ पहुडि जिट्ठसुद्धदसमीए सामिपारणदिणे तित्थन्हाणदाणाईआयारा तत्थ अज्ज वि लोए पयट्टति ।

जत्थ य **पउमप्पह**सामिणो चवण-जम्मण-दिक्ख-नाणकल्लाणगाइ सवुत्ताइ ।

जत्थ य सिणिद्धच्छाया कोसबतरुणो महापमाणा दीसंति ।

जत्थ य **पउमप्पह**चेइए पारणकारावणव्वसामिसंधिघडिआ **चंदनबाला**मुत्ती दीसइ ।

जत्थ अज्ज वि तमि चेव चेइए पइदिण पसतमुत्ती सीहो आगतूण भगवओ भत्तिं करेइ ।

सा **कोसंबी**नयरी जिणजम्मपवित्तिआ महातित्थ । जम्हाण देउ सिव थुनती **जिणप्पहसूरी**हिं ॥

॥ इति कोशाम्बीनगरीकल्पः ॥

॥ ग्र० १८, अ० २१ ॥

---

1 B नयरी । 2 B अयाणन्ती ।

१३. अयोध्यानगरीकल्पः ।

अउज्झाए एगट्ठिआइं जहा-**अउज्झा अवज्झा कोसला विणीया साकेयं इक्खागुभूमी रामपुरी कोसल** त्ति । एसा सिरि**उसभ-अजिअ-अभिनंदण-सुमइ-अणंत**जिणाणं[1] तहा नवमस्स सिरि**वीर**गणहरस्स **अयलभाउ**णो जम्मभूमी । **रहु**वंसुब्भवाणं **दसरह-राम-भरहा**ईणं च रज्जट्ठाणं । **विमल-वाहणा**इसत्तकुलगरा इत्थ उप्पन्ना ।

उसभसामिणो रज्जाभिसेए मिहुणगेहिं भिसिणीपत्तेहिं उदयं वित्तुं पाएसु छूढं । तओ साहुविणीया पुरिस त्ति भणिअं सक्केण । तओ **विणीय** त्ति सा नयरी रूढा ।

जत्थ य महासईए **सीयाए** अप्पाणं सोहंतीए निअसीलबलेण अग्गी जलपूरीकओ । सो अ जलपूरो नयरिं वोलिंतो निअमाहप्पेण तीए चेव रक्खिओ ।

जा य **अड्ढभरह**वसुहागोलस्स मज्झभूआ सया, नवजोअणविच्छिण्णा बारसजोअणदीहा य ।

जत्थ **चक्केसरी** रयणमयायणट्ठिअपडिमा संघविग्घं हरेइ, **गोमुहजक्खो** अ ।

जत्थ **घग्घर**दहो **सरऊ**नईए समं मिलित्ता **सग्गदुवारं** ति पसिद्धिमावन्नो ।

जीए उत्तरदिसाए बारसहिं जोअणेहिं **अट्ठावय**नगवरो जत्थ भगवं **आइगरो** सिद्धो । जत्थ य **भरहे-सरेण सीहनिसिज्जायय**णं तिकोसुच्चं कारिअं । निय-नियवण्णपमाणसंठाणजुत्ताणि अ चउवीसजिणाण बिंबाइं ठावियाइं । तत्थ पुव्वदारे **उसभ-अजिआ**णं; दाहिणद्दारे **संभवाई**णं चउण्हं; पच्छिमदुवारे **सुपासाई**णं अट्ठण्हं; उत्तरदुवारे **धम्माई**णं दसण्हं; थूभसयं च भाउआणं तेणेव कारिअं ।

जीए नयरीए वत्थव्वा जणा **अट्ठावय**उवच्चयासु कीलिंसु ।

जओ अ **सेरीसय**पुरे नवंगवित्तिकारसाहासमुब्भवेहिं सिरि**देविंदसूरी**हिं चत्तारि महाबिंबाइं दिव्वसत्तीए गयणमग्गेण आणीआइं ।

जत्थ अज्ज वि **नाभि**रायस्स मंदिरं । जत्थ य **पासनाह**वाडिया **सीयाकुंडं सहस्सधारं** च । पायारट्ठिओ अ **मत्तगयंद**[2] जक्खो । अज्ज वि जस्स अग्गे करिणो न संचरंति, संचरंति वा ता मरंति ।

गोपयराइणि अ अणेगाणि य लोइअतित्थाणि वट्टंति ।

एसा पुरी **अउज्झा सरऊ**जलसिच्च[3]माणगढभित्ती । जिणसमयसत्ततित्थीजत्तपवित्तिअजणा जयइ ॥ १ ॥

कहं पुण **देविंदसूरी**हिं चत्तारि बिंबाणि **अउज्झा**पुराओ आणीयाणि त्ति भण्णइ-**सेरीसय**नयरे विह-रंता आराहिअ**पउमावइ-धरणिंदा छत्तावल्ली**यसिरि**देविंदसूरिणो** उक्कुरुडिअपाए[4] ठाणे काउस्सग्गं करिंसु । एवं बहुवारं करिंते ते दट्ठूण सावएहिं पुच्छिअं-भयवं ! को विसेसो इत्थ काउस्सग्गकरणे ? । सूरीहिं भणियं-इत्थ पहाणफलही चिट्ठइ, जीसे **पासनाह**पडिमा कीरइ; सा य सन्निहियपाडिहेरा हवइ । तओ सावयवयणेणं **पउमावई**-आराहणत्थं उववासतिगं कयं गुरुणा । आगया भगवई । तीए आइट्ठं । जहा-**सोपारए** अन्धो सुत्तहारो चिट्ठइ । सो जइ इत्थ आगच्छइ अट्ठमभत्तं च करेइ, सूरिए अत्थमिए फलहिअं घडेउमाढवइ, अणुदिए पडिपुण्णं संपाडेइ, तओ निप्पज्जइ । तओ सावएहिं तदाहवणत्थं **सोपारए** पुरिसा पट्ठविआ । सो आगओ । तहेव घडिउमाढत्ता । **धरिणिन्द**धारिआ निप्पन्ना पडिमा । घडिन्तस्स सुत्तहारस्स पडिमाए हिअए मसो पाउब्भूओ । तमुविक्खिऊण उत्तरकाओ घडिओ । पुणो समारिंतेण मसो दिट्ठो । टङ्किआ वाहिआ । रुहिरं निस्सरिउमारद्धं । तओ सूरीहिं भणिअं-किमेयं तुमए कयं ? । एयंमि मसे अच्छन्ते एसा पडिमा अईवअब्भुअहेऊ सप्पभावा हुन्ता । तओ अङ्गु-

---

1 'जिणाणं' नास्ति C । 2 C D मइंद० । 3 C D जलाभिसिच० । 4 C ०प्पए ।

ट्टेण चपिउ थभिअ रुहिर । एव तीसे पडिमाए निप्पन्नाए चउवीस[1] अन्ना'णि बिंबाणि खाणीहिंतो आणित्ता ठावि-आणि । तओ दिवसत्तीए अवज्झापुराओ तिन्नि महाबिंबाणि रत्तीए गयणमग्गेण आणीयाणि । चउत्थे वि आ'णि-ज्जमाणे विहाया रयणी । तओ धारासेणय'गामे खित्तमज्झे बिंब ठिअ । रण्णा सिरिकुमारपालेण चालुक्कचक्क-वट्टणा चउत्थ बिंब कारित्ता ठविअ । एव सेरीसे महप्पभावो पासनाहो अज्जवि सघेण पूइज्जइ । मिच्छा वि उवद्दव काउ न पारेति । उम्मुअघडिअत्तेण न तहा सलावण्णा अवयवा दीसति । तम्मि अ गामे त बिंब अज्जवि 5 चेईहरे पूइज्जइ त्ति ॥

॥ श्री अयोध्यापुरीकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्र० ४४, अ० ९ ॥

---

१४. अपापापुरी[संक्षिप्त]कल्पः§ ।

सिद्धार्थोर्व्या वनान्ते खरकमुमिपजाम्यञ्जनद्रोणिभाज , शल्ये निष्क्रि(ष्कृ[2])ष्यमाणे श्रुतियुगविवराच्चीनपीडादितस्य । 10
यस्या अभ्यर्णभागेऽन्तिमजिनमुकुटस्योच्चदाश्चर्यमुच्चै श्चचीत्काररावस्फुटित'गिरिदरी दृश्यतेऽद्यापि पूर ॥ १ ॥
चक्रे तीर्थप्रवृत्ति चरमजिनपतिर्यत्र वैशाखशुक्ले-कादश्यामेत्य रात्रौ वनमनु महसेनाह्वय जृम्भिकात ।
सच्छात्रास्तत्र चैकादशगणपतयो दीक्षिता गौतमाद्या, जग्मुर्थ्यूढद्वादशाङ्गी भवजलधितरी ते निषद्यात्रयेण ॥ २ ॥
यस्या श्रीवर्धमानो द्व्यहमनशनकृद्देशनावृष्टिमन्त्या, कृत्वा श्रीहस्तिपालाभिधधरणिभुजोऽधिष्ठित शुल्कशालाम् ।
स्वातावूर्जस्य दर्शे शिवममममुच्चश्रीनिशान्त निशान्ते, प्रापत्पापास्तपापान् विरचयतु जनान् सा पुरीणा धुरीणा ॥ ३ ॥15
नागा अद्यापि यस्या प्रतिकृतिनिलया दर्शयन्ति प्रभाव, निस्तैले नीरपूर्णे ज्वलति गृहमणि कौशिके यत्रिशासु ।
भूयिष्ठाश्चर्यभूमिश्चरमजिनवरस्तूपरम्यस्वरूपा, साऽपापा मध्यमादिर्भवतु वरपुरी भूतये यात्रिकेभ्य ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीअपापाकल्पः ॥

॥ ग्र० १०, अ० २१ ॥

---

1 C पडरि‍ते । 1-1 एतदङ्कान्तर्गता पङ्क्ति पतिता C आदर्शे । 2 A 'क्षेप्य' । § A आदर्शे नोपलभ्यते एष कल्प ।

१५. कलिकुण्ड-कुर्कुटेश्वरकल्पः ।

※[†]**अंग**जणवए **करकंडु**निवपालिज्जमाणाए **चंपा**नयरीए नाइदूरे **कायंबरी** नाम अडवी हुत्था । तत्थ **कली** नाम पव्वओ । तस्स अहोभूमीए **कुंडं** नाम सरवरं । तत्थ जूहाहिवई **महिहरो** नाम हत्थी हुत्था । अन्नया छउमत्थविहारेणं विहरंतो **पास**सामी **कलिकुंड**समीवदेसे काउसग्गेण ठिओ । सो य जूहनाहो पहुं पिक्खंतो जाइ-
5 सरो जाओ चिंतेइ अ–जहाहं **विदेहेसु हेमंधरो** नाम वामणो अहेसि । जुवाणा विडा य मं उवहसंति । तओ वेरग्गेण नमिरसाहस्स साहिणो साहाए उव्वंधिउं मरिउकामो अहं दिट्ठो **सुप्पइट्ठ**सड्ढेण । पुट्ठो अ कारणं । मए जहट्ठिए वुत्ते तेणाहं सुगुरुपासे नीओ । गाहिओ सम्मत्तं । अंते कयाणसणेण नियाणं मए कयं । जहा, भवंतरे उच्चोहं हुज्ज त्ति । मरिऊण हत्थी जाओहं इह वणे । तओ इमं भगवंतं पज्जुवासामि त्ति चिंतिअ तत्तो च्चेव सरवराओ घित्तुं सरसकमले तेहिं जिणं पूएइ । परिवालिअपुव्वगहिअसम्मत्तो अणसणं काउं महिड्ढिओ वंतरो जाओ । एयमच्चब्भूअं
10 चारेहिंतो सोच्चा **करकंडु**राया तत्थागओ । न दिट्ठो सामी । राया अईव अप्पाणं निंदेइ । धन्नो सो हत्थी जेण भयवं पूइओ । अहं तु अधन्नो त्ति । एवं सोअंतस्स तस्स पुरओ **धरणिंद**प्पभावेण नवहत्थपमाणा पडिमा पाउब्भूआ । तओ तुट्ठो राया 'जय जय' त्ति भणंतो पणमइ पूअइ अ । चेइअं च तत्थ कारेइ । तत्थ तिसंझं पुप्फामिसथुइपूअं पिक्खणयं च करिंतेण रन्ना **कलिकुंड**तित्थं पयासिअं । तत्थ सो हत्थिवंतरो सन्निज्झं करेइ, पच्चए य पूरेइ । नवजंतीपमुहजंताणि **कलिकुंड**मंते य छकम्मकरे पयासेइ । जहा गामवासी जणो गामु त्ति भण्णइ, तहा **कलि-**
15 **कुंड**निवासी जिणो वि **कलिकुंडो** । एसा **कलिकुंड**स्स उप्पत्ती※ ॥

पुव्विं **पास**सामी छउमत्थो **रायउरी**ए काउस्सग्गे ठिओ । तत्थ वाहकेलीए जंतस्स तन्नयरसामिणो **ईसर-**रण्णो **बाणज्जुण**नामो बंदी भयवंतं पिच्छिऊण गुणक्कित्तणं करेइ । एस देवो **आससेण**निवपुत्तो जिणु त्ति । तं सोउं राया गयाओ उत्तरित्ता पहुं पासंतो मुच्छिओ । पत्तचेयण्णो य पुट्ठो मंतिणा पुव्वभवे कहेइ । जहाहं **चारुदत्तो** होऊण पुव्वजम्मे **बसंतपुरे** पुरोहिअपुत्तो **दत्तो** आसि । कुट्ठाइरोगपीडिओ अ **गंगा**ए निवडंतो चारणरिसिणा
20 बोहिओ अहिंसाई पंचवए पालेमि, इंदिए अ सोसेमि, कसाए य जिणेमि । अन्नया चेईहरमागओ जिणपडिमं पण-मंतो दिट्ठो **पुक्खलि**सावएणं । तेण पुट्ठो **गुणसागर**मुणी–भयवं ! एयस्स चेइयागमणे दोसो न वा ? । मुणिणा भणिअं–दूरओ देवं पणमंतस्स को दोसो । अज्ज वि एसो कुकुडो भविस्सइ त्ति । तं सोऊण खेयं कुणंतो पुणरवि गुरुणा संवोहिओहं–तुमं जाईसरो अणसणेण मरिउं **रायउरी**ए **ईसरो** नाम राया होहिसि त्ति । तओहं तुट्ठो तं सव्वं अणुभवित्ता कमेण राया जाओ । पहुं पिक्खिअ जायं मे जाइसरणं ति । एवं मंतिस्स कहित्ता भगवंतं पण-
25 मिअ तत्थ संगीअं कारेइ । पहुम्मि अन्नत्थ विहरिए तत्थ रण्णा पासाओ कारिओ । विंवं च पइट्ठाविअं । कुक्कुडवरेण **ईसर**रण्णा कारियं ति **कुकुडेसर** नाम तित्थं रूढं । सो य राया कमेण खीणकम्मो सिज्झिहि त्ति । एसा **कुकुडे-सर**स्स उप्पत्ती ॥

कलिकुंड-कुकुडेसरतित्थदुगस्सेस वण्णिओ कप्पो । सिरि**जिणपह**सूरीहिं भविआणं कुणउ कल्लाणं ॥ १ ॥

॥ इति कलिकुंड-कुर्कुटेश्वरकल्पः ॥

30 ॥ ग्रं० ३५, अ० १ ॥

※ एतत्तारकचिह्नान्तर्गतं प्रकरणं A आदर्शे नोपलब्धम् । † एतच्चिह्नान्तर्गता पंक्तिः पतिता D आदर्शे ।

१६. हस्तिनापुरकल्पः ।

सिरिसंति-कुंथु-अर-मल्लिसामिणो **गयउरट्ठिए** नमिउ । पभणामि **हत्थिणाउर**तित्थस्स समासओ कप्पं ॥१॥

सिरिआइतित्थेसरस्स दोण्णि पुत्ता **भरहेसर-बाहुबलि**नामाणो आसि । **भरहस्स** सहोयरा अट्ठाणउइं कुमारा । तत्थ भयवया पव्वयंतेण **भरहो** निअपए अहिसित्तो । **बाहुबलिणो तक्खसिला** दिण्णा । एवं सेसाण वि तेसु तेसु देसेसु रज्जाइं दिण्णाइं । **अंगकुमार**नामेण **अंगदेसो** जाओ । **कुरु**नामेण **कुरुक्खित्तं** पसिद्धं । 5 एवं **वंग-कलिंग-सूरसेण-अवंति**माइसु विभासा । **कुरु**नरिंदस्स पुत्तो **हत्थी** नाम राया हुत्था । तेण **हत्थिणाउरं** निवेसिअं । तत्थ **भागीरही** महानई पवित्तवारिपूरा परिवहइ ।

तत्थ **सिरिसंति-कुंथु-अर**नाहा जहासंखं सोलसम-सत्तरसम-ट्ठारसमा जिणिंदा जाया । पंचम छट्ठ-सत्तमा य कमेण चक्कवट्टी होउं छखंड**भरहवास**रिद्धिं भुंजिंसु । दिक्खागहणं केवलनाणं च तेसिं तत्थेव संजायं ।

तत्थेव संवच्छरमणसिओ भयवं **उसभसामी बाहुबलि**नत्तुअस्स **सिज्जंसकुमरस्स** तिहुअणगुरुदंसण- 10 जायजाईसरणजाणिअदाणविहिणो गेहे अक्खयतइयादिणे इक्खुरसेण पढमपारणयमकासी । तत्थ पंचदिव्वाइं पाउब्भूआइं ।

मल्लिसामि अ तत्थेव नयरे समोसढो ।

तत्थ **विण्हुकुमारो** महरिसी तवसत्तीए विउव्विअलक्खजोअणप्पमाणसरीरो तिहिं पएहिं अक्कंततेलुक्को **नमुइं** सासित्था ।

तत्थ पुरे **सणंकुमार-महापउम-सुभूम-परसुरामा**इमहापुरिसा उप्पण्णा । 15

तत्थ पंच **पांडवा** उत्तमपुरिसा चरमसरीरा, **दुज्जोहण**पमुहा य महाबलनिवा अणेगे समुप्पण्णा ।

तत्थ सत्तकोडिसुवण्णाहिवई **गंगदत्तसिट्ठी**, तहा **सोहम्मिंदस्स** जीवो रायाभिओगेण परिव्वायगस्स परिवेसणं काउं वेरग्गेण नेगमसहस्सपरिवुडो **कत्तियसेट्ठी सिरिमुणिसुव्वय**सामिसमीवे निक्खंतो ।

तत्थ महानयरे **संति-कुंथु-अर-मल्लि**जिणाणं चेइयाइं मणहराइं, **अंबादेवीए** य देउलं आसि ।

एवमणेगअच्छरिअसहस्सनिहाणे तत्थ महातित्थे जे जिणसासणपभावणं कुणंति विहिपुव्वं जत्तामहूसवं निम्मवंति 20 ते कइवयभवग्गहणेहिं धुअकम्मकिलेसा सिद्धिमुवगच्छंति त्ति ॥

श्रीगजाह्वयतीर्थस्य कल्पः स्वल्पतरोऽप्ययम् । सतां सङ्कल्पसम्पूर्तौ धत्तां कल्पद्रुकल्पताम् ॥ २ ॥

॥ इति श्रीहस्तिनापुरतीर्थकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० २४, अ० ११ ॥

१७. सत्यपुरतीर्थकल्पः ।

पणमिय सिरिवीरजिणं देवं सिरिबंभसंतिकयसेवं । **सच्चउर**तित्थकप्पं जहासुअं किं पि जंपेमि ॥ १ ॥
सिरिकन्नउज्जनरवइकारिअजिणभवणि देवदारुमए । तेरसवच्छरसइए **वीर**जिणो जयउ **सच्चउरे** ॥ २ ॥

इहेव **जंबुदीवे** दीवे **भारहे** वासे **मरुमंडले सच्चउरं** नाम नयरं । तत्थ **नाहडराय**कारिअं सिरि-**जज्जिग**सूरिगणहरपइट्ठिअं पित्तलमयं सिरि**वीर**बिंबं चेईहरे अच्छइ । कहं **नाहडराएण** तं कारिअं ति तस्स उप्पत्ति भणइ–पुव्विं **नड्डूल**मंडल[1]मंडण**मंडोवर**नयरस्स सामिं रायाणं बलवंतेहिं [2]**दाइए**हिं मारिऊण तं नयरं अहिट्ठिअं । तस्स रण्णो महादेवी आवन्नसत्ता पलाइत्ता **बंभाणपुरं** पत्ता । तत्थ य सयललक्खणसंपुन्नं दारयं पसूआ । तओ नय-राओ बाहिं एगत्थ रुक्खे तं बालयं झोलिआगयं ठावित्ता सयं तप्पासदेसे ठिया किंचि कम्मं काउमाढत्ता । तत्थ य दिव्वजोगेण समागया सिरि**जज्जिग**सूरिणो । तरुच्छायं अपरावत्तमाणिं दट्ठूण 'एस पुण्णवंतो भावि' त्ति कलिऊण चिरं अवलोइंता अच्छिआ । तीए रायपत्तीए आगंतूण भणिआ सूरिणो–भयवं ! किं एस दारओ कुलक्खणो कुलक्खयकारो दीसइ ? । सूरीहिं वुत्तं–भद्दे ! एस महापुरिसो भविस्सइ । ता सव्वपयत्तेण पालणिज्जो । तओ सा अणुकंपाए चेईहर-चिन्ताकरणे निउत्ता गुरूहिं । सो अ दारओ कय**नाहड**नामो गुरुमुहाओ पंचपरमिट्ठिनमुक्कारं सिक्खिओ । सो अ चवलत्तेण गहिअधणुसरो अक्खयपट्टयस्स उवरिं आगच्छंते मूसए अमूढलक्खो मारेइ । तओ सावएहिं चेईहराओ निक्कालिओ जणाणं गावीओ रक्खेइ । अन्नया केणावि जोगिणा पुरबाहिरे भमंतेण सो दिट्ठो । बत्तीसलक्खणधरो त्ति विन्नाओ[3] । तओ तेण सुवण्णपुरिससाहणत्थं तमणुगच्छंतेण तस्स मायरं अणुण्णविय तत्थेव ठिई कया । तओ अवसरे तेण जोगिणा भणिओ **नाहडो**–जत्थ गावीरक्खणाइं कुणंतो रत्तदुद्धं कुलिसतरुं पाससि तत्थ चिण्हं काऊण ममं कहिज्जासि । बालेण तह त्ति पडिवन्नं । अन्नया दिव्वजोएण तं दट्ठूण जाणाविअं जोगिणो । दोवि गया तत्थ । तओ जहुत्तविहाणेण अग्गिं पज्जालिऊण तं रत्तच्छीरं तत्थ पक्खिवित्ता जोगिंमि पयाहिणं दिंते **नाहडे**णावि पयक्खिणी-कओ अग्गी । कहिंचि जोगिणो दुट्ठचित्तवित्तिं नाऊण रायपुत्तेण सुमरिओ पंचनमुक्कारो । तप्पभावेण जोगी अप्पह-वंतो उक्खिविअ जलणे खित्तो **नाहडेण** । जाओ सुवण्णपुरिसो । तओ चिंतिअं तेण–अहो मंतस्स माहप्पं । कहं नु तेसिं गुरूणं एयस्स दायगाणं पच्चुवयरिस्सामि त्ति–आगंतुं पणया गुरुणो । सव्वं च तं सरूवं विण्णत्तं, किंच्चं च आइसह त्ति भणिए, गुरुवयणाओ उत्तुंगाइं चउवीसं चेईयाइं कारिआइं । कमेण पत्तो पउरं रज्जसिरिं । सेन्नसंभारेण गंतुं गहिअं पेइअं सट्ठाणं । अन्नया विन्नत्ता सिरि**जज्जिग**सूरिणो तेण, जहा–भगवं ! तं किंचि कज्जं आइसह, जेण तुम्हाणं मज्झ य कित्ती चिरकालं पसरइ त्ति । तओ गुरूहिं धेणू चउहिं थणेहिं जत्थ खीरं झरइ तं भूमिं अब्भुदय-करं नाऊण तं ठाणं दंसिअं रण्णो । तेणं गुरुआएसेणं **सच्चउरे वीर**मुक्खाओ छब्बाससएहिं महंतं कारिअं अब्भंलिह-सिहरं चेइअं । तत्थ पइट्ठाविआ पित्तलमई सिरि**महावीर**पडिमा **जज्जिग**सूरीहिं । जया पइट्ठाकरणत्थं आयरिआ पट्ठिआ तया अंतराले एगम्मि उत्तमलग्गे वहमाणे **नाहड**[4]**राय**पुव्वपुरिसस्स **विंझराय**स्स आसारूढस्स मुत्तीए पइट्ठा कया । बीयम्मि लग्गे लग्गविसेसाओ मयणमइ व्व महीए जायाए **संख**नामचिल्लएण गुरुआएसाओ दंडघाएण कूवओ कओ । अज्ज वि **संखकूवओ** भण्णइ । सो अ अण्णया सुक्को वि वइसाहपुण्णिमाए पाणीएण भरिज्जइ । तईए लग्गे **वीरसामी** पइट्ठिओ । जम्मि अ लग्गे **वीर**स्स पइट्ठा कया तम्मि चेव लग्गे **दुग्गासूअ**ग्गामे **वयणप**-ग्गामे य दुण्णि **वीर**पडिमाओ साहु-सावयहत्थपेसिअवासेहिं पइट्ठिआओ । तं च **वीर**पडिमं निच्चमच्चेइ राया । एवं **नाहडराएणं** तं बिंबं कारिअं ।

---

1 'मंडल' नास्ति A आदर्शे । 2 B दाएहि । 3 A विन्नासिओ; C विन्निसिओ; Pb विन्नसिओ । 4 ACP नायड° ।

तं च **बंभसंति**जक्खेण सन्निहिअपाडिहेरेण अहोनिसिं पज्जुवासिज्जइ । सो अ पुव्विं **धणदेव**सिट्ठिणो† वसहो आसि । तेण **वेगवईए** नईए पंचसयसगडभरो कड्ढिओ । सो तुट्टो । तओ सिट्ठिणा† चारिजलाइहेउं वेयणं दाऊण **वद्धमाण**गामवासिलोयाणं समप्पिओ । ते य गामिल्लया गहियरित्था तस्स वसहस्स चिंतं पि न कुणंति । तओ सो अकामनिज्जराए मरिऊण वंतरेसु **सूलपाणी** नाम जक्खो जाओ । विभंगनाणं पउंजिअ विण्णायपुव्वजम्म-वइयरो तम्मि गामे वद्धमच्छरो मारिं विउव्वेइ । तओ अद्दण्णो गामो ण्हाउ कयबलिकम्मो धुअकडच्छुअहत्थो भणइ—जस्स देवस्स दाणवस्स वा अम्हेहिं किं पि अवरद्धं सो मरिसेउ त्ति । तओ तेण जक्खेण पुव्वभववसहस्स वुत्तंतो कहिओ । तस्सेव वसहस्स अट्ठिपुंजोवरिं देउलं लोएहिं कयं । तस्स पडिमा कारिआ । **इंदसम्मो** देवच्चओ ठविओ । तओ सो **वद्धमाण**गामो **अट्ठिअगामु** त्ति पसिद्धो । जायं सिवं । कमेण **दूइज्जंतग**तावसासमाओ भयवं **वद्धमाण**सामी छउमत्थविहारेण विहरंतो वासारत्ते तत्थ गामे पत्तो । गाममणुन्नविअ तत्थेव देवउले रयणीए काउ-स्सग्गे ठिओ । तेण मिच्छद्दिट्ठिणा सुरेण भीमट्टहास-हत्थि-पिसाय-नागरूवेहिं उवसग्गित्ता सिर-कन्न-नासा-दंत-नह-ऽच्छि-पिट्ठि-वियणाओ विउव्वियाओ[1] । सव्वत्थ भयवंतमक्खोभं नाऊण सो उवसंतो गीय-नट्ट-थुइमाईहिं पज्जुवासेइ । तप्पभिइ तस्स जक्खस्स **बंभसंति** त्ति नामं रूढं । सो य **सचउर-वीर**चेईए पइट्ठाविसेसेण निवसइ ।

इओ अ **गुज्जर**धराए पच्छिमभागे **वलहि** त्ति नयरी रिद्धिसमिद्धा । तत्थ **सिलाइच्चो** नाम राया । तेण य रयणजडिअकंकसीलुद्धेण **रंकओ** नाम सिट्ठी पराभूओ । सो अ कुविओ तन्निग्गहणत्थं **गज्जणवइहम्मीरस्स** पभूअं धणं दाऊण तस्स महंतं सेन्नं आणेइ । तम्मि अवसरे **वलहीओ चंदप्पह**सामिपडिमा **अंबा-खित्तवालजुत्ता** अहिट्ठायगबलेण गयणपहेण **देवपट्टणं** गया । रहाहिरूढा य देवयाबलेण **वीर**नाहपडिमा अदिट्ठवत्तीए संचरंती आसो-यपुण्णिमाए **सिरिमालं** पुरमागया । अण्णे वि साइसया देवा जहोचियं ठाणं गया । पुरदेवयाए य सिरि**वद्धमाण**-सूरीणं उप्पाओ जाणाविओ—जत्थ भिक्खालद्धं खीरं रुहिरं होऊण पुणो खीरं होहिइ तत्थ साहूहिं ठायव्वं ति । तेण य सिन्नेण **विक्कमाओ अट्ठहिं सएहिं पणयालेहिं** (८४५) वरिसाणं गएहिं **वलहिं** भंजिऊण सो राया मारिओ । गओ सठाणं **हम्मीरो** ।

तओ अन्नया, अन्नो **गज्जणवई गुज्जरं** भंजित्ता तओ वलंतो पत्तो **सचउरे दससयइक्कासीए** (१०८१) **विक्कमवरिसे** मिच्छराओ । दिट्ठं तत्थ मणोहरं **वीर**भवणं । पविट्ठा हण हण त्ति भणिरा मिलक्खुणो । तओ गयवरे जुत्तिता[2] **वीर**सामी ताणिओ । लेसमित्तं पि न चलिओ सट्ठाणाओ । तओ बइल्लेसु जुत्तिएसु पुव्वभवरागेण **बंभसंतिणा** अंगुलचउक्कं चालिओ । सयं हक्कंते वि **गज्जणवइम्मि** निच्चली[3]होउ ठिओ जगनाहो । जाओ विलक्खो मिलक्खुनाहो । तओ घणघाएहिं ताडिओ सामी । लग्गंति घाया ओरोहसुंदरीणं[4] । तओ खग्गपहारेसु विहलीभूएसु मच्छरेण तुरुक्केहिं **वीरस्स** अंगुली कट्टिआ । तं गहिऊण य ते पट्ठिआ । तओ लग्गा[5] पज्जलिउं तुरयाण पुच्छा । लग्गा य वलिउं[6] मिच्छाण मुच्छा । तओ तुरए छड्डित्ता[7] पायचारिणो चेव पयट्टा, धस त्ति धरणीए पडिआ । **रहमाण** सुमरंता विल-वंता दीणा खीणसव्वबला नहगणे अदिट्ठवाणीए भणिआ एवं—**वीरस्स** अंगुलिं आणित्ता तुम्हे जीवससए पडिआ । तओ **गज्जणाहिवई** विम्हिअमणो सीसं धुणंतो सिल्लारे आइसइ । जहा—एयमंगुलिं वलिऊण तत्थेव ठावेह । तओ भीएहिं तेहिं पच्चाणीया । सा लग्गा य[8] झड त्ति सामिणो करे । तमच्छेरं पिच्छिअ पुणो वि **सचउरं** पइ सउणं पि न मग्गंति तुरुक्का । तुट्ठो चउव्विहो वि समणसंघो । **वीर**भवणे पूआ-महिमा-गीय-नट्ट-वाइत्त-दविणदाणेहिं पभावणं करेइ ।

अन्नया बहुम्मि काले वोलीणे **मालवि**[9]चयनरिंदो **गुज्जरधरं** भंजिऊण **सचउर**सीमाए पहुत्तो । तओ

† † एतदन्तर्गता पङ्क्ति पतिता C आदर्शे । 1 ABP वियव्वि° । 2 P जोत्तित्ता । 3 P निचलो । 4 ओरोहसुंदरीण । 5 लग्गए । 6 C चलिउ । 7 A छडित्ता । 8 'य' नास्ति P । 9 P °चिय° ।

बंभसंतिणा पउरं सिन्नं विउविऊण भंजिओ तस्स बलं । तस्स ल्हासआवासेसु उट्ठिओ वज्जग्गी । **मालवा**हिवई कोसकुट्ठागाराइं [1]छड्डिअ पणट्ठो कागणासं ।

अह अन्नया **तेरहसय-अडयाले** (१३४८) **विक्कम**संवच्छरे पवलेणं **कप्फर**[2]दलेणं देसम्मि भज्जंते, नयर-गामेसु पलाणेसु, जिणभवणदुवारेसु ढक्किएसु, जोअणचउक्कमज्झे **बंभसंति**माहप्पेणं अणाहयगहिरसरतंवक्कचक्कं वज्जंतं 5 सोऊण सिरि**सारंगदेव**महारायसेणाआगमणं संकिऊण भग्गं मुग्गलबलं । **सच्चउर**सीमा वि न चंपिआ ।

अह **तेरसय-छप्पन्ने विक्कम**वरिसे (१३५६) **अल्लावदीण**सुरताणस्स कणिट्ठो भाया [3]**उल्लूखान**-नामधिज्जो[4] **ढिल्ली**पुराओ मंति**माहव**पेरिओ **गुज्जर**धरं पट्ठिओ[5] । **चित्तकूडा**हिवइ **समरसीहे**णं दंडं दाउं **मेवाड**देसो तया[6] रक्खिओ । तओ **हम्मीर**जुवराओ **वग्गड**देसं **मुहडासयाइं** नयराणि य भंजिअ **आसा**-**वल्ली**ए पत्तो । **कण्णदेव**राया[7] अ नट्ठो । **सोमनाहं** च घणघाएण भंजित्ता गड्डुए रोविऊण **ढिल्ली**ए पेसेइ । पुणो 10 **वामणथली**ए गंतुं **मंडलिक्कराण**यं दंडित्ता **सोरट्ठे** निअआणं पयट्टाविता **आसावल्ली**ए आवासिओ । मढ-मंदिरदेउलाईणि पज्जालेइ । कमेण **सत्तसय**देसे संपत्तो । तओ **सच्चउरे** तहेव अणाहयतंवक्केसु वज्जंतेसु मिच्छदलं पलाणं । एवं अणेगाणि अवदाणाणि पुहवीमंडले **सच्चउरवीर**नाहस्स पायडाणि सुव्वंति ।

अह अलंघणिज्जा भविअव्वय त्ति दूसमकालविलसिएण केलिप्पिया वंतरा हवंति । गोमंस-रुहिरछंटिए अ भवणे दूरीहवंति देवयाओ त्ति । असन्निहिए पमत्ते अहिट्ठायगे **बंभसंति**जक्खम्मि **अल्लावदीण**राएण सो चेव अणप्प-† 15 माहप्पो भयवं **वीर**सामी **तेरसय-सत्तसट्ठे** (१३६७) **विक्कमाइ**च्चवच्छरे **ढिल्लि**ए आणित्ता आसायणाभायणं कओ । कालंतरेण पुणरवि पडिमंतरे पायडपभावो पूआरिहो† भविस्सइ ॥

सच्चउरकप्पमेयं निच्चं वायंतु महिमअपमेयं । वंछिअफलसिद्धिकए सिरि**जिणपहसूरि**णो भव्वा ! ॥ २ ॥

॥ इति श्रीसत्यपुरकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० १६१, अ० २ ॥

---

1 P छड्डिऊण । 2 A षप्फर°; C कंप्फर° । 3 C उल्लूखान° । 4 P °खानाभिहाणो । 5 C D पइट्ठिओ । 6 'तया' नास्ति P । 7 A B C °राओ । †-† एतदन्तर्गता पंक्तिः पतिता C आदर्शे ।

१८. अष्टापदमहातीर्थकल्पः ।

[श्रीधर्मघोषसूरिकृत ।]

वरधर्मकीर्तिऋषभो[1] विद्यानन्दाश्रित पवित्रितवान् ।
देवेन्द्रवन्दितो य स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ १ ॥

यस्मिन्नष्टापदभूदष्टापदमुख्यदोषलक्षहर । अष्टापदाभ [2]ऋषभ स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ २ ॥
ऋषभसुता नवनवतिर्बाहुबलिप्रभृतय प्रवरयतय । यस्मिन्नमजन्नमृत स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ ३ ॥
अयुजन्निर्वृतियोग[3] वियोगभीरव इव प्रभो समकम् । यत्रर्षिदशसहस्रा स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ ४ ॥
यत्राष्टपुत्रपुत्रा युगपदृषभेण[4] नवनवतिपुत्रा । समयैकेन शिवमगु स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ ५ ॥
रत्नत्रयमिव मूर्तं स्तूपत्रितय चितित्रयस्थाने । यत्रास्थापयदिन्द्र स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ ६ ॥
सिद्धायतनप्रतिम सिंहनिषद्येति यत्र सुचतुर्द्वा । भरतोऽरचयच्चैत्य स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ ७ ॥
यत्र विराजति चैत्य योजनदीर्घं तदर्धपृथुमानम् । क्रोशत्रयोच्चमुच्चै[5] स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ ८ ॥
यत्र भ्रातृप्रतिमा [6]व्यधाच्चतुर्विंशति[7] जिनप्रतिमा । भरत सात्मप्रतिमा स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ ९ ॥
[8]स्वस्वाकृतिमितिवर्णाद्यवर्णितान् वर्तमानजिनबिम्बान् । भरतो वर्णितवानिह स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ १० ॥
सप्रतिमाभ्रनवतिं बन्धुस्तूपास्तथार्हतस्तूपम् । यत्रारचयच्चक्री स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ ११ ॥
भरतेन मोहसिंह हन्तुमिवाष्टापद कृताष्टपद । शुशुभेऽष्टयोजनो य स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ १२ ॥
यस्मिन्ननेककोट्यो महर्षयो भरतचक्रवर्त्याद्या । सिद्धिं साधितवन्त स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ १३ ॥
सगरसुताग्रे सर्वार्थ शिवगतीन् भरतराजवंश्यान् । यत्र सुबुद्धिरकथयत्स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ १४ ॥
परिखासागरमकरन्त सागराः सागराज्ञया यत्र । परितो रक्षति कृतये स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ १५ ॥
क्षालयितुमिव स्वैनो जैनो[9] यो गङ्गयाश्रित परित । सन्ततमुल्लोलकरै स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ १६ ॥
यत्र जिनतिलकदानाद् दमयन्त्यपि [10]कृतानुरूपफलम् । भालस्वभावतिलक स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ १७ ॥
यमधःपारे कोपात् क्षिपन्खल वालिनांह्रिणाऽऽक्रम्य । आरावि रावणोऽर स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ १८ ॥
भुजतन्त्र्या जिनमहमहम्लङ्केन्द्रोऽवाप यत्र धरणेन्द्रात् । विजयामोघा शक्तिं स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ १९ ॥
[11]चतुरश्चतुरोऽष्टदश द्वौ चापाच्यादिदिक्षु जिनबिम्बान् । यत्रावन्दत [12]गणभृत् स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ २० ॥
अचलेऽत्रोदयमचल स्वशक्तिवन्दितजिनो जनो[13] लभते । वीरोऽवर्णयदिति य स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ २१ ॥
प्रभुभणितपुण्डरीकाध्ययनाध्ययनात् सुरोऽत्र दशमोऽभूत् । दशपूर्विपुण्डरीकः स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ २२ ॥
यत्र [14]स्तुतजिननाथोऽदीक्षित तापसशतानि पञ्चदश । श्रीगौतमगणनाथ स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ २३ ॥
इत्यष्टापदपर्वत इव योऽष्टापदमयश्चिरस्थायी । स्थानानि महातीर्थं स जयत्यष्टापदगिरीश ॥ २४ ॥

॥ इति श्रीअष्टापदमहातीर्थकल्पः समाप्तः । कृतिरियं श्रीधर्मघोषसूरीणाम् ॥
॥ ग्र० ३०, अ० २२ ॥

---

1 C Pb °र्द्धर्तिकृषभो । 2 C Pa °पदा ऋषभ । 3 Pb योग्य । 4 Pb °पद्ऋषभेन । 5 Pa °त्रयोद्धमुच्चै । 6 B व्यधात्° । 7 B C Pa चतुर्विंशति । 8 C स्वस्व° । 9 Pa जैन । 10 A B कृतानु° । 11 C चतुरश्चतुरो° । 12 B गुणभृत् । 13 B Pb जिनो । 14 C स्तुतजिन° ।

१९. मिथिलातीर्थकल्पः ।

सिरि**मल्लि-नमि**जिणाणं पयपउमं पणमिऊण सुरपणयं । **मिहिला**महापुरीए कप्पं जंपेमि लेसेणं ॥ १ ॥

इहेव **भारहे** वासे पुव्वदेसे **विदेहा** नाम जणवओ, संपइ काले **तीरहुत्तिदेसो** त्ति भण्णइ । जत्थ पइ-गेहं महुरमंजुलफलभारोणयाणि कयलीवणाणि दीसंति । [1]पहिया य [2]चिविडयाणि दुद्धसिद्धाणि पायसं च भुंजंति । 5 पए पए वावीकूवतलाय[3]नईओ अ महुरोदगा,[4] पागयजणा वि सक्कयभासविसारया अणेगसत्थपसत्थअइ[5]निउणा य जणा । तत्थ रिद्धित्थमिअसमिद्धा **मिहिला** नाम नयरी हुत्था । संपयं **जगइ** त्ति पसिद्धा । एयाए नाइदूरे **जणय-**महारायस्स भाउणो **कणयस्स** निवासट्ठाणं **कणइपुरं** वट्टइ ।

तत्थ **मिहिला**नामनयरीए **कुंभराय-पभावई**संभवस्स भगवओ **मल्लिनाहस्स** इत्थीतित्थयरस्स, **नमि-जिणस्स** य **विजयनिव-वप्पादेवी**नंदणस्स चवण-जम्मण-दिक्खा-केवलनाणकल्लाणयाइं जायाइं ।

10 इत्थ अट्ठमस्स सिरि**वीर**गणहरस्स **अकंपिअस्स** जम्मो ।

इत्थ **जुगबाहु-मयणरेहाणं** पुत्तो **नमी** नाम महाराया वलयसद्दवइयरेण पत्तेयबुद्धो **सोहम्मिन्द-**परिक्खिअवेरग्गनिच्छओ संवुत्तो ।

इत्थेव लच्छीहरे चेईए **अज्जमहागिरि**सीसो **कोडिन्नगुत्तो आसमित्तो** सिरिवीरनिव्वाणाओ **वीसुत्तरे वाससयदुगे** (२२०) वोलीणे अणुप्पवायपुव्वे [6]निउणियं नाम वत्थुं पढंतो विपडिवन्नो सामुच्छेइयदिट्ठिं[7] पवत्तिऊण 15 पावयणियथेरेहिं अणेगंतवायजुत्तीहि निवारिज्जमाणो वि चउत्थो निन्हवो जाओ ।

सिरि**महावीर**सामिपयपंकयपवित्तिअजलाओ **बाणगंगा-गंडई**नईओ मिलित्ता एयं नयरिं पवित्तयंति ।

इत्थ **चरमतित्थयरो** वासारत्ते अवट्ठिओ ।

इत्थ **जणयसुआए** महासईए जम्मभूमिठाणे महल्लो वडविडवी पसिद्धो ।

इत्थ सिरि**राम-सीयाणं** वीवाहट्ठाणं **साकल्लकुंडं** ति लोगे रूढं । **पायाललिंगा**इणि य लोइयतित्थाणि 20 अणेगाणि चिट्ठंति ।

इत्थ य **मल्लिनाह**चेईए **वइरुट्टादेवी कुबेरजक्खो** अ, **नमिजिण**चेईए **गंधारीदेवी भिउडी-जक्खो** अ, आराहयजणाणं विग्घे अवहरंति त्ति ।

इय **मिहिला**कप्पमिणं सुणंति वायंति **जिणपहठिआ** जे । तेसिं खिवेइ कंठे वरमालं मुत्तिसिरिमहिला ॥ २ ॥

॥ इति श्रीमिथिलातीर्थकल्पः† ॥

25 ॥ ग्रं० ३४, अ० १८ ॥

---

1 Pa पिहिया । 2 P C विविड° । 3 D तलाव । 4 D °दया । 5 P C 'अइ' स्थाने 'अज्झत्थि' । 6 P नेउणियं । 7 C दिट्ठं । † B श्रीमिथिलापुरीमहातीर्थकल्पः ।

२०. रत्नवाहपुरकल्पः ।

श्रीधर्मनाथमानम्य **रत्नवाहपुरे** स्थितम् । तस्यैव पुररत्नस्य कल्पं किञ्चिद्ब्रवीम्यहम् ॥ १ ॥

अस्तीहैव **जम्बूद्वीपे** द्वीपे **भारते** वर्षे **कोशलेषु** जनपदे नानाजातीयोच्चैस्तरशाखिशाखानद्दलदलकुसु-
मफलच्छलनाच्छादितघर्मघृणिकरगहनवनमण्डितं शीतलविमलबहलजलनिर्झरघर्घरवबन्धुरं **रत्नवाहं** नाम पुरम् । तत्र
चेक्ष्वाकुकुलप्रदीपः कनककनककान्तकायकान्तिः कुलिशलाञ्छितपञ्चचत्वारिंशच्चापोच्छ्रयकायः पञ्चदशस्तीर्थपतिर्विज- 5
यविमानादवतीर्य श्री**भानुनरेन्द्र**वेश्मनि **सुव्रतादेवी**कुक्षौ तनयतयाऽवततार । क्रमेण गुरुवितीर्णधर्मनामधेयो
जनन-निष्क्रमण-केवलज्ञानानि तत्रैव समाससाद । निर्वृतश्च **संमेतशिखरि**शिखरे । तस्मिन्नेव च पुरे जननयनजनि-
तशैत्यं श्री**धर्मनाथ**चैत्यं **नागकुमार**देवाधिष्ठितं कालेन निर्वृत्तम् ।

तत्र च नगरे कुम्भकार एकः स्वशिल्पच्छेक आसीत् । तस्य तनयस्तरुणिमानमधिगत्य क्रीडादुर्ललिततया तत्र
रामणीयकशालिनि चैत्ये गृहादागत्य स्वैरं द्यूतादि तत्तत्क्रीडाविधाभिश्चिक्रीड । तत्रैको **नागकुमारः** केलिप्रियतया 10
धृतमानुषतनुस्तेन कुम्भकारदारकेण सार्धं प्रत्यहं प्रववृते क्रीडितुम् । तत्पित्रा च स पुत्रः कुलक्रमागतकुलालकर्माण्यनि-
र्मिमाणः प्रतिदिनं दुर्वाग्भिरुपालेभे । न च तद्वचनमसौ प्रत्यपादि[1] । ततः पित्रा गाढं प्रहृत्य बलादपि स्वकर्माणि मृत्ख-
ननानयनादीनि कारयितुमुपक्रान्तः । अन्तरमवलोक्य पुनस्तत्र चैत्ये गत्वाऽन्तराऽन्तरा तथैव तेन **नागकुमारेण** साकं
खेलितुं लग्नः । पृष्टश्च **नागामरेण**—किं कारणं पूर्ववन्निरन्तरं न क्रीडितुमायासि[2] । तेनोक्तम्—जनकः कुप्यति
मह्यम् । स्वकर्मनिर्माणमन्तरेण कथमिव जठरपिठरनिवरपूरणमुपपद्यत इति । तदाकर्ण्य **दुग्धकर्णकुमारो** वाचमुवाच— 15
यद्येवं तर्हि क्रीडान्ते भूपीठे विलुठ्य भविष्याम्यहमहिः, मत्पुच्छं चतुरङ्गुलमात्रं लोहेन मृत्खननोपकरणेन छित्वा
त्वया ग्राह्यम् । तच्च चारुचामीकरमयं भविष्यति । तेन हेम्ना तव कुटुम्बस्य वृत्तिनिर्वाहो भविष्यतीति सौहार्देनाभि-
हिते स तथैव प्रतिदिवसं कर्तुं प्रवृत्तः । पितुश्च तत्कनकमर्पयति स्म, न च रहस्यमभिदत् । [0]अन्यदाऽतिनिर्बन्धं विधाय
पृच्छति सति पितरि भयाद्यथावस्थितमचकथत् । ततः सस्मितेन विस्मि[0]तेन च जगदे जनकेन—रे मूर्ख ! 'चतुरङ्गुल-
मानमेव किमिति छिनत्सि'[3] । बहुतरे हि छिन्ने भूरितरं भूरि भवति । तेन भणितम्—तात ! नातः समतिरिक्त- 20
महं छेत्तुमुत्सहे, परमसुहृद्देवतवचनातिक्रमभयात् । ततस्तज्जनकेन लोभसंक्षोभाकुलितमनसा तस्मिंस्तनये क्रीडार्थं
तथैव मुष्टेषु पि मन्दिरमनु यति । यावत्संक्रीड्य धरणिपीठे विलुठ्य स पन्नगतामापन्नस्तावत् कुम्भकारेण निलं प्रविश-
तस्तस्य वपुरर्धं कुद्दालिकया चिच्छेदे । ततः कोपाटोपाघेन **नागकुमारेण**—रे पापिष्ठ ! रहस्यभेदं करोषीत्यतिगाढं
निर्भर्त्स्य स दारको दंष्ट्रासम्पुटेन दष्ट्वा व्यापादितः, पिता च । रोषप्रकर्षात्सकलान्यपि कुलालकुलानि कालकवलितानि
कृतानि । ततः प्रभृति च न कश्चन चक्रजीवनजातीयस्तत्र **रत्नवाहपुरे**ऽद्यापि निवसतीति । कौलालभाण्डानि स्थाना- 25
न्तरादेव नयन्ति जनाः । तत्र च तथैव नागमूर्तिपरिवारिता श्री**धर्मनाथ**प्रतिमाऽद्यापि सम्यग्दृष्टिभिरितरैश्चानेकवि-
धिभिर्भावमहात्मभिः पूज्यते । अद्यापि च परसमयिनो '**धर्मराज**' इति व्यपदिश्य कदाचिदवर्षति वर्षासु जलधरे
क्षीरघटसहस्रैर्भगवन्तं स्नपयन्ति, सम्पद्यते च तत्प्रभावाद्विशिष्टा मेघवृष्टिः । **कन्दर्पा** शासनदेवी **किन्नरश्च** शासनयक्षः
श्री**धर्मनाथ**पादपद्मोपासनाद्वैतचञ्चरीकाणामनर्थप्रतिघातमर्थप्राप्तिं चात्र सूत्रयतीति ।

इति श्रीरत्नवाहस्य श्रीजिनप्रभसूरिभिः । कल्पः कृतो रत्नपुरपुङ्गवस्य यथाश्रुतम् ॥ २ ॥ 30

॥ इति श्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुर[5]तीर्थकल्पः ॥

॥ ग्रं० ३२, अ० २३[6] ॥

---

1 B प्रतिपेदे । 0-0 एतच्चिह्नान्तर्गत पाठः पतितः A आदर्शे । 2 P चिह्नान्तर्गत 'चतुरङ्गुलमानमेव' । 3 ABPa b
म छिनत्सि । 4 B भूयिष्ठं । 5 Pa रत्नवाहपुरमहातीर्थ° । 6 A चिह्नं नास्त्यत्र ग्रन्थाग्रसंख्या ।

२१. अपापाबृहत्कल्पः ।

पणमिअ **वीरं** वुच्छं[1] तस्सेव य सिद्धिगमपवित्ताए । **पावापुरीइ** कप्पं दीवमहुप्पत्ति पडिवद्धं ॥ १ ॥
गउडेसु पाडलिपुरे संपइराया तिखंडभरहवई । **अज्जसुहत्थि**गणहरं पुच्छइ पणओ परमसड्ढो[2] ॥ २ ॥
दीवालिअपव्वमिणं लोए लोउत्तरे अ गउरविअं । भयवं ! कह संभूअं ?. अह भणइ गुरू–निव ! सुणसु[3] ॥ ३ ॥

5 §१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणो[4] भगवं **महावीरो** पाणयकप्पट्ठिए पुप्फुत्तरविमाणे वीससागरोवमाइं आउं परिवालित्ता, तओ चुओ समाणो तिण्णाणोवगओ इमीसे ओसप्पिणीए तिसु[5] अरएसु वइक्कंतेसु अद्धनवमासाहिअ-पंचहत्तरीवासावसेसे चउत्थे अरए आसाढसुद्धच्छट्ठीए उत्तरफग्गुणीरिक्खे **माहणकुंड**गामे नयरे **उसभदत्त**-माहणभारिआए **देवाणंदाए** कुच्छिंसि सीह-गय-वसहाइचउद्दसमहासुमिणसंसूइओ अवइन्नो । तत्थ वासीइदिणा-णंतरं **सक्काइट्ठेण हरिणेगमेसिणा** आसोअवहुलतेरसीए तम्मि चेव रिक्खे **खत्तियकुंड**गामे नयरे **सिद्धत्थ**-
10 रण्णो देवीए **तिसलाए** गब्भविणिमयं काउं गब्भम्मि साहरिओ । माऊए[6] सिणेहं नाउं सत्तममासे 'अम्मापिअरेहिं जीवंतेहिं नाहं समणो होहं' ति गहिअभिग्गहो, नवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं अंते चित्त-सिअतेरसीअद्धरत्ते तम्मि चेव रिक्खे जाओ । अम्मापिऊहिं कय**वद्धमाण**नामो मेरुकंप-सुरखव्वण-**इंदवायरण**प-णयणपयडअवदाणो भुत्तभोगो, अम्मापिऊहिं देवत्तगएहिं तीसं वासाइं अगारवासे वसित्ता, संवच्छरिअं दाणं दाउं, **चंदप्पहाए** सिवियाए एगागी एगदेवदूसेण मग्गसिरकसिणदसमीए तम्मि चेव रिक्खे छट्ठेणं, अवरण्हे **णायसंड**वणे
15 निक्खंतो । वीयदिणे **वहुल**विप्पेणं पायसेण पाराविओ । पंचदिव्वाइं पाउब्भूआइं । तत्तो वारसवासाइं तेरसपक्खे अ नर-सुर-तिरियकओवसग्गे सहित्ता, उग्गं च तवं चरित्ता **जंभियगामे उज्जुवालिआ**तीरे गोदोहिआसणेणं छट्ठभत्तेणं तम्मि चेव रिक्खे वइसाहसुद्धदसमीए पहरतिगे केवलनाणं पत्तो । इक्कारसीए अ **मज्झिमपावाए महसेण**वणे तित्थं पयट्टिअं । **इंदभूइ**प्पमुहा गणहरा दिक्खिआ सपरिवारा । वयदिणाओ अ भयवओ वायालीसं वासाचउम्मासीओ जायाओ । तं जहा–एगा **अट्ठिअगामे**, तिण्णि **चंपा**[7]**पिट्ठीचंपासु**,[8] दुवालस **वेसाली**-
20 **वाणिअ**ग्गामेसु, चउद्दस **नालंदा-रायगिहेसु**, छ **मिहिलाए**, दो **भद्दिआए**, एगा **आलभियाए**, एगा **पणिअभूमीए**, एगा **सावत्थीए** । चरिमा पुण **मज्झिमपावाए हत्थिसाल**रण्णो असुज्जमाण[9]सुंकसालाए आसि । तत्थ आउसेसं जाणंतो सामी सोलसपहराइं देसणं करेइ ।

§२. तत्थ वंदिउमागओ **पुण्णपालो** राया अट्ठण्हं सदिट्ठाणं सुमिणाणं फलं पुच्छेइ । भयवं वागरेइ । ते अ इमे–पढमो ताव चलपासाएसु गया चिट्ठंति । तेसु पडंतेसु चेते न णिंति, के वि णिंता वि तहा निग्गच्छंति, जह[10]
25 तप्पडणाओ विणस्संति । एयस्स सुमिणस्स फलं एवं–दूसमगिहवासा चलपासायत्थाणीआ । संपयाणं सिणेहाणं निवासाणं च अथिरत्तओ । हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी इच्चाइवयणाओ गया धम्मत्थी सावया । इयरपरसमयगिह-त्थेहिंतो पाहाणत्तणेण ते अ गिहवासाए पडिहंति देसभंगाईहिं, तह वि निग्गंतु न[11] इच्छिस्संति । वयगहणेणं जे वि णीहिंति ते वि अविहिनिग्गमणेणं । तओ ते विणिस्सिस्संति । गिहिसंकिलेसमज्झे आगया भग्गपरिणामा भविस्संति । विरला य सुसाहुणो होऊण आगमाणुसारेणं गिहिसंकिलेसाई मज्झे आगए वि अवगणिऊण कुलीणत्तणेण निव्व-
30 हिस्संति त्ति पढम[12]सुविणत्थो ॥ १ ॥

वीओ पुण इमो–वहवो वानरा तेसिं मज्झे जूहाहिवइणो । ते अमिज्झेणं अप्पाणं विलिंपंति, अन्ने वि अ । तओ लोगो हसइ । ते भणंति–न एअमसुइं गोसीसचंदणं खु एयं । विरला पुण वानरा य न लिंपंति । ते अलित्तेहिं खिंसिज्जंति त्ति । एयस्स फलं पुण इमं–वानरत्थाणीआ गच्छिल्लगा । अप्पमत्तत्तेण चलपरिणामत्तेणं च । जूहाहिवई

1 P वोच्छं । 2 B °सड्ढो । 3 C सुणेसु । 4 B 'समणो' नास्ति । 5 A B तीएसु; D तिसुए । 6 A माऊण ।
7 A चंपाए । 8 A B D चंपासुं । 9 C सुक° । 10 A B तह । 11 नास्ति 'न' । 12 A °सुमिण° ।

गच्छाहिवई आयरियाइणो । असुइविलेवण तु तेर्सि आहाकम्माइसावज्जसेवण । अन्नविलिंपण च[1] अन्नेसि वि ।
तक्कारणलोगहसण च, तेर्सि अणुचिअपविचीए य वयणहीला । ते भणिस्सति न एय गरहिय, कि तु धम्मगमेय ।
विरला तदणुरोहेणावि न सावज्जे पयट्टिहिंति । ते य तेहिं खिसिज्जिहिंति, जहा–एए अवगीया, अकिंचिकरा य
त्ति बीइअसुविणत्थो ॥ २ ॥

तईओ पुण इमो–सच्छायखीरतरूण हिट्ठे बहवे सीहपोअगा पसतरूवा चिट्ठति । ते य लोएहिं पसंसिज्जति 5
अहिगम्मति अ बव्वूलाण च हिट्ठे सुणग चि । फल तु एयस्सेम–खीरतरुत्थाणीयाणि साहूण विहरणपाउग्गाणि खित्ताणि
सावया वा साहूण भत्तिबहुमाणवता धम्मोवग्गहदाणपरा सुसाहुरक्खणपरा य । ते य रुधिहिंति बहुगा सीहपोयगा
निययावासि[2]पासत्थोसन्नाई [3]सक्किलिट्ठचणओ अन्नेर्सि [4]गसणाओ अ । ते अप्पाण जणरजणत्थ पसत दरिसिहिंति ।
तहाविहकोउहल्लिअलोगेहिं पससिज्जिहिंति अहिगम्मिस्सति [†]अ तव्वयणकरणाओ । तत्थ य कयाइ केई धम्मसड्ढगा[5]
वेहारुग[6]परिहारुगा[7] वा दूइज्जति[8] । ते अ तेर्सि तब्भावियाण च सुणगाइड पडिहासिस्सति । 0अभिक्खण[†] सुद्धध- 10
म्मकहणेण भसति चि । जेसु कुलेसु दूइज्जति ते बव्वूलसमा[9] पडिहासिस्सति अवण्णाए । दूसमवसेण धम्मगच्छा सीह-
पोअगा इव भविस्सति0 ॥ ३ ॥

चउत्थो पुण एव–के वि कागा वावीए तडे [10]तिसाए अभिभूआ मायासर दट्ठु तत्थ गतु पयट्टा । केण वि
निसिद्धा–न एय जल ति । ते असद्दहता तत्थ गया विणट्ठा य चि । फल तु इम–वावीत्थाणीआ सुसाहुसतई ।
अइगभीरा सुभाविअत्था उस्सग्गाववायकुसला । अगहिल्लगहिलो राया इइ [11]नाएण कालोचिअधम्मनिरया अणिस्सिओ- 15
वस्सिया । तत्थ कागसमा अइवक्कजडा अणेगकक्कोवहया धम्मत्थी[12] । ते अज्झयधम्म[13]सद्धाए अभिभूआ । मायासर-
प्पाया पुण पुव्वुत्तविवरीया धम्मचारिणो अईव कट्ठाणुट्ठाणनिरया वि अपरिणयत्ताओ अणुवायपयट्टत्ताओ अ कम्मबध-
हेउणो । ते दट्ठु मूढधम्मिया तत्थ गच्छिहिति चि केण वि गीयत्थेण ते भणिहिति[14] जहा न एस धम्ममग्गो, कि तु
तदाभासोय । तहावि ते असद्दहता केइ[15] जाहिति विणिस्सिहिंति अ ससारे पडणेण । जे पुण तेर्सि वयणेण चाहिति
ते अमूढधम्मसाहगा भविस्सति त्ति ॥ ४ ॥ 20

पचमो इमो–अणेगसावय[16]गणाउले विसमे वणमज्झे सीहो मओ चिट्ठइ । न य त को वि सिगालाई विणा-
सेइ । कालेण तत्थ मयसीहकडेवरे[17] कीडगा उप्पण्णा । तेहि त भक्खिअ दट्ठु ते सियालाई उवद्दवति चि । फल तु–सीहो
पवयण परवाइमयदुद्धरिसत्ताओ । वण पविरलसुपरिक्खगधम्मिअजण[18] **भारहवासं** । सावयगणा परतित्थिआई पवयण-
पच्चणीआ । तेहि[19] एव मन्नति–एय[20] पवयणमम्हाण पूआसक्कारदाणाइ[21]उच्छेअगर । तो जहातहा फिट्टउ त्ति । विसम
अमज्झत्थजणसकुल । त च पवयण मय अइसयरयणगमेण निप्पभाव भविस्सइ । तहावि पच्चणीया भएण न त उवद्दवि- 25
हति । किर इत्थ परुप्पर सगई अत्थि सुट्ठियत्त च त्ति । कालदोसेण तत्थ कीडगप्पाया पवयणनिद्धसमयतरीयाई
उप्पज्जिहिंति, ते य परप्पर निंदणमडणाईहि सासणलाघव जणिहिंति । त दट्ठु ते पच्चणीया वि एएर्सि परुप्पर पि न
मेलु त्ति धुव निरवसेसमेय पि त्ति निब्भयत्तेण उवद्दविस्सति पवयण ॥ ५ ॥

छट्ठो पुण इमो–पउमागरा सरोवरगाई[22] अपउमा गद्दभगजुआ वा । पउमा पुण उक्कुरडियाए ते वि विरला न
तहा रमणिज्ज त्ति[23] । फल तु–पउमागरत्थाणीयाणि धम्मखित्ताइ सुकुलाइ वा । तेसु न पउमाइ धम्मपडिवत्तिरूवाई । 30

---

1 A C नास्ति 'च' । 2 A B Pc नियावासि° । 3 B C P सक्किट्ठत्ता° । 4 Pc गमगा° । 5 P °सड्ढगा, C सड्ढगा । 6 B Pa-c वेहारुगा । 7 P नास्ति 'परिहारुगा' । 8 P इज्जति । † दण्डान्तर्गता पक्ति पतिता A प्रतौ । 9 A C नास्ति 'बब्बूलसमा', Pa c बब्बूल त्ति । 0 इतदन्तर्गत पाठ नास्ति Pa प्रतौ । 10 E तेति । 11 A रायाइ नाएण, P °इय ना° । 12 C धम्मत्था । 13 A धम्म° । 14 B भणिहिंति । 15 C केय । 16 A B P सावया° । 17 B कडेवरे । 18 A B D °जण° । 19 B एहि । 20 A B एव । 21 C E उच्छेय° । 22 Pc सरो-वरमाईओ । 23 P रमणिज्ज ।

साहु-सावयसंघा[1] वा। जे वि धम्मं पडिवज्जिहिंति ते वि कुसीलसंसग्गीए लुलिअ[2]परिणामा भविस्संति। [3]उक्कुरुडिया पच्चंतखित्ता नीयकुलाइं वा तेसिं धम्मो पयट्टिस्सइ। ते वि अट्ठाणुप्पत्तिदोसाओ लोएणं खिंसिज्जमाणा ईसाइदोस-दुट्ठत्तेण न[4] सकज्जं साहिस्संति त्ति ॥ ६ ॥

सत्तमो इमो—को वि करिसगो [0]दुवियड्ढो दड्ढघुणक्खयाइं पारोहअजुग्गाइं बीयाइं सम्मं बीआइं मन्नंतो किणित्ता य खित्तेसु ऊसराइसु पयरइ। तम्मज्झे[5] समागयं विरलं सुद्धबीयं अवणेइ सुखित्तं परिहरइ त्ति। एयस्स फलं इमं—करिसगत्थाणीया दाण-धम्मरुई। ते य[0] दुवियड्ढा जाणगं मन्ना अप्पाउग्गाणि वि संघभत्ताइदाणाणि पाउग्गाणि मन्नंता; ताणि वि अपत्तेसु दाहिंति। इत्थ चउभंगो। एगो सुद्धो अप्पाउग्गमज्झे किंचि सुद्धं देयं भवइ तं अवणेहिंति। सुपत्तं वा समागयं परिहरिस्संति। एरिसाणि दाणाणि; दायगा गाहगा य भविस्संति। अन्नहा वा वक्खाणं—अबीया असाहुणो ते वि साहुबुद्धीए दुवियड्ढा गिण्हिस्संति। अठाणेसु अविहीए अ ठाविस्संति। जहा दुवियड्ढो कोइ करिसओ अबीयाणि वि बीयाणि, बीयाणि वि अबीयाणि मन्नंतो तहा ठवेइ तत्थ वा ठवेइ, जहा जत्थ य [6]कीडगाइणा खज्जंति, [7]चोप्पडाइणा वा विणस्संति। अन्नहा वा परोहस्स अणलाणि भवंति। एवं अयाणगधम्मसड्ढिआ पत्ताणि वि अविहि-अबहुमाण-अभत्तिमाईहिं तहा करिस्संति जहा पुन्नपसवं[8] अक्खमाइं होहिंति ॥ ७ ॥

अट्ठमो अ एसो—पासायसिहरे खीरोदभरिआ सुत्ताइअलंकिय[9]गीवा कलसा चिट्ठंति। अन्ने य भूमीए बोडा उग्गालसयकलिआ। कालेण ते सुहकलसा नियठाणाओ चलिआ बोडयघडाणं उवरिं पडिया बे वि भग्ग त्ति। फलं तु—कलसत्थाणीया सुसाहुणो। पुव्वं उग्गविहारेण विहरंता पुज्जा होऊण कालाइदोसओ नियसंजमठाणाओ टलिया उसन्नीभूया सीयलविहारिणो पायं भविस्संति। इयरे पुण पासत्थाई भूमिट्ठिया[10] चेव[11] भूमिरयउग्गालप्पायअसंजमट्ठाण-सयकलिया बोडघडप्पाया निसन्नपरिणामा चेव होहिंति। ते य सुसाहुणो टलंता अन्नविहारखित्ताभावाओ[12] बोडघड[13]-कप्पाणं पासत्थाईणं उवरि पीडं करिस्संति। ते य सखित्तअक्कमणेणं पीडिया संता निद्धंधसत्तेण सुट्ठुयरं तेसिं संकिलेसा य होहिंति। तो परुप्परं विवायं कुणंता बेवि संजमाओ भंसिस्संति।

इक्के तवगारविया अन्ने सिढिल सधम्मकिरियासु। मच्छरवसेण दुण्णि वि होहिंति अपुट्ठधम्माणो ॥ ४ ॥

केइ पुण अगहिलगहिलराय[14]अक्खाणगविहीए कालाइदोसे वि अप्पाणं निव्वाहइस्संति। तं च अक्खाणयमेवं पन्नवंति पुव्वायरिया—पुव्विं किर **पुहवीपुरीए पुण्णो** नाम राया। तस्स मंती **सुबुद्धी** नाम। अन्नया **लोगदेवो** नाम नेमित्तिओ आगओ। सो य **सुबुद्धि**मंतिणा आगमेसिकालं पुट्ठो। तेण भणिअं—मासाणंतरं इत्थ जलहरो वरिसिस्सइ। तस्स जलं जो पाहिइ, सो सव्वो वि गहग्घत्थो भविस्सइ। कित्तिए वि काले गए सुवुट्ठी भविस्सइ। तज्जलपाणेण पुणो जणा सुत्थी भविस्संति। तओ मंतिणा तं राइणो विन्नत्तं। रन्नावि पडहग्घोसणेण वारिसंगहत्थं जणो आइट्ठो। जणेणावि तस्संगहो कओ। मासेण वुट्ठो मेहो। तं च संगहिअं नीरं कालेण निट्ठविअं। लोएहिं नवोदगं चेव पाउमाढत्तं। तओ गहिलीभूआ सव्वे लोआ सामंताई अ गायंति नच्चंति सिच्छाए विचिट्ठंते[15]। केवलं राया अमच्चो अ संगहिअं जलं न निट्ठियं ति ते चेव सुत्था चिट्ठंति। तओ सामंताईहिं विसरिसचिट्ठे राय-अमच्चे निरिक्खिऊण परुप्परं मंतियं; जहा—गहिल्लो राया मंती य। एए अम्हाहितो विसरिसायारा; तओ एए अवसारिऊण अवरे [16]अप्पतुल्लायारे रायाणं मंतिणं च ठाविस्सामो। मंती उण तेसिं मंतं नाऊण राइणो विण्णवेइ। रण्णा वुत्तं—कहमेएहुंतो अप्पा रक्खिअव्वो? विंदं हिं नरिंदतुल्लं हवइ। मंतिणा भणिअं—महाराय! अगहिलेहिं पि अम्हेहिं गहिलीहोऊण ठायव्वं, न अन्नहा मुक्खो। तओ कित्तिमगहिलीहोउं ते रायामच्चा तेसिं मज्झे नियसंपयं रक्खंता चिट्ठंति। तओ ते

---

1 E °संघो। 2 B लुभिअ°। 3 B E उक्करु°। 4 B नास्ति 'न'। 0एतदन्तर्गतः पाठः पतितः P प्रतौ। 5 Pc मज्झे। 6 Pc गीडगा°। 7 P चुप्पडा°। 8 P C पसव°। 9 B C अलंकियं। 10–11 C नास्त्येतच्छब्दद्वयम्। 12 P °भावओ। 13 E °घडे। 14 P C E अगहिलराय°। 15 P विचिट्ठंति। 16 C अप्पउल्ला°।

सामताई वुट्ठा । अहो ! रायामच्चा वि अम्ह सरिसा सजाय त्ति उवाएण तेण तेहिं अप्पा रक्खिओ । तओ कालंतरेण सुट्ठवुट्ठी जाया । नवोदगे पीए सव्वे लोगा पगइमावन्ना सुत्था सवुत्ता ।

एव दूसमकाले गीयत्था कुलिंगीहिं सह सरिसीहोऊण वट्टता अप्पणो समय भाविण पडिवालिंता अप्पाण निवाहइस्सति । एव भाविदूसमविलसिअसूयगाण अट्ठण्ह सुमिणाण फल सामिमुहाओ सोऊण **पुण्णपालनरिंदो** पव्वइओ सिव गओ । 5

§३. एय च दूसमासमयविलसिअ लोइआवि कलिकालवनएसेण पण्णविंति, जहा–पुव्विं किर दावरजुगउप्पन्नेण रण्णा **जहुट्ठिलेण** रायवाडिआगएण क्त्थ वि पएसे वच्छिआए हिट्ठे एगा गावी थणपाण कुणती दिट्ठा । त च अच्छेरयं दट्ठूण राइणा दियवरा पुट्ठा–किमेय ति ? । तेहिं भणिअ–देव ! आगामिणो कलिजुगस्स सूयगमेय । इमस्स अब्भुअस्स फलमिण–कलिजुगे अम्मापिअरो कण्णय कस्स वि रिद्धिसपन्नस्स दाउ त उवजीविस्सति, तत्तो दविणगहणाइणा । तओ अग्गओहुत्त पत्थिएण पत्थिवेण सलिलवीसालियवालुयाए रज्जुओ वलता के वि दिट्ठा । खणमित्तेण ताओ 10 रज्जुओ वायायव[1]सजोएण मुसुमूरिआ । तओ महीवइणा पुच्छिएहिं भणिअ दिएहिं–महाराय ! एयस्स फल, ज दविण किच्छवित्तीए लोया विढस्सति, त कलिजुगमि चोरग्गिरायदडदाइएहि विणिस्सिहइ । पुणरवि अग्गओ चलिएण **धम्मपुत्तेण**[2] दिट्ठ आवाहाओ[3] पलुट्टिय जल कूवे पडत । तत्थ वि वुत्त माहणेहिं–देव ! ज दव्व पयाओ असि-मसि-किसि वाणिज्जाईहि उवज्जिहिति त सव्व रायउले गच्छिहि त्ति । अन्नजुगेसु किर रायाणो नियदव्व दाऊण लोय सुट्ठिअ अकरिंसु । पुणो पुरओ वच्चतेण निवइणा रायचपयतरू अ समीतरू[4] अ एगमि पएसे दिट्ठा । तत्थ समीपायवस्स 15 वेइआवधमडणगधमल्लाइपूआ गीयनट्टमहिमा य जणेण कीरमाणी पलोइआ । इअरस्स तरुणो छत्तायारस्स वि महमहिअकुसुमसमिद्धस्स वि वत्त पि को वि नवि पुच्छइ त्ति । तस्स फल वक्खाणिय विप्पेहिं, जहा–गुणवताण महप्पाण सज्जणाण न पूआ भविस्सइ, न य रिद्धी । पाएण निग्गुणट्ठाण पावाण खलाण पूआ सक्कारो इड्ढी अ कलिजुगे भविस्सइ । भुज्जो[5] पुरो पट्ठिएण राइणा दिट्ठा एगा सिला सुहुमच्छिड्डवद्धवालग्ग[6]आलवणेण अतरिक्खट्ठिआ । तत्थ वि पुट्ठेहिं सिट्ठ सुत्तकठेहिं, जहा–महाभाग ! कलिकाले सिलातुल्ल पाव विउल भविस्सइ । वालग्गसरिसो धम्मो पयट्टिही । पर तित्ति-20 यस्स वि धम्मस्स माहप्पेण कचि काल नित्थरिस्सइ लोओ । तम्मि वि तुट्टे सव्व बुड्डिस्सइ ।

दूसमाए[7] पुव्वसूरिहिं पि लोइयाविक्खाए कलिजुगमाहप्पमित्थ साहिय–

'कूवा[8]वाहाजीवण तरुफलवह-गाविवच्छधावणया । लोहविवज्ज(च)यकलिमल-सप्पगरुडपूअपूआ य ॥ १ ॥
हत्थगुलिदुग[9]घट्टण-गय-गद्दभ-सगड-वालसिलधरण । [10]एमाई आहरणा[11] लोयमि वि कालदोसेण ॥ २ ॥
जयघरकलहकुलेयरमेराअणुसुद्धधम्म[12]पुढविठिई । वालुगवक्कारसो एमाई आइसदेण ॥ ३ ॥ 25
कलिअवयारे किल निज्जिएसु चउसुपि पडवेसु तहा । भाइवहाइकहाए जामिगजोगमि कलिणाओ ॥ ४ ॥
तत्तो जुहिट्ठिलेण जियमि ठइयमि दाइए तमि । एमाई अट्ठुत्तरसएण सिट्ठा नियठिइ त्ति ॥ ५ ॥'

एयासिं गाहाण अत्थो–कूवेण आवाहो उवजीविस्सइ । राया कूवत्थाणीओ, सव्वेसिं बभ-खत्तिअ-वइस-सुद्दाण भरणीयत्तणेण आवाहतुल्लाण, कलिजुगदोसाओ अत्थग्गहण करिस्सइ ॥ १ ॥

तहा तरूण फलनिमित्तो वहो छेओ भविस्सइ । फलतुल्लो पुत्तो तरुतुल्लस्स पिउणो वहप्पाय उव्वेग धणपत्तलेहणाइणा 30 उप्पाइस्सइ ॥ २ ॥

वच्छियातुल्लाए कण्णाए विक्कयाइणा गोतुल्ल जणणी धावणतुल्ल उवजीवण करिस्सइ ॥ ३ ॥

---

1 B C वायादव° । 2 B C धम्मपुत्तिण । 3 B C P आहावाओ, E आहावायाओ । 4 पतितमेतत्पद C आदर्शे । 5 C भुजो । 6 C °छिड्डवालग्ग° । 7 A C E दूसमसुममाए, P D Pc दूसमदूसमाए । 8 C D P कूआ । 9 E °दुग° । 10 P इमाई । 11 B C E आहारणा, D आहाराणा । 12 F °सुधम्म° ।

लोहमई कडाही तिस्सा विवच्चासो सुगंधितिलघयपागउचिआए कलिमलस्स पिसियाइणो पागो हविस्सइ । सजाइ-वग्गपरिहारेण अनालवद्धेसु परजणेसु अत्थदाणं भविस्सइ त्ति भावो ॥ ४ ॥

सप्पसरिसेसु निद्दएसु धम्मवज्झेसु दाणाइसक्कारो, गरुडप्पाएसु पुज्जेसु धम्मचारिसु अपूया य भविस्सइ ॥ ५ ॥

हत्थस्स अंगुलिदुगेण घट्टणं ठवणं भविस्सइ । हत्थ तुल्लस्स पिउणो अंगुलिदुगतुल्लेहिं बहुपुत्तेहिं[1] जयघर[2]करणाओ 5 घट्टणं नाम लोओ भविस्सइ ॥ ६ ॥

गयवोढव्वं सगडं गद्दभवोढव्वं भविस्सइ । गयत्थाणीएसु उच्चाकुलेसु मज्जायसगडवाहणोचिएसु कलहो[3] नायलो वा भविस्सइ । इयरेसु नीयकुलेसु गद्दभत्थाणीएसु मेरा नीई भविस्सइ ॥ ७ ॥

वालवद्धा[4] सिला धरिस्सइ ठाइस्सइ, अणुंमि सुहुमयरे वालप्पाए सुद्धधम्मे सत्थाणुसारिणि[5], सिलातुल्लाए पुढवीए तन्नि[6]वासिलोअस्स ठिई निवहणं भविस्सइ ॥ ८ ॥

10 जहा वालुआए वक्को तया गहिउं न तीरइ, एवं आरंभाओ वि वाणिज्ज-किसि-सेवाईआओ विसिट्टं पयासाणुरूवं फलं न पाविस्सइ ॥ ९ ॥

सेसगाहादुगत्थो कहाणय[7]गम्मो । तं चेमं—किल पंच पंडवा **दुज्जोहण-दूसासणाइ**भाउयसए[8] **कण्ण-गांगेय-दोणायरि**एसु अ संगामसीसे निहए, सुचिरं रज्जं परिवालिअ, कलिजुगपवेसकाले महापहं पट्ठिआ कत्थ वि वणुद्देसे पत्ता । तओ रत्तीए **जुहिट्ठिले**ण[9] **भीमा**इणो पइपहरं पाहरीअत्ते निरूविआ । तत्तो सुत्तेसु **धम्मपुत्ता**इसु 15 पुरिसरूवं काउं कली **भीम**मुवट्ठिओ; अहिक्खित्तो य तेण **भीमो**—रे भाउअ-गुरु-पिआमहाइणो मारित्ता[10] संपइ धम्मत्थं पट्ठिओ तुमं, ता केरिसो तुह धम्मो ? । तओ **भीमो** कुद्धो तेण सह जुज्झिउमारद्धो । जहा जहा **भीमो** जुज्झइ तहा तहा कली वड्ढइ । तओ निज्जिओ कलिणा **भीमो** । एवं वीयजामे **अज्जुणो**, तइअ-चउत्थजामेसु **नकुल-सहदेवा** तेण अहिक्खित्ता, रुट्ठा निज्जिया य । तओ सावसेसाए निसाए उट्ठिए **जुहिट्ठिले** जुज्झिउं ढुक्को कली । तओ खंतीए चेव निज्जिओ कली रण्णा संकोअं[11] नेउं[12] सरावमज्झे ठविओ । पभाए य **भीमा**इणं दंसिओ—एस जो जेण तुम्हे 20 निज्जिआ । एवमाईणं दिट्ठंताणं अट्ठुत्तरसएण **महाभारहे वासेसि**णा कलिट्ठिई दंसिय त्ति । अलं पसंगेण ।

§४. तओ **गोअमसामी** जाणगपुच्छं पुच्छेइ—भयवं ! तुम्ह निव्वाणाणंतरं किं किं भविस्सइ ? । पहुणा भणियं—गोयम[13] ! मम मुक्खगयस्स तिहिं वासेहिं अद्धनवमेहिं अ मासेहिं पंचमअरओ दूसमा लग्गिस्सइ । मह मुक्खगमणाओ वासाणं चउसट्ठीए अपच्छिमकेवली **जंबूसामी** सिद्धिं गमिही । तेण समं मणपज्जवनाणं, परमोही, पुलायलद्धी, आहारगसरीरं, खवगसेढी, उवसामगसेढी, जिणकप्पो, परिहारविसुद्धि-सुहुमसंपराय-अहक्खायचारित्ताणि, 25 केवलनाणं, सिद्धिगमणं च त्ति दुवालसठाणाइं **भारहे**वासे [14]वुच्छिज्जिहिंति ।

अज्जसुहम्मप्पमुहा होहिंति जुगप्पहाण आयरिया । **दुप्पसहो** जा सूरी चउरहिआ[15] दोण्णि अ सहस्सा ॥ १ ॥

सत्तरिसमहिए वाससए गए **थूलभद्द**म्मि सगट्ठिए चरमाणि चत्तारि पुव्वाणि, समचउरंसं संठाणं, वज्जरिसहनारायं संघयणं, महापाणज्झाणं च [16]वुच्छिज्जिहिइ । वासपंचसएहिं **अज्जवयरे** दसमं पुव्वं, संघयणचउक्कं च अवगच्छिही ।

30 महमुक्खगमणाओ **पालय-नंद-चंदगुत्ता**इराईसु वोलीणेसु चउसयसत्तरेहि **विक्कमाइच्चो** राया होही । तत्थ सट्ठी वरिसाणं **पालगस्स** रज्जं; पणपण्णं सयं **नंदाणं**; अट्ठोत्तरं सयं **मोरियवंसाणं**; तीसं **पूसमित्तस्स**; सट्ठी

---

1 E नास्त्येतत्पदम् । 2 C जयगघर° । 3 P काहलो । 4 A B E °वुड्ढा । 5 C सारिण° । 6 P B D तिन्नि° । 7 B C D कहणाय° । 8 B °भावु°; C E °भाउ° । 9 B C E जुहिट्ठलेण । 10 B Pa नास्ति पदमिदम्; E हणिअ । 11 P संकोदअं । 12 Pa नेअं; P नास्ति । 13 B सो; P भो; Pa सोम । 14 B उच्छिज्जि° । 15 E चउरसहिआ । 16 B उच्छि° ।

बलमित्त-भाणुमित्ताण, चालीसं **नरवाहणस्स**, तेरस **गद्दभिल्लस्स**, [0]चत्तारि **सगस्स** । तओ **विक्कमा-इच्चो** । सो साहिअसुवण्णपुरिसो पुहविं अरिणं काउं नियं संवच्छरं पवत्तेही ।

तह **गद्दभिल्लरज्जस्स**[0] छेयगो **कालगायरिओ** होही । तेवण्णचउसएहिं गुणसयकलिओ सुअपउत्तो ॥ १ ॥

दूसमाए वट्टमाणीए नयराणि गामभूआणि होहिंति । मसाणरूवा गामा, जमदंडसमा रायाणो, दासप्पाया कुडुं-निणो,[1] लंचगहणपरा निओगिणो, सामिदोहिणो भिच्चा, कालरत्तितुल्लाओ सासूओ, सप्पिणितुल्लाओ वहूओ, निल्लज्जया-5 कडक्खपिक्खिआईहिं सिक्खिअवेसाचरियाओ कुलगणाओ, सच्छंदचारिणो पुत्ता य सीसा य, अकालवासिणो कालअ-वासिणो[2] य मेहा, सुहिआ रिद्धिसम्माणभायणं च दुज्जणा, दुहिआ अवमाणपत्तं अप्पिड्ढिया य सज्जणा, परचक्कडमरदु-ब्भिक्खदुक्खिआ[3] देसा, खुद्द[4]मत्तबहुला मेइणी, असज्झायपरा अत्थलुद्धा य विप्पा, गुरुकुलवासचाइणो मंदधम्मा कसायकलुसिअमणा [5]समणा, अप्पबला सम्मद्दिट्ठिणो [6]सुनरा, ते चेव पउरबला मिच्छद्दिट्ठिणो होहिंति । देवा न दाहिंति दरिसणं । न तहा फुरंतपहावा विज्जामंता य[7] । ओसहीणं गोरस-कप्पूर-सक्कराइदव्वाणं च रस-वण्ण-गंधहाणी ।10 नराण बल-मेहा-आऊणि हाइस्संति । मासकप्पाइपाओग्गाणि खित्ताणि न भविस्संति । [†]पडिमारूवो सावयधम्मो वुच्छिज्जिहिइ[†] । आयरिया वि सीसाणं सम्मं सुअं न दाहिंति ।

कलहकरा डमरकरा असमाहिकरा अनिव्वुइकरा य । होहिंति इत्थ समणा दससु वि खित्तेसु सयराहं[8] ॥ १ ॥

ववहारमंततंताइएसु निच्चुज्जयाण य मुणीणं । गलिहिंति आगमत्था अणत्थलुद्धाण तद्दियहं[9] ॥ २ ॥

उवगरणवत्थपत्ताइयाण वसहीण सड्ढयाणं च । जुज्झिस्संति कएणं जह नरवइणो कुडुंबीण ॥ ३ ॥ 15

किं बहुणा । चट्टवे मुंडा अप्पे समणा होहिंति । पुव्वायरियपरंपरागयं सामायारिमुत्तूण नियगमइविगप्पियं सामायारिं सम्मं चारित्तं ति वक्खाविंता तहाविहं मुद्धजणं मोहंमि पाडिंता उस्सुत्तभासिणो अप्पथुई परनिंदापरायणा य केई होहिंति । बलवंता मिच्छनिवा अप्पबला हिंदुअनिवा भविस्संति ।

§ ५. जाव एगूणवीसाए सएसु चउद्दसाहिएसु वरिसेसु वइक्कंतेसु **चउदससयचोआले विक्कमवरिसे पाडलिपुत्ते** नयरे चित्तसुद्धट्ठमीए अद्धरत्ते विट्टिकरणे मयरलग्गे वट्टमाणे जसस्स मयंतरे [10]**मगदणभिधाणस्स** गिहे20 **जसदेवीए** उयरे चंडालकुले **कक्किरायस्स** जम्मो हविस्सइ । एगे एवमाहंसु–

वीराओ इगुणवीसं सएहिं वरिसाण अट्ठवीसाए । पंचमासेहिं[*] होही चंडालकुलंमि **कक्किनिवो** ॥

तस्स तिन्नि नामाणि भविस्संति । तं जहा–**रुद्दो, कक्की, चउम्मुहो** अ । तस्स जम्मे **महुराए राम-महुमहणभवणं** कत्थ वि गूढं चिट्ठमाणं तं पडिस्सइ । दुब्भिक्खडमररोगेहिं च जणो पीडिज्जिहिइ । अट्ठारसमे वरिसे कत्तिअसुक्कपक्खे **कक्किणो** रज्जाभिसेओ भविस्सइ । जणमुहाओ नाउं **नंदरायस्स** सुवण्णथूभपंचगाओ सो25 गिण्हिस्सइ । चम्ममयनाणयं पवत्तिस्सइ । दुट्ठे पालिस्सइ, सिट्ठे य निग्गहिस्सइ । पुहविं साहित्ता छव्वीसइमे[11] वरिसे तिस-

---

[0]एतदन्तर्गतं पाठं पतितं B आदर्शे । 1 P E कुटुंबिणो । 2 E विना नास्त्यन्यत्रैतत्पदम् । 3 P °दुहिआ । 4 P दुग्ग° । 5 पतितं E प्रतौ । 6 B C E सुनरा । 7 'य' नास्ति A P C । † एतद्वाक्यं नास्ति E आदर्शे । 8 D सुपढ । 9 D तद्दिवहं । 10 P मगदत्त, D मगदयत्त, Pa मगद । 11 B बत्तीसइमे ।

* अयान्तरे E संज्ञके आदर्शे निम्नलिखिता गाथा अधिका लभ्यन्ते–

[पंच] य मासा पंच य वासा छच्चेव हुंति वाससया । परिनिव्वुअस्स अरहओ तो उप्पन्नो सगो राया ॥ १

पत्तो पत्तकुलंमि य चित्ते सुद्धट्ठमीइ दिवसंमि । रोहोवगए चंदे विट्टीकरणे रविसुदए ॥ २

उम्मोवगए सूरे सनिच्छरे सिद्धदेवगण य । गुरुं सोमेण हए चंदेण हए गुरुदलंमि ॥ ३

धणिगुरुत्थमणंमि य समागमे ति(त ?)च्च एगरासंमि । घत्तकिय यद्धानरए अ धूमधूमए अ केउंमि ॥ ४

तइआ चंडा मरा[?] जम्मनगरंइ रामकण्हाणं । घोरं जाकसवरं पडिबोहदिणे य विणासं ॥ ५

इति सिरि (रुहो) ग्गाहिपत्तिवाणे । अट्ठवीसाए मासेहिं होही चंडालकुलंमि कक्किनिवो ।

डभरहाहिवई भविस्सइ । सव्वओ खणित्ता खणित्ता निहाणाणि गिण्हिस्सइ । तस्स भंडारे नवनवइसुवण्णकोडिकोडीओ, चउद्दससहस्सा गयाणं, सत्तासीइ लक्खा आसाणं, पंचकोडीओ पाइक्काणं हिंदुअ[1]तुरुक्ककाफराणं । तस्सेव एगच्छत्तं रज्जं । दविणत्थं रायमग्गं खाणितस्स पाहाणमई लवणदेवी नाम गावी पयडीहोऊण गोयरचरियागए साहुणो सिंगेहिं घट्टिस्सइ । तेहिं **पाडिवयायरिय**स्स कहिए, इत्थ पुरे जलोवसग्गो [2]धणियं होहि त्ति तेहिं आइसिस्संति । तओ के वि 5 साहुणो अन्नत्थ विहरिस्संति । के वि वसहीपडिबंधाइणा ठाहिंति तग्गहणत्थं । पयडीभविस्संति सत्तरसाहवुट्ठीए सव्वत्थ निहाणाणि । तओ **गंगाए** पुरं समग्गं पि पलाविज्जिही[3] । राया संघो अ[4] उत्तरदिसिट्ठियं महल्लत्थलं आरुहिअ छुट्टिस्संति । राया तत्थेव नवं[5] नगरं निवेसिस्सइ । सव्वे वि पासंडा तेण दंडिज्जिहिंति । साहूणं सगासाओ भिक्खाछलंसं मग्गंतो काउस्सग्गाइअसासणदेवयाए [6]निवारिज्जिही । पंचासं वरिसाइं सुभिक्खं । दम्मेण कणाणं दोणो लब्भिहिइ । एवं निकंटयं रज्जसुवभुंजित्ता छासीइमे वरिसे पुणो सव्वपासंडे दंडित्ता सव्वं लोअं निद्धणं काउं भिक्खाछट्ठंसं साहूहिंतो 10 मग्गेहिइ । ते अ[7] अदिंते कारागारे खिविस्सइ । तओ पाडिवया[0]यरियपमुहो संघो सासणदेविं मणे काउं काउस्सग्गे ठाही । तीए वि[8] विबोहिओ जाव न पण्णप्पिहइ, तओ आसणकंपेण नाउं माहणरूवो सक्को आगमिस्सइ । जया तस्स वि वयणं न पडिवज्जिहिइ तया[0] सक्केण चवेडाए आहओ मरिउं नरए गमिस्सइ । तओ तस्स पुत्तं **धम्मदत्तं** नाम रज्जे ठविस्सइ । [9]संघस्स सुत्थयं[10] आइसिय सट्ठाणं सक्को गमिही । **दत्तो** य राया बावत्तरिवासाऊ पइदिणं जिणचेइयमंडियं महिं काही; लोगं च सुहिअं काहि त्ति । **दत्त**स्स पुत्तो **जियसत्तू** । तस्स वि[11]य **मेहघोसो** । 15 **कक्कि**अणंतरं **महानिसीहं** न वट्टिस्सइ । दोवाससहस्सठिइणो[12] भासरासिग्गहस्स पीडाए नियत्ताए य देवावि दंसणं दाहिंति । विज्जा मंता य अप्पेण वि जावेण पहावं दंसिस्संति । ओहिन्नाण-जाइसरणाइ भावा[13] य किंचि पयट्टिस्संति । तदणंतरं एगूणवीससहस्साइं जाव जिणधम्मो वट्टिस्सइ[14] । दूसमपज्जंते वारस[15]वारिसिओ पव्वइय-दुहत्थूसियतणू **दसवेयालिआ**गमधरो अद्धुट्ठसिलोगप्पमाणगणहरमंतजावी छट्ठडकिट्ठतवो **दुप्पसहो** नाम आयरिओ चरमजुगप्पहाणो अट्ठवासाइ सामण्णं पालित्ता वीसवरिसाऊ अट्ठमभत्तेणं कयाणसणो सोहम्मे कप्पे पलिओवमाऊ सुरो एगावयारो उप्प- 20 ज्जिहिइ । **दुप्पसहो** सूरी, **फग्गुसिरी** अज्जा, **नाइलो** सावओ, **सच्चसिरी** साविया—एस अपच्छिमो संघो पुव्वण्हे भारहे वासे अत्थमेहिइ । मज्झण्हे **विमलवाहणो** राया, **सुमुहो** मंती । अवरण्हे अग्गी । एवं च धम्म-रायनीइ-पागाईणं[16] वुच्छेओ होहिइ[17] । एवं पंचमो अरओ दूसमा[18] सम्पुण्णा[19] ।

§ ६. तओ [20]दूसम-दूसमाए छट्ठे अरए पयट्टे [21]पलयवाया वाइस्संति । वरिसिस्संति विसजलहरा । तवस्सइ वारसाइच्चसमो सूरो । अइसीयं मुंचिस्सइ चंदो । †**गंगा-सिंधू**भयतडेसु **वेयड्ढ**मूले बाहत्तरीए बिलेसु छक्खंडभरहवासिणो 25 नरतिरिआ वसिस्संति । **वेयड्ढ**आरओ पुव्वावरतडेसु **गंगाए** नवनव बिलाइं । एवं **वेयड्ढ**परओ वि । एवं छत्तीसं । एमेव [22]**सिंधूए** वि छत्तीसं । एगत्ते बावत्तरिं बिलाइं । रहपहमित्त[23]पवाहाणं **गंगा-सिंधूणं** जले उप्पण्णे मच्छाई ते बिलवासिणो रत्तिं कड्ढिस्संति । दिवा तावभएण निग्गंतुमक्खमा । सूरकिरणपक्के ते रयणीए खाहिंति । ओसहि-रुक्ख-गाम-नगर-जलासय-पव्वयाईण वेयड्ढउसभकूडवज्जं[24] निवेसट्ठाणं पि न दीसिहिइ । छव्वासइत्थीओ गब्भं धारिस्संति । सोलसवासाओ नारीओ, वीसवासाओ नरा पुत्त-पपुत्ते दिच्छंति[25] । हत्थसमूसिआ काला कुरूवा उग्गकसाया नग्गा पायं[26] 30 नरयगामी बिलवासिणो एगवीसं वरिससहस्साइं[27] भविस्संति । एवं छट्ठे अरए ओसप्पिणीए समत्ते, उस्सप्पिणीए

---

1 B D Pa हिंदुव° । 2 P E धारणियं; Pa ध...णियं । 3 P पलाविही । 4 नास्ति D । 5 Pa नव° । 6 B वारि° । 7 B P D नास्ति 'अ' । 0एतदन्तर्गता पंक्तिः पतिता P आदर्शे । 8 Pa नास्ति 'वि' । 9 Pa पीडाए संघस्स । 10 G Pa सुत्थणं । 11 Pa चिय; D चय । 12 B P Pa °ठिइणा । 13 Pa भावाई । 14 P वट्टिस्सए । 15 B वारसिओ । 16 D पागाणं । 17 P होहि त्ति । 18-19 एतत्पदद्वयं नास्ति P प्रतौ । 20 E नास्ति 'दूसम' । 21 B अरए य पायवावा । † एतदन्तर्गतं वर्णनं नास्ति P आदर्शे । 22 P गंगासिंधूए । 23 B रहमित्त; P रहपमित्त । 24 'वज्जं' नास्ति P । 25 B P दच्छंति । 26 B पाय; P पयं । 27 B D Pa एगवीससहस्साइं ।

नि[1] पढमे अरए एमा चेव वत्तव्वया । तमि वोलीणे बीयारयपारंभे सत्ताह सत्ताह पंच मेहा भारहे वासे वासिस्संति कमेण । तं जहा–पढमो पुक्खरावत्तो ताव निव्वावेहिइ[2] । बीओ खीरोदो धन्नकारी । तईओ [3]घओदओ नेहकारओ । चउत्थो अमओदओ ओसहीकरो । पंचमो रसोदओ भूमीए रससजणणो । ते य बिलवासिणो पढमसमय वट्टमाण-सरीराऊ पुढविं[4] सुहं दट्ठूण बिलेहिंतो निस्सरिस्संति । धन्न फलाइ भुंजंता मंसाहारं निवारइस्संति* ।

तओ मज्झदेसे सत्त कुलगरा भविस्संति । तत्थ पढमो **विमलवाहणो** । बिईओ **सुदामो** । तईओ **संगओ** । चउत्थो **सुपासो** । पंचमो **दत्तो** । छट्ठो **सुमुहो** । सत्तमो **संमुची** । जाइस्सरणेण विमलवाहणो नगराइनिवेसं काही । अग्गिमि उप्पन्ने अन्नपाग सिप्पाइ कलाओ लोगववहारं च सव्वं पवत्तेही । तओ दुगुणनवइपक्खसमब्भहिए उस्सप्पिणीए अरयदुगे वइक्कंते **पुंडवद्धणदेसे सयदुवारे पुरे संमुइनरवइणो** भद्दाए देवीए चउद्दसमहासुमिणसूइओ **सेणियरायजीवो** रयणप्पभाए लोलुयच्चुयपत्थडाओ चुलसीइं वाससहस्साइं आउं पालित्ता उव्वट्टो समाणो कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववज्जिहिइ[5] । वण्ण-प्पमाण-लंछण-आऊणि गब्भावहारवज्ज पंचकल्लाणयाण मास तिहि-नक्खत्ताइणि[6] य जहा मम तहेव भविस्संति । नवरं नामेण **पउमनाहो, देवसेणो, विमलवाहणो** अ । तओ बीयतित्थयरो[7] **सुपासजीवो सुरदेवो** । तईओ **उदाइजीवो सुपासो** । चउत्थो **पोट्टिलजीवो सयपभो** । पंचमो **दढाऊजीवो सव्वाणुभूई** । छट्ठो **कत्तिअजीवो देवसुओ** । सत्तमो **संखजीवो दओ** । अट्ठमो **आणंदजीवो पेढालो** । नवमो **सुनंदजीवो पोट्टिलो** । दसमो **सयगजीवो सयकित्ती** । एगारसमो **देवइजीवो मुणिसुव्वओ** । बारसो **कण्हजीवो अममो** । तेरसमो **सच्चइजीवो निक्कसाओ** । चउद्दसो **बलदेवजीवो निप्पुलाओ** । पण्णरमो **सुलसाजीवो निम्ममो** । सोलसमो **रोहिणिजीवो चित्तगुत्तो** । केई पुण भणंति–कक्किपुत्तो दत्तनामो, पण्णरस तिउत्तरे विक्कमवरिसे, सेत्तुज्जे उद्धारं कारित्ता जिणभवणमंडिअं च वसुहं काउं अज्जियतित्थयरनामो सग्गं गओ **चित्तगुत्तो** नाम जिणवरो होहि त्ति । इत्थ य बहुसुअसमयं पमाणं । सत्तरसो **रेवइजीवो समाही** । अट्ठारसो **सयालि[8]जीवो संवरो** । एगूणवीसो[9] **दीवायणजीवो जसोहरो** । वीसइमो **कण्णजीवो विजओ** । एगवीसो **नारयजीवो मल्लो** । बावीसइमो **अंबडजीवो देवो** । तेवीसइमो **अमरजीवो अणंतवीरिओ** । चउवीसइमो "**सायबुद्धजीवो**" **भद्दकरो** । अंतरालाइ पच्छाणुपुव्वीए जहा वद्धमाणजिणाणं भाविचक्कवट्टिणो दुवालस होहिंति । तं जहा–**दीहदंतो, गूढदंतो, सुद्धदंतो, सिरिचंदो, सिरिभूई, सिरिसोमो, पउमो, नायगो, महापउमो, विमलो, अमलवाहणो, अरिट्ठो** अ । नव भाविवासुदेवा । तं जहा–**नंदी, नंदिमित्तो, सुंदरबाहू, महाबाहू, अइबलो, महाबलो, बलो, दुविट्ठू, तिविट्ठू** अ । नव भाविपडिवासुदेवा । जहा–**तिलओ, लोहजंघो, वइरजंघो, केसरी, बली, पल्हाओ, अपराजिओ, "भीमो, सुग्गीओ** । नव भाविबलदेवा । जहा–**जयंतो, अजिओ, धम्मो, सुप्पभो, सुदंसणो, आणंदो, नंदणो, पउमो, संकरिसणो** य । इगसट्ठी महापुरिसा उस्सप्पिणीए तईए अरए भविस्संति । अपच्छिम-जिण-चक्कवट्टिणो पुण चउत्थे अरए होहिंति । तओ दस मत्तंगाई कप्परुक्खा उप्पज्जिहिंति । अट्ठारसकोडाकोडीओ सागरोवमाण निरन्तरं जुगलधम्मो भविस्सइ । उस्सप्पिणी-अवसप्पिणीकालचक्काणि अणंतसो तीअद्धाए अणंतगुणाणि भारहे वासे होहिंति । एवमाइ अन्नं पि भविस्सकाले सरूवं वागरित्ता "एम्मि वि गामे देवसम्मविप्पस्स बोहणत्थं गोअमगणी पट्ठविओ भगवया," जहा–एअस्स पेमबंधो छिज्जइ । तओ तीसं वासाइ अगारवासे वसित्ता, परगा-

1 B नास्ति 'नि'। 2 P निव्ववेइ। 3 B घओ। 4 P पुढविंसुहं। *एतद्वाक्यं नास्ति P Pa आदर्शे। 5 P उववज्जो। 6 B D Pa नक्खत्ताणि। 7 P तित्थंकरो। 8 P सयाल°। 9 D °वीसइमो। 10 P Pc सच्च°। 11 P अंते [illegible]। 12 P सोमो। 13 D E सम्मइ। 14 P Pc आदर्शे एतद् पदं नास्ति।

हिअ सड्ढवारसवासे छउमत्थो, तीसं वासाइं तेरसपक्खोणाइं केवली विहरित्ता, *बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालित्ता* कत्तिअअमावसाए राईए चरमजामद्धे चंदे दुच्चे[1] संवच्छरे,[2] पीइवद्धणे मासे, नंदिवद्धणे पक्खे, देवाणंदाए रयणीए, उवसमे दिणे, नागे करणे, सव्वट्ठसिद्धे मुहुत्ते, साइनक्खत्ते, कयपज्जंकासणो सामी सक्केणं विन्नत्तो–भयवं ! दो वाससहस्सठिई भासरासी नाम तीसइमो गहो अइखुद्दप्पा तुम्ह जम्मनक्खत्तं संकंतो संपयं । ता मुहुत्तं पडिक्खह जहा तस्स
5 मुहं वंचिअं भवइ । अन्नहा[3] तुम्ह च्चिअ तित्थस्स पीडा चिरं होहिं ति । भयवया भणिअं–भो देवराय ! अम्हे पुहविं छत्तं मेरुं च दंडं काउं एगहेलाए सयंभुरमणसमुद्दं च तरिउं, लोअं च अलोए खिविउं समत्था, न उण आउकम्मं वड्ढेउं वा ह्रासेउं वा समत्था । जओ[4] अवस्सं भाविभावाणं नत्थि वइक्कमो । तओ दोवाससहस्से जाव अवस्संभाविणी तित्थस्स पीड त्ति । सामी अ पंचावण्णं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवागाइं पंचावण्णं च पावफलविवागाइं विभावइत्ता; छत्तीसं च अपुट्ठवागरणाइं वागरित्ता, पहाणं नाम अज्झयणं विभावेमाणो सेलेसीमुवगम्म कयजोगनिरोहो सिद्धाणंतपं-
10 चगो एगागी सिद्धिं संपत्तो । अणंतनाणं, अणंतदंसणं, अणंतं सम्मत्तं, अणंतो आणंदो अणंतं विरियं च त्ति पंचाणंतगं ।

तया य अणुद्धरीकुंथूणं उप्पत्तिं दट्ठुं, अज्जप्पभिइं संजमे दुराराहए भविस्सइ त्ति समणा समणीओ बहवे भत्तं पच्चक्खिसु ।

अन्नं च **कासी-कोसलगा नव मल्लई नवलिच्छई** अट्ठारस [5]गणरायाणो अमावसाए पोसहोववासं पारित्ता गए भावुज्जोए दव्वुज्जोअं करिस्सामो त्ति परिभाविय रयणमयदीवेहिं उज्जोअमकासि । कालक्कमेण अग्गिदीवेहिं सो जाओ ।
15 एवं दीवालिआ जाया । देवेहिं देवीहिं य[6] आगच्छंत-गच्छंतेहिं सा रयणी उज्जोअनई कोलाहलसंकुला य जाया । भगवओ य सरीरं देवेहिं सक्कारियं[7] । भासरासिपीडापडिघायत्थं देव-माणुस-गवाईणं नीराजणा जणेहिं कया । तेण किर मेराइयाणं पवित्ती जाया । **गोअम**सामी पुण तं दिअं पडिबोहित्ता जाव भयवओ वंदणत्थं पच्चागच्छइ, ताव देवाणं संलावे सुणेइ, जहा–भयवं कालगओ त्ति । खुट्ठुअरं अधिइं पगओ । अहो ममंमि भत्ते वि सामिणो निन्नेहया, जमहं अंतसमए वि समीवे न ठाविओ । कहं वा वीअरागाणं सिणेहु त्ति **नायसुअं**मि वुच्छिन्नपेमबंधणो तक्खणं चेव केवली
20 जाओ । सक्केणं कत्तिअसुद्धपाडिवयगोसग्गे केवलिमहिमा कया । भयवं सहस्सदलकणयपंकए निवेसिओ पुप्फपयरं काउं अट्ठमंगलाइं पुरओ आलिहियाइं । देसणा य सुआ । अओ चेव पाडिवए महूसवो अज्ज वि जयंमि पयत्तइ । सूरिमंतो अ गोअमसामिपणीओ, तओ तस्साराहगा गोअमकेवलुप्पत्तिदिवसु त्ति तंमि दिणे समवसरणे अक्खन्हवणाइपूअं सूरिणो करिंति । सावया य भयवंते अत्थमिए सुअनाणं चेव सव्वविहीसु पहाणं ति सुअनाणं पूअंति । **नंदिवद्धण**नरिंदो सामिणो जिट्ठभाया भयवंतं सिद्धिगयं सुच्चा अईव सोगं कुणंतो पाडिवए कओववासो कत्तिअसु-
25 द्धबीआए संबोहित्ता निअघरे आमंतित्ता **सुदंसणाए** भगिणीए भोइओ । तंबोलवत्थाइ दिण्णं । तप्पिभिइं भाइबीयापव्वं रूढं । एवं दीवूसवट्ठिई संजाया ।

जे अ दीवमहे चउद्दसि-अमावसासु कोडीसहिअमुववासं काउं अट्ठप्पयारपूआए सुअनाणं पूइत्ता, पंचाससहस्स परिवारं सिरिगोअमसामिं सुवण्णकमले ठिअं झाइत्ता, पइजिणं पंचाससहस्साइं तंदुलाणं, एगत्ते बारसलक्खाइं चउवीसपट्टयपुरओ ढोइत्ता, तदुवरिं अखंडदीवयं बोहित्ता, गोअमं आराहिंति, ते परमपयसुहलच्छिं पावंति त्ति । दीवूसव-
30 अमावसाए नंदीसरतवं आढविज्जा । तंमि दिणे नंदीसरपडपूआपुव्वं उववासं काउं, वरिसं सत्तवरिसाणि वा जाव अमावसासु उववासो काउं, वीरकल्लाणयअमावसाए उज्जमणं कुज्जा । तत्थ नंदीसरबावणजिणालए सक्का न्हवणाइपूअं काऊण नंदीसरपडपुरओ वा दप्पणसंकंतजिणबिंबेसु न्हवणाइं काउं बावण्णवत्थूणि अ पक्कन्नभेया, नारंग-जंबीर-कयलीफलाईणि, नालिएराइं पूगाइं पत्ताणि, उच्छुलट्ठीओ, खज्जूरमुद्दियाबरिसोलयउत्तत्तिआवायमाईणि खीरिमाइं थालाइं

---

*एतदङ्कितं वाक्यं P Pc आदर्शे एव लभ्यते । 1 P पुव्वे । 2 P संवत्सरे । 3 D नन्नहा । 4 B D Pa तओ । 5 P गणहार° । 6 B D नास्ति 'य' । 7 B D Pa सक्कारिअ ।

दीवया इच्चाइ। कंचुलियाओ वावण्ण तंबोलाइदाणपुव्व सावियाण दिज्जा। अण्णे य दीवूसव विणावि अमावसाए नदीसरतव आढविंति त्ति।

अह पुणगवि अज्जसुहत्थीण संपइ महाराओ पुच्छिसु—भयव[1] इत्थ दीवालिआपव्वमि विसेसओ घराण मडण अन्न-वत्थाईण विसिट्ठाण परिभोगो, अन्नोन्नजोहाराइकरण, जणाण केण कारणेण दीसइ? । तत्थ इम पच्चुत्तर अज्जसुहत्थिसूरिणो पन्नविंसु। जहा—पुव्विं उज्जेणीए पुरीए उज्जाणे सिरिमुणिसुव्वयसामिसीसो सुव्वयाय-5 रिओ समोसढो। तस्स वदणत्थ गओ सिरिधम्मराया। नमुचिमती वि तत्थ गओ। सूरीहि सम विवाय कुणतो खुल्लगेण पराजिओ। गओ रण्णा सम नियगेह। निसाए मुणिणो हतु कड्ढिअखग्गो गओ उज्जाण। देवयाए थभिओ। गोसे विम्हिएण रण्णा खामित्ता मोइओ। लज्जिओ नट्ठो गओ हत्थिणाउरे। तत्थ पउमुत्तरो राया। जाला तस्स देवी। तीसे दो पुत्ता—विण्हुकुमारो, महापउमो। जिट्ठे अणिच्छते महापउमस्स जुवरायपय पिउणा दिन्न। नमुई तस्स मती जाओ। तेण सीहरहो रणे विजिओ[1]। महापउमो तुट्ठो। वर पदिण्णे तेण नासी-10 कओ वरो। एगया जालादेवीए अरहतरहो कारिओ। तीसे सवत्तीए लच्छीए मिच्छद्दिट्ठीए पुण बभरहो। पढम रहब्भमणे दुण्ह वि देवीण विवाए दोवि रहा रण्णा वारिया। माऊए अवमाण दट्ठु महापउमो देसतर गओ। कमेण मयणावलिं परिणित्ता साहियच्छक्खडभारहो गयउरमागओ। पिउणा रज्ज दिण्ण। विण्हुकुमारेण सम पउमुत्तरो सुव्वयायरियपायमूले दिक्ख गिण्हित्ता सिव पत्तो। विण्हुकुमारस्स य सट्ठिं वाससयाइ तव कुणतस्स अणेगाओ लद्धीओ समुप्पण्णाओ। महापउमो चक्की जिणभवणमडिय महिं काउ रहजत्ताओ कारित्ता पूएइ 15 माऊए मणोरहे। नमुचिणा चक्कीनासीकयवरेण जण्णकरणत्थ रज्ज मग्गिओ। तेण सच्चसधेण तस्स रज्ज दाउ ठियमते-उरे। सुव्वयायरिया य विहरता तया हत्थिणाउरे वासाचउमासय ठिआ। आगया सव्वे पासडिणो अहिणवनिव दट्ठु, न सुव्वयायरिया। तओ कुद्धो नमुई भणेइ—मम[2] भूमीए तुम्हेहिं सत्तदिणोवरि न ठायव्व, अन्नहा मारेमि, जओ म दट्ठु तुम्हे नागया। तओ सूरीहिं सघ पुच्छित्ता एगो साहू गयणगामिविज्जाए सपन्नो आइट्ठो मेरुचूलिआठियस्स विण्हु-कुमारस्स आणयणत्थ। तेण विन्नत्त—भते! मम गतु सत्ति अत्थि, न उण आगतु। गुरुहिं वुत्त—सो चेव तुम 20 [3]आणेहि त्ति। तओ सो पत्तो मेरुचूल वदिऊण विन्नत्त सघ सरूव महरिसिणो। तक्खण चेव उप्पइओ सहागतुय-साहुणा नहयल। आगओ गयउर राउल च। नमुइवज्जेहि राईहिं सव्वेहिं वदिओ। उवलक्खिओ अ नमुई। पन्नविओ वि जाहे ठाउ[4] न देइ साहूण, ताहे विण्हुणा पयतिगपमाणा[5] भूमी मग्गिया। तेण दिण्णा, भणिअ च—जो बाहिं पयतिगाओ दिट्ठो त मारेहामि। तो वेउव्वियलद्धीए लक्खजोअणपमाणदेहो जाओ विण्हुरिसी किरीड-कुडल-गया-चक्क-धणूइ धारितो। तस्स पण्हीपहारेण कपिय भूगोल। खुहिआ सागरा। फुक्कारेहिं नट्ठा खेयरा। उप्पहेण 25 पयट्टाओ नईओ। घुम्मिया उडुगणा। ढुलिआ कुलगिरी। पुव्वावरसमुद्देसु दोपाए निसित्ता, तइअ कम नमुचिणो मत्थए दाउण ठिओ महप्पा। तओ इदेण ओहिणा नाऊण पट्ठवियाओ सुरगणाओ कण्णजावे ठाउ महुरसरेण खतिजणगगब्भगीयाणि गायति। चक्कवट्टिपमुहा य विन्नायवइयरा पसायणत्थ पाए पमहिंति। तओ उवसंतो पगइमा-वण्णो महरिसी। खामिओ चक्कवट्टिणा सघेण य। विण्हुकुमाराओ चक्किणा [6]पमोयाविओ किवाए नमुई। तया य वासाण चउत्थमासम्म पक्खसधिदिण आसि। तमि उप्पाए उवसते लोएहिं पुणज्जाय व अप्पाण मन्नमाणेहिं अन्नोन्न-30 जोहारा कया। निसिट्ठवरमडणभोअणच्छायणतबोलाइपरिभोगा पवत्तिआ। तप्पभिई एयमि दिवसे पइवरिस[6] ते चेव ववहारा पयट्टिज्जति। विण्हुकुमारो अ कालेण केवली होऊण सिद्धो, महापउमचक्कवट्टी य त्ति।

दमपुत्तिस्स मुहाओ एव सोऊण सपइनरिंदो। आसि जिणपूअरओ विसेसओ पव्वदियहेसु॥ १॥

---

† एग्गारसमनुरक्खव्व B आदर्शे। 1 D मन, P न म। 2 B P आणइ त्ति। 3 B ठाइ। 4 D पयतिग°। 5 B D Pa य मोआविओ। 6 B D Pa °वरिस्स।

मज्झिमपावाए पुव्विं **अपावापुरि** त्ति नामं आसि । सक्केणं **पावापुरि** त्ति नामं कयं । जेण इत्थ **महावीरसामी** कालगओ ।

इत्थेव य पुरीए वइसाहसुद्धइक्कारसीदिवसे **जंभिअगामाओ** रत्तिं बारसजोअणाणि आगंतूण पुव्वण्हदेसकाले **महासेणवणे** भगवया **गोअमाई** गणहरा खं(पं?)डिअगणपरिवुडा दिक्खिआ प्पमुइया । गणाणुन्नाया तेसिं दिण्णा । 5 तेहिं च निसिज्जातिगेण उप्पाय-विगम-धुवयालक्खणं पयतिगं लद्धूण सामिसगासाओ तक्खणं दुवालसंगी विरइया ।

इत्थेव य नयरीए भयवओ कण्णेहिंतो **सिद्धत्थवाणिअउवक्कमेण खरयविज्जेण**[1] कडसलाया उद्धरिया । तदुद्धरणे य पवेयणावसेण भयवया चिक्काररवो मुक्को । तेण पच्चासण्णपव्वओ दुहा जाओ । अज्ज वि तत्थ[2] अंतरालसंधिमग्गो दीसइ ।

तहा इत्थेव पुरीए कत्तियअमावसारयणीए भयवओ निव्वाणट्ठाणे मिच्छद्दिट्ठीहिं सिरिवीरथूभट्ठाणठाविअनागमं-10 डवे अज्ज वि चाउवण्णियलोआ जत्तामहूसवं करिंति । तीए चेव एगरत्तीए देवयाणुभावेणं कूवायड्ढिअजलपुण्णमल्लियाए दीवो पज्जलइ[3] तिल्लं विणा ।

पुव्वुत्ता य अत्था भयवया इत्थेव नयरे वक्खाणिया । इत्थेव य भगवं संपत्तो सिद्धिं । इच्चाइ अच्चब्भुअभूअसंविहाणठाणं **पावापुरी**महातित्थं ।

इय **पावापुरी**कप्पो दीवमहुप्पत्तिभणणरमणिज्जो । **जिणपहसूरी**हिं कओ ठिएहिं सिरि**देवगिरि**नयरे ॥ १ ॥
15 **तेरहसत्तासीए विक्कमवरिसंमि** भद्दवयबहुले । पूसक्कबारसीए समत्थिओ एस सत्थिकरो ॥ २ ॥

॥ समाप्तोऽयं श्रीअपापावृहत्कल्पो दीपोत्सवकल्पो वा ॥

॥ ग्रं० ४१६, अ० ७ ॥

---

1 B D Pa c विज्जेड्ड । 2 B D Pa तत्थ अंतरत्थ° । 3 B D Pa-b पज्जलति ।

२२. कन्यानयनीयमहावीरप्रतिमाकल्पः ।

पणमिय अमियगुणगण[1] सुरगिरिधीर जिण **महावीरं** । **कण्णाणयपुर**ठिअतप्पडिमाकप्प किमवि वुच्छ ॥ १ ॥

चोलदेसावयसे **कण्णाणयनयरे विक्कमपुर**नत्यव्वपहु**जिणवइसूरि**चुल्लपिउसाहु**माणदेव**[2]काराविया[3] **वारहसयतित्तीसे विक्कमवरिसे** (१२३३) आसाढसुद्धदसमीगुरुदिवसे सिरि**जिणवइसूरी**हि अम्हेच्चय पुव्वायरिएहि पइट्ठिया मम्माणसेलसमुग्गयजोईसरो[4]वलघडिया तेवीसपव्वपरिमाणा नहसुत्तिलग्गणे वि घट व्व सद्द कुणती सिरि**महावीर**पडिमा [5]सुमिणयाएसेण अनकवालाभिहाणपुढविधाउ[6]विसेससफासेण सन्निहियपाडिहेरा सावयसघेण चिर पूइया । जाव **वारहसयअडयाले** (१२४८) **विक्कमाइच्चसवच्छरे चाहुयाण**कुलपईवे सिरि**पुहविरायन**रिंदे सुरत्ताण **साहवदीणेण** निहण नीए रज्जपहाणेण परमसावएण सिट्ठि**रामदेवेण** सावयसघस्स लेहो पेसिओ, जहा–**तुरुक्क**रज्ज सजाय । सिरि**महावीर**पडिमा पच्छन्न[7] धारियव्वा[8] । तओ सावएहि **दाहिम**[9]-कुलमडण**कयवास**मडलियनामकिए **कयवासत्थले**[10] विउलवालुआपूरे ठाविया । [†ताव तत्थ ठिया] जाव **तेरह-सयइक्कारसे** (१३११) **विक्कमवरिसे** सजाए अइदारुणे दुब्भिक्खे अणिव्वहतो **जोजओ** नाम[11] सुत्त-हारो जीवियानिमित्त सुभिक्खदेस पइ सकुडुबो[12] चलिओ **कण्णाणयाओ** । पढमपयाणय थोव कायव्व ति कलिऊण [13]**कयवासत्थले** चेव त रयणि वुत्थो । अद्धरत्ते देवयाए तस्स सुमिण दिण्ण, जहा–इत्थ तुम जत्थ सुत्तोसि तस्स हिट्ठे भगवओ **महावीरस्स** पडिमा एत्तिएसु हत्थेसु चिट्ठइ । तुमए वि देसतरे न गतव्व । भविस्सइ इत्थेव ते निव्वाहु त्ति । तेण ससभम पडिबुद्धेण त ठाण पुव्वाईहि खणाविअ । जाव दिट्ठा सा पडिमा । तओ हिट्ठ[14]तुट्ठेण नयर गतूण । सावयसघस्स निवेइय । सावएहि महूसवपुरस्सर परमेसरो पवेसिऊण ठाविओ चेईहरे । पूइज्जए तिकाल । अणेगवार तुरुक्कउवद्दवाओ मुक्को । तस्स य सुत्तहारस्स सावएहि वित्तिनिव्वाहो कारिओ । पडिमाए परिगरो य गवेसिओ तेहिं न लद्धो । कत्थवि थलपरिसरे चिट्ठइ । तत्थ य पसत्थिसवच्छराइ लिहिअ सभाविज्जइ । अन्नया [15]ण्हवणे सवुत्ते भयवओ सरीरे पसेओ पसरतो दिट्ठो । लूहिज्जमाणो वि जाव न विरमइ ताव नाय सड्ढेहिं वियड्ढेहि[16] जहा को वि उवद्दवो अवस्स इत्थ होही । जाव पभाए **जट्टुअरायउत्ताण** धाडी समागया । नयर सव्वओ विद्धत्थ । एव पायडपभावो सामी तावपूईओ जाव [0]**तेरहसयपचासीओ** (१३८५) सवच्छरो । तम्मि वरिसे आगएण **आसीनयर**सिकदा-रेण[17] [18]**अक्खविअवसस**[0]जाएण घोरपरिणामेण सावया साहुणो अ वदीए काउ विडविया । सिरि**पासनाह**बिंव सेलमय भग्ग । सा पुण सिरि**महावीर**पडिमा अखडिआ चेव सगडमारोवित्ता **ढिल्लीपुर**माणेऊण [19]**तुगुलकावाद**ट्ठिअसुरत्ताण-भडारे ठाविया । सिरिसुरत्ताणो किरि आगओ सतो ज आइसिहिइ त करिस्सामु त्ति ठिया पन्नरसमासे तुरुक्कनदीए । जाव समागओ कालक्कमेण **देवगिरिनयराओ जोगिणिपुरं** सिरि**महम्मद**सुरत्ताणो ।

अन्नया बहिया जणवयविहार[20] विहरित्ता सपत्ता[21] **ढिल्लीसाहापुरे खरयरगच्छा**लकारसिरि**जिणसिंहसूरि**-पट्टपइट्ठिया सिरि**जिणप्पहसूरिणो** । कमेण महारासयभाए पडिअगुट्ठीए पत्थुआए, को नाम विसिट्ठयरो पडिओ त्ति रायराएण पुट्ठे[22] जोइसिअ**धाराधरेण** तेसिं गुणत्थुई पारद्धा । तओ महाराएण त चेव पेसिअ सबहुमाण आणाविआ पोससुद्धबीयाए सझाए सूरिणो[23] । भिट्टिओ तेहिं महारायाहिराओ । अच्चासन्ने उववेसिअ कुसलाइवत्त पुच्छिअ आय-ण्णिओ अहिणवकव्वआसीवाओ । चिर अद्धरत्त जाव एगते गुट्ठी कया । तत्थेव रत्तिं[24] च सावित्ता पभाए

---

1 D °मण । 2 P साहुदेव । 3 B C Pa काराविय, D काराविअ । 4 A B जोईरसो° । 5 P सुमिणायासेण । 6 B °धातु° । 7 P पच्छन्ना । 8 P धारे° । 9 D दाडिम° । 10 B °वासत्थलिए । † P आदर्शे एवैतद्वाक्य दृश्यते । 11 P विना नास्त्यन्यत्र । 12 P सकुड° । 13 B D Pa कइवास° । 14 P हट्ठ° । 15 P ण्हवणेण । 16 P विहायान्यत्र न दृश्यते इद पदम् । 0 0 एतदन्तर्गत पाठ पतित D प्रतौ । 17 P एतत्पद नास्ति । 18 P अवि (दि ?) यवसजाएण । 19 B C D Pa तुगलावाद° । 20 P जणवय विहरित्ता । 21 P नास्ति । 22 P पुट्ठो । 23 P सूरिणा । 24 P रत्तिं वसित्ता ।

आहूया। संतुट्ठेणं महानरिंदेणं गोसहस्सं दविणजायं पहाणमुज्जाणं वत्थसयं कंबलसयं अगुरुचंदणकप्पूराइगंधदव्वाइं च दाउमाढत्ताणि। तओ गुरुहिं—साहूणं एयं न कप्पइ त्ति संबोहिऊण महारायं पडिसिद्धं सव्वं वत्थु। पुणो रायाहिरायस्स मा अप्पत्तिअं होहि त्ति किंचि कंबल-वत्थागरुमाइ अंगीकयं रायाभिओगेणं। तओ नाणादेसंतरागयपंडिएहिं सह वायगोट्ठिं कारवित्ता मयगलहत्थिजुअलं आणाविअं। एगम्मि गुरुणो अन्नम्मि य सिरि**जिणदेवायरिया** आरोवित्ता वज्जंतीसु अट्टसु सुरत्ताणिअमयणभेरीसु, पूरिज्जमाणेसु जमलसंखेसु, घुम्मंतेसु मुअंगमद्दलकंसालढोल्लाइसद्देसु, पढंतेसु भट्ट-घट्टेसु चाउव्वण्णसमेया चउव्विहसंघसंजुत्ता य सूरिणो पोसहसालं पट्टविया। सावएहिं पवेसमहूसवो विहिओ। दिण्णाइं महादाणाइं। पुणो पातसाहिणा समप्पिअं सयल**सेअंबरदंसण**उवद्दवरक्खणक्खमं फुरमाणं। पेसिआ चउद्दिसिं गुरूहिं तस्स पडिच्छंदया। जाया सासणुन्नई। अन्नया मग्गिअं सूरीहिं सिरि**सत्तुंजय-गिरिनार-फलवद्धी**पमुहतित्थाणं रक्खणत्थं फुरमाणं। दिन्नं तक्खणं चेव सव्वभोमेणं। पेसिअं तं तित्थेसु। मोइया गुरुवयणाणंतरमेव अणेगे वंदिणो रायाहिराएण। पुणरवि सोमवारदिवसे[1] गुरुणो पत्ता रायउलं वरिसंते जलहरे। भिट्टिओ सुरत्ताणो। कद्दमखरंटिअपाया गुरूणं लूहाविया महाराएण **मलिक्ककाफूर**[2] पासाओ पवरसिनयखंडेण। तओ आसीवाए दिण्णे वण्णणाकव्वे वक्खाणिए अईव चमक्करिअचित्तो जाओ महानरिंदो। अवसरं नाऊण मग्गिया सव्वसल्लकड्ढणपुव्वं भगवओ **महावीरस्स** पडिमा। दिण्णा य ताओ ताओ सुकुमारगोट्ठीओ काऊण एगच्छत्तवसुहाहिवइणा। आणाविया **तुगुलकावाद**कोसाओ। तओ असुभगाणं मलिकाणं खंधे दाऊण सयलसभासमक्खं अप्पणो अग्गे आणाविअ दट्ठूणं च समप्पिआ गुरूणं। तओ महूसवपभावणापुव्वं सुक्खासणट्ठिआ पवेसिआ सयलसंघेण **मलिकताजदीन**सराईए चेईए य ठाविआ। गुरूहिं वासक्खेवो कओ। पूइज्जइ महापूआहिं।

तओ महारायस्स आएसेणं सिरि**जिणदेव**सूरिणो अप्पपनरसमे **ढिल्लीमंडले** ठावित्ता पट्ठिआ कमेण गुरुणो **मरहट्ठमंडले**। दिण्णा रायाहिराएण सावयसंवसहिआणं गुरूणं वसहकरहतुरयगुलइणी सुक्खासणाइसामग्गी। अंतरालनगरेसु पभावणं कुणंता पए पए संघेहि सम्माणिज्जमाणा अपुव्वतित्थाइं नमंसंता सूरिणो कमेण पत्ता **देवगिरिनगरं**। संघेण पवेसमहूसवो कओ, संघपूआ य जाया। **पइट्ठाणपुरे** य जीवंतसामि-**मुणिसुव्वय**पडिमा। संघवइ**जगसीह-साहण-मल्लदेव**प्पमुहसंघसहिएहिं जत्ता कया। पच्छा **ढिल्लीए** विजयकडए **जिणदेव**सूरीहिं दिट्ठो महाराओ। दिण्णो बहुमाणो। एगा च सराई दिण्णा। **सुरत्ताणसराइ** त्ति तीसे नामं ठविअं। तत्थ चत्तारि सयाइं सावयकुलाणं निवासत्थं आइट्ठाणि। तत्थ काराविआ पोसहसाला कलिकालचक्कवट्टिणा चेईयं च। ठाविओ तत्थ सो चेव देवो सिरि**महावीरो**। पूअंति तिकालं महरिहपूआपयारेहिं भगवंतं परतित्थिया **सेयंबर**भत्ता **दियंबर**भत्ता य सावया।

दट्ठूण सिरि**महम्मदसाहि**कयं सासणुन्नइं। एवं पंचमकालं पि चउत्थमेव कालं कलिंति जणा ॥ १ ॥
बिंबं पडिहयडिंबं **वीर**जिणेसस्स धुअकिलेसस्स। आचंदसूरिअमिणं मणनयणाणंदणं जयइ ॥ २ ॥
कण्णाणयपुरसंतिअदेव**महावीर**पडिमकप्पोयं। लिहिओ मुणीसरेणं **जिणसिंह**[3]मुणिंदसीसेणं ॥ ३ ॥

॥ इति कन्यानयनीयमहावीरप्रतिमाकल्पः ॥

॥ ग्रं० ७७, अ० १५ ॥

---

1 P °दिणे। 2 A B मल्लिक; P मलिककापूर; Pa मलिकक्कापूर। 3 B C Pa जिणसंघ°।

२३. प्रतिष्ठानपत्तनकल्पः [१] ।

जीयाज्जैत्र पत्तन पूतमेतद्गोदावर्या श्रीप्रतिष्ठानसञ्ज्ञम् ।
रत्नापीड श्रीमहाराष्ट्रलक्ष्म्या रम्य हर्म्यैर्नैत्रशैत्यैश्च चैत्यै ॥ १ ॥
अद्यापष्टिर्लौकिका अत्र तीर्था द्वापञ्चाशज्जज्ञिरे चात्र वीरा ।
पृथ्वीशाना न प्रवेशोऽत्र वीरक्षेत्रत्वेन प्रौढतेजोरनीणाम् ॥ २ ॥ 5
निस्यतीत्य[1] पुटभेदनतोऽस्मात् षष्टियोजनमितं[2] किल वर्त्म ।
बोधनाय भृगुकच्छमगच्छद्वाजिनो जिनपति कमठाङ्क ॥ ३ ॥
अन्वितत्रिनवतेर्नवशत्या अत्ययेऽत्र शरदा जिनमोक्षात् ।
कालको व्यधित वार्षिकमार्य पर्व भाद्रपदशुक्लचतुर्थ्याम् ॥ ४ ॥
तत्तदायतनपङ्क्तिवीक्षणादत्र मुञ्चति जनो विचक्षण । 10
तत्क्षणात्सुरविमानधोरणि श्रीविलोकविषय कुतूहलम् ॥ ५ ॥
[3]शातवाहनपुरस्सरा नृपाश्चित्रकारिचरिता इहाभवन् ।
दैवतैर्बहुविधैरधिष्ठिते चात्र सत्रसदनान्यनेकश ॥ ६ ॥
कपिला त्रेय-बृहस्पति-पञ्चाला इह महीभृदुपरोधात् ।
न्यस्तलचतुर्लक्षग्रन्थार्थं श्लोकमेकमप्रथयन् ॥ ७ ॥ 15

स चाय श्लोक —

जीर्णे भोजनमात्रेय', कपिलः प्राणिना दया ।
बृहस्पतिरविश्वास , पञ्चालः स्त्रीषु मार्दवम् ॥ ८ ॥
इह जयति दृशोरमृतच्छटा सुहृग्बर्हिणा पयोदघटा ।
जीवत्स्वामिप्रतिमा श्रीमन्मुनिसुव्रतस्य लेप्यमयी ॥ ९ ॥ 20
वर्षाणामेकादशलक्षाण्यष्टायुतानि सार्धानि ।
अष्टौ शतानि षट्पञ्चाशानीत्यजनि कालोऽस्या ॥ १० ॥
इह सुव्रतजिनचैत्ये यात्रामासूत्र्य विहितविविधमहाम् ।
भव्याश्चिन्वत्यैहिकपारत्रिकशर्मसम्पत्ती ॥ ११ ॥
प्रासादेऽत्र श्रीजिनराजा चारु चकासति लेप्यमयानि । 25
बिम्बान्यप्रतिबिम्बरुचीनि प्रीतिम्फीर्ति वदति जनानाम् ॥ १२ ॥
अम्बादेवी क्षेत्राधिपतिर्यक्षाधिपतिश्चापि कपर्दी ।
एते चैत्य समधिवसन्त श्रीसङ्घस्य घ्नन्त्युपसर्गान् ॥ १३ ॥
अत्र चैत्यश्रिय शेखर सुव्रत प्राणिपूगोपकारैकबद्धव्रत ।
वन्द्यमानक्रम स्वर्गिवर्गैर्मुदा सपनीपद्यता श्रेयसे व सदा ॥ १४ ॥ 30

श्रीप्रतिष्ठानतीर्थस्य श्रीजिनप्रभसूरय । कल्पमेत विरचयाम्बभूवुर्भूतये सताम् ॥ १४ ॥

॥ श्रीप्रतिष्ठानपत्तनकल्पः ॥

॥ ग्र० १९, अ० १५ ॥

---

1 P विहायान्यत्र 'निस्यतीति'। 2 P विनाऽन्यत्र 'मित'। 3 P सात°।

२४. नन्दीश्वरद्वीपकल्पः ।

आराध्य श्रीजिनाधीशान् सुराधीशार्चितक्रमान् । कल्पं **नन्दीश्वरद्वीप**स्याचक्षे विश्वपावनम् ॥ १ ॥
अस्ति नन्दीश्वरो नाम्नाऽष्टमो द्वीपो द्युसन्निभः । तत्परिक्षेपिणा नन्दीश्वरेणाम्भोधिना युतः ॥ २ ॥
एतद्वलयविष्कम्भे लक्षाशीतिश्चतुर्युता । योजनानां त्रिषष्टिश्च कोट्यः कोटिशतं तथा[1] ॥ ३ ॥
5 असौ [2]विविधविन्यासोद्यानवान् देवभोगभूः । जिनेन्द्रपूजासंसक्तसुरसम्पातसुन्दरः ॥ ४ ॥
अस्य मध्यप्रदेशे तु क्रमात्पूर्वादिदिक्षु च । अञ्जनवर्णाश्चत्वारस्तिष्ठन्त्यञ्जनपर्वताः ॥ ५ ॥
दशयोजनसहस्रातिरिक्तविस्तृतास्तले । सहस्रयोजनाश्चोर्ध्वं क्षुद्रमेरूच्छ्रयाश्च ते ॥ ६ ॥
तत्र [3]प्राग्देवरमणो नित्योद्योतश्च दक्षिणः । स्वयंप्रभः प्रतीच्यस्तु रमणीय उदक्स्थितः ॥ ७ ॥
शतयोजनायतानि[4] तदर्द्धं[5] विस्तृतानि च । द्विसप्ततियोजनोच्चान्यर्हच्चैत्यानि तेषु च ॥ ८ ॥
10 पृथग्द्वाराणि चत्वार्युच्चानि षोडशयोजनीम् । प्रवेशे योजनान्यष्ट विस्तारेऽप्यष्ट तेषु तु ॥ ९ ॥
तानि देवासुरनागसुपर्णानां दिवौकसाम् । समाश्रयास्तेषामेव नामभिर्विश्रुतानि च ॥ १० ॥
षोडशयोजनायामास्तावन्मात्राश्च विस्तृतौ । अष्टयोजनकोत्सेधास्तन्मध्ये मणिपीठिकाः ॥ ११ ॥
सर्वरत्नमया देवच्छन्दकाः पीठिकोपरि । पीठिकाभ्योऽधिका[6]यामोच्छ्रयभाजश्च तेषु तु ॥ १२ ॥
ऋषभा वर्धमाना च तथा **चन्द्रानना**पि च । **वारिषेणा** चेति नाम्ना पर्यङ्कासनसंस्थिताः ॥ १३ ॥
15 रत्नमय्यो युताः स्वस्वपरिवारेण हारिणा । शाश्वतार्हत्प्रतिमाः प्रत्येकमष्टोत्तरं शतम् ॥ १४ ॥
द्वे द्वे नागयक्षभूतकुण्डभृत्प्रतिमे पृथक् । प्रतिमानां पृष्ठतस्तु छत्रभृत्प्रतिमैकका[7] ॥ १५ ॥
तेषु धूपघटीदामघण्टाऽष्टमङ्गलध्वजाः । छत्रतोरणचङ्गेर्यः पटलान्यासनानि च ॥ १६ ॥
षोडशपूर्णकलशादीन्यलङ्करणानि च । सुवर्णरुचिररजोवालुकास्तत्र भूमयः ॥ १७ ॥
आयतनप्रमाणेन रुचिरा मुखमण्डपाः । प्रेक्षार्थमण्डपा अक्षवाटका[8] मणिपीठिकाः ॥ १८ ॥
20 रम्याश्च स्तूपप्रतिमाश्चैत्यवृक्षाश्च सुन्दराः । इन्द्रध्वजाः पुष्करिण्यो दिव्याः सन्ति यथाक्रमम् ॥ १९ ॥
प्रतिमाः षोडश चतुर्द्वारस्तूपेषु सर्वतः । शतं चतुर्विंशमेवं ताः साष्टशततद्युताः ॥ २० ॥
प्रत्येकमञ्जनाद्रीणां ककुप्सु चतसृष्वपि । गते लक्षे योजनानां निर्मत्स्यस्वच्छवारयः ॥ २१ ॥
सहस्रयोजनोत्सेधा विष्कंभे लक्षयोजनाः । पुष्करिण्यः सन्ति तासां [9]क्रमान्नामानि षोडश ॥ २२ ॥
नन्दिषेणा चामोघा च गोस्तूपाथ सुदर्शना । तथा नन्दोत्तरा नन्दा सुनन्दा नन्दिवर्द्धना ॥ २३ ॥
25 भद्रा विशाला कुमुदा पुण्डरीकिणिका तथा । विजया वैजयन्ती च जयन्ती चापराजिता ॥ २४ ॥
प्रत्येकमासां योजनं पञ्चशत्याः परत्र च । योजनानां पञ्चशतीं यावद्विस्तारभाञ्जि तु ॥ २५ ॥
लक्षयोजनदीर्घाणि महोद्यानानि तानि तु । अशोकसप्तच्छदकचम्पकचूतसञ्ज्ञया ॥ २६ ॥
मध्ये पुष्करिणीनां च स्फाटिकाः पल्यमूर्तयः । ललामवेद्युद्यानादिचिह्ना दधिमुखाद्रयः ॥ २७ ॥
चतुःषष्टिसहस्रोच्चाः सहस्रं चावगाहिनः । सहस्राणि दशाधस्तादुपरिष्टाच्च विस्तृताः ॥ २८ ॥
30 अन्तरे पुष्करिणीनां द्वौ द्वौ रतिकराचलौ । ततो भवन्ति द्वात्रिंशदेते रतिकराचलाः ॥ २९ ॥
शैलेषु दधिमुखेषु तथा रतिकराद्रिषु । शाश्वतान्यर्हच्चैत्यानि सन्त्यञ्जनगिरिष्विव ॥ ३० ॥
चत्वारो द्वीपविदिक्षु तथा रतिकराचलाः । दशयोजनसहस्रायामविष्कम्भशालिनः ॥ ३१ ॥
योजनानां सहस्रं तु यावदुच्छ्रयशोभिताः । सर्वरत्नमया दिव्या झल्लर्याकारधारिणः ॥ ३२ ॥

---

1 B तया । 2 P विचित्र° । 3 C प्राच्यो । 4 B °न्यायतनानि । 5 B तदर्द्धे । 6 B ऽभ्याधिका° । 7 A °मैकिका । 8 B °वाटिका । 9 B क्रमानि ।

तत्र द्वयो रतिकराचलयोर्दक्षिणस्थयो । शक्रस्येशानस्य पुनरुत्तरस्थितयो पृथक् ॥ ३३ ॥
अष्टाना महादेवीना राजधान्योऽष्टदिक्षु ता । लक्षानाधा लक्षमाना जिनायतनभूषिता ॥ ३४ ॥
सुजाता सौमनसा चार्चिर्माली च प्रभाकरा । पद्मा शिवा शुच्यञ्जने चूता चूतावतसिका ॥ ३५ ॥
गोस्तूपा-सुदर्शने अप्यमलाप्सरसौ तथा । रोहिणी नवमी चाथ रत्ना रत्नोचयापि च ॥ ३६ ॥
सर्वरत्नरत्नसञ्चया (?) वसुर्वसुमित्रिका । वसुभागापि च वसुन्धरा नन्दोत्तरे अपि ॥ ३७ ॥ 5
नन्दोत्तरकुरुर्देवकुरु कृष्णा ततोऽपि च । कृष्णराजी रामारामरक्षिता प्राक्क्रमादमू ॥ ३८ ॥
सर्वर्द्धयस्तासु देवा कुर्वते सपरिच्छदा । चैत्येष्वष्टाहिका[1] पुण्यतिथिपु[2] श्रीमदर्हताम् ॥ ३९ ॥
प्राच्येऽञ्जनगिरौ शक्र कुरुतेऽष्टाहिकोत्सवम् । प्रतिमाना शाश्वतीना चतुर्द्वारे जिनालये ॥ ४० ॥
तस्य चाद्रेश्चतुर्दिक्स्थमहावापीविवर्तिपु[3] । स्फाटिकेपु दधिमुखपर्वतेपु चतुर्ष्वपि ॥ ४१ ॥
चैत्येष्वर्हत्प्रतिमाना शाश्वतीना यथाविधि । चत्वार शक्रदिक्पाला कुर्वतेऽष्टाहिकोत्सवम् ॥ ४२ ॥ 10
ईशानेन्द्रस्त्वौत्तराहेऽञ्जनाद्रौ विदधाति तम् । तल्लोकपालास्तद्वापीदध्यास्याद्रिपु कुर्वते ॥ ४३ ॥
चमरेन्द्रो दाक्षिणात्येऽञ्जनाद्रावुत्सव सृजेत् । तद्वाप्यन्तर्दधिमुखेष्वस्य दिक्पतय पुन ॥ ४४ ॥
पश्चिमेऽञ्जनशैले तु बलीन्द्र कुरुते महम् । तद्दिक्पालास्तु तद्वाप्यन्तर्मागृदधिमुखाद्रिपु ॥ ४५ ॥
वर्षं दीपदिनारब्धानुपवासान् कुहूतिथौ । कुर्वन्नन्दीश्वरोपास्त्यै श्रायसी श्रियमार्जयेत् ॥ ४६ ॥
भक्त्या चैत्यानि वन्दारुस्तत्स्तोत्रस्तुतिपाठभाक्[4] । नन्दीश्वरमुपासीनोऽनुपर्वाहस्तरेत्तराम् ॥ ४७ ॥ 15
प्राय पूर्वाचार्य[5]प्रथितैरेवायमादित श्लोकै । श्रीनन्दीश्वरकल्पो लिखित इति श्रीजिनप्रभाचार्यै ॥ ४८ ॥

॥ इति श्रीनन्दीश्वरकल्पः ॥

॥ ग्र० ४९, अ० १० ॥

---

1 B C °ष्टाहिका । 2 B पुण्यतिथिपु । 3 B विवर्तिपु, C वर्तिपु Pa विवर्तिपु । 4 B पाठवान् । 5 B कथित° ।

२५. काम्पिल्यपुरतीर्थकल्पः ।

गंगामूलट्ठिअसिरिविमलजिणाययणमणहरसिरिस्स । कित्तेमि समासेणं कंपिल्लपुरस्स कप्पमहं ॥ १ ॥

अत्थि इहेव **जंबुद्दीवे** दीवे दक्खिण**भारह**खंडे पुव्वादिसाए **पंचाला** नाम जणवओ । तत्थ **गंगा**नाम-महानईतरंगभंगिपक्खालिज्जमाणपायारभित्तिअं **कंपिल्लपुरं** नाम नयरं। तत्थ तेरसमो तित्थयरो **विमल**नामा इक्खा-गुकुलपईव**कयवम्म**नरिंदनंदणो **सोमादेवी**कुच्छिसिप्पिमुत्ताहलोवमो वराहलंछणो जच्चकणयवण्णो उप्पण्णो । तत्थ तस्सेव भगवओ चवण-जम्मण-रज्जाभिसेअ-दिक्खा-केवलनाणलक्खणाइं पंचकल्लाणाइं जायाइं । इत्तुच्चिअ[1] तत्थ पएसे **पंचकल्लाणयं** नाम नयरं रूढं । जत्थ य[2] तस्सेव भगवओ सूअरलंछणत्तणं पडुच्च देवेहि महिमा कया तत्थ य **सूअरखित्तं** पसिद्धिमुवगयं ।

तत्थेव नयरे दसमो चक्कवट्टी **हरिसेणो** नाम संजाओ । तहा दुवालसमो सव्वभोमो **बंभदत्त**नामा तत्थेव समुप्पण्णो ।

तहा **वीरजिण**निव्वाणाओ दोहिं सएहिं वीसाए समहिएहिं वरिसाणं **मिहिलाए** नयरीए लच्छीहरे चेईए **महागिरीणं** आयरियाणं **कोडिन्नो** नाम सीसो, तस्स[3] **आसमित्तो** नाम सीसो अणुप्पवायपुव्वे नेउणिय[4]-वत्थुम्मि छिन्नच्छेयणयवत्तव्वयाए आलावगं पढंतो विप्पडिवन्नो चउत्थो निण्हवो जाओ । समुच्छेइयदिट्ठिं परूविन्तो एयं **कंपिल्लपुर**मागओ । तत्थ **खंडरक्खा**[5] नाम समणोवासगा । ते अ सुंकपाला तेहिं भएण उववत्तीहिय पडिबोहिओ ।

इत्थ **संजयो**[6] नाम राया हुत्था । सो अ पारद्धीए गओ **केसरुज्जाणे** मिए हए[7] पासिंतो तत्थ **गद्दभालिं** अणगारं पासित्ता संविग्गो पव्वइत्ता सुगइं पत्तो ।

इत्थेव नयरे **गागली** कुमारो **पिट्ठीचंपाहिवसाल-महासालाणं** भाइणिज्जो[8] **पिढर-जसवईणं** पुत्तो आसि । सो अ तेहिं माउलेहिं इतो नयराओ आहवित्ता **पिट्ठीचंपा**रज्जे अहिसित्तो । तेहिं च **गोअमसामि**पासे दिक्खा गहिआ । कालक्कमेणं **गागली**वि अम्मापिउसहिओ **गोअमसामि**पासे जिणदिक्खं पडिवन्नो, सिद्धो अ ।

इत्थेव नयरे दिव्वमउडरयणपडिबिंबिअमुहत्तणपसिद्धेण नामधिज्जेण **दुमुहो** नाम नरवई कोमुईमहूसवे इंदके-उं अलंकिअविभूसिअं महाजणजणियइड्ढिसक्कारं दट्ठुं, दिणंतरे तं चेव भूमीए पडिअं पाएहिं विलुप्पमाणं अणाढाइज्ज-माणं[9] दट्ठूण इड्ढिं अणिड्ढिं समुपेहिऊण पत्तेयवुद्धो जाओ ।

इत्थेव पुरे **दोवई** महासई **दुवयनरिंद**धुआ पंचण्हं **पंडवाणं** सयंवरमकासी ।

इत्थेव पुरे **धम्मरुई** नरिंदो अंगुलिज्जगरयणुक्खेडिअजिणिंदबिंबनमंसणदोसुब्भावणेणं पिसुणेहिं कोविएण **कासीसरेण** विग्गहिओ वेसमणेण धम्मप्पभावेणं सवलवाहणं परचक्कं [10]गगणमग्गेणं **कासीए** नेउं नित्थारिओ । तस्सेव सम्माणभायणं जाओ ।

इच्चाइअणेगसंविहाणगरयणनिहाणं एयं नयरं महातित्थं । इत्थ तित्थजत्ताकरणेणं भविअलोआ जिणसासण-प्पभावणं कुणंता अज्जिंति [11]इहलोअपरलोइअसुहाइं, तित्थयरनामगुत्तं च ।

पिल्लिअ कुकम्मरिउणो **कंपिल्ल**पुरस्स पवरतित्थस्स । कप्पं पढंतु असढा इय भणइ **जिणप्पहो** सूरी ॥ १ ॥

॥ श्रीकाम्पिल्यपुरकल्पः ॥

॥ ग्रं० ३३, अ० ७ ॥

---

1 Pa इत्थचिअ । 2 'य' नास्ति Pa C । 3 P तस्सीसो । 4 P नेउणिय°; C नेउलिय° । 5 P खंडरक्खा । 6 Pa संजमो । 7 Pa हओ । 8 B भाणिज्जो । 9 B नास्ति पदमेतत् । 10 A C गमण°; D गमगण° । 11 इहलोइ-असुहाइयसुहाइ ।

२६. अणहिलपुरस्थितअरिष्टनेमिकल्पः ।

पणमिअ अरिट्ठनेमिं अणहिलपुरपट्टणावयसस्स । थंभाणगच्छनिस्सिअअरिट्ठनेमिम्म किंचिमो कप्पं ॥१॥

पुव्विं किर सिरिकण्णउज्जनयरे जक्खो नाम महिड्ढिसपन्नो नेगमो हुत्था । सो अण्णया वणिज्जकज्जे महया वइल्लसत्थेण कयाणगाणि गहिऊण कण्णउज्जपडिनद्धं कन्नरज्जा हिवसुआए महणिगाए[3] कंचुलिआसनवे दिण्ण गुज्जरदेसं[4] पइ पट्ठिओ[5] आवासिओ अ कमेण लक्खारामे सरस्सईनईतडे । पुव्विं अणहिल्लवाडयपट्टणनिवे- सट्ठाण किर त आसि । तत्थ सत्थ निवेसित्ता अच्छतस्स तस्स नेगमस्स पत्तो वासारत्तो । वरिसिउ पवत्ता[6] जलहरा[7] । अन्नया भद्दवयमासे सो वइल्लसत्थो[7] सव्वो वि कत्थ वि गओ । को वि न जाणइ । सव्वत्थ गवेसाविओ वि न लद्धो । तओ सव्वस्सनासे इव अच्चतचिंताउरस्स तस्स रत्तीए आगया सुमिणम्मि भगवई अंबादेवी । भणिअं च तीए—वच्छ ! जग्गसि सुवसि वा ? । जक्खेण[8] वुत्त—अम्मो ! कओ मे निद्दा । जस्स वइल्लसत्थो सव्वस्सभूओ विप्पणट्ठो । देवीए साहिअ—भद्द ! एयम्मि लक्खारामे अंबिलियाथुडस्स हिट्ठे पडिमातिग वट्टइ । पुरिसतिग खणाविता त गहेयव । एगा पडिमा सिरिअरिट्ठनेमिसामिणो, अवरा सिरिपासनाहस्स, अन्ना य अंबियादेवीए । जक्खेण वागरिय—[9]भयवइ ! अंबिलियाथुडाण बाहुल्ले सो पएसो नाम कह नायव्वो ? । देवीए जपिअं[10]—धाउमय मडल पुप्फपयर च जत्थ पाससि त चेव ठाण पडिमातिगस्स जाणिज्जासि । तम्मि पडिमातिगे पयडीकए पूइज्जते अ तुज्झ वइल्ला सय- मेव आगच्छिहिति । पहाए तेण उट्ठेऊण बलिविहाणपुव्व तहा कए पयडीहूआओ तिण्णिवि पडिमाओ । पूइयाओ विहिपुव्व । खणमित्तेण अतक्किअमेव आगया वइल्ला । संतुट्ठो नेगमो । कमेण कारिओ तत्थ पासाओ । ठावियाओ पडिमाओ ।

अन्नया अइच्छिए वासारत्ते अग्गहारगामाओ अट्ठारससयपट्टसालियघरअलंकियाओ थंभाणगच्छमडणा सिरिजसोभद्दसूरिणो खभाइत्तनयरोवरिं विहरता तत्थ आगया । लोगेहिं विन्नविअ—भयव ! तित्थ उल्लंघिउ गतु न कप्पइ पुरओ । तओ[11] तेहिं सूरीहिं तत्थ ताओ नमसिआओ पडिमाओ । मग्गसिरपुण्णिमाए धयारोवो महूस- वपुव्व कओ । अज्ज वि पइवरिसं तम्मि चेव दिणे धयारोवो कीरइ । सो य धयारोवमहूसवो विक्कमाइच्चाओ पंचसु सएसु दुत्तरेसु वरिसाणं (५०२) अइक्कतेसु संवुत्तो ।

तओ अट्ठसएसु दुउत्तरेसु (८०२) विक्कमवासेसु अणहिल्लगोवालपरिक्खिअपएसे लक्खा- रामट्ठाणे पट्टण चाउक्कड[12]वसमुत्ताहलेण वणरायराइणा निवेसिअं । तत्थ वणराय-जोगराय-खेमराय- भूअड-वैयरसीह[13]-रयणाइच्च-सामंतसीहनामाणो सत्त चाउक्कडवसरायाणो जाया । तओ तत्थेव पुरे चालुक- वसे मूलराय-चामुण्डराय-वल्लभराय-दुल्लहराय[14]-भीमदेव-कण्ण-जयसिहदेव-कुमारपालदे- व-अजयदेव-बालमूलराय-भीमदेवाभिहाणा एगारस नरिंदा । तओ वाघेलाअन्नए लूणपसाय-वीर- धवल-वीसलदेव-अज्जुणदेव-सारगदेव-कण्णदेवा नरिंदा सजाया । तओ[15] अल्लावदीणसुरत्ताणाण गुज्जरधरित्तीए आणा पयट्टा । सो अ अरिट्ठनेमिसामी कोदडीकयपाडिहेरो अज्ज वि तहेव पूइज्जइ त्ति ।

अरिष्टनेमिकल्पोऽय लिखित श्रेयसेऽस्तु व । मुखात्पुराविदा श्रुत्वा श्रीजिनप्रभसूरिभि ॥ १ ॥

॥ इति अरिष्टनेमिकल्पः ॥

॥ ग्रं० ३३ ॥

---

1 P परिवुद । 2 P कन्नउज्ज° । 3 P मयणिगाए । 4 Pa °देसे । 5 Pa पइट्ठिओ । 6 P पवित्तिया । 7 C Pa बयल° । 8 P जक्खेणुत्त । 9 B C Pa भयव । 10 P जपियं देवीए । 11 B नास्ति 'तओ' । 12 B चाउक्कडा° । 13 C वयरसी । 14 Pa नास्ति एतत्पदम । 15 P तओ ।

२७. शंखपुरपार्श्वकल्पः ।

पुव्विं किर नवमो पडिवासुदेवो **जरासंधो**[1] **रायगिहा**ओ नयराओ समग्गसिन्नसंभारेण नवमस्स वासुदेवस्स **कण्हस्स** विग्गहत्थं पच्छिमदिसं चलिओ । **कण्हो** वि समग्गसामग्गीए **बारवई**ओ निग्गंतूण सम्मुहं तस्सागओ विसयसीमाए । तत्थ भयवया**रिट्ठनेमि**णा पंचजण्णो संखो पूरिओ तत्थ **संखेसरं** नाम नयरं निविट्ठं । तओ 5 संखस्स निनाएण खुभिएण **जरासंधे**ण जराभिहाणं कुलदेवयं आराहित्ता विउविया विण्हुणो वले जरा । तए खास-सासरोगेहिं य पीडियं नियसिन्नं दट्ठुं[2] आउलीहूअचित्तेण **केसवे**ण पुट्ठो भयवं **अरिट्ठनेमि**सामी—भयवं ! कहं मह सिन्नं निरुवद्दवं होही?; कहं च मज्झ जयसिरी करयलट्ठिआ भविस्सइ ? । तओ भयवया ओहिनाणेणं आभोएऊण अइट्ठं, जहा—पायाले पन्नगेहिं पूज्जमाणा[3] भविस्सस्सारिहओ **पास**स्स पडिमा चिट्ठइ । तं जइ[4] नियदेवयावसरे तुमं पूएसि तया ते निरुवद्दवं च जयसिरी य होहिंति । तं सोऊण विण्हुणा सत्तमासे तिन्नि दिवसे य, मयंतरे दिणतिगं चेव, 10 आहाररहिएण विहिणा आराहिओ †पन्नगाहिराओ[5] । कमेण पच्चक्खीहूओ **वासुगी** नागराओ† । तओ हरिणा भत्तिवहुमाणपुव्वं मग्गिया सा पडिमा । अप्पिया य नागराएण । तओ महूसवपुव्वं ‡आणित्ता नियदेवयावसरे ठविआ । पूएउमाढत्तो तिकालं विहिणा‡ । तओ तीए ण्हवणोदगेणं अहिसित्ते सयलसिन्ने, नियत्तेसु जरारोगसोगाइविग्घेसु [6]सम-त्थीहूअं विण्हुणो[7] सिन्नं । कमेण पराजिओ **जरासिंधू । लोहासुर-गयासुर**[8]**-बाणासुराइ**णो अ निज्जिआ । तप्पभिइं **धरणिंद-पउमावइ**सन्निज्झेणं सयलविग्घावहारिणी सयलऋद्धिजणणी य सा पडिमा संजाया । ठविआ 15 तत्थेव **संखपुरे** । कालंतरेण पच्छन्नीहूआ । कमेण संखकूवंतरे पयडीहूआ । अज्ज जाव चेईहरे सयलसंघेण पूइज्जइ, पूरेइ य अणेगविहे पच्चए । **तुरुक्करायाणो** वि तत्थ महिमं करिंति ।

संखपुर[9]ट्ठिअमुत्ती कामियतित्थं जिणेसरो **पासो** । तस्सेस मए कप्पो लिहिओ गीयाणुसारेण ॥ १ ॥

*संखेश्वराधीश्वरपार्श्वनाथः कल्याणकल्पद्रुम एष देवः ।
भव्यात्मनां सन्ततमेव लक्ष्मीं [देहेऽपि] गेहेऽपि च संविदध्यात् ॥ २ ॥

20 ॥ **श्रीशंखपुरकल्पः** ॥

॥ ग्रं० २२, अ० २४ ॥

---

1 Pa C जरासिंधो । 2 B दिट्ठुं । 3 A B C पूइज्जमाणे । 4 'तं जइ' नास्ति C । † एतदन्तर्गतपाठस्थाने P प्रतौ 'कमेण पच्चक्खीहोऊण नागराएण भणियं–कि सुमरणकारणं ? ।' एतादृशः पाठः प्राप्यते । 5 B नास्ति पदमेतत् । ‡ एतदन्तर्गता पंक्तिर्नोपलभ्यते P प्रतौ । 6 P सावच्छि° । 7 P वासुदेवस्स । 8 Pa नास्ति 'गयासुर' । 9 B °पुरि° । * P प्रतावे-वेदं पद्यं दृश्यते ।

२८. नासिक्यपुरकल्पः ।

चद्प्पहजिणचद वदिअ दिअमनमय भणिस्सामि । नासिअकलिमलनिवह **नासिक्कपुरस्स** कप्पमह ॥ १ ॥

नासिक्कपुरतित्थस्स उप्पत्तिं बमणाई परतित्थिया एव वण्णति–पुव्विं किर[1] **नारयरिसिणा** एगया भयव **कमलासणो** पुट्ठो–पुण्णभूमिट्ठाण कत्थ त्ति ? । **कमलासणे**ण भणिय–जत्थेव इम मज्झ पउम पडिहिइ, त चेव पवित्त भूमिट्ठाण ति । अन्नया **विरचिणा** त पउम मुक्क । पडिअ **मरहट्ठ**जणवयभूमीए **अरुणा-वरुणा-गंगाहिं** महानईहि भूसियाए नाणाविहवणस्सइमणहराए देवभूमिप्पायाए । तत्थ **पउमासणे**ण **पउमपुरं** ति नगर निवेसिअ । तत्थ कयजुगे जण्णो आढत्तो **पियामहे**ण । मिलिआ सुरा सव्वे । असुरा य हक्कारिज्जता वि नागया सुरभएण । ते भणति–जइ भयव **चंदप्पह**सामी अतरे आगच्छइ, ता अम्हे वीसत्था आगच्छामो । तओ चमक्किअचित्तो **चउवयणो** जत्थ सामी विहरइ तत्थ गतूण पणमिऊण य जोडिअकरसपुडो विण्णवेइ–भयव ! तत्थागच्छह, जहा मज्झ कज्ज सिज्झइ । सामिणा भणिअ–मह पडिरूवेणावि त सिज्झिस्सइ । तओ **बभाणे**ण चदकतमणिमय बिंब सोहम्मिंदाओ घित्तूण तत्थाणीय । आगया दाणवा । पारद्धो जण्णमहो सिद्धो अ । तत्थ कारिओ **चद्प्पहविहारो** पयाबहणा । [2]पुरदुवारे य **सिरिसुदरो**[3] सुरो ठाविओ नयररक्खणभारे[4] । एव ताव पढमजुगे **पउमपुर** ति तित्थ पसिद्ध । तेयाजुगे य दासरही **रामो सीया-लक्खणसजुओ** पिउआणाए वणवास गओ । **गोअमगंगातीरे पचवडी-आसमे** चिर वणाहारेण ठिओ । इत्थतरे **रावण**भइणी **सुप्पणहा** तत्थ पत्ता । **राम** दट्ठूण अज्झोववण्णा पत्थिती[5] **रामे**ण पडिसिद्धा । **लक्खण**मणुलग्गा । तेण तीए नासिया छिण्णा । तत्थ **नासिक्कपुरं** जाय । कमेण **सीआ रावणे**ण हरिया । **राहवे**ण जुद्धे वावाइओ **रावणो** । **विभीसण**स्स दिण्ण **लंका**रज्ज । तओ नियनयरिं पइ वलतेण **रामे**ण चदप्पहसामिणो भवण उद्धरिअ । एस रामुद्धारो । एव **नासिक्कपुरे** सजाए, कालतरे पुण्णभूमिं नाउ आगओ **मिहिलाहिंतो** तत्थ **जणयराओ** । तेण य तत्थ दस जण्णा कारिया[6] । **जणयट्ठाणं** ति त नयर रूढ । अन्नया **देवजाणी** नाम **सुक्कस्स** महग्गहस्स धूआ **जणयट्ठाणपुरे** कीलती **दंडयराएण** दिट्ठा । रूवमइ त्ति बलामोडीए भग्ग तीसे सीलरयण । तस्स सरूव उवलब्भ **सुक्क**महग्गहेण रोसवसेण सावो दिण्णो । एय नयर **दडयराय**-सहिअ सत्तदिवसब्भतरे छाररासी भविस्सइ त्ति । त च **नारयरिसिणा** नाय, **दंडयराय**स्स कहिअ । त च[7] सोऊण भीओ **दडयराया** सयल जण सह आणेउ चद्प्पहसामिण सरण पवन्नो, छुट्टो अ । तप्पभिइ **जणथाण**[8] ति तस्स नयरस्स पसिद्ध नामधिज्ज । एव परतित्थिआवि जस्स तित्थस्स माहप्प उववण्णिति तस्स आरहतलोआ कह नोववण्णिहिंति ।

इत्थतरे दावरजुगे **पडुराय**पत्तीए **कुंतीदेवी**ए पढमपुत्ते **जुहिट्ठिले** सजाए चद्प्पहसामिणो पासाय जिण्ण[9] दट्ठूण उद्धारो काराविओ, सहत्थेण निग्गरुक्खो अ तत्थ वाविओ । तत्थ **कुंतीविहारु**[10] त्ति नाम विक्खाय । इओ य **दीवायणरिसिणा बारवईए** दड्ढाए रुक्खीणप्पाए **जायववसे वज्जकुमारो** नाम जायवखत्तिओ आसि । तस्स गब्भवई भज्जा । सा **बारवईए** डज्झमाणीए बहुमच्चिपुव्व **दीवायणरिसिं** मुक्कलाविना चद्प्पहसामिण चेव सरणमागया । पुण्णे समये पुण्णवत पुत्त तत्थेव पसूआ । **दड्ढप्पहारि** त्ति से नाम कय । सो अ अइबलतबालभावो सपत्तजुव्वणो जाओ महारहो । इक्कगेणावि सुहडलक्खेण सम जुद्ध काउ समत्थो । अन्नया तत्थ चोरेहिं गावीओ हरिआओ । ताओ सव्वाओ वि इक्केण **दढप्पहारिणा** चोरे निज्जिणिऊण वालिआओ । तओ त अइप्पयडपरक्कम पामिऊण बभणाइनयरलोएण तस्स तलारपय दिण्ण । निग्गहिआ तेण चोरचरडाइणो । जाओ सो कमेण महाराया

1 B सिरि । 2 P विद्यतेऽत्र 'पुरदुवारे' । 3 B सुरसुंदरो । 4 P विद्यतेऽत्र 'पुरे' । 5 B पत्थिती, P पच्छिती । 6 P कराविया । 7 P नास्ति 'च' । 8 P जणट्ठाण । 9 छिन्न । 10 P C कुंता° ।

तत्थेव नयरे । **जायव**वंसस्स वीयं तत्थ [1]उद्धरियं ति सबहुमाणं **चंदप्पह**सामिणो तेण भवणमुद्धरियं । एवं तइअजुगे उद्धारो । एवं अणेगे उद्धारा जुगतिगे वि तस्स संजाया ।

संपयं कलिकाले सिरि**संतिसूरी**हिं उद्धारो काराविओ[2] । पुव्विं किर **कल्लाणकडए** नयरे **परमड्डी** नाम राया रज्जं करेइ । तेण जिणभत्तेण[3] तत्थ पासाए चंदकंतमणिबिंबं सोऊण चिंतिअं—अहमेयं बिंबं नियघरे आणिऊण 5 देवयावसरे पूइस्सामि त्ति । तओ कहंचि तब्बइयरं नाउं **नासिक्क**नयरलोएण तंबमयसंपुडमज्झे तं बिंबं निक्खिविय तदुवरि लेवो दिन्नो । जाया लेवमई पडिमा । तओ राइणा[4] जिणमंदिरमागएण तं बिंबं न दिट्ठं । पुच्छिओ लोगो । तेण जहट्ठिए विन्नत्ते रण्णा चिंतियं—कहं एयं[5] लेवपडिमं भिंदित्ता मूलबिंबं कड्ढेमि त्ति । तओ नरिंदेण तस्स भवणस्स उद्धारं काउं चउवीसं गामा देवस्स[6] दिन्ना । जं तेसु दविणमुप्पज्जइ तेण देवाहिदेवो पुइज्जइ । तओ किंचिए वि कालंतरगए आसन्नवत्ति**तंबय**देवाहिट्ठियमहादुग्ग**वंभगिरि**ठिओ **वाइओ**[7] नाम महल्लयखत्तियजाई चरडो आसि । तेण सो पासाओ 10 पाडिओ । तं सोऊण **पल्लीवाल**वंसावयंससाहु**ईसरपुत्तमाणिक्क**पुत्तेण **नाऊ**कुक्खिसरोवररायहंसेण साहु**कुमार-सीहे**ण परमसावएण पासाओ पुण णवो कारिओ । सफलीकयं नायागयं नियवित्तं । उत्तारिओ अप्पा [8]भवसमुद्दाओ ।

एवमणेगउद्धारसारं **नासिक्क**महातित्थं अज्ज वि जत्तामहूसवकरणेण आराहिंति चाउद्दिसाओ आगंतूण संघा, पभाविंति कलिकालदप्पनिन्नासणं भयवओ सासणं ति ।

नासिक्कपुरस्स इमं कप्पं पोराणपरमतित्थस्स । वायंतपढंताणं संपज्जइ वंछिआ रिद्धी ॥ १ ॥

15 किंचि परसमइयमुहा ससमयपुराविउमुहाओ तह सोउं । सिरि**जिणपह**सूरीहिं लिहिओ **नासिक्क**पुरकप्पो ॥ २ ॥

॥ इति श्रीनासिक्यपुरकल्पः ॥

॥ ग्रं० ५९, अ० २७ ॥

---

1 P उव्वरियं । 2 P कारिओ । 3 P जणपत्तेण । 4 P रण्णा । 5 B C एगं । 6 P नास्ति । 7 P पाइओ । 8 P 'भव' नास्ति ।

२९. हरिकंखीनगरस्थितपार्श्वनाथकल्पः ।

पणमिअ **पासजिणेस हरिकंखीनयरचेइयनिविट्ठ** । तस्सेव कप्पमप्प भणामि निद्दलिअकलिदप्प ॥ १ ॥

गुज्जरधराए हरिकंखीनामो अभिरामो गामो अच्छइ । तत्थ जिणभवणे उत्तुंगसिहरे सन्निहिअपाडिहेरा **सिरिपासनाहपडिमा** विविहपूआहिं पूइज्जइ भविअजणेण तिकाल । अन्नया **चालुक्कवसपईवसिरिभीमदेवरज्जे तुरुक्कमंडलाओ** आगएण सनल्चाहणेण **अतनुवुक्काभिहाणेण**[1] सल्लारेण **अणहिलवाडयपट्टणगढ** भजित्ता 5 वलतेण दिट्ठ **हरिकंखीगामे** त चेईय । मज्झे पविसित्ता भग्गा **पासनाहपडिमा** । तओ गाम उवद्दवित्ता चलिओ सट्ठाण पइ सल्लारो । पुणो वसिओ गामो । समागया गुट्ठिअसावया । भगवत भग्गग निरुविता परुप्पर भणिउ पवत्ता— अहो ! भगवओ महामाहप्पस्सावि कह नाम भगो विहिओ चिलाएहिं । कत्थ पुण सा भगवओ तारिसी कला गय त्ति । तओ तेसिं पसुत्ताण सुमिणे आइट्ठमहिट्ठायगसुरेहिं, जहा—एयाए पडिमाए खडाणि सव्वाणि एगट्ठी काऊण गब्भहरे ठावित्ता, दुवार कवाडरुद्ध काउ, तालय दाऊण, छम्मास जाव पडिवालेयव्व । तओ पर दुवारमुग्घाडिय पडिमा निरि- 10 क्खियव्वा सपुण्णगोवगा । गोट्ठिएहि भोग काऊण तहेव कय, जाव पचमासा वोलीणा । छट्ठस्स पारभे ऊसुगी होऊण गोट्ठिएहि वारमुग्घाडिय । जाव दिट्ठा भगवओ सपुण्णगुवगकप्पा, केवल ठाणे ठाणे मसनिवहपूरिआ । तओ तत्तमवि- यारित्ता तेहिं आहूओ सुत्तधारो । तेण टकिआए मसा छिंदिउमारद्धा, जाव नीसरिअ मसेहितो रुहिर । तओ भीया गुट्ठिआ । पूआभोगाइएहिं पसाएउमारद्धा । तओ रत्तीए सुमिणे आइट्ठमहिट्ठायगेहिं, जहा—न सोहण कय तुम्हेहिं । जओ अपुण्णाए वि छम्मासीए दुआरमुग्घाडिय । पुणो वि टकिआ वाहाविआ । सपय पि ढकेह मह दुवार, जाव 15 चरमो मासो समप्पइ । तेहिं तहेव विहिए, छम्मासाणतर उग्घाडिअमि दारे दिट्ठा **पाससामिस्स** पडिमा निरुवद्दय- अवयवअगुवगा । केवल नहसुत्तीसु अगुट्ठे य मणाग तुच्छा । पहिट्ठा य गुट्ठिआ । पुव व पूइउ पवत्ता । आगच्छति चाउद्दिसाओ सघा । करिंति जत्तामहूसव । एव [2]चमुक्कारकारी माहप्पनिही **सिरिपासनाहो** ।

इय **हरिकंखीनयरे** परिट्ठिअस्सासमसेणतणयस्स । **सिरिजिणपहसूरीहि** कप्पो विहिओ समासेण ॥ १ ॥

॥ इति हरिकंखीनगरकृतवसतेः श्रीपार्श्वनाथस्य कल्पः ॥ 20

॥ ग्र० २५ ॥

---

1 B Pa °भिहाणसल्लारेण । 2 C चमुक्कार° ।

३०. कपर्दियक्षकल्पः ।

सिरिसत्तुंजयसिहरे परिट्ठिअं पणमिऊण **रिसह**जिणं । तस्सेवयस्स वुच्छं **कवड्डिजक्खस्स** कप्पमहं ॥ १ ॥

अत्थि **वालक्क**जणवए **पालित्ताणयं** नाम नयरं । तत्थ **कवड्डि**नामधिज्जो गाममहत्तरो । सो अ मज्जमं-
समहुजीवघायअलिअवयणपरधणहरणपररमणीरमणाइपावट्ठाणपसत्तचित्तो [1]**अणही**नामियाए अणुरूवचिट्ठिआए भज्जाए
5 सह विसए उवभुंजंतो गमेइ कालं । अन्नया तस्स मंचयट्ठियस्स साहुजुअलं[2] घरे पत्तं । तेणावि दिट्ठिपणामं काउं
विन्नत्तं जोडियकरेणं–भयवं ! किमित्थागमणकारणं तुम्हाणं ? । अम्ह घरे दुद्ध-दहि-घय-तक्काइ य पउरमत्थि; जेण कज्जं तं
आइसह । साहुहिं भणिअं–न अम्हे भिक्खट्ठमागया किंतु अम्ह गुरुणो सपरिवारा **सित्तुज्ज**जत्ताए आगया । संपयं
पुण वासारत्तो पत्तो;[3] साहूणं विहरिउं न कप्पइ । अओ तुम्ह पासे उवस्सयं मग्गेउमागया, जत्थ[4] सूरिणो सपरिवारा
चिट्ठंति । मयहरेण विन्नत्तं–दिण्णो मए उवस्सओ । आगच्छंतु सूरिणो, चिट्ठंतु अहासुहं । केवलं अम्हाणं पावनिरयाणं
10 धम्मोवएसो न दायव्वो त्ति । साहूहिं भणिअं–एवं होउ त्ति । तओ आगया गुरुणो । ठिया वासाचउम्मासिं । कुणंति
संतयं सज्झायं; सोसंति छट्ठट्ठमाईहिं नियतणुं । कमेण अइक्कंते वासारत्ते पारणए मुक्कलाविंति[5] मयहरं गुरुणो । सो
तेसिं सच्चपइण्णत्तणओ परितुट्ठो नियनयरसीमसंधिं जाव वोलाविउं पट्ठिओ । पत्ताए सीमसंधीए सूरीहिं जंपिअं–भो
मेहर ! तए अम्हाणं उवस्सयदाणाइणा बहुउवयारो कओ । अओ संपइ किंचि धम्मोवएसं देमो, तेण पच्चुवयारो
कओ हवइ । मेहरेण भणियं–नियमो न ताव मह निव्वहइ; किंचि मंतक्खरं उवइसह । तओ सूरिहिं अणुकंपाए पंच-
15 परमिट्ठिनवकारमहामंतो सिक्खाविओ जलजलणथंभणाइपभावो अ तस्स उववण्णिओ । पुणो गुरूहिं भणिअं–पइदिअहं
सित्तुज्जदिसाए होऊण तुमए पणामो कायव्वो । मेहरेण तह त्ति पडिवज्जिऊण गुरुणो पणमिऊण नियघरे आगयं ।
सूरिणो अन्नत्थ विहरिआ । कमेण तं पंचपरमिट्ठिमंतं जवंतो नियमं च निव्वाहिंतो कालं अइवाहेइ । अन्नया नियघ-
रिणीए कलहं काऊण गेहाओ नीसारिओ । आरुहिउं लग्गो **सित्तुज्ज**गिरिसिहरं । जाव मज्जभरियं भायणं करे
धरित्ता वडरुक्खच्छायाए मज्जपाणं करिउकामो उवविट्ठो, ताव गिज्झमुहकुहरट्ठियअहिगरलबिंदू मज्जभायणे[6] पडिओ
20 दिट्ठो । तं दट्ठूण विरत्तमणो मज्जं निअमेइ । भवविरत्तो अ अणसणं काऊण तक्खणं **आइजिणिंद**चलणकमलं
नवकारं च संभरंतो सुहज्झाणेण मरणं संपत्तो[7] । तित्थमाहप्पेणं नवक्कारप्पभावेणं च **कवड्डिजक्खो** उप्पन्नो[8] ।
ओहिनाणेण पुव्वभवं संभरिअ **आइजिणिंदं** अच्चेइ । सा य तस्स गेहिणी तव्वइयरं सुणित्ता[9] तत्थ आगंतूण अप्पाणं
निंदंती अणसणं करित्ता जिणिंदं सुमरंती कालधम्ममुवगया । जाया तस्सेव करिवरत्तेण वाहणं । **कवड्डिजक्खस्स**
चउसु भुअदंडेसु कमेण पासंकुस-दविणवासणिआ-बीयपूराइ चिट्ठंति । पुणो सो ओहिणा आभोएऊण पुव्वभवगुरूणं
25 पायमूले पत्तो । वंदित्ता जोडिअकरयलो विन्नवेइ–भयवं ! तुम्ह पसाएण एरिसा मए रिद्धी लद्धा[10] । संपयं मह किंचि
किच्चमाइसह । गुरुणा जंपियं–इत्थ तित्थे निच्चं तुमए ठाएयव्वं; तिकालं जुगाइनाहो अंचिअव्वो;[11] जत्तागयभविअजणाणं
मणवंछिअफलं पूरेयव्वं; सयलसंघस्स विग्घा अवहरिअव्वा । तओ गुरूणं पाए वंदिअ तह त्ति पडिवज्जिअ गओ जक्खा-
हिवो **विमलगिरि**सिहरं । करेइ जहा गुरूवइट्ठं ।

इअ **अंबादेवीए कवड्डिजक्खस्स** जक्खरायस्स । लिहिअमिणं कप्पजुगं **जिणपह**सूरीहिं वुड्ढवयणाओ ॥ १ ॥

30 ॥ इति कपर्दियक्षकल्पः ॥

॥ ग्रं० ४२ ॥

---

1 P अणिही° । 2 P °जुगलं । 3 A 'पत्तो' नास्ति । 4 P तत्थ । 5 C मुक्कलयाविंति । 6 A B मज्जपाणे ।
7 P पत्तो । 8 P समुप्पन्नो । 9 P मुणित्ता । 10 P रिद्धी मए पाविया । 11 P अंचियव्वो ।

३१. शुद्धदन्तीस्थितपार्श्वनाथकल्पः ।

पुव्विं किर **अवज्झाए** नयरीए **दसरह**नंदणो सिरि**पउमा**भिहाणो अट्ठमो बलदेवो परमसम्मद्दिट्ठी अणेगसो दिट्ठपच्चय अणेगविग्घावहारिणिं अणागयजिणिंदस्स सिरि**पासनाह**स्स रयणमइं पडिमं नियदेवयावसरे चिरकालं पूइत्था । कालक्कमेण पुव्वदेसे 'पउमागरा अपउमा' इच्चाइ नाएण धम्मपविर्त्तिं दूसमसमए तुच्छयरिं भाविण नाऊण अहिट्ठायगदेवयाहिं गयणमग्गेण **सत्तसयदेसे सुद्धदंतीनयरे** आणेऊण भूमिहरए धारिया सा । कालविसमत्तं 5 आणित्ता रयणमयत्तमवणेऊण पाहाणमई य सा पडिमा विहिया । बहुतरकालाइक्कमे **सोधंतिवालगच्छे विमलसूरिणो** नाम आयरिया अहेसिं । तेसिं रत्तीए सुमिणे आएसो जाओ । जहा–इत्थ सिरि**पास**पडिमा अमुगपएसे भूमिहरट्ठिआ चिट्ठइ । तं कड्ढेऊण पूआवेहि त्ति । तओ तेहिं सावयसंघस्स आइट्ठं । तेण भूमिहराओ बाहिं नीणिया सा पडिमा । चेईहरं च कारिअं । ठविया तत्थ । पूइउमाढत्ता तिकालं । कालवसेण उव्वसीभूआए नयरीए एगया अहिट्ठायगाण पमत्तत्तणेण तत्थ पसंगागयतुरुक्केहिं भगवओ **पास**नाहस्स पडिमा दिट्ठा । अणज्जचरिएहिं मत्थयं 10 उत्तारित्ता धरणीए पाडियं ते गया । तओ छालीए चारितेण तत्थागएण एगेण अयावालेण तं देवस्स मत्थयं भूमीए पडिअं दट्ठुं, बहु सोइत्ता, सामिसरीरस्स उवरिं चडावियं । लग्गं च सलसंधिरहियं । तं देवयाणुभावेण अज्ज वि तहेव चिट्ठइ पूआरूढं च ।

इय **शुद्धदंतिनयरट्ठियस्स सिरिपासनाह**देवस्स । सिरि**जिणपह**सूरीहिं जहासुअं वण्णिओ कप्पो ॥ १ ॥

॥ इति दन्तिदन्तच्छेदशुद्धयशसः श्रीशुद्धदन्तीपार्श्वनाथ[स्य] कल्पः ॥ 15

॥ ग्रं० १८ ॥

---

३२. अवन्तिदेशस्थ-अभिनन्दनदेवकल्पः ।

अवन्तिषु प्रसिद्धस्य[1] सिद्धस्येद्धतरायते । **अभिनन्दन**देवस्य कल्पं जल्पामि लेशतः ॥ १ ॥

इह निःशेषेक्ष्वाकुवंशशुक्रामणेः श्री**संवरराज**सूनोः **सिद्धार्था**कुक्षिसरसीराजहंसस्य कपिलाञ्छनस्य चामीकररुचेः स्वजन्मपवित्रितश्री**कोसलापुर**स्य सार्द्धधनुःशतत्रितयोच्छ्रायकायस्य चतुर्थतीर्थेश्वरस्य श्रीमद**भिनन्दनदेव**स्य 20 चैत्यं **मालवदेशान्तर्वर्तिमंगलपुर**प्रत्यासन्नायां महाटवीगतायां [2]**मेदपल्ल्यामासीत्** । तस्यां च [3]विचित्रपापकर्मनिर्माणकर्मठतायामजातनिर्वेदा मेदाः प्रतिवसन्ति स्म । अन्यदा तुच्छम्लेच्छसैन्येन तत्रापत्य भग्नं तज्जिनायतनम्, नवखण्डीकृतं च प्रमद्वरतयाऽधिष्ठायकानां कलिकालदुर्ललितानामकल्नीयतया च प्रतिहतप्रणतजनडिम्बमपि तच्चैत्यालङ्कारभूतं भगवतोऽ**भिनन्दनदेव**स्य बिम्बम् । केचित्तस्य खण्डानीत्याहुः । तानि च सकलानि सञ्जातमन्युखेदैर्मेदैः सम्मील्य एकत्र प्रदेशे धारितानि । एवं बहीयसि गतवत्यनेहसि हरहसितसित[4]गुणग्रामाभिरामो **धाराउग्रामा**दुपेत्य नित्यं 25 वणिगेकः सकलाङ्केको **वड्डजा**भिख्यस्तत्र [5]क्रयाक्रयिकारूपां वणिज्यामकार्षीत् । स च परमार्हतस्ततः प्रत्यहं गृहमागत्य देवमपूपुजत् । स ह्यकृतायां देवपूजायां न जातु बुभुजे । ततः पल्लीमुपेयिवानेकदाऽनेकदारुणकर्मभिर्मेदैरभिदधे स श्राद्धः –किमर्थमन्वहमेहिरेयाहिरां कुरुषे, अस्यामेव पल्ल्यां वणिगुचितभोज्यपूरणकल्पनल्प्या किं न भुङ्क्षे ? । ततश्च भणितं वणिजा–भो राजन्याः ! यावदहमर्हन्तं देवाधिदेवं त्रिभुवनकृतसेवं न पश्यामि न पूजयामि च तावन्न बल्माया प्रगल्भे । किरातैर्जगदे–यद्येवं देवं प्रति तव निश्चयस्तदा तुभ्यं दर्शयामस्त्वदभिमतं दैवतम् । वणिजा प्रोचे–तथास्तु । 30 ततस्तैस्तानि नवापि, सप्तापि वा, खण्डानि यथावयवन्यासं संयोज्य दर्शितं भगवतोऽ**भिनन्दन**स्य बिम्बम् । तच्च

---

1 C प्रसिद्ध°, नास्ति P । 2 C मेदपल्ल्या । 3 B चित्र° । 4 B Pa नास्ति 'सित' । 5 P क्रमक्र° ।

शुचितरमम्माणपाषाणघटितं विलोक्य प्रमुदितमुदितवासनातिशयेन तेन वणिग्वरेण ऋजुमनसा नमस्कृतस्तिरस्कृतदुरन्तदुरितो भगवान्, पूजितश्च पुष्पादिभिश्चैत्यवन्दना च विरचिता। ततः स तत्रैव भोजनमकुरुत गुरुतराभिग्रहः। इत्थं कारं प्रतिदिनं जिनपूजानिष्ठामनुतिष्ठति सति तस्मिन् वणिजि, अपरेद्युरुधदविवेकातिरेकवहुलैर्नाहलैस्तत्सात्किमपि द्रव्यं [1]धनायद्भिस्तद्बिम्बं शकलानि सुतकीकृत्य कचिदपि संगोप्य धृतम्। यावत्पूजावसरे तां प्रतिमामनालोक्य नासौ बुभुजे।
5 ततस्तेन विषण्णमनसा विहितमपानकमुपवासत्रयम्। अथ स मेदैरपृच्छि–किमर्थं नाश्नासि?। स यथातथमचकथत्। ततः किरातव्रातैरवादि–यदास्मभ्यं गुडं ददासि, तदा तुभ्यं दर्शयामस्तं देवम्। वणिजा बभणे–वितरिष्याम्यवश्यमिति। ततस्तैस्तत् सकलमपि शकलानां नवकं, सप्तकं वा, प्राग्वत् संयोज्य प्रकटीकृतम्, दृष्टं च तेन संयोज्यमानं तद्बिम्बम्। सुतरां विषादनिषादसंस्पर्शकलुषितहृदयः समजनि स श्राद्धधुरीणः। तदनु सात्त्विकतयाभिग्रहमग्रहीद्यावदिदं बिम्बमखण्डं न विलोकये तावन्नौदनमश्नीति। तस्येत्थमनुदिवसमुपवसतस्तद्बिम्बाधिष्ठायकैः स्वप्ने निजगदे–यदस्य बिम्बस्य नवखण्ड-
10 सन्धयश्चन्दनलेपेन पूरणीयाः, तत इदमखण्डतामेष्यतीति। प्रबुद्धेन तेन प्रातर्जातप्रमोदेन तथैव चक्रे। समपादि भगवानखण्डवपुः। सन्धयश्च मिलिताश्चन्दनानुलेपमात्रेण। क्षणमात्रेण भगवन्तं विशुद्धश्रद्धया सम्पूज्य भुक्तवान् पण्याजीवः पीवरां मुदमुद्वहन्, ददौ च गुडादि मेदेभ्यः। तदनन्तरं तेन वणिजा मणिजातमिव प्राप्य प्रहृष्टेन शून्यखेटके पिप्पलतरोस्तले[2] वेदिकाबन्धं विधाय[3] सा प्रतिमा मण्डिता। ततः प्रभृति श्रावकसङ्घाश्चातुर्वर्ण्यलोकाश्चतुर्दिगन्तादागत्य यात्रोत्सवं सूत्रयितुं प्रवृत्ताः। तत्र **अभयकीर्ति**-[4]**भानुकीर्ति-आंबा-राजकुला**स्तत्र मठपत्याचार्याश्चैत्यचिन्तां कुर्वते।

15 अथ **प्राग्वाट**वंशावतंसेन **थेहा**त्मजेन साधु**हालाके**न निरपत्येन पुत्रार्थिना विरचितमुपयाचितकम्–यदि मम सूनुर्जनिता तदात्र चैत्यं कारयिष्यामीति। क्रमेणाधिष्ठायकत्रिदशसान्निध्यतः पुत्रस्तस्योदपद्यत **कामदेवा**ख्यः। ततश्चैत्यमुच्चैस्तरशिखरमचीकरत्साधु**हालाकः**। क्रमात्साधु**भावडस्य** दुहितरं परिणायितः **कामदेवः**। पित्रापि **डाहा**ग्रामादाहूय **मलयसिंहा**दयो देवार्चकाः स्थापिताः। **महणिया**भिख्यो [5]मेदः स्वाङ्गुलीं भगवदुद्देशेन कृन्तवान्–किलाहमस्य भगवतोऽङ्गुलीवर्द्धितः सेवक इति। भगवद्विलेपनचन्दनलगनाच्च तस्याङ्गुलिः पुनर्नवीबभूव। तमति-
20 शयमतिशायिनं निशम्य **श्रीजयसिंहदेवो मालवेश्वरः** स्फुरद्भक्तिप्राग्भारभास्वरान्तःकरणः स्वामिनं स्वयमपूपुजत्। देवपूजार्थं च चतुर्विंशतिहलकृष्यां भूमिमदत्त मठपतिभ्यः। द्वादशहलवाह्यां चावनीं देवार्चकेभ्यः प्रददाव**वन्ति**पतिः। अद्यापि दिग्मण्डलव्यापिप्रभाववैभवो भगवान**भिनन्दनदेव**स्तत्र तथैव पूज्यमानोऽस्ति।

अभिनन्दनदेवस्य कल्प एष यथाश्रुतम्। अल्पीयान् रचयांचक्रे श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः॥ १॥

॥ इति सकलभूवलयनिवासिलोकाभिनन्दनस्य श्रीअभिनन्दनदेवस्य कल्पः[†] ॥

25 ॥ ग्रं० ५२, अ० १८ ॥

---

1 G समानयद्भिः। 2 P °तरोर्मूले। 3 P निधाय। 4 P नास्त्येतन्नाम। 5 B C मेदुः। † P प्रतौ 'इति अभिनन्दनदेवकल्पः।' इत्येव संक्षिप्तोल्लेखः।

३३. प्रतिष्ठानपुरकल्पः ।

श्रीसुव्रतजिनं नत्वा प्रतिष्ठां प्रापुष[1] क्षितौ । **प्रतिष्ठानपुरस्या**भिदध्म कल्प यथाश्रुतम् ॥ १ ॥

[0]इह **भारते** वर्षे दक्षिणखण्डे **महाराष्ट्र**देशावतंस श्रीमत्**प्रतिष्ठानं** नाम पत्तन विद्यते । तच्च निजभूत्याभिभूतपुरुहूतपुरमपि[0] कालान्तरेण क्षुल्लकग्राममायमजनिष्ट । तत्र चैकदा द्वौ वैदेशिकद्विजौ समागत्य[2] विधवया स्वस्रा साकं कस्यचित्कुम्भकारस्य शालाया तस्थिवासौ । कणवृत्तिं विधाय कणान् स्वमुपनीय तत्कृताहारपाकेन समयां कुरुत 5
स । अन्येद्यु सा तयोर्विप्रयो स्वसा जलाहरणाय **गोदावरीं** गता । तस्याश्च रूपमप्रतिरूप निरूप्य सारपवशोऽन्तर्ह्रदवासी **शेषो** नाम नागराजो ह्रदान्निर्गत्य विहितमनुष्यवपुस्तया सह बलादपि सम्भोगकेलिमकल्पयत् । भवितव्यताविलसितेन तस्या सप्तधातुरहितस्यापि तस्य दिव्यशक्त्या शुक्रपुद्गलसञ्चाराद्गर्भाधानमभवत् । स्वनामधेयं प्रकाश्य, व्यसनसङ्कटे मा स्मरेत्यभिधाय च, नागराज पाताललोकमगमत् । सा च स्वगृहं प्रत्यगच्छत् । व्रीडापीडितया तया[4] च स्वभ्रात्रे स्ववृत्तान्त न खलु न्यवेदयत् । कालक्रमेण सोदर्याभ्या गर्भलिङ्गानि वीक्ष्य सा जातगर्भेत्यलक्ष्यत[5] । ज्याय- 10
सस्तु मनसि शङ्का जाता, यदियं खलु कनीयसोपभुक्तेति । शङ्कनीयान्तराभावाद्यवीयसोऽपि चेतसि समजनि विकल्पो, नूनमेषा ज्यायसा सह विनष्टशीला–इत्येव मिथ कलुषिताशयौ विहाय तामेकाकिनीं पृथक् पृथक् देशान्तरमयासिष्टाम् । सापि प्रवर्धमानगर्भा परमन्दिरेषु कर्माणि निर्मिमाणा प्राणवृत्तिमकरोत् । क्रमेण पूर्णेऽनेहसि सर्वलक्षणलक्षिताङ्ग प्रासूत सूनुम् । स च क्रमाद् वपुषा गुणैश्च वर्धमान सवयोभिरमा रममाणो बालक्रीडया स्वय भूपतीभूय तेभ्यो वाहनानि करितुरगरथादीनि कृत्रिमाणि दत्तवानिति । सनोतेर्दानार्थत्वात् । लोकै **सातवाहन** इति व्यपदेश लम्भित । 15
सजनन्या पाल्यमान सुखमवास्थित ।

इतश्चोज्जयिन्यां श्रीविक्रमादित्यस्यावन्तिनरेशितु सदसि कश्चिन्नैमित्तिक **सातवाहनं प्रतिष्ठानपत्तने** भाविनं नरेन्द्रमादिक्षत् । अथैतस्यामेव पुर्यामेक स्थविरविप्र स्वायुरवसानमवसाय चतुर स्वतनयानाहूय प्रोक्तवान् । यथा–वत्स ! मयि [6]परेयुषि मदीयशय्योच्छीर्षकदक्षिणपदादारभ्य चतुर्णामपि पादानामधो वर्तमान निधिकलशचतुष्टय युष्माभिर्यथाज्येष्ठ विभज्य ग्राह्यम्, येन भवतां निर्वाह सपनीपद्यते । पुत्रैस्तु तथेत्यादेश स्वीचक्रे 20
पितु । तस्मिन्नुपरते तस्यौर्ध्वदेहिकं कृत्वा त्रयोदशेऽहनि शुच स्नात्वा यथायथ चतुरोऽपि निधिकलशास्ते जगृहिरे । यावदुद्घाट्य निभालयन्ति तावत्प्रथमस्य कुम्भे कनकम्, द्वैतीयकस्य कृष्णमृत्स्ना, तृतीयस्य बुसम्, तुरीयस्य चास्थीनि ददृशिरे । तदनु ज्यायसा साकं इतरे त्रयोऽपि विवदन्ते स्म–यदस्मभ्यमपि विभज्य कनक वितरेति । तस्मिंश्चावितरति सति तेऽवन्तिपतेर्धर्माधिकरणमुपास्थिषत । तत्रापि न तेषा वादनिर्णय समपादि । ततश्चत्वारोऽपि ते **महाराष्ट्र**जनपद[7]मुपानसिषु । **सातवाहनकुमार**स्तु कुलालमृदा हस्त्यश्वरथसुभटानन्वह नवनवान् विदधान कुलालशालायां 25
बालक्रीडादुर्ललित कलितस्थितिरनयत्समयम् । ते च द्विजतनुजा प्रतिष्ठानपत्तनमुपेत्य परितस्तस्यामेव चक्रजीवनशालाया तस्थिवास । **सातवाहनकुमार**स्तु ताननेक्ष्येङ्गिताकारकुशल प्रोवाच–भो विप्रा ! किं भवन्तो [8]वीक्षापन्ना इव वीक्ष्यन्ते । तैस्तु जगदे–जगदेकसुभग ! कथमिव वय चिन्ताचान्तचेतसस्त्वयाऽज्ञासिष्महि । कुमारेण बभणे–इङ्गितै किमिव नावगम्यते ! । तैरुक्तम्–युक्तमेतत्, परं भवत पुरो निवेदितेन चिन्ताहेतुना [9]किं स्याद् ? । बाल खलु भवान् । बाल आलपद्–यदि पर जातु मत्तोऽपि साध्यं व सिध्यति । तन्निवेद्यता स चिन्ताहेतु । ततस्ते तद्व- 30
चनैश्चित्रीकृतहृदया सकलमपि स्वसम्बन्धं निधिनिरयणादि मालवेशपरिषद्यपि विवादानिर्णयान्त तस्मै निवेदितवन्त । कुमारस्तु स्मितविच्छुरिताधरोऽवादीत्–भो विप्रा ! अहं यौष्माकं झगटकं निर्णयामि, श्रूयतामवहितै । यस्य तावद्धेम्ना कनककलश प्रददे स तेनैव निर्वृतोऽस्तु । यस्य कलशे कृष्णमृत्स्ना निरगात्स क्षेत्रकेदारादीन् गृह्णातु । यस्य तु बुस स

1 B प्रापुष । 0 एतदन्तर्गता पङ्क्ति पतिता C आदर्शे । 2 B नास्त्येतत्पदम् । 3 B समागम्य । 4 C पीडितया ।
5 B लक्ष्यते । 6 B Pa पुरेयुषि । 7 Pa °पदे । 8 B Pa वीक्ष्यापन्ना । 9 B विना हेतुना ।

कोष्ठागारगतधान्यानि सर्वाण्यपि स्वीकुरुताम् । यस्य चास्तीनि निरगुः सोऽश्वगोमहिषीवृषभदासीदासादिकमुपादद्तामिति युष्मज्जनकस्याशयः। इति क्षीरकण्ठोक्तं श्रुत्वा सूत्रकण्ठाश्छिन्नविवादास्तद्वचनं प्रतिश्रुत्य तमनुज्ञाप्य प्रत्याययुः स्वनगरीम् । प्रथिता सा तद्विवादनिर्णयकथा पुर्याम् । राज्ञाप्याकार्य पर्यनुयुक्ताः–किं नु भो ! भवतां वादनिर्णयो जातः ? । तैरुक्तम्– आम स्वामिन् ! । केन निर्णीतः ?–इति नृपेणोदिते **सातवाहन**स्वरूपं सर्वमवितथमचकथन् । तदाकर्ण्य, 5 तस्य शिशोरपि बुद्धिवैभवं विभाव्य, प्रागुक्तं दैवज्ञेन तस्य **प्रतिष्ठाने** राज्यं भविष्यदनुस्मृत्य, तं स्वप्रतिपन्थिनमाकलय्य क्षुभितमनास्तन्मारणौपयिकमचिन्तयच्चिरं नरेश्वरः । अभिमरादिप्रयोगैर्मारिते चास्मिन्नयशः-क्षात्रवृत्तिक्षती भवेतामिति विचार्य सन्नद्धचतुरङ्गचमूसमूहोऽवन्तिपतिः प्रस्थाय **प्रतिष्ठानपत्तनं** यथेष्टमवेष्टयत् । तदवलोक्य ते ग्राम्यास्त्रस्ताश्चिन्तयन्ति स्म । कस्योपर्ययमेतावानाटोपः सकोपस्य **मालवेशस्य** ? । न तावदत्र राजा राजन्यो वा वीरस्ताद्दग्दुर्गादि वेति चिन्तयत्सु तेषु **मालवेश**प्रहितो दूतः समेत्य **सातवाहन**मवोचत्–भो कुमारक ! तुभ्यं नृपः क्रुद्धः प्रातस्त्वां मार- 10 यिष्यत्यतो युद्धाद्युपायचिन्तनावहितेन भवता भाव्यमिति । स च श्रुत्वापि दूतोक्तीर्निर्भयं निर्भरं[1] क्रीडन्नेवास्ते । अत्रान्तरे विदितपरमार्थौ तौ तन्मातुलावितरेतरं प्रति विगतदुर्विकल्पौ पुनः **प्रतिष्ठान**मागतौ परचक्रं दृष्ट्वा भगिनीं प्रोचतुः–हे स्वसर्येन दिवौकसा तवायं तनयो दत्तस्तमेव स्मर, यथा स एवास्य साहायकं विधत्ते । सापि तद्वचसा प्राचीनं नागपतेर्वचः स्मृत्वा शिरसि निवेशितघटा गोदावर्यां नागहृदं गत्वा, स्नात्वा च, तमेव नागनायकमाराधयत् । तत्क्षणान्नागराजः प्रत्यक्षीभूय वाचमुवाच ब्राह्मणीं–को हेतुरहमनुस्मृतस्त्वया ? । तया च प्रणम्य यथास्थितमभिहिते, बभाषे 15 शेषराजः–मयि प्रतपति कस्तव तनयमभिभवितुं क्षमः ? इत्युदीर्य तद् घटमादाय हृदान्तर्निमज्ज्य पीयूषकुण्डात् सुधया घटं प्रपूर्यानीय च तस्यै दत्तवान् । गदितवांश्च–अनेनामृतेन **सातवाहन**कृतमृन्मयाश्वरथगजपदातिजातमभिषिञ्चेः, यथा तत्सजीवं भूत्वा परबलं भनक्ति । त्वत्पुत्रं च **प्रतिष्ठान**पत्तनराज्ये अयमेव पीयूषघटोऽभिषेक्ष्यति । प्रस्तावे पुनः स्मरणीयोऽहम्–इत्युक्त्वा स्वास्पदमगमद्भुजङ्गपुङ्गवः । सापि सुधाघटमादाय स्वसद्मोपेत्य, तेन तन्मृन्मयं[2] सैन्यमदैन्यमभ्युक्षामास । प्रातर्दिव्यानुभावतस्सचेतनीभूय तत्सैन्यं सम्मुखं गत्वा युयुधे परानीकिन्या सार्द्धम् । तया **सातवाहन**- 20 पृतनया भग्नमवन्तीशितुर्बलम् । **विक्रमनृपति**रपि पलाय्य ययाववन्तीम् । तदनु **सातवाहनो** राज्येऽभिषिक्तः । **प्रतिष्ठानं** च पुनर्निजविभूतिपरिभूतवस्वोकसाराभिमानं धवलगृहदेवगृहहट्टपंक्तिराजपथप्राकारपरिखादिभिः सुनिविष्टमजनिष्ट पत्तनम् । **सातवाहनो**ऽपि क्रमेण **दक्षिणापथ**मनृणं विधाय **तापी**तीरपर्यन्तं **चोत्तरापथं** साधयित्वा स्वकीयसंवत्सरं प्रावीवृतत् । जैनश्च समजनि । अचीकरच्च जनितजननयनशैत्यानि जिनचैत्यानि । पञ्चाशद्वीरा अपि प्रत्येकं स्वस्वनामाङ्कितान्यन्तर्नगरं कारयांबभूवुर्जिनभवनानि ।

25

॥ इति प्रतिष्ठानपत्तनकल्पः ॥

॥ ग्रं० ४७ ॥

---

1 B नास्ति पदमेतत् । 2 Pa मृन्मय° ।

३४. प्रतिष्ठानपुराधिपतिसातवाहननृपचरित्रम्।

अथ प्रसङ्गतः परसमयलोकप्रसिद्धं **सातवाहन**चरित्रशेषमपि किञ्चिदुच्यते–

श्री**सातवाहने** क्षितिं रक्षति पञ्चाशद्वीराः **प्रतिष्ठान**नगरान्तस्तदा वसन्ति स्म। पञ्चाशच्च नगराद्बहिः। इतश्च तत्रैव पुरे एकस्य द्विजस्य सूनुर्दर्पोद्धुरः **शूद्रका**ख्यः समजनि। स च युद्धश्रमं दर्पात्कुर्वाणः पित्रा स्वकुलानुचितमिदमिति प्रतिषिद्धो नास्थात्[1]। अन्येद्युः **सातवाहन**नृपतिर्चापला-खुंदलादि-पुरान्तर्गत-वीरपञ्चाशदन्वितो द्विप-5 श्चागदस्प्रमाणा शिला श्रमार्थमुत्पाटयन् दृष्टः पित्रा समं गच्छता द्वादशाब्ददेशीयेन शूद्रकेण। केनापि वीरेणाङ्गुलचतुष्टयम्, केनचित्तदङ्गुलान्यष्टौ [वा] शिला भूमित उत्पाटिता। महीजानिना त्वाजानु नीता। इत्यवलोक्य **शूद्रकः** स्फूर्जदूर्जितमवादीत्–भो भो! भवत्सु मध्ये किं शिलामिमामा मस्तकं न कश्चिदुद्धर्तुमीष्टे!। तेऽपि सेर्ष्यमवादिषुर्यथा–त्वमेवोत्पाटय, यदि समर्थमन्योऽसि। शूद्रकस्तदाकर्ण्य तां शिलां वियति तथोच्छाल्याचकार यथा सा दूरमूर्ध्वमगमत्। पुनरवादि शूद्रकेण–यो भवत्स्वरमृष्णु स खल्विमां निपतन्तीं स्वभ्रातु[2]। **सातवाहना**दिवीरैर्भयोद्भ्रान्तलोचनैरूचे 10 स एव सानुनयम्, यथा–भो महाबल[1] रक्ष रक्षास्माकीनान् प्राणानिति। स पुनस्तां पतयालुं तथा मुष्टिप्रहारेण महतवान् यथा सा त्रिखण्डतामन्वभूत्। तत्रैकं शकलं योजनत्रयोपरि न्यपतत्। द्वैतीयीकं च खण्डं नागह्रदे[3]। तृतीयं तु प्रतोलीद्वारे चतुष्पथमध्ये निपतितमद्यापि तथैव वीक्ष्यमाणमास्ते जनैः। तद्बलविलसित[4]चमत्कृतचेताः क्षोणिनेता **शूद्रकं** सुतरां सत्कृत्य पुरारक्षकमकरोत्। शस्त्रान्तराणि प्रतिषिध्य 'दण्डधारस्त्वं' दण्डमेवायुधमन्वज्ञासीत्। [स] च **शूद्रको** बहिश्चरान् वीरान् पुरमध्ये प्रवेष्टुमपि न ददाति स्म, अनर्थनिवारणार्थम्। अन्यदा स्वसौधस्योपरितले शयानः 15 **सातवाहनः** क्षितिपतिर्मध्यरात्रे शरीरचिन्तार्थमुत्थितः पुराद्बहिः परिसरे करुणं रुदितमाकर्ण्य, तत्प्रवृत्तिमुपलब्धुं कृपाणपाणिः परदुःखदुःखितहृदयतया गृहान्निरगमत्। अन्तराले **शूद्रके**णावलोक्य ससम्भ्रमं प्रणतः, पृष्टश्च महानिशायां निर्गमनकारणम्। धरणीपतिरवदद्–यदयं बहिः पुरपरिसरे करुणक्रन्दितध्वनिः श्रवणाध्वनि पथिकीभावमनुभवन्नस्ति, तत्कारणप्रवृत्तिं ज्ञातुं प्रवर्तमानोऽस्मीति राज्ञोक्ते, **शूद्रको** व्यजिज्ञपत्–देव! प्रतीक्षपादैः स्वसौधालङ्करणाय पादोऽवधार्यतामहमेव तत्प्रवृत्तिमानेष्यामीत्यभिधाय वसुधानायकं व्यावर्त्य स्वयं रुदितध्वन्यनुसारेण पुराद्बहिर्गन्तु 20 प्रवृत्तः। पुरस्ताद्व्रजन् दत्तकर्णो **गोदावर्याः** स्रोतसि कञ्चन रुदन्तमश्रौषीत्। ततः परिकरबन्धं विधाय **शूद्रकः** तीर्त्वा यावत्सरितो मध्यं प्रयाति तावत्तत्र पूरप्लाव्यमानं नरमेकं रुदन्तं वीक्ष्य समापे–भो! कस्त्वं किमर्थं च रोदिषीत्यभिहितः स नितरामरुदत्। अतिनिर्बन्धेन पुनः पृष्टः स्पष्टमाचष्ट–भो साहसिकशिरोमणे! मामितो निष्काश्य भूपतेः समीपं प्रापय, येन तत्र स्ववृत्तमाचक्षे–इत्युक्तः **शूद्रक**स्तमुत्पाटयितुं यावद्यतिष्ट, तावन्नोत्पटति स्म सः। ततोऽपस्तात् केनापि यादसा मा विधृतोऽयं भवेदित्याशङ्कन्, स च कृपाणिकामधो वाहयामास **शूद्रकः**। तदनु शिरोमात्रमेव 25 शूद्रकस्योद्धर्तुं करतलमारोहत्पुनया तच्छिरः प्रक्षरद्रुधिरधारमवलोक्य **शूद्रको** विषादमापेदानश्चिन्तयति स्म–धिग् मामसदर्तारं मद्तारम्, शरणागतघातुकं चेत्यात्मानं निन्दन् वज्राहत इव क्षणं[5] मूर्च्छितस्तस्थौ। तदनु समधिगतचैतन्यश्चिरमचिन्तयत्–कथमिदं तत् स्वदुश्चेष्टितमवनिपतये निवेदयिष्यामीति लज्जितमनास्तत्रैव काष्ठचितां विरचय्य तत्र ज्वलनं प्रज्वाल्य तच्छिरः सह गृहीत्वा यावदुदर्चिषि प्रवेष्टुं प्रववृते, तावत्तेन मस्तकेन निजगदे–भो महापुरुष! किमर्थमित्थं स्वपरघातकं[6] भवता? यावदहं शिरोमात्रमेवास्मि सैंहिकेयवत्सदा। तद्वृथा मा विषीद, प्रसीद मां राज्ञः समीप-30 मुपनय इति तद्वचनं निशम्य चाटुवचनैः, मामित्यवनिति महष्टः **शूद्रक**स्तच्छिरः पटांशुकवेष्टितं निधाय प्रातः **सातवाहन**मुपागमत्। अपृच्छदथ पृथिवीनाथः–**शूद्रक**! किमिदम्? सोऽप्यवोचत्–देव! सोऽयं यस्य क्रन्दितध्वनिर्दिवेन रात्रौ शुश्रुवे। इत्युक्त्वा तस्य प्राङ्मुखं इव सकलमाचिख्यत्। पुनः राजा तमेव मस्तकमाभाषीद्–भो!

---

1 Pa नास्थात्। 2 B स्वभ्रातु। 3 B °ह्रदे। 4 C विलसित। 5 Pa नास्ति पदद्वयमिदम्। 6 B स्वपर।

कस्त्वं किमर्थं चात्र भवदागमनमिति ?। तेनाभिदधे–महाराज! भवतः कीर्तिमुभाकर्णि समाकर्ण्य करुणरुदितव्याजेनात्मानं
ज्ञापयित्वा त्वामहमुपागमम्, दृष्टश्च भवान्, कृतार्थे मेऽद्य चक्षुषी जाते इति । कां कलां सम्यगवगच्छसि ?–इति
राज्ञा पृष्टे, तेनोक्तम्–देव! गीतकलां वेद्मि। ततो राज्ञ आज्ञया निरवगीतं गीतं गातुं[1] प्रचक्रमे । क्रमेण तद्गान-
कलया मोहिता सकलापि नृपतिप्रमुखा परिषत्। स च **मायासुर**नामकोऽसुरस्तां मायां निर्माय महीपतेर्महिषीं
5 महनीयरूपधेयामपजिहीर्षुरुपागतो बभूव। न च विदितचरमेतत्कस्यापि। लोकैस्तु शीर्षमात्रदर्शनात्तस्य प्राकृतभाषया
सीपुला इति व्यपदेशः कृतः। तदनु प्रतिदिनं तस्मिन्नतितुंबरो मधुरतरं गायति सति श्रुतं तत्स्वरूपं महादेव्या।
दासीमुखेन भूपं विज्ञाप्य तच्छीर्षकं स्वान्तिकमानायितम् । प्रत्यहं तमजीगपत् राज्ञी। दिनान्तरे रात्रौ प्रस्तावमासाद्य
सद्य एवापहरति स तां **मायासुरः**। आरोपयामास च घण्टाविलम्बिनामनि स्वविमाने। राज्ञी च करुणं क्रन्दितुमारे-
भे–हाऽहं केनाप्यपह्रिये!। अस्ति कोऽपि वीरः †पृथिव्यां यो मां मोचयति । तच्च **खूंदला**भिख्येन वीरेण श्रुत्वा
10 धावित्वा व्योमन्युत्सृत्य च तद्विमानस्य घण्टा पाणिना गाढमधार्यत। ततस्तत्त्राणेनावष्टब्धं विमानं पुरस्तान्न प्राचालीत्।
तदनु चिन्तितं **मायासुरे**ण–किमर्थं विमानमेतन्न सर्पति ? । यावदद्राक्षीत्तं वीरं हस्तावलम्बितघण्टं ततः† खड्गेन
तद्धस्तमच्छिदत्। पतितः पृथिव्यां वीरः। स चासुरः पुरः प्राचलत् । ततो विदितदेव्यपहारवृत्तान्तः क्षितिकान्तः
पञ्चाशतमेकोनां वीरानादिक्षत्–यत्पट्टदेव्याः शुद्धिः क्रियताम्, केनेयमपहृतेति। प्रागपि **शूद्रकं** मत्यसूयापराः ते प्रोचुः–
महाराज! **शूद्रक** एव जानीते अनेनैव 'तच्छीर्षकमानीतं तेनैव' च देवी जह्रे। ततो नृपतिस्तस्मै कुपितः शूलारोपण-
15 माज्ञापयत्। तदनु देशरीतिवशात्तं रक्तचन्दनानुलिप्ताङ्गं शकटे शाययित्वा, तेन सह गाढं बध्वा, शूलाग्रे यावद्राजपु-
रुषाश्चेलुस्तावत्पञ्चाशदपि वीरास्सम्भूय **शूद्रक**मवोचन्–भो महावीर! किमर्थमेवं रण्डेव म्रियते भवान्! । 'अशुभस्य
कालहरण'मिति न्यायात् मार्गय नरेन्द्रात्कतिपयदिनावधिम्, शोधय सर्वत्र देव्यपहारिणम्[3], किमकाण्ड एव स्वकीयां
वीरत्वकीर्तिमपनयसि । तेनोक्तम्–गम्यतां तर्हि उपराजम्, विज्ञाप्यतामेतमर्थं राजा । तैरपि तथाकृते प्रत्यानायितः
शूद्रकः क्षितीन्द्रेण। तेनापि स्वमुखेन विज्ञप्तिः कृता–महाराज! दीयतामवधिर्येन विचिनोमि प्रतिदिशं देवीं तदप-
20 हारिणं च[4] । राज्ञा दिनदशकमवधिर्दत्तः। **शूद्रक**गृहे च सारमेयद्वयमासीत्तत्सहचारि। नृपतिरवददेतद्भषणयुगलं प्रति-
भूप्रायमस्मत्पार्श्वे मुञ्च, स्वयं पुनर्भवान् देव्युदन्तोपलब्धये हिण्डतां महीमण्डलम्। सोऽप्यादेशः प्रमाणमित्युदीर्यवीर्यवान्
प्रतस्थे। भूचक्रशक्रस्तत्कौलेयकद्वन्द्वं शृङ्खलाबद्धं स्वशय्यापादयोरबध्नात्। **शूद्रक**स्तु परितः पर्यट्यमानोऽपि यावत्प्रस्तु-
तार्थस्य वार्तामात्रमपि क्वापि नोपलेभे, तावदचिन्तयद्–अहो! ममेदमपयशः प्रादुरभूद्यदयं स्वामिद्रोही मध्ये भूत्वा देवी-
मुपाजीहरदिति। न च क्वापि शुद्धिर्लब्धा तस्यास्तस्मान्मरणमेव मम शरणमिति विमृश्य दारुभिश्चितामरचयत्। ज्वलनं
25 चाज्वालयद्यावन्मध्ये प्राविशत्तावत्ताभ्यां शुनकाभ्यां देवताधिष्ठिताभ्यां ज्ञातं यदस्मदधिपतिर्निधनं धनायन्नस्तीति। ततो
दैवतशक्त्या शृङ्खलानि भंक्त्वा निर्विलम्बं गतौ तौ तत्र यत्रासीच्छूद्रकरचिता चिता। दशनैः केशानाकृष्य **शूद्रकं** बहि-
र्निष्कासयामासतुः। तेनाप्यकस्मात्तौ विलोक्य विस्मितमनसा निजगदे–रे पापीयांसौ! किमेतत्कृतं भवद्भ्यामशुभवद्-
भ्याम्। राज्ञो मनसि विश्वासनिरासो भविष्यति, यत्प्रतिभुवावपि तेनात्मना सह नीताविति। भषणाभ्यां बभाषे–धीरो
भव, अस्मद्दर्शितां दिशमनुसर, सरभसं का चिता तवेत्यभिधाय पुरोभूय प्रस्थितौ तेन सार्द्धम्। क्रमात्प्राप्तौ **कोल्ला-**
30 **पुरम्**। तत्रस्थं **महालक्ष्मी**देव्या भवनं प्रविष्टौ। तत्र **शूद्रक**स्तां देवीमभ्यर्च्य कुशसंस्तरासीनस्त्रिरात्रमुपावसत्। तदनु
प्रत्यक्षीभूय भगवती **महालक्ष्मी**स्तमवोचत्–वत्स! किं मृगयसे ?। **शूद्रकेणो**क्तम्–स्वामिनि! **सातवाहन**महीं-
पालमहिष्याः शुद्धिं वद; क्वास्ते, केनेयमपहृता ?। श्रीदेव्योदितम्–सर्वान् यक्षराक्षसभूतादिदेवगणान् सम्मील्य तत्प्रवृत्ति-
महं निवेदयिष्यामि। परं तेषां कृते त्वया वल्युपहारादिप्रगुणीकृत्य धार्यम्। यावच्च ते कणेहत्य वल्याद्युपभुज्य प्रीता
न भवेयुस्तावत्त्वया विघ्ना रक्षणीयाः। ततः **शूद्रक**स्तेषां देवतानां तर्पणार्थं कुण्डं विरचय्य होममारेभे। मिलिताः

---

1 B निरवगानगातुं। † एतदन्तर्गताः पंक्तयः पतिताः B आदर्शे। 2 एते शब्दा अनुपलभ्याः C प्रतौ। 3 Pa °परिहारेणं। 4 B °पहारिणीं वा।

सकलदैवतगणा, स्वां स्वां भुक्तिमभिमुखेन जगृहे । तावत्तद्धोमधूमः प्रसृमरः प्राप तत्स्थानं यत्र **मायासुरो**ऽभूत् । तेनापि परिज्ञाततल्लक्ष्म्यादिष्ट**शूद्रक**होमस्वरूपेण प्रेषितः स्वभ्राता **कोल्लासुर**नामा होमप्रत्यूहकरणाय । समागतश्च वियति **कोल्लासुरः** स्वसेनया समम् । दृष्टश्च दैवतगणैश्चकितं च तैः । ततो भषणौ दिव्यशक्त्या युयुधाते दैत्यैः सह । क्रमान्मारितौ च तौ दैत्यैः । ततः **शूद्रकः** स्वयं योद्धुं प्रावृतत् । क्रमेण दण्डव्यतिरिक्तप्रहरणान्तराभावाद्दण्डेनैव बहून्निधनं नीतवानसुरान् । ततो दक्षिणबाहुं दैत्यास्तस्य[1] चिच्छिदुः । पुनर्वामदोष्णैव दण्डयुद्धमकरोत् । तस्मिन्नपि छिन्ने दक्षिणाङ्घ्रिणोपात्तदण्डो योद्धुं लग्नः । तत्रापि दैत्यैर्लूने वामपदात्तयष्टिरयुध्यत तमपि क्रमादच्छिदन्नसुराः । ततो दन्तैर्दण्डमादाय युयुधे । ततस्तैर्मस्तकमच्छेदि । अथाकण्ठतृप्ता देवगणास्तं **शूद्रकं** भूमिपतितशिरस्कं दृष्ट्वा–अहो ! असद्भुक्तिदातुर्वराकस्यास्य किं जातमिति परितप्य योद्धुं प्रवृत्ताः **कोल्लासुर**ममारयन् । ततः **श्रीदेव्या** अमृतेनाभिषिच्य पुनरनुसंहिताङ्गश्चक्रे **शूद्रकः**, प्रत्युज्जीवितश्च । सारमेयावपि पुनर्जीवितौ । देवी च प्रसन्ना सती तस्मै खड्गरत्नं प्रददौ[2] । अनेन त्वमजय्यो भविष्यसीति च वरं व्यतरत् । ततो महालक्ष्म्यादिदैवतगणैः सह **सातवाहन**देव्याः शुद्ध्यर्थं समग्रमपि भुवनं परिभ्राम्य प्राप्तः **शूद्रको** महार्णवम् । तत्र चैकं वटतरुमुच्चैस्तरं निरीक्ष्य विश्रामार्थमारुरोह । यावत्पश्यति तच्छाखायां लम्बमानमधःशिरसं काष्ठकीलिकाप्रवेशितोर्ध्वपादं पुरुषमेकम् । स च प्रसारितजिह्वोऽन्तर्जलं विचरतो जलचरादीन् भक्षयन् वीक्षितस्तेन । पृष्टश्च **शूद्रकेण**–कस्त्वम् ?, किमर्थं चेत्थं लम्बितोऽसि ? । तेनोक्तम्–अहं **मायासुरस्य** कनिष्ठो भ्राता स च मदनोन्मदिष्णुर्मदग्रजः । **प्रतिष्ठाना**धिपतेः **सातवाहनस्य** महिषीं रिरंसुरपाहरत्**सीतामिव दशवदनः** । सा च पतिव्रता तन्नेच्छति । तदनु मया प्रोक्तोऽग्रजन्मा–न युज्यते परदारापहरणं तव ।

विक्रमाक्रान्तविश्वोऽपि परस्त्रीषु रिरंसया । कृत्वा कुलक्षयं प्राप नरकं **दशकन्धरः** ॥ १ ॥

इत्यादि वाग्भिर्विद्धः क्रुद्धो मह्यं **मायासुरो**ऽस्यां वटशाखायां टङ्कित्वा मामित्थं व्यडम्बयत् । अहं च प्रसारितरसनः समुद्रान्तः सञ्चरन्तो जलचरादीनभ्यवहरन् प्राणयात्रां करोमि । इति श्रुत्वा **शूद्रको**ऽप्यभाणीत्–अहं तस्यैव महीभृतो भृत्यः **शूद्रक**नामा । तामेव देवीमन्वेष्टुमागतोऽस्मि । तेनोक्तम्–एवं चेत्तर्हि मां मोचयत, यथाहं सह भूत्वा तं दर्शयामि, तां च देवीम् । तेन स्वस्थानं परितो जातुषं दुर्गं कारितमस्ति । तच्च निरन्तरं प्रज्वलदेवास्ति ततस्तदुल्लङ्घ्य, मध्ये प्रविश्य, तं निपात्य, देवी प्रत्याहर्तव्या–इत्याकर्ण्य **शूद्रक**स्तेन कृपाणेन तत्काष्ठबन्धनानि छित्त्वा तं पुरोधाय, दैवतगणपरिवृतः प्रस्थाय, प्राकारमुल्लङ्घ्य, तत्स्थानान्तः प्राविशत् । दैवतगणाश्चावलोक्य **मायासुरः** स्वसैन्यं युद्धाय प्रजिघाय । तस्मिन्पञ्चतामञ्चिते स्वयं योद्धुमुपतस्थे । ततः क्रमेण **शूद्रक**स्तेनासिना तमवधीत् । ततो घण्टावलम्बिविमानमारोप्य देवीं दैवतगणैः सत्रा प्रस्थितः **प्रतिष्ठानं** प्रति ।

इतश्च दशमं दिनमवधीकृतमागतमनगत्य जगत्यधिपतिर्ध्यातवान्–अहो ! न मम महादेवी, न च **शूद्रक**वीरो, नापि च तौ रसनालिहौ । सर्वं मयैव कुबुद्धिना विनाशितमिति शोचयन् सपरिच्छद एव प्राणत्यागं चिकीर्षुः पुराद्बहिश्चितामरचयच्चन्दनादिदारुभिः । यावत्क्षणादाशुशुक्षणिं क्षेप्स्यति परिजनश्चितौ तावद्वर्द्धापक एको देवगणमध्यात्समायासीद्व्यजिज्ञपच्च समश्रयम्–देव ! दिष्ट्या वर्द्धसे महादेव्यागमनेन । तन्निशम्य श्रवणरम्यं नरेश्वरः स्फुरदानन्दकन्दलितहृदय ऊर्ध्वमवलोकयन्नालुलोके नभसि दैवतगणं **शूद्रकं** च । अयमपि विमानादवतीर्य राज्ञः पदोऽपतत्, महादेवी च । अभिननन्द सानन्दं मेदिनीन्द्रः **शूद्रकम्**, राज्यार्धं च तस्मै प्रादित । सोत्सवमन्तर्नगरं प्रविश्य श्रुत**शूद्रक**चारुचरितः समं महिष्या राज्यश्रियमुपबुभुजे महाभुजः ।

इत्यकारं नानाविधानान्यवदानानि **हाल**क्षितिपालस्य, कियन्ति नाम व्यावर्णयितुं पार्यन्ते । स्थापिता चानेन **गोदावरी**सरित्तीरे महालक्ष्मीः । प्रासादे अन्यान्यपि यथार्हं दैवतानि निवेशितानि तत्तत्स्थानेषु । राज्यं प्राज्यं चिरं

1 'तस्य' नास्ति Pa । 2 B ददौ ।

भुञ्जाने जगतीजानावन्यदा कश्चिद्दारुभारहारकः कस्यचिद्वणिजस्य वीथौ प्रत्यहं चारूणि दारूण्याहृत्य विक्रीणीते स । दिनान्तरे च तस्मिन्ननुपेयुषि वणिजा तद्भगिनी पृष्टा–किमर्थं भवद्भ्राताऽद्य नागतो मद्वीथ्याम् ? । तया बभाणे–श्रेष्ठिश्रेष्ठ ! मत्सौदर्यः स्वर्गिषु सम्प्रति प्रति[1]वसति । वणिगभाणत्कथमिव ? । साऽवदत्–कङ्कणबन्धादारभ्य विवाहप्रकरणे दिनचतुष्टयं नरः स्वर्गिष्विव वसन्तमात्मानं मन्यते । तत्तदुत्सवालोकनकुतूहलात् । तच्चाकर्ण्य राजाप्यचिन्तयत्–अहो !
5 अहं किं न स्वर्गिषु वसामि चतुर्षु दिनेष्वनवरतं विवाहोत्सवमय एव स्थास्यामीति विचार्य चातुर्वर्ण्ये यां यां कन्यां युवतिं वा रूपशालिनीं पश्यति शृणोति स वा, तां तां सोत्सवं पर्यणैषीत् । एवं च भूयस्यनेहसि गच्छति लोकैश्चिन्तितम्–अहो ! कथं भान्यमनपत्यैरेव सर्ववर्णैः स्थेयम् । सर्वकन्यास्तावद्राजैव विवोढा । योषिदभावे च कुतः सन्ततिरिति । एवं विषण्णेषु लोकेषु **विवाहवाटिका**नामनि ग्रामे वास्तव्य एको द्विजः **पीठजादेवी**माराध्य व्यजिज्ञपद्–भगवति ! कथं विवाहकर्मास्मदपत्यानां भावीति ? । देव्योक्तम्–भो वाडव ! त्वद्भवनेऽहमात्मानं कन्यारूपं कृत्वावतरिष्यामि । यदा मां
10 राजा प्रार्थयते तदाहं तस्मै देया; शेषमहं भलिष्ये । तथैव राजा तां रूपवतीं श्रुत्वा विप्रमयाचत । सोऽपि जगाद–दत्ता मया, परं महाराज ! तत्रागत्य मत्कन्योद्वोढव्या । प्रतिपन्नं राज्ञा । गणकदत्ते लग्ने क्रमाद्विवाहाय प्रचलितः । प्राप्तश्च तं ग्रामं श्वशुरकुलं च नृपतिः । देशाचारानुरोधाद्वधूवरयोरन्तराले जवनिका दत्ता । अञ्जलिर्युगन्धरीलाजैर्भृतौ लग्नवेलायां तिरस्करिणीमपनीय यावदन्योऽन्यस्य शिरसि लाजान् विकिरीतुं प्रवृत्तौ । तदनु किल हस्तलेपो भविष्यतीति तावद्राजा तां रौद्ररूपां राक्षसीमिवैक्षिष्ट । ते च लाजाः कठिनपाषाणकर्करूपा राज्ञः शिरसि लगितुं लग्नाः । क्षितिपति-
15 रपि किमपि[2] वैकृतमिदमिति विभावयन् पलायितस्तावत्सा पृष्ठलग्नाऽश्मशकलानि वर्षन्ती प्राप्ता । ततो नरपतिर्नागह्रदं प्राविशन्निजजन्मभूमिम् । तत्रैव च निधनमानश इति । अद्यापि सा **पीठजादेवी** प्रतोल्या बहिरास्ते निजप्रासादस्था । **शूद्रको**ऽपि क्रमेण **कालिका**देव्याऽजारूपं विकृत्य वापीं प्रविष्टया करुणरसितेन विप्रलभ्य तन्निष्कासनार्थं प्रविशन् । पतितस्य तस्य कृपाणस्य कूपद्वारे तिर्यक्पतनाच्छिन्नाङ्गः पञ्चतामानञ्च । महालक्ष्म्या हि वरं वितरणावसरेऽस्मादेव कौक्षेयकात्तव दिष्टान्तावाप्तिर्भवित्रीत्यादिष्टमासीत् । ततः **शक्तिकुमारो** राज्येऽभिषिक्तः सातवाहनायनिः । तदनन्तरमद्यापि
20 राजा न कश्चित्**प्रतिष्ठाने** प्रविशति वीरक्षेत्रे इति ।

अत्र च यदसम्भाव्यं क्वचिदूचे तत्र परसमय एव । मन्तव्यो हेतुर्यन्नासंगतवाग्जनो जैनः ॥

इति श्री**प्रतिष्ठान**कल्पः, प्रसङ्गतः **सातवाहन**चरित्रलेशश्च विरचितः श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः ।

चक्रे **प्रतिष्ठान**कल्पः श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः । **सातवाहन**भूपस्य कथालेशश्च प्रसङ्गतः ॥

॥ ग्रं० १६६, अ० ९ ॥

---

1 B 'प्रति' नास्ति । 2 B नास्ति 'किमपि' ।

३५ चम्पापुरीकल्पः ।

कृतदुर्नयमङ्गानामङ्गानां[1] जनपदस्य भूषाया । चम्पापुर्याः कल्पं जल्पामस्तीर्थधुर्यायाः[2] ॥ १ ॥

अस्यां द्वादशमजिनेन्द्रस्य [3]श्रीवासुपूज्यस्य त्रिभुवनजनपूज्यानि गर्भावतार[4]-जन्म-प्रव्रज्या-केवलज्ञान-निर्वाणोपगमलक्षणानि पञ्चकल्याणकानि जज्ञिरे ॥ १ ॥

अस्यामेव श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रपुत्रमघवनृपतिपुत्रीलक्ष्मीकुक्षिजाता रोहिणी नाम कन्याऽष्टानां पुत्राणामुपरि जज्ञे । सा च स्वयंवरेऽशोकराजन्यकण्ठे वरमालां निक्षिप्य तं परिणीय पट्टराज्ञी जाता । क्रमेणाष्टौ पुत्रांश्च-तस्रश्च[5] पुत्रीरजीजनत् । अन्यदा श्रीवासुपूज्यशिष्ययोः रूप्यकुम्भ-स्वर्णकुम्भयोर्मुखादष्टदुःखत्वे हेतुं प्राग्जन्मचीर्णं रोहिणीतपः श्रुत्वा सोद्यापनविधिं[6] प्राचीकटन्[7] मुक्तिं च सपरिच्छदाऽगच्छत् ॥ २ ॥

अस्यां करकण्डु[8]नामधेयो भूमण्डलाखण्डलः पुरासीत्। स कादम्बर्यामटव्यां कलिगिरेरुपत्यकावर्तिनि कुण्डनाम्नि सरोवरे श्रीपार्श्वनाथं छद्मस्थावस्थायां[9] विहरन्तं हस्तिव्यन्तरानुभावात्कलिकुण्डतीर्थतया प्रतिष्ठापितवान् ॥ ३ ॥

अस्यां पुनः[10] सुभद्रा महासती पाषाणमयविकटकपाटसम्पुटपिहितासु तिसृषु प्रतोलीषु [11]शीलमाहात्म्यादाममूत्रतन्तुवेष्टितेन तितउना कूपाज्जलमाकृष्य तेनाभिषिच्य सप्रभावनमुदघाटत् । एकां तु तुरीयां प्रतोलीमन्याऽपि या किल मत्सदृशा सुचरित्रा भवति तयेयमुद्घाटनीयेति भणित्वा राजादिजनसमक्षं तथैव पिहितामेवास्थापयत् । सा च तद्दिनादारभ्य चिरकालं तथैव दृष्टा जनतया । क्रमेण विक्रमादित्यवर्षेषु षष्ट्यधिकत्रयोदशशतेष्वतिक्रान्तेषु लक्षणावतीहम्मीरश्रीसुरत्राणसमसदीनः [12]शङ्करपुरदुर्गोपयोगिपाषाणग्रहणार्थं तां प्रतोलीं पातयित्वा कपाटसम्पुटमग्रहीत् ॥ ४ ॥

अस्यां दधिवाहननृपतिर्महिष्या पद्मावत्या सह तद्दोहदपूरणार्थमनेकपारूढः सञ्चरन् स्मृतारण्यानीविहारेण करिणा तां प्रतिनजताऽपवाहितः स्वयं तरुशाखामालम्ब्य स्थितः । करिणि पुरः सञ्चरिते व्यावृत्त्येमामेव स्वपुरीमागमत् । देवी चासामर्थ्यात्तदारूढैवारण्यानीमगात् । तदवतीर्णा क्रमेण सूनुं सुषुवे । स च करकण्डुर्नाम क्षितिपतिरजनि । कलिङ्गेषु पित्रा सार्धं युध्यमानः प्रतिषिद्धः[13] स्वजनन्या [14]आर्यया । क्रमेण महावृषभस्य यौवन-वार्द्धकदशादर्शनाज्जातः प्रत्येकबुद्धः सिद्धिं चाससाद ॥ ५ ॥

अस्यां चन्दनबाला दधिवाहननृपतिनन्दना जन्म[15] उपलेभे । या किल भगवतः श्रीमहावीरस्य कौशाम्ब्यां सूर्पकोणस्थकुल्माषैः पारणाकारणया पञ्चदिनोनषण्मासावसाने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावाऽभिग्रहानपूरयत ॥६॥

अस्याः पृष्ठचम्पया सह श्रीवीरस्त्रीणि वर्षारात्रसमवसरणानि चक्रे ॥ ७ ॥

अस्या एव परिसरे श्रीश्रेणिकसूनुरशोकचन्द्रो [16]नरेन्द्रः कूणिकापराख्यः श्रीराजगृहं जनकशोकाद्विहाय नवीनां चम्पामचीकरच्चारुचम्पकरोचिष्णुं राजधानीम् ॥ ८ ॥

अस्यामेव पाण्डुकुलमण्डनो दानशौण्डेषु दृष्टान्तः श्रीकर्णनृपतिरशाद्राज्यश्रियम् । दृश्यन्ते चाद्यापि तानि तानि तदवदातस्थानानि शृङ्गारचतुरिका[17]दीनि पुर्यामस्याम् ॥ ९ ॥

अस्यां सम्यग्दृशां निदर्शनं सुदर्शनश्रेष्ठी दधिवाहनभूपस्य राज्ञ्याऽभयाख्यया सम्भोगार्थमुपसर्ग्यमाण॰

---

1 D °मङ्गानन° । 2 P विहाय सर्वत्र 'तीर्थधुर्याया ।' 3 Pa श्रीमे(दे ?)ववासु° । 4 B C गर्भावतर° । 5 D °चतस्र । 6 C D °विधि । 7 B D P प्राचीकरन् । 8 P करकुण्ड° । 9 P छद्मस्थावस्था समधिगत्य विहरन्तं । 10 P विना नास्त्यन्यत्र 'पुन' । 11 P शीतल्करच दवील्शील्माहा° । 12 B शङ्करदुर्गोप° । 13 B P D प्रतिषिध्य । 14 B C D आर्यया जनन्या । 15 C जन्म लेभे । 16 P श्रेणिकसूनुरशोकचन्द्रापरनामधेय । 17 B चतुरगाहा°, P D चतुरका° ।

क्षितिपतिवचसा वधार्थं नीतः स्वकीयनिष्कम्पशीलसम्पत्प्रभावाकृष्टशासनदेवतासांनिध्यात् [1]शूलीं [2]हेमसिंहासनतामनैषीत्; तरवारिं च निशितं सुरभिसुमनोदाम भूय मनोदामनयत् ॥ १० ॥

अस्यां च **कामदेवः** श्रेष्ठी श्री**वीर**स्योपासकाग्रणीरष्टादशकनककोटिस्वामी गोदशसहस्रयुतपञ्चगोकुलाधिपति[3]**र्भद्रा**पतिरभवत् । यः पौषधागारस्थितो मिथ्यादृग्देवेन पिशाचगजभुजगरूपैरुपसर्गितोऽपि न क्षोभमभजत् । श्लाघितश्च
5 भगवताऽन्तःसमवसरणम् ॥ ११ ॥

अस्यां विहरन् श्री**शय्यम्भव**सूरिश्चतुर्दशपूर्वधरः स्वतनयं **मनका**भिधानं **राजगृहा**दागतं प्रव्राज्य तस्यायुः षण्मासावशेषं श्रुतज्ञानोपयोगेनाकलय्य तदध्ययनार्थं **दशवैकालिकं** पूर्वगतान्निर्व्यूढवान् । [4]तत्रात्मप्रवादात् षड्जीवनिकां, कर्मप्रवादात् पिण्डैषणां, सत्यप्रवादाद्वाक्यशुद्धिं, अवशिष्टाध्ययनानि प्रत्याख्यानपूर्वतृतीयवस्तुत[5] इति ॥ १२ ॥

अस्यां वास्तव्यः **कुमारनन्दी** सुवर्णकारः स्वविभववैभवाभिभूतधनदमदो[6]ऽकृशकृशानुप्रवेशात्पञ्चशैलाधिपत्य-
10 मधिगत्य प्राग्भवसुहृदच्युतविबुधबोधितश्चारुगोशीर्षचन्दनमयीं जीवन्तस्वामिनीं सालङ्कारां देवाधिदेवश्री**महावीर**प्रतिमां निर्ममे ॥ १३ ॥

अस्यां **पूर्णभद्रे**[7] चैत्ये श्री**वीरो** व्याकरोद्-योऽ**ष्टापद**मारोहति स तद्भव एव सिध्यतीति ॥ १४ ॥

अस्यां **पालित**नामा श्री**वीरो**पासको वणिक् । तस्य पुत्रः समुद्रयात्रायां समुद्रे प्रसूत इति **समुद्रपालो** वध्यं नीयमानं वीक्ष्य प्रतिबुद्धः [8]सिद्धिं च प्रापत् ॥ १५ ॥

15 अस्यां **सुनन्दः** श्राद्धः[9] साधूनां मलदौर्गन्ध्यं[10] निन्दित्वा मृतः **कौशाम्ब्या**मिभ्यसुतोऽभूद्व्रतं चाग्रहीत् । उदीर्णदुर्गन्धः कायोत्सर्गेण देवतामाकृष्य स्वाङ्गे सौगन्ध्यमकार्षीत् ॥ १६ ॥

अस्यां **कौशिकार्य**शिष्याऽ**ङ्गर्षि-रुद्रका**[11]भ्याख्यानसंविधानकं सुजातप्रियंग्वादिसंविधानकानि च जज्ञिरे॥१७॥

इत्यादि नानाविधसंविधानकरत्नप्रकटनाना[12]वृत्तनिधानमियं पुरी । अस्याश्च प्राकारभित्तिं प्रियसखीव प्रतिक्षणमालिङ्गति सर्वाङ्गं[13] पावनघनरसपूरितान्तरा सरिद्वरा प्रसृत्वरवीचिभुजाभिः ॥ १८ ॥

20 उत्तमतमनरनारीमुक्तामणिघोरणिप्रसवशुक्तिः । नगरी विविधाद्भुतवस्तुशालिनी मालिनी जयति ॥ १ ॥
जन्मभूर्**वासुपूज्य**स्य तद्भक्त्या स्तूयते बुधैः । **चम्पा**याः कल्पमित्याहुः श्री**जिनप्रभ**सूरयः[14] ॥ २ ॥

॥ इति श्रीचम्पापुरीकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० ४७ ॥

---

1 B Pa शूलं । 2 P हिरण्मय° । 3 C गोकुलपतिः । 4 B तत्त्वात्म° । 5 C D वस्तु इति । 6 B धनदमानो । 7 P पूर्णभद्रचैत्ये । 8 P सिद्धिं चाससाद हतविषादाम् । 9 P श्रावकः । 10 B C Pa मलदुर्गन्धं । 11 Pa °रुद्रकान्याख्यान°; C °रुद्रकाव्याख्यान° । 12 P °प्रकटमाना° । 13 P विहाय नास्ति 'सर्वाङ्गं' । 14 Pa सूरिभिः ।

३६. पाटलिपुत्रनगरकल्पः ।

आनम्य श्री**नेमि**नमनेकपुरत्नजनिपवित्रस्य । श्री**पाटलिपुत्रा**ह्वयनगरस्य प्रस्तुम कल्पम्* ॥ १ ॥

पूर्वं किल श्री**श्रेणिक**महाराजेऽस्वगते तदात्मज **कूणिकः** पितृशोकाच्च**म्पापुरीं** न्यवीविशत् । तस्मिंश्चाले-स्यशेषता प्रयाते तत्सूनुर**दायि**नामधेयश्चम्पाया क्षोणिजानिरजनिष्ट । सोऽपि स्वपितुस्तानि तानि सभाक्रीडाशयना-सनादिस्थानानि[1] पश्यन्नस्तोक शोकमुदवहत् । ततोऽमात्यानुमत्या[2] नूतन नगर निवेशयितु नैमित्तिकवरान् स्थानगवेषणा- 5
यादिक्षत् । तेऽपि सर्वत्र तास्तान् प्रदेशान् पश्यन्तो **गङ्गा**तट ययु । तत्र कुसुमपाटल[3] पाटलितरु प्रेक्ष्य तच्छोभाच-मत्कृतास्तच्छाखाया निषण्ण चाष व्यात्तवदन स्वय निपतत्कीटकपेटकमालोक्य चेतस्यचिन्तयन्–अहो ! यथाऽस्य चाषपक्षिणो मुखे स्वयमेत्य कीटा पतन्त सन्ति तथात्र स्थाने नगरे निवेशितेऽस्य राज्ञ स्वय श्रिय समेष्यन्ति । तच्च ते राज्ञे व्यजिज्ञपन् । सोऽप्यतीव प्रमुदित । तत्रैको जरन्नैमित्तिको व्याहरद्–देव ! पाटलातरुरय न सामान्य । पुरा हि ज्ञानिना कथितम्– 10

पाटलाद्रु पवित्रोऽय महामुनिकरोटिम् । एकावतारोऽस्य मूलजीवश्चेति विशेषत ॥ २ ॥

राज्ञोक्तम्–कतम स महामुनि ? । तदनु जगाद नैमित्तिक –श्रूयता देव ! । **उत्तरमथुराया** वास्तव्यो **देव-दत्ता**ख्यो वणिक्पुत्रो दिग्यात्रार्थं **दक्षिणमथुरा**मगमत् । तत्र तस्य **जयसिंह**नाम्ना वणिक्पुत्रेण सह सौहृदम-भवत् । अन्यदा तद्गृहे भुञ्जानोऽ**न्निका**नाम्नीं तज्जामिं स्थाले भोजन[4] परिवेष्य वातव्यजन कुर्वन्तीं रम्यरूपामालोक्य तस्यामनुरक्तो द्वितीयेऽह्नि [5]वरकान् प्रेष्य **जयसिंहं** तामयाचिष्ट । सोऽभ्यधाद्–अह तस्या एव ददे [6]स्वस्सार यो 15
मद्गृहाद्दूरे न भवति । प्रत्यह ता त च यथा पश्यामि, यावदपत्यजन्म । तावद्यदि मद्गृहे स्थाता [7]तदा तस्य जामिं दास्यामीति । **देवदत्तो**ऽप्योमित्युक्त्वा शुभेऽह्नि ता पर्यणैषत् । तया सह भोगान् भुञ्जतस्तस्यान्यदा पितृभ्या लेख प्रैषि[8] । त[9] वाचयतस्तस्य नेत्रे वर्षितुमश्रूणि[10] प्रवृत्ते । ततस्तया हेतु पृष्टोऽपि यावन्नाब्रवीत् तावत्तयाऽऽदाय लेख स्वय वाचित । तत्र चेद [11]लिखितमासीद् गुरुभ्याम्–यद्वत्स ! आवा वृद्धौ निकटनिधनौ, यदि च नौ जीवन्तौ दिदृक्षसे तदा द्रागागन्तव्यमिति । तदनु सा पतिमाश्वास्य स्वभ्रातर हठादप्यन्वजिज्ञपत् । भर्त्रा सह प्रतस्थे चोत्तरमथुरा प्रति सगर्भा । 20
क्रमान्मार्गे [12]सा [13]सूनुमसूत । नामास्य पितरौ करिष्यत इति देवदत्तोक्ते परिजनस्तमर्भकम**न्निकापुत्र** इत्युल्लापितवान् । क्रमेण देवदत्तोऽपि स्वपुरीं प्राप[14] । पितरौ प्रणम्य च शिशु तयोरार्पयत् । **सन्धीरणे**त्याख्या तौ [15]नप्तु पुनश्चक्राते, तथाप्यन्निकापुत्र इत्येव पप्रथेऽसौ । वर्द्धमानश्च प्राप्ततारुण्योऽपि भोगास्तृणवद्विधूय **जयसिंहाचार्य**पार्श्वे दीक्षामग्रहीत्[16] । गीतार्थीभूत प्रापदाचार्यकम् । अन्यदा विहरन् सगच्छो वार्द्धके **पुष्पभद्रपुर गङ्गा**तटस्थ प्राप्त । तत्र **पुष्पकेतु**र्नृपस्तद्देवी **पुष्पवती** तयोर्युग्मजौ **पुष्पचूलः पुष्पचूला** चेति पुत्र पुत्री चाभूताम् । तौ च सह वर्द्धमानौ क्रीडन्तौ च परस्पर 25
प्रीतिमन्तौ जातौ । राजा दध्यौ–यद्येतौ दारकौ वियुज्येते तदा नून न[17] जीवत , अहमप्यनयोर्विरह सोढुमनीशस्तस्मा-दनयोरेव विवाह करोमीति ध्यात्वा मन्त्रिमित्र[18]पौराश्छलेनापृच्छद्–भो ! यद्रत्नमन्त पुरे उत्पद्यते तस्य क प्रभु ? । तैर्विज्ञप्तम्–देव ! अन्त पुरोत्पन्नस्य कि वाच्यम्, यद्देशमध्ये[19]ऽप्युत्पद्यते रत्न तद्राजा यथेच्छ विनियुङ्क्ते । कोऽत्र [20]बाध ? । तच्छ्रुत्वा साभिप्राय निवेद्य देव्या वारयन्त्यामपि तयोरेव सम्बन्धमघटयन्नृप । द्वौ दम्पती भोगान् भुञ्ज्ञा स । राज्ञी तु पत्यपमाने[21] वैराग्याद्व्रतमादाय स्वर्गे देवोऽभूत् । अन्यदा पुष्पकेतौ कथाशेषे **पुष्पचूलो** राजाऽभूत्[22] । स च देव प्रयुक्ता- 30
वधिस्तयोरकृत्य ज्ञात्वा स्वप्ने **पुष्पचूलाया** नरकानदर्शयत्तद्दु ग्वानि च । सा च प्रबुद्धा भीता च पत्यु सर्वमावेदयत् । सोऽपि

---

* C आदर्शे इद पद्य नास्ति । 1 B °सनादीनि । 2 B P अमात्या । 3 P कुसुमपाटलैं । 4 P भोज्य । 5 P D वरकान् । 6 A C 'स्व' नास्ति । 7 B D Pa 'तदा' नास्ति । 8 P प्रेषित । 9 P 'तं' नास्ति । 10 B D °अश्रु । 11 P लेखित° । 12 B 'सा' नास्ति । 13 P सुत° । 14 B C प्राप्य । 15 B पुण° । 16 P कक्षीचके । 17 B नास्ति 'न' । 18 B मन्त्रिमन्त्रि°, P मन्त्रिमन्त्र° । 19 Pab मध्येषु । 20 P बाध्य । 21 B D °पमान° । 22 P जज्ञे ।

शान्तिकमचीकरत् । स च देवः प्रतिनिशं[1] नरकांस्तस्या अदर्शयत् । राजा तु सर्वांस्तीर्थिकानाहूय पप्रच्छ—कीदृशा नरकाः स्युरिति । कैश्चिद्गर्भवासः, कैश्चन गुप्तिवासः, कैरपि दारिद्र्यम्, अपरैः पारतन्त्र्यमिति तैर्नरका[2] आचचक्षिरे । राज्ञी तु[3] मुखं मोटयित्वा तान् विसंवादिवचसो व्यसाक्षीत् । अथ **नृपोऽन्निकापुत्राचार्य**माकार्य तदेवाप्राक्षीत् । तेन तु यादृशान् देव्यदर्शयत्तादृशा एवोक्ता नरकाः । राज्ञी प्रोचे—भगवन्! भवद्भिरपि किं स्वप्नो दृष्टः ? । कथमन्यथेत्थं
5 वित्थ ? । सूरिरवदद्—भद्रे ! जिनागमात्सर्वमवगम्यते । **पुष्पचूला**ऽवोचत्—भगवन्! केन कर्मणा ते प्राप्यन्ते । गुरुरगृणाद्—भद्रे ! महारम्भपरिग्रहैर्गुरुप्रत्यनीकतया पञ्चेन्द्रियवधान्मांसाहाराच्च तेष्वङ्गिनः पतन्ति । क्रमेण स सुरस्तस्यै स्वर्गानदर्शयत् स्वप्ने । राज्ञा तथैव पाखण्डिनः पृष्टास्तानपि व्यभिचारिवाचो विसृज्य भूपस्तमेवाचार्यं स्वर्गस्वरूपमप्राक्षीत् । तेनापि यथावत्तत्रोदिते स्वर्गाप्तिकारणमपृच्छद्राज्ञी । ततः सम्यक्त्वमूलौ गृहि-यतिधर्मावादिशन्मुनीशः । प्रतिबुद्धा च सा लघुकर्मा । नृपमनुज्ञापयति स्म प्रव्रज्यायै । सोऽप्यूचे—यदि मद्गृह एव [4]भिक्षामादत्से तदा प्रव्रज । तयोरीकृते नृप-
10 वचसि, सा सोत्सवमभूत्तस्याचार्यस्य शिष्या गीतार्था च । अन्यदा भाविदुर्भिक्षं श्रुतोपयोगात् ज्ञात्वा सूरिर्गच्छं देशान्तरे प्रैषीत् । स्वयं तु परिक्षीणजङ्घाबलस्तत्रैवास्थात्; भक्तपानं च **पुष्पचूला**ऽन्तःपुरादानीय गुरवेऽदात् । क्रमात्तस्या गुरुशुश्रूषाभावनाप्रकर्षात् क्षपकश्रेण्यारोहात्केवलज्ञानमुत्पेदे । तथापि गुरुवैयावृत्यान्न निवृत्ता । यावद्धि गुरुणा न ज्ञातं[5] यदयं केवलीति तावत् पूर्वप्रयुक्तं विनयं केवल्यपि नात्येति । सापि यद्यद्गुरोरुचितं रुचितं च तत्तदन्नादि सम्पादितवती । अन्यदा वर्षत्यब्दे सा पिण्डमाहरद् । गुरुभिरभिहितम्—वत्से ! श्रुतज्ञाऽसि, किमिति वृष्टौ त्वयाऽऽनीतः पिण्डः ?
15 इति । साऽभाणीद्—भगवन्! यत्राध्वनि अप्कायोऽचित्त एवासीत्तेनैवायासिषमहम्; कुतः प्रायश्चित्तापत्तिः ? । गुरुराह—छद्मस्थः कथमेतद्वेद ? । तयोचे केवलं ममास्ति । ततो मिथ्या मे दुष्कृतम्; केवल्याशातित इति ब्रुवन्नपृच्छत्तां गच्छाधिपः—किमहं सेत्स्यामि न वेति ? । केवल्यूचे मा कृद्ध्वमधृतिम्; गङ्गामुत्तरतां वो भविष्यति केवलम् । ततो गङ्गामुत्तरीतुं लोकैः सह नावमारोहत्सूरिः । यत्र यत्र स न्यषीदत्तत्र तत्र नौर्मङ्क्तुमारेभे । तदनु मध्यदेशासीने मुनीने सर्वापि नौर्मङ्क्तुं लग्ना । ततो लोकैः सूरिर्जले क्षिप्तः । दुर्भगीकरणविराद्धया प्राग्भवपत्न्या व्यन्तरीभूतयाऽन्तर्जलं शूले निहितः ।
20 शूलप्रोतोऽप्ययम[6]प्कायजीवविराधनामेवा[7]शोचयन्नाऽऽत्मपीडाम् । क्षपकश्रेण्यारूढोऽन्तकृत्केवलीभूय सिद्धः । आसन्नैः सुरैस्तस्य निर्वाणमहिमा चक्रे । अत एव तत्तीर्थं **प्रयाग** इति जगति पप्रथे । प्रकृष्टो यागः पूजा अत्रेति प्रयाग [8]इत्यन्वर्थः । शूलप्रोतत्वगतानुगतिकतया चाद्यापि परसमयिनः क्रकचं स्वाङ्गे दापयन्ति तत्र । वटश्च तत्र गणशस्तुरुष्कैश्छिन्नोऽपि मुहुर्मुहुः प्ररोहति ।

सूरेः करोटिर्यादोभिस्त्रोट्यमानाऽपि जलोर्मिभिर्नदीतीरं नीता । इतस्ततो लुलन्ती च शुक्तिवन्नदीतटे क्वापि गुप्त-
25 विषमे प्रदेशे विलग्य तस्थौ । तस्य च करोटिकर्परस्यान्तः कदाचित्पाटलाबीजं न्यपतत् । क्रमात् करोटिकर्परं भित्त्वा दक्षिणहनोः पाटलातरुरुद्गतो विशालश्चायमजनि । तदत्र पाटलिद्रोः प्रभावाच्चाष[9]निमित्ताच्च नगरं निवेश्यताम्, आशिवाशब्दं च सूत्रं दीयताम् । ततो राज्ञाऽऽदिष्टा नैमित्तिकाः पाटलां पूर्वतः कृत्वा पश्चिमाम्, तत उत्तराम्, ततः पुनः पूर्वाम्, ततो दक्षिणां शिवाशब्दाऽवधि गत्वा [10]सूत्रमपातयन् । एवं चतुरस्रः पुरस्य सन्निवेशो बभूव । तत्राङ्किते प्रदेशे पुरमचीकरन्नृपः । तच्च पाटला[11]नाम्ना **पाटलिपुत्रं** पत्तनमासीत् । असमकुसुमबहुलतया च **कुसुमपुर**मित्यपि
30 रूढम् । तन्मध्ये श्रीनेमिचैत्यं राज्ञाऽकारि । तत्र पुरे गजाश्वरथशालाप्रासादसौधप्राकारगोपुरपण्यशालासत्राकारपौषधागाररम्ये चिरं राज्यं जैनधर्मं चापालयद्**उदायि**नरेन्द्रः ।

तस्मिन्नुपात्तपौषधेऽन्यदोदायिमारकेण स्वर्गातिथ्यं प्रापिते नापितगणिकासुतो **नन्दः** श्री**वीर**मोक्षात्षष्टिवत्सर्यामतीतायां क्षितिपतिरजनि । तदन्वये सप्त **नन्दा** नृपा जाताः । नवमनन्दे राजनि परमार्हत**कल्पका**न्वयी **शकटालो**

---

1 P प्रतिदिशं । 2 B नारका. । 3 P नास्ति 'तु' । 4 B दिक्षा° । 5 P ज्ञानं । 6 B °ऽप्यप्काय° । 7 B °विराधनाशोच° । 8 'इत्यन्वर्थः' नास्ति A B D आदर्शे । 9 P चाप° । 10 A B C नास्ति 'सूत्र' । 11 A 'पाडली'; P 'पाटली' ।

मह्यभूत् । तस्य पुत्रौ **स्थूलभद्र श्रियकौ**; सप्त च पुत्र्य –**यक्षा-यक्षदत्ता-भूता-भूतदत्ता-एणा-रेणा-वेणाख्या** क्रमादेकादिसप्तान्तवार[1]श्रुतपाठिन्योऽजनिषत ।

तत्रैव पुरे **कोशा** वेश्या, तज्जामिरुपको**शा** चाभूताम् ।

तत्रैव च **चाणिक्यः**[2] सचिवो **नन्द** समूलमुन्मूल्य **मौर्यवंश्यं** श्रीचन्द्रगुप्तं न्यवीविशद्विशांपतित्वे । तद्वंशे तु **बिन्दुसारोऽशोकश्रीः कुणाल**[3]स्तत्सूनुस्त्रिखण्ड**भरता**धिप परमार्हतोऽनार्यदेशेष्वपि प्रवर्तितश्रमण- 5 विहार **सम्प्रति**महाराजश्चाभवत् ।

मूलदेवः सकलकलाकलापज्ञ , **अचलसार्थवाहो** महाधनी, **देवदत्ता** च गणिक्यमाणिक्य तत्रैव प्रागवसन् ।

उमास्वातिवाचकश्च **कौभीषणि**गोत्र **पञ्चशतसंस्कृतप्रकरण**प्रसिद्धस्तत्रैव **तत्त्वार्थाधिगमं** सभाष्य व्यरचयत् । चतुरशीतिर्वादशालाश्च तत्रैव विदुषा परितोषाय पर्यणसिषु ।

तत्रैव चोत्तुङ्गतरङ्गोत्सङ्गितगगनाङ्गणा परिवहति महानदी **गङ्गा** । 10

तस्यैव चोत्तरा[4]दिशि विपुल वालुकास्थल नातिदूरे, यत्रारूढ **कल्की प्रातिपदाचार्य**प्रमुखसघश्च सलिलप्लवान्निस्तरीता ।

तत्रैव च भविष्यति **कल्किनृपतिर्धर्मदत्त-जितशत्रु-मेघघोषादयश्च** तद्वंश्या ।

तत्रैव च विद्यन्तेऽन्तर्निहित**नन्द**सत्कनवनवतिद्रव्यकोट्य , पञ्च स्तूपा , येषु धनधनायया श्री**लक्षणावती**सुरत्राणस्तास्तानुपाक्रमतोपक्रमास्ते च तत्सैन्योपप्लवायैवाकल्पन्त । 15

तत्रैव विहृतवन्त श्री**भद्रबाहु-महागिरि-सुहस्ति-वज्रस्वाम्यादयो** युगप्रवरागमा । विहरिष्यन्ति च **प्रातिपदा**चार्यादय ।

तत्रैव महाधनधन**श्रेष्ठि**नन्दना **रुक्मिणी** श्री**वज्रस्वामिन** पतीयन्ती प्रतिबोध्य तेन भगवता निर्लोभचूडामणिना प्रव्राजिता ।

तत्रैव **सुदर्शन**श्रेष्ठिमहर्षि**रभया**राज्ञ्या व्यन्तरीभूतया भूयस्तरमुपसर्गितोऽपि न क्षोभमभजत् । 20

तत्रैव **स्थूलभद्र**महामुनि षड्रसाहारपर **कोशा**याश्चित्रशालायामुत्सादितमदन[5]मदश्चकार वर्षारात्रचतुर्मासीम् । सिंहगुहावासिमुनिरपि त स्पर्द्धिष्णुस्तत्रैव **कोशया** तदानीतरत्नकम्बलस्य चन्दनिकाप्रक्षेपेण प्रतिबोध्य पुनश्चारुतरा चरणश्रियमङ्गीकारित ।

तत्रैव द्वादशाब्दे दुर्भिक्षे गच्छे देशान्तर प्रतिप्रोषिते सति **सुस्थिताचार्य**शिष्यौ क्षुल्लकावदृशीकरणाञ्जनाक्तचक्षुषौ **चन्द्रगुप्त**नृपतिना सह बुभुजाते कियन्त्यपि दिनानि । तदनु गुरुप्रत्युपालम्भाद् **विष्णुगुप्त** एव तयोर्निर्वाह- 25 मकरोत् ।

तत्रैव च श्री**वज्रस्वामी** पौरस्त्रीजनमन सक्षोभरक्षणार्थं प्रथमदिने सामान्यमेव रूप विकृत्य, द्वितीयेऽह्नि चाहो ! नास्य भगवतो गुणानुरूप रूपमिति देशनारसहृतहृदयजनमुखात् सँल्लापान् श्रुत्वाऽनेकलब्धिमान् सहजमप्रतिरूप रूप विकुर्व्य सौवर्णे सहस्रपत्रे निषद्य देशना विधाय राजादिजनताममोदयत् ।

तत्रैव पुरस्य मध्ये समभावातिशया मातृदेवता आसस्तदनुभावाच्चपुर परैराग्रहवद्भिरपि न खलु ग्रहीतुमशाकि ।30 **चाणिक्यवचमोत्पाटिते** पुनर्जनैर्मातृमण्डले गृहीतवन्तौ **चन्द्रगुप्त-पर्वतकौ** । एवमाद्यनेकसविधानकनिधाने तत्र नगरेऽष्टादशसु विद्यासु स्मृतिषु पुराणेषु च द्वासप्ततौ कलासु **भरत-वात्स्यायन-चाणाक्यलक्षणे** रत्नत्रये मग्न यन्त्र-

---

1 B °श्रुति । 2 P C चाणक्य । 3 B D Pa कुणालसुनु° । 4 P उत्तरदिशि । 5 'मदन' नास्ति B C ।

तन्नविद्यासु रसवाद-धातु-निधिवादाञ्जन-गुटिका-पादप्रलेप-रत्नपरीक्षा-वास्तुविद्या-पुं-स्त्री-गजाश्ववृषभादिलक्षणेन्द्रजालादिग्रन्थेषु काव्येषु च नैपुणचणास्ते ते पुरुषाः प्रत्यूपुः प्रत्यूषकीर्तनीयनामधेयाः[1]।

आर्यरक्षितोऽपि हि चतुर्दशविद्यास्थानानि तत्रैवाधीत्य **दशपुर**मागमत्। आढ्यास्तु तत्रैवंविधा वसन्ति स, ये योजनसहस्रगमने यानि गजपदानि भवेयुस्तानि प्रत्येकं स्वर्णसहस्रेण पूरयितुमीशते। अन्ये च तिलानामाढक उप्ते 5 प्ररूढे सुफलिते यावन्तस्तिलाः स्युस्तावन्ति हेमसहस्राणि बिभ्रति गृहे। अपरे च घनागमप्रवहद्गिरिनदीवारिपूरस्यैकदिनोत्पन्नेन गवां नवनीतेन संवरं विरचय्य पयोरयं स्खलयितुमलम्। अन्यतमे चैकाहजातजात्यनवकिशोराणां समुद्धृतैः स्कन्धकेशैः **पाटलिपुत्रं** समन्ताद्वेष्टयितुमचेष्टन्त। इतरे च शालिरत्नद्वयं वेश्मनि बिभरांबभूवुस्तत्रैकशालिर्भिन्नभिन्नशालिबीजप्रसूतिमान्, अन्यश्च गर्द्दभिकाशालिर्यो लूनलूनः पुनः पुनः फलति।

गौडदेशावतंसस्य श्री**जिनप्रभ**सूरयः। कल्पं **पाटलिपुत्र**स्य रचयां चक्रुरागमात्॥ १॥

10　॥ इति श्रीपाटलिपुत्रपुरकल्पः॥

॥ ग्रं० १२५; अ० १९॥

---

३७. श्रावस्तीनगरीकल्पः।

दुहसरितारणवत्थी **सावत्थी** सयलसुक्खपसवत्थी। नमिऊण **संभवजिणं** तीसे कित्तेमि[2] कप्पलवं॥ १॥

अत्थि[3] इहेव दाहिणद्ध**भारहे वासे** अगणिज्जगुणगणविसए **कुणाला**विसए **सावत्थी** नाम नयरी संप- 15 इकाले **महेठि**[4]त्ति रूढा वट्टइ[5]। जत्थ अज्जवि घणगहणवणमज्झट्ठियं सिरि**संभवनाह**पडिमाविभूसियं. गयणग्गलग्गसिहरं पासट्ठियजिणबिंबमंडियदेवउलियाअलंकरियं जिणभवणं चिट्ठइ पायारपरियरियं। तस्स चेइयस्स दुवारअदूर[6]सामंते विल्लिरउल्लसिर[7]अतुल्लपल्लवसिणिद्धच्छाओ महल्लसाहाभिरामो रत्तासोअपायवो दीसइ। तस्स य जिणभवणस्स पओलीए जे कवाडसंपुडा[8] आसि ते **माणिभद्द**जक्खाणुभावाओ सूरिए अत्थमुविंते सयमेव लग्गंति म्ह; उदिए य दिणयरे सयमेव उग्घडंति म्ह। अन्नया कलिकालदुल्ललिअवसेण **अल्लावदीण**सुरत्ताणस्स मलिक्केण **हब्बस**नाम- 20 गेणं **बहडाइच्च**नगराओ आगंतूण पायारभित्ति-कवाडाइं कइवयबिंबाणि अ भग्गाणि। मंदप्पभावा हि भवंति दूसमाए अहिट्ठायगा। तहा तस्सेव चेइयस्स सिहरे जत्तागयसंघेणं कीरमाणे ह्वणाइमहूसवे आगंतूण एगो चित्तगो उववसिइ। न य कस्स वि भयं जणेइ। जाव मंगलपईवे कए सट्ठाणमुवगच्छइ त्ति।

इत्थेव नयरीए वुद्धाययणं चिट्ठइ जत्थ **समुद्दवंसीया करावल्ल**[9]नरिंदकुलसंभूया रायाणो **बुद्धभत्ता** अज्ज वि नियदेवयस्स पुरओ महग्घमुल्लं पल्लाणियं अलंकियं विभूसिअं महातुरंगमं ढोअंति।

25　जंगुलीविज्जा य इत्थेव **बुद्धेण** ससंपदाया पयासिया महप्पभावा।

इत्थेव निप्पज्जंति नाणाविहा साली; जेसिं सव्वसालिजाइण इक्किक्के कणंमि निक्खिप्पमाणे[10] आसिहं भरिज्जइ महंतं खोरयं।

इत्थेव भयवं **संभव**सामी चवण-जम्मण-निक्खमण-केवलनाणुप्पत्तिकल्लाणगाइं ससुरासुर-नर-भवणमणरंजणाइं अकारि।

30　**कोसंबीपुरीए** उप्पण्णो **जियसत्तु**निवसचिव**कासव**पुत्तो **जक्खा**[11]कुक्खिसंभूओ **कविलो** महरिसी

---

1 P मानधियः। 2 B कप्पेमि। 3 P नास्ति 'अत्थि'। 4 B महिठि; D महठि। 5 P विहाय नास्त्यन्यत्र 'वट्टइ'। 6 P नास्ति 'अदूर'। 7 B D °उल्लसिरं। 8 C °संपुटा। 9 C करावल°; P करवेल्ल°। 10 P °माणा। 11 D P जसा°।

जणयमि विवन्ने विज्ञाअहिज्जणत्थ एय नयरिं[1] समागओ पिंडमिचइंददत्तउवज्झायसयासे **सालिभद्दइब्भदा-**सचेडीवयणेण दोमासयसुवण्णकए वच्चतो कमेण सयबुद्धो जाओ । पडिबोहिऊण पचसयचोरे सिद्धो अ ।

इत्थेव **तिंदुगुज्जाणे** पचसयसमण-अज्जिआसहस्सपरिवुडो पढमनिन्हवो **जमाली** ठिओ । **ढंकेण** कुमया-रेण पढम नियसालासठिआ भगवओ धूआ **पिअदसणा** अज्जा साडियाए[2] एगदेसे अगार छोढूण 'कयमाणे कडि'त्ति **वीर**वयण पडिवज्जाविया । तीए य सेससाहुणी साहुणो पडिनोहिया सामिं चेव अल्लीणा । एगो चेव 5 **जमाली** विपडिवन्नो ठिओ ।

इत्थेव **तिंदुगुज्जाणे केसीकुमार**समणो गणहरो भयवया **गोअम**सामिणा **कुट्टयउज्जाणा**ओ आग-तूण परुप्पर सवाय च काउ पचजाम धम्ममगीकारिओ ।

इत्थेव एग वासारत्त समणो भयव **महावीरो** ठिओ खडपडिमाए, **सक्केण** य पूइओ चित्त तवोकम्ममकासी ।

इत्थेव **जियसत्तु-धारिणी**पुत्तो **खदगायरि**ओ उप्पन्नो जो पचसयसीससहिओ **पालगेण कुंभयार-** 10 **कडनयरे** जतेण पीलिओ ।

इत्थेव [3]**जियसत्तु**रायपुत्तो **भद्दो** नाम पव्वइत्ता पडिम पडिवन्नो विहरतो वेरज्जे[4] सपत्तो चोरिउ त्ति काऊण गहिओ रायपुरिसेहिं तच्छियगो खार दाउ कक्खडदब्भेहिं वेढिओ मुक्को सिद्धो अ ।

जहा **रायगिहाइसु** तहा इत्थवि नयरीए **चभदत्तस्स** हिंडी जाया ।

इत्थेव **खुड्डगकुमारो अजियसेणायरि**यसीसो जणणीमयहरिया-आयरिय-उज्झायनिमित्त बारसबारसवरि- 15 साणि दव्वओ सामण्णे ठिओ । नट्टविहीए 'सुट्ठु गाइय सुट्ठु वाइय'मिच्चाइ गीइय सोउ जुवराय-सत्थवाह-भज्जा-मत्त-मिंठेहिं सम पडिबुद्धो ।

एवमाईण अणेगेसिं सविहाणगरयणाण उप्पत्तीए एसा नयरी रोहणगिरिभूमि त्ति ।

सावत्थिमहातित्थस्स कप्पमेय पढतु विउसवरा । जिणपवयणभत्तीए इय भणइ **जिणप्पहो** सूरी ॥ १ ॥

॥ **इति श्रीश्रावस्तीनगरीकल्पः समाप्तः** ॥ 20

॥ ग्रं० ४२ ॥

---

1 P नयरं । 2 P साडियाएग° । 3 C जय° । 4 D वेरग्गे ।

३८. वाराणसीनगरीकल्पः ।

नत्वा तत्त्वाख्यायिनं श्री**सुपार्श्वं** श्रीपार्श्वं च न्यञ्चितानिम्नविघ्नम् ।
वाराणस्यास्तीर्थरत्नस्य कल्पं जल्पामः सत्कल्पनापोढकल्पम् ॥ १ ॥

अस्त्यत्रैव दक्षिणे **भारतार्धे** मध्यमखण्डे **काशि**जनपदालङ्कृतिरुत्तरवाहिन्या त्रिदशवाहिन्याऽलङ्कृतधनकनक-
5 रत्नसमृद्धा **वाराणसी** नाम नगरी गरीयसामद्भुतानां निधानम् । **वरणा**नाम्नी सरिदऽ**सि**नाम्नी च द्वे अपि सरिता-
वस्यां **गङ्गा**मनुप्रविष्टे इति **वाराणसी**ति नैरुक्तं नामास्याः प्रसिद्धम् ।

अस्यां सप्तमो जिनसत्तमः श्रीमान् **सुपार्श्वः**[1] ऐक्ष्वाकुप्रतिष्ठ**महीपनि**महिष्याः **पृथ्वीदे**व्याः कुक्षाववतीर्य
जन्ममुपादित । त्रिभुवनजनवादितयशःपटहः स्वस्तिकलाञ्छितद्विशतधनुरुच्छ्रायकाञ्चनच्छायकायः, क्रमेण प्राज्यराज्य-
श्रियमनुभूय भूयः सांवत्सरिकं दानं प्रदाय, सहआम्रवणे दीक्षां च कक्षीकृत्य, विहृत्य छद्मस्थावस्थया नवमासीं केवल-
10 ममलमासाद्य **संमेतगिरि**मेत्य निर्वृतः ।

त्रयोविंशश्च जिनेशः श्री**पार्श्वनाथ** ऐक्ष्वाकाश्व**सेन**[2]रसेनसूनु**र्वामा**कुक्षिसम्भवः पन्नगलक्ष्म्या नवकरोच्छ्राय-
नीलच्छविवपुरात्तजन्मा**श्रमपदो**द्याने कौमार एवोपात्तचारित्रभारः केवलमुत्पाद्य तस्मिन्नेव शैले शैलेसीमवाप्य सिद्धः ।
अस्यामेव कुमारकाले भगवानेष एव **मणिकर्णिकायां** पञ्चाग्नितपस्तप्यमानात्**कमठ**ऋषेरायतौ भाविनीं विपदमा-
त्मनो विविदिवानप्यन्तर्दारुणज्वलनज्वालाभिरर्धदग्धं दन्दशूकं जनन्या जनानां च संदर्श्य कुपथमथनमकार्षीत् ।

15 अस्यां काश्यपगोत्रौ चतुर्वेदौ षट्कर्मकर्मठौ समृद्धौ यमलभ्रातरौ **जयघोष-विजयघोषा**भिधानौ द्विजवराव-
भूताम् । एकदा **जयघोषः** स्नातुं गङ्गामगात् । तत्र पृदाकुणा[3] ग्रस्यमानं भेकमेकमालोकयत् । सर्प्पं च कुललेनो-
त्क्षिप्य भूमौ पातितमद्राक्षीत् । सर्पमाक्रम्य स्थितं [4]कुललम् । तमेव चण्डग्रासैः[5] खादन्तं सर्पं च कुललवशगतमपि चीत्कु-
र्वाणमण्डूकभक्षिणं[6] वीक्ष्य प्रतिबुद्धः । प्रव्रज्य क्रमादेकरात्रिकीं प्रतिमां प्रपद्य विहरन् पुनरिमां नगरीमागात् । मासक्ष-
पणपारणके यज्ञपाटकं[7] प्रविष्टः । तत्र विप्रैर्भैक्षमदित्सुभिः प्रतिषिद्धः । ततः श्रुताभिहितचर्यामुपदिश्य भ्रातरं विप्रांश्च
20 प्रत्यबूबुधत् । विरक्तो **विजयघोषः** प्राव्राजीत् । द्वावपि मोक्षं प्रापतुः ।

अस्यां **नन्दा**भिधानो नाविकस्तरपण्यजिघृक्षया मुमुक्षुं **धर्मरुचिं** विराध्य, तस्य हुंकारेण भस्मीभूय, गृहको-
किल-हंस-सिंहभवान् यथासङ्ख्यं सभा-मृतगङ्गातीराञ्जनागिरिष्ववाप्य, तस्यैवानगारस्य तेजोनिसर्गेण विपद्य चास्यामेव
पुर्यां वटुर्भूत्वा, तथैव निधनमधिगत्यास्यामेव राजा समजनिष्ट । जातिस्मरः सार्धं श्लोकमकरोत् । अन्येद्युस्तत्रैवागतं
तमनगारं समस्यापूरणाद्विज्ञायाभययाचनपुरस्सरमुपगत्य च क्षमयित्वा परमार्हतोऽभूत् । सिद्धश्च **धर्मरुचिः** क्रमात् ।
25 सा चेयं समस्या–

गंगाए नाविओ **नंदो** सभाए घरकोइलो । हंसो मयंगतीराए सीहो अंजणपव्वए ॥ १ ॥
वाराणसीए वडुओ राया तत्थेव आयओ[8] । एएसिं घायगो जो उ सो इत्थेव समागओ ॥ २ ॥ इति ।

अस्यां **संवाहन**स्य नरपतेः सातिरेके कन्यासहस्रे सत्यपि परनृपतिपृतनावेष्टितायां पुरि राज्यलक्ष्मीं गर्भ-
स्थोऽप्यङ्ग**वीर**स्त्रातवान् ।

30 अस्यां मातङ्गऋषि**र्बल**नामा **मृतगङ्गा**तीरे लब्धजन्मा **तिन्दुको**द्याने स्थितवान् । गण्डी[9]तिन्दुकं च यक्षं
गुणगणैर्हृतहृदयमकार्षीत् । **कौशलिक**नृपदुहिता च **भद्रा** मलक्लिन्नाङ्गं तमृषिं विलोक्य निष्ठ्यूतवती । ततस्तेन
यक्षेणाधिष्ठिताङ्गी तेनैव मुनेर्वपुषि सङ्क्रम्य परिणीता त्यक्ता च मुनिना । ततो **रुद्रदेवेन** यज्ञपत्नी कृता । मासक्ष-

---

1 B श्रीसुपार्श्वं । 2 P °अश्वसेनसूनु° । 3 C पृदाकुदा । 4 B C कुलालं । 5 B °ग्रासैः खासैः । 6 P °भक्षणं ।
7 P यज्ञपाटं । 8 Pa C जाओ । 9 P गंठी ।

पणपारणे च भिक्षार्थमुपागतो मातङ्गमुनिर्द्विजातिभिरपहस्य कदर्थ्यमानं तं प्रेक्ष्य भद्रयोपलक्ष्य बोधितास्तं क्षमयामासुर्ब्राह्मणाः। प्रत्यलाभयंश्च भक्तादिभिः। विदधे विबुधैर्गन्धोदकवृष्टिः पुष्पवृष्टिर्दुन्दुभिवादनं वसुधारापातश्च।

अस्या–वाणारसीपकोट्ठए पासे गोवालि भद्दसेणे य। णंदसिरी पउमद्दह रायगिहे सेणिए वीरे ॥ १ ॥

वाणारसी य नयरी अणगारधम्मघोस-धम्मजसे। मासस्स य पारणए गोउल गंगा य अणुकंपा ॥२॥

एतदावश्यकनिर्युक्तिस्थं सविधानकद्वयमजनि। तथा हि– 5

अत्रैव पुर्यां **भद्रसेनो** जीर्णश्रेष्ठी। तस्य भार्या **नन्दा**। तयोः पुत्री **नन्दश्रीर्वर**करहिता। अत्रैव **कोष्ठके** चैत्येऽन्यदा **पार्श्वस्वामी** समवासरत्। **नन्दश्रीः** प्राव्राजीद्। **गोपाल्यार्यायाः** शिष्यतयार्पिता। सा च पूर्वमुग्रं विहृत्य पश्चादवसन्नीभूता हस्तपादाद्यक्षालयत्। साध्वीभिर्वार्यमाणा तु[1] विभक्तायां वसतौ स्थिता। तदनालोच्य मृता **क्षुल्लहिमवति** पद्मद्रहे[2] **श्रीदेवी** जज्ञे देवगणिका। भगवतः श्रीवीरस्य **राजगृहे** समवसृतस्याग्रे नाट्यविधिमुपदर्श्य गता। अन्ये त्वाहुः–करिणीरूपेण वातनिसर्गमकरोत्। **श्रेणिकेन** तस्याः स्वरूपे पृष्टे भगवानाख्यत् तस्याः 10 पूर्वभवावसन्नतावृत्तम्।

अत्रैव पुर्यां **धर्मघोष-धर्मयशसौ** द्वावनगारौ वर्षारात्रमवस्थाताम्। तौ[3] मासं मासं क्षपणेनास्थाम्। अन्यदा चतुर्थपारणके तृतीयपौरुष्यां विहाराय प्रस्थितौ शारदातपेनार्तौ तृषितौ **गङ्गामुत्तरन्तौ** मनसापि नाम्भ ऐच्छतामनेषणीयमिति। देवता तद्गुणावर्जिता गोकुलं[4] विकुर्व्य गङ्गोत्तीर्णौ तौ दध्यादिभिरुपन्यमन्त्रयत्। तौ दत्तोपयोगौ ज्ञातवन्तौ यथेयं मायेति प्रत्यषेधताम्। पुरः प्रस्थितयोस्तयोरनुकम्पया वार्दलं[5] व्यकार्षीद्देवता। तौ चार्द्रायां भूमौ शीतलवाताप्यायितौ 15 ग्रामं प्राप्य शुद्धोञ्छमादिषातामिति।

श्रीमदयोध्यायामिक्ष्वाकुवंश्यः श्रीहरिश्चन्द्रो महानरेन्द्रस्त्रिशङ्कुपुत्र **उशीनरनृपसुतया सुतारादेव्या रोहिताश्वेन**[6] च पुत्रेण सहितः सुखमनुभवंश्चिरमसात्काश्यपीम्। एकदा सौधर्माधिपतिर्दिवि दिविजपरिषदि तस्य सत्त्ववर्णनामकरोत्। तदश्रद्दधानावुभौ गीर्वाणौ **चन्द्रचूड-मणिप्रभनामानौ** वसुन्धरामवतीर्णौ। तयोरेको वनवराहरूपं विकृत्याऽ**योध्यापरिसरस्थितशक्रावतारचैत्याश्रमं** ससरम्भं भङ्क्तुं प्रववृते। अन्येद्युः सदसि सिंहासन- 20 स्थितो **हरिश्चन्द्रमहीन्द्रस्तमाश्रमोपप्लवं** शूकरोपज्ञं श्रुत्वा तत्र गत्वा बाणप्रहारेण तं वराहं प्रहतवान्[7]। तस्मिंश्च समरेऽन्तर्हिते गर्हिततरचरितः स यावत् "प्रदेशमविशत्तावत्तत्र हरिणीं स्वबाणप्रहतां, तस्याः स्फुरन्तं च गलितं गर्भं निभाल्य,[8] **कपिञ्जल-कुन्तलमित्राभ्यां** सह पर्यालोच्य, भ्रूणघ्नं स्वं शोचयन् प्रायश्चित्तग्रहणार्थं कुलपतिमुपसृत्य नमस्कृत्य गृहीत्वा चाशिषं यावदास्ते, तावद् **वञ्चना**नामकुलपतिकन्यका तुमुलमतुलमकार्षीत्। व्याहार्षीच्च–तात! अनेन पापीयसा मन्मृगी हता, तन्मरणे च[10] मम [11]मन्मातुश्च मरणं भविष्यतीति निशम्य कुपितः कुलपतिर्नृपतये। ततस्तत्पदोर्निपत्य नरपति- 25 रलपत्–प्रभो! सकलामपि वसुधां प्रतिगृह्य मामेतत्प्रसादेनैसो मोचय, **वञ्चनायाश्च** मरणनिवारणाय हेमलक्षं दास्यामीति। तेनाप्योमिति प्रतिपन्नवति **कौटल्यमृषिं** सह कृत्वा नृपः स्वपुरीमागात्। ततो **वसुभूतेर्मन्त्रिणः कुन्तलस्य** च सुहृदस्तत्स्वरूपमावेद्य कोशान्निष्कलक्षमानाययत्। ततः स्थित्वा तापसः **सांगारको**[12] व्याकरोत्–असम्य जलधिमेखलामखिलामिलां त्वमदाः। [13]"ततोऽस्मदीयमेव वस्त्वसम्यमेन दीयते" इति कोऽयं न्यायः। अथ **वसुभूतिः**[14] किमपि ब्रुवाणः कुलपतिना शापादकारि कीरः, **कुन्तलस्तु**[15] शृगालः। तौ च वनमध्येऽवसताम्। राजा च मासमवधिं मार्ग- 30 यित्वा **रोहिताश्वमङ्गुलौ** लगयित्वा **सुतारया** सह **काशीं** प्रति प्राचलत्। क्रमादिमां पुरीं प्राप्य संस्थायां स्थितः। तत्र शिरसि तृणं दत्त्वा **वज्रहृदयविप्रहस्ते** देवीं कुमारं च हेमपदसहस्र्या विचिक्रिये[16]। सा तत्र खण्डनपेषणादि-

1 P पि। 2 P Pa पद्मह्रदे। 3 P तौ द्वौ। 4 P गोकुलानि। 5 P वार्दलकं। 6 B रोहिताश्वेन। 7 B प्रहीतवान्। 8 B Pa प्रवेश°। 9 Pa निर्माल्य। 10 B 'च' नास्ति। 11 P मम मातु°। 12 P सांगारको। 13 P ततोऽस्मदीयमेव यान्न दीयते, Pa ततोऽस्म दीयते। 14 C वसुभूतिं। 15 B कुन्तलस्य। 16 PPa विचिक्रिये।

कर्माणि निर्ममे । दारकश्च समित्पत्रपुष्पफलाद्याजहार । राज्ञि चिन्ताचान्तचेतसि कुलपतिः कनकं मार्गयितुमगात् । दत्तं तस्मै राज्ञा काञ्चनसहस्रपट्टकम् । कुलपतौ स्तोकमिति कुप्यत्यङ्गारकोऽवोचद्–भोः ! किमर्थं पत्नीमपत्यं च व्यक्रीणीथाः । अत्रत्यं **चन्द्रशेखरं** नरेश्वरं किं न याचसे वहुलक्षम् । राज्ञोक्तम्–असत्कुले नेदं सिध्यति । डोम्बस्यापि वेश्मनि कर्मकरत्वमुररीकृत्य दास्यामि तव काञ्चनलक्ष[1]मिति । ततः कर्म कर्तुं [2]प्रवृत्तश्चण्डालेन श्मशानरक्षणे नियुक्तः ।
5 ततः परं ताभ्याममराभ्यामकारि मारिः पुर्याम् । यथा भूपादेशानीतमान्त्रिकेण राक्षसीप्रवादमारोप्य **सुतारा** मण्डलमानीय रासभमारोपिता, यथा शुकः पावके दत्तझम्पोऽपि न दग्धः, यथा पितृवने वटोत्कलम्बितं नरं तटे च रुदन्तीं सुदतीं विलोक्य नराद्विद्याधरापहारवृत्तमाकर्ण्य तमुन्मोच्य तत्स्थाने **हरिश्चन्द्रः** स्वं नियुज्य होमकुण्डे[3] स्वमांसखण्डानि आर्पयत्, यथा [4]कुण्डमध्यान्मुखं निर्गतं शृगालश्चारटत्, तापसेन यथा व्रणरोहणमवनीपतेरकारि, यथा च पुष्पाणि गृह्णन् **रोहिताश्वो** निःशूकं[5] दन्दशूकेन दष्टः[6] संस्कारयितुमानीताच्च तस्मात्कणिटकमयाचिष्ट नृपतिः, यथा[7] च सत्त्वपरीक्षानि-
10 र्वहणप्रमुदितप्रकटितनिजरूपत्रिदशकृतपुष्पवृष्टिजयजयध्वनिः सर्वजनैः प्रशंसितः सात्त्विकशिरोमणिरिति, यथा च **बहिर्मुख**मुखाद्वराहादिपुष्पवृष्टिपर्यन्तं दिव्यमायाविलसितमवबुध्य यावच्चेतसि चमत्कृतस्तावत्स्वं स्वपुर्यां सदसि सिंहासनस्थं सपरिवारमपश्यत् । तदेतद्देवीकुमारविक्रयादि दिव्यपुष्पवर्षावसानं श्री**हरिश्चन्द्र**स्य चरित्रं सत्त्वपरीक्षानिकषोऽस्यामेव पुर्यामजनि जनजनितविस्मयम् ।

यच्च काशीमाहात्म्ये प्रथमगुणस्थानीयैरभिधीयते–यद्[8] वाराणस्यां कलियुगप्रवेशो नास्ति । तथाऽत्र प्राप्तनिधनाः
15 कीटपतङ्गभ्रमरादयः कृतानेकचतुर्विधहत्यादिपाप्मानोऽपि मनुष्यादयो वा शिवसायुज्यमिति प्रतीत्यादियुक्तिरिक्तं तदस्माभिः श्रद्धातुमपि दुःशकं किं पुनः कल्पे जल्पितुमित्युपेक्षणीयमेवैतत् ।

धातुवाद-रसवाद-खन्यवाद-मन्त्रविद्याविदुराः शब्दानुशासन-तर्क-नाटका-ऽलङ्कार-ज्योतिष-चूडामणि-निमित्तशास्त्र-साहित्यादिविद्यानिपुणाश्च पुरुषा अस्यां परिव्राजकेषु जटाधरेषु योगिषु ब्राह्मणादिचातुर्वर्ण्ये च नैके रसिकमनांसि प्रीणयन्ति । चतुर्दिगन्तदेशान्तरवास्तव्याश्चास्यां जना दृश्यन्ते सकलकलापरिकलनकौतूहलिनः ।

20 **वाराणसी** चेयं सम्प्रति चतुर्धा विभक्ता दृश्यते । तद् यथा–**देववाराणसी,** यत्र **विश्वनाथ**प्रासादः । तन्मध्ये चाश्मनं जैनचतुर्विंशतिपट्टं पूजारूढमद्यापि विद्यते । द्वितीया **राजधानी वाराणसी** यत्राद्यत्वे यवनाः । तृतीया **मदनवाराणसी;** चतुर्थी **विजयवाराणसी**ति । लौकिकानि च तीर्थानि अस्यां क इव[9] परिसंख्यातुमीश्वरः ।

अन्तर्वणं दन्तखातं[10] तडागं निकषा श्री**पार्श्वनाथ**स्य चैत्यमनेकप्रतिमाविभूषितमास्ते । अस्याममलपरिमलभरा-
25 कृष्टभ्रमरकुलसङ्कुलानि सरसीषु नानाजातीयानि कमलानि ।

अस्यां च प्रतिपदमकुतोभयाः सञ्चरिष्णवो निचाय्यन्ते शाखामृगा मृगधूर्ताश्च ।

अस्याः क्रोशत्रितये **धर्मेक्षा**नामसंनिवेशो यत्र बोधिसत्त्वस्योच्चैस्तरशिखरचुम्बितगगनमायतनम् ।

अस्याश्च सार्धयोजनद्वयात्परतश्च**न्द्रावती** नाम नगरी, यस्यां श्री**चन्द्रप्रभो**र्गर्भावतारादिकल्याणिकचतुष्टयमखिलभुवनजनतुष्टिकरमजनिष्ट ।

30 गङ्गोदकेन च जिनद्वयजन्मना च प्राकाशि **काशिनगरी** न गरीयसी कैः ।
तस्या इति व्यधित कल्पमनल्पभूतेः श्रीमान् **जिनप्रभ** इति प्रथितो मुनीन्द्रः ॥ १ ॥

॥ इति श्रीवाराणसीनगरीकल्पः ॥

॥ ग्रं० ११३, अ० २३ ॥

---

1 Pa 'लक्ष' नास्ति । 2 'प्रवृत्तः' नास्ति Pa । 3 B होमखण्डैः । 4 BD कुण्डमुखा° । 5 P नि:शूक° । 6 BPa दृष्टः । 7 P 'यथा' नास्ति । 8 B 'यद्' नास्ति । 9 B P इह । 10 P दण्डख्यातं ।

३९ श्रीमहावीरगणधरकल्पः ।

सिरिवीरस्स गणहरे इक्कारस जच्चमाहणे नमिउ । तेसिं चिअ कप्पलव भणामि समयाणुसारेण ॥ १ ॥
नाम ठाण जणया जणणीउ जम्मरिक्ख-गुत्ताइ । गिहिपरिआउ संसय-वयदिण-पुर-देस-काला य ॥ २ ॥
वयपरिवारो छउमत्थ-केवलित्तेसु वरिससंखा य । रूव लद्धी आउ सिवठाण तवु चि दाराइ ॥ ३ ॥

१ तत्थ गणहराण नामाइ–१ **इंदभूई**, २ **अग्गिभूई**, ३ **वाउभूई**, ४ **विअत्तो**, ५ **सुधम्मसामी**, 5 ६ **मंडिओ**, ७ **मोरिअपुत्तो**, ८ **अकंपिओ**, ९ **अचलभाया**, १० **मेअज्जो**, ११ **पभासो** य ।

२ इंदभूइप्पमुहा तिन्नि सहोअरा **मगहदेसे गोव्वर**गामे उप्पन्ना । विअत्तो सुहम्मो य दो वि **कोल्लाग**-सन्निवेसे । मंडिओ मोरिअपुत्तो अ दो वि **मोरिअ**सन्निवेसे । अकंपिओ **मिहिलाए** । अयलभाया **कोसलाए** । मेअज्जो **वच्छदेसे तुंगिअ**सन्निवेसे । पभासो **रायगिहे** ।

३ जणओ तिण्ह सोअराण **वसुभूई** । विअत्तस्स **धणमित्तो** । अज्जसुहम्मस्स **धम्मिलो** । मंडिअस्स 10 **धणदेवो** । मोरिअपुत्तस्स **मोरिओ** । अकंपिअस्स **देवो** । अयलभाउणो **वसू**[3] । मेअज्जस **दत्तो** । पभासस्स **बलो**[4] ।

४ जणणी तिण्ह भाउआण[5] **पुहवी** । विअत्तस्स **वीरुणी** । सुहम्मस्स **भद्दिला** । मंडिअस्स **विजय-देवा**[6] । मोरिअपुत्तस्स सा चेव । जओ **धणदेवे** परलोअ गए **मोरिएण** सा संगहिआ, अविरोहो अ तम्मि देसे । अकंपिअस्स **जयंती** । अयलभाउणो **नंदा** । मेअज्जस्स **वरुणदेवा** । पभासस्स **अइभद्द** त्ति । 15

५ नक्खत्त–इंदभूइणो जिट्ठा, अग्गिभूइणो कित्तिआ, वाउभूइणो साई, विअत्तस्स सवणो, सुहम्मसामिणो उत्तरफग्गुणीओ, मंडिअस्स महाओ, मोरिअपुत्तस्स मिगसिर, अकंपिअस्स उत्तरासाढा, अयलभाउणो मिगसिर, मेअज्जस्स अस्सिणी, पभासस्स पूसु त्ति ।

६ तिण्णि भाउणो **गोअम**गुत्ता, विअत्तो **भारद्दाय**सगुत्तो, सुहम्मो **अग्गिवेसायण**सगुत्तो, मंडिओ **वासिट्ठ**सगुत्तो, मोरिअपुत्तो **कासव**गुत्तो, अकंपिओ **गोअम**सगुत्तो, अयलभाया **हारिअ**सगुत्तो, मेअज्जो पभासो 20 अ **कोडिण्ण**सगुत्तु त्ति ।

७ गिहत्थपरिआओ–इंदभूइणो पंचास वासाइं, अग्गिभूइस्स छायालीस[1], वाउभूइस्स बायालीस, वियत्तस्स पन्नास, सुहम्मसामिस्स वि पन्नास, मंडियस्स तेवण्णा, मोरियपुत्तस्स पणसट्ठी, अकंपियस्स अडयालीस, अयलभाउणो छायालीस, मेअज्जस्स छत्तीस, पभासस्स सोलस त्ति ।

८ संसओ–इंदभूइस्स जीवे । भगवया महावीरेण छिन्नो । अग्गिभूइणो कम्मे । वाउभूइणो तज्जीव-तस्सरीरे । 25 विअत्तस्स पंचमहाभूएसु । सुहम्मसामिणो जो जारिसो इह भवे, परभवे वि सो तारिसो चेव त्ति । मंडिअस्स बंध-मुक्खेसु । मोरिअपुत्तस्स देवेसु । अकंपिअस्स नरएसु । अयलभाउणो पुन्न-पावेसु । मेअज्जस्स परलोए । पभासस्स निव्वाणे ति ।

९-१०-११-१२ दिक्खागहणमिक्कारसण्ह पि देवाणमागमणं दट्ठूण जण्णवाडयाओ उवट्ठियाण वइसाहसुद्ध-इक्कारसीए, **मज्झिमपावाए** नयरीए, **महसेणवणु**ज्जाणे, पुव्वण्हदेसकाले त्ति ।

१३ इंदभूइपमुहाण पंचण्ह पंचसया खंडिआ सह निक्खंता । मंडिअ-मोरिअपुत्ताण पत्तेअ सड्ढा तिन्निसया । 30 अकंपिआईण चउण्ह पत्तेअ तिन्निसय त्ति ।

---

1 P संसयदियगा° । 2 B C Pa दिदी । 3 P पच्चुदत्तो । 4 P बडिपिया । 5 P सोयराण । 6 मंडियस्स मोरियपुत्तस्स विजयदेवा । 7 B C बायालीस ।

१४. छउमत्थपरिआओ–इंदभूइस्स तीसं वासाइं, अग्गिभूइस्स दुवालस, वाउभूइस्स दस, विअत्तस्स दुवालस, सुहम्मस्स बायालीसं, मंडिअ-मोरिअपुत्ताणं पत्तेअं चउद्दस, अकंपिअस्स नव, अयलभाउणो दुवालस, मेअज्जस्स दस, पभासस्स अट्ठ त्ति ।

१५. केवलिविहारेणं–इंदभूई दुवालसवासाइं विहरिओ । अग्गिभूई सोलस, वाउभूई विअत्तो अ पत्तेयं अट्ठा-5 रस, अज्जसुहम्मस्स अट्ठ, मंडिअ-मोरिअपुत्ताणं पत्तेअं सोलस, अकंपिअस्स एगवीसं, अयलभाउणो चउद्दस, मेअज्जस्स पभासस्स य पत्तेयं सोलस त्ति ।

१७. इक्कारसण्ह वि वज्जरिसहनारायं संघयणं, समचउरंसं संठाणं, कणगप्पहो देहवण्णो । रूवसंपया पुण तेसिं एवं तित्थयराणं

'सव्वसुरा जइ रूवं अंगुट्ठपमाणयं विउव्विज्जा । जिणपायंगुट्ठं पइ न सोहए तं जहिंगालो ॥'

10 त्ति वयणाओ अप्पडिरूवं रूवं[1] । तओ किंचूणं गणहराणं । तत्तो वि हीणं आहारगसरीरस्स । तत्तो वि अणुत्तर-सुराणं । तत्तो जहक्कमं नवमगेविज्जगपज्जवसाणदेवाणं हीणयरं । तत्तो वि कमेण अच्चुआइसोहम्मंतदेवाणं हीणयरं । तत्तो वि भवणवईणं, तत्तो वि जोइसिआणं, तत्तो वि वंतरदेवाणं, तत्तो वि चक्कवट्टीणं हीणयरं । तत्तो वि अद्धचक्क-वट्टीणं, तत्तो वि वलदेवाणं हीणयरं । तत्तो वि सेसजणाणं छट्ठाणवडिअं । एवं विसिट्ठं रूवं गणहराणं ।

सुअं पुण–अगारवासे चउद्दसविज्जाठाणाइं; सामण्णे पुण दुवालसंगं गणिपिडगं सव्वेसिं । जओ सव्वे वि दुवा-15 लसंगप्पणेआरो ।

१७. लद्धीओ पुण–सव्वेसिं गणहराणं सव्वाओ वि हवंति । तं जहा–बुद्धिलद्धी अट्ठारसविहा[2]–केवलनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, वीअबुद्धी, कुट्ठबुद्धी, पयाणुसारित्तं, संभिन्नसोइत्तं, दूरासायण[3]सामत्थं, दूरफरिसणसामत्थं, दूरदरिसणसामत्थं, दूरग्घाणसामत्थं, दूरसवणसामत्थं, दसपुव्वित्तं, चउदसपुव्वित्तं, अट्ठंगमहानिमित्तकोसल्लं, पण्णासवणत्तं, पत्तेअबुद्धत्तं, वाइत्तं च ।

20 किरियाविसया लद्धी दुविहा–चारणत्तं, आगासगामित्तं च ।

वेउव्विअलद्धी अणेगविहा–अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, पत्ती, पकामित्तं, ईसित्तं, वसित्तं, अप्पडिघाओ, अंतद्धाणं, कामरूवित्तमिच्चाइ ।

तवाइसयलद्धी सत्तविहा–उग्गतवत्तं, दित्ततवत्तं, महातवत्तं, घोरतवत्तं, घोरपरक्कमत्तं, घोरवंभयारित्तं, अघोरगुणवंभयारित्तं च ।

25 वललद्धी तिविहा–मणोवलित्तं, वयणवलित्तं, कायवलित्तं ।

ओसहिलद्धी अट्ठविहा–आमोसहिलद्धी, खेलोसहिलद्धी, जल्लोसहिलद्धी, मलोसहिलद्धी, विप्पोसहिलद्धी, सव्वो-सहिलद्धी, आसगअविसत्तं, दिट्ठिअविसत्तं ।

रसलद्धी छव्विहा–वयणविसत्तं, दिट्ठिविसत्तं, खीरासवित्तं, महुआसवित्तं, सप्पिरासवित्तं, अमिआसवित्तं ।

खित्तलद्धी दुविहा पण्णत्ता–अक्खीणमहाणसत्तं, अक्खीणमहालयत्तं च ।

30 –एयाहिं लद्धीहिं संपन्ना सव्वे वि ।

१८. सव्वाउअं–इंदभूइस्स वाणउई संवच्छराइं । अग्गिभूइस्स चउहत्तरी, वाउभूइस्स सत्तरी, विअत्तस्स असीई, अज्जसुहम्मस्स सयं, मंडिअस्स तेआसीई, मोरिअपुत्तस्स पंचनउई, अकंपियस्स अट्ठहत्तरी, अयलभाउणो वाहत्तरी[4], मेअज्जस्स वासट्ठी, पहासस्स चालीसं ति ।

---

1 Pa °रूपं रूपं । 2 D °विज्जा । 3 Pa C °सामण° । 4 Pa वाहुत्तरी ।

१९-२० निव्वाणं च सव्वेसिं पाओवगमणमासिअभत्तेण, रायगिहे नयरे, वेभारपव्वए सजाय । पढम-पंचमवज्जा नवगणहरा जीवंते भयवंतम्मि वीरे मुक्खं पत्ता । इदभूई अज्जसुहम्मो अ तम्मि निव्वाणगए निव्वुअ त्ति ।

गोअमसामिप्पभिई[1] गणपहुणो [2]पवयणनवणमहुणो । सुगहीअनामधेया महोदयं मज्झ उवणिंतु ॥ १ ॥

जो गणहरकप्पमिणं पइप्पच्चूसं पढे पसन्नमणो । करयलमहिवसइ सया कल्लाणपरंपरा तस्स ॥ २ ॥

जिणपहसूरिहिं कओ गह-वसु-सिहि-कुं-मिअविक्कमसमासु । 5

जिट्ठसिअपंचमिबुहे गणहरकप्पो चिरं जयइ ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीमहावीरगणधरकल्पः ॥

॥ ग्रं० ६८ ॥

---

४०. कोकावसतिपार्श्वनाथकल्पः ।

नमिऊण पासनाहं पउमावइ-नागरायकयसेवं । कोकावसहीपासस्स किंपि वत्तव्वं भणिमो ॥ १ ॥ 10

सिरिपण्हवाहणकुलसमूओ हरिसउरीयगच्छालंकारभूसिओ अभयदेवसूरी हरिसउराओ एगया गामाणुगामं विहरंतो सिरिअणहिल्लवाडय[3]पट्टणमागओ । ठिओ बाहिपएसे सपरिवारो । अन्नया सिरिजयसिंहदेवनरिंदेण[4] गयखंधारूढेण रायवाडिआगएण दिट्ठो मलमलिणवत्थदेहो । राइणा गयखंधाओ उयरिऊण [†]वंदिऊण दुक्करकारओ त्ति दिन्नं मलधारि त्ति नामं । अब्भत्थिऊण[†] नयरमज्झे नीओ रण्णा । दिन्नो उवस्सओ घयवसहीसमीवे । तत्थ ठिआ सूरिणो । तस्स पट्टे कालक्कमेण [5]अणेगगंथनिम्माणविक्खायकित्ती सिरिहेमचंदसूरी संजाओ[6] । 15 ते अ पइदिअहं वासारत्तचउम्मासीए घयवसहीए गंतूण वक्खाणं करिंति । अन्नया कस्सवि घयवसही[7]गुट्ठियस्स पिउकज्जे बलिवित्थाराइकरणं घयवसहीचेइए आढत्तं । तओ वक्खाणकरणत्थमागया सिरिहेमचंदसूरी । पडिसिद्धा गुट्ठिएहिं जहा—अज्ज वक्खाणं इत्थ न कायव्वं । इत्थ बलिमंडणाइणा नत्थि ओगासो[8] । तओ सूरीहिं भणिअं—थोवमेव अज्ज वक्खाणिस्सामो, मा चउमासीवक्खाणविच्छेओ भविस्सइ त्ति । तं च न पडिवन्नं गुट्ठिएहिं । तओ अमरिसविलक्खमाणसा पडिआगया उवस्सयमायरिआ । तओ दूमिअचित्ते गुरुणो नाऊण सोवन्निअमोखदेव-नायग- 20 नामगेहिं सड्ढेहिं मा अन्नयावि परचेइए एवंविहो अवमाणो होउ त्ति घयवसहीसमीवे चेइयकारावणत्थं भूमी मग्गिआ, न य कत्थ वि लद्धा । तओ कोकओ नाम सिट्ठी भूमिं मग्गिओ । वारिओ अ सो घयवसहीगुट्ठिएहिं तिउणदम्मदाणपइच्छणेण[9] । तओ ससंघा आगया सूरिणो कोकयस्स घरं । तेण वि पडिवत्तिं काऊण भणिअं— दिन्ना मए भूमी जहोचिअमुल्लेण, परं मज्झ नामेण चेइयं कारेअव्वं । तओ सूरीहिं सावएहिं अ तह त्ति[10] पडिवन्नं । तत्थ य घयवसहीआसन्नं कारिअं चेइयं[11] कोकावसहि त्ति । ठाविओ तत्थ सिरिपासनाहो । पूइज्जइ तिकालं । 25

कालक्कमेण सिरिभीमदेवरज्जे पट्टणं भंजंतेण मालवरण्णा सा पासनाहपडिमा वि भग्गा । तओ सोवन्निअनायगसंताणुप्पन्नेहिं रामदेव-आसधर[12]सिट्ठीहिं उद्धारो कारेउमाढत्तो । आरासणाउ फल्हीतिगं आणीअं, न य तं निद्दोसं । तओ विंनतिगे वि घडिए न परितोसो संजाओ गुरूण सावयाण च । तओ रामदेवेण अभिग्गहो गहिओ, जहाह अकाराविअ पाससामिबिंबं न भुंजामि त्ति । गुरुणो वि उववासे कुणंति स्म । तओ अट्ठमोववासे

1 P °प्पमुहा । 2 D पवयणोवयण°, P Pa पवयण च वण° । 3 Pa °पाडय° । 4 P °देवेण । † एतदन्तर्गता पङ्क्तिः पतिता P आदर्शे । 5 P अणेग° । 6 B Pa C संजाओ । 7 B Pa C °वसहीए । 8 P पएसो । 9 P C D °दाइच्छणेण । 10 B तहित्ति । 11 Pa B C नास्ति 'चेइयं' । 12 B Pa आसापर ।

रामदेवस्स देवादेसो जाओ। जहा–जत्थ गोहलिआ[1] संपुप्फक्खया दीसई, तस्स हिट्ठा; इत्थेव चेइअपरिसरे इत्ति-एहिं हत्थेहिं फलही चिट्ठइ त्ति। खणिऊण लद्धा फलही[2]। कारिअं [3]निरुवमरूवं **पासनाह**बिम्बं। **बारससय[4]छासट्ठे विक्कम्मसंवच्छरे देवाणंदसूरी**हिं पइट्ठिअं। ठाविअं च चेइए। पसिद्धं च **कोकापासनाहु** त्ति। **रामदेव**स्स पुत्ता **तिहुणा जाजा** नामाणो। **तिहुणाग**स्स पुत्तो **मल्लओ**। तस्स पुत्ता **देल्हण-जइतसीह** 5 नामधेया, ते अ पूअंति पइदिणं पासनाहं।

अन्नया **देल्हण**स्स **सिरिसंखेसरपास**नाहेण सुमिणयं दिन्नं। जहा–पहाए घडियाचउक्कं जाव अहं **कोकापासनाह**पडिमाए सन्निहिस्सामि। तंमि घडिआचउक्के एगंमि विंबे पूइए किर अहं पूइओ त्ति। तहेव लोगेहिं पूइज्जमाणो **कोकापासनाहो** पूरेइ **संखेसरपास**नाहु व्व पच्चए। **संखेसरपासनाह**विसया पूआ[5]-जत्ताइ-अभिग्गहा तत्थेव पुरिज्जंति जणाणं। एवं संनिहिअपाडिहेरो जाओ भयवं **कोकयपासनाहो** तिचीसपव्वपमाण-10 मुत्ती **मलधारि**गच्छपडिवद्धो।

अणहिलपट्टणमंडणसिरिकोकावसहिपासनाहस्स। इअ एस कप्पलेसो होउ जणाणं धुअकिलेसो॥ १॥

॥ इति श्रीकोकावसतिपार्श्वनाथकल्पः॥

॥ ग्रं० ४०॥

---

४१. कोटिशिलातीर्थकल्पः।

नमिअ जिणे उवजीविअ वक्काइं पुव्वपुरिससीहाणं। **कोडिसिलाए** कप्पं **जिणपहसूरी** पयासेइ॥ १॥
15 इह **भरह**खित्तमज्झे तित्थं **मगहासु** अत्थि **कोडिसिला**। अज्ज वि जं पूइज्जइ चारण-सुर-असुर-जक्खेहिं॥ २॥
भरहद्धवासिणीहिं अहिट्ठियादेवयाहिं जा सययं। जोअणमेगं पिहुला जोअणमेगं च उस्सेहो॥ ३॥
तिक्खंडपुहविपइणो निअं परिक्खंति बाहुबलमखिला। उप्पाडिअ जं हरिणो सुरनरखयराण पच्चक्खं॥ ४॥
पढमेण कया छत्तं बीएणं पाविआ सिरं जाव। तइएणं गीवाए तओ चउत्थेण वच्छथले[6]॥ ५॥
उअरंतं पंचमएण तह य छट्ठेण कडियडं[7] नीआ। ऊरूपज्जंतं[8] सत्तमेण[9] उप्पाडिआ हरिणा॥ ६॥
20 जाणूसु अट्ठमेणं नीआ चउरंगुलं तु भूमीओ। उद्धरिआ चरमेणं कन्हेणं वामबाहाए॥ ७॥
अवसप्पिणिकालवसा कमेण हायंति माणवबलाइं। तित्थयराणं तु बलं सव्वेसिं होइ इगरूवं॥ ८॥
उप्पाडेउं तीरइ जं बलवंतीए सुहडकोडीए। तेणेसा[10] कोडिसिला इक्कलेणावि हरिणा उ॥ ९॥
चक्काउहोत्ति नामेण **संतिनाह**स्स गणहरो पढमो। काऊण अणसणविहिं कोडिसिलाए सिवं पत्तो॥ १०॥
सिरिसंतिनाहतित्थे संखिज्जाओ मुणीण कोडीओ। इत्थेव य सिद्धाओ एवं **सिरिकुंथु**तित्थे वि॥ ११॥
25 **अर**जिणवरतित्थंमि वि बारससिद्धाओ समणकोडीओ। छक्कोडीओ रिसीणं सिद्धाओ **मल्लि**जिणतित्थे॥ १२॥
मुणिसुव्वयजिणतित्थे सिद्धाओ तिन्नि साहुकोडीओ। इक्का कोडी सिद्धा **नमि**जिणतित्थेऽणगाराणं॥ १३॥
अन्ने वि अणेगे तत्थ महरिसी सासयं पयं पत्ता। इह कोडिसिलातित्थं विक्खायं पुहविवलयंमि[11]॥ १४॥

पुव्वायरिएहिं च इत्थ सविसेसं किं पि भणियं। तं जहा–

जोअणपिहुला यामा **दसन्नपव्वय**समीवि कोडिसिला। जिणछक्कतित्थसिद्धा तत्थ अणेगाउ मुणिकोडी॥ १५॥

---

1 B गोअलिआ। 2 C पणही। 3 C निरुपम°। 4 C वासेट्ठ। 5 P नास्ति 'पूआ'; B Pa पूज्जा। 6 Pa वच्छयले; B वत्थयले। 7 Pa कडिअं नीया; B कडिअ नीयाऊ। 8 Pa D °पज्जंते। 9 B सत्तमो। 10 B C तेणं सा। 11 B वलयंति।

पढमं **संतिगणहरो चक्काउहो**ऽणेगसाहुपरिअरिओ। बत्तीसजुगेहिं तओ सिद्धा संखिज्जमुणिकोडी ॥ १६ ॥
संखिज्जा मुणिकोडी अडवीसजुगेहि **कुंथुनाह**स्स। **अर**जिणचउवीसजुगा बारसकोडीओ सिद्धाओ ॥ १७ ॥
मल्लिस्स वि वीसजुगा छक्कोडि **मुणिसुव्वय**स्स कोडितिगं। **नमि**तित्थे इगकोडी सिद्धा तेणेस कोडिसिला ॥१८॥
छत्ते सिरंमि गीवा वच्छे उअरे कडीइ ऊरूसु। जाणू कहमवि जाणू नीया सा वासुदेवेण ॥ १९ ॥
इअ **कोडिसिलातित्थं** तिहुअणजणजणिअनिव्वुआवत्थं। सुरनरखेअरमहिअं भवियाण कुणउ कल्लाणं ॥ २० ॥ 5

॥ इति श्रीकोटिशिलातीर्थकल्पः ॥

॥ ग्रं० २४, अ० ६ ॥

---

४२ वस्तुपाल-तेजःपालमन्त्रिकल्पः।

श्रीवस्तुपाल-तेजःपालौ मन्त्रीश्वरावुभावास्ताम्। यौ भ्रातरौ प्रसिद्धौ कीर्तनसंख्यां तयोर्ब्रूमः ॥ १ ॥

पूर्वं **गूर्जर**धरित्रीमण्डनायां **मण्डली**महानगर्यां श्रीवस्तुपाल तेजःपालाद्या वसन्ति स्म। अन्यदा श्रीम- 1
त्**पत्तन**वास्तव्य**प्राग्वाटान्वय**ठक्कुरश्री**चण्डपाल**ज[1] ठक्कुरश्री[3]**चण्डप्रसादा**ङ्गज मन्त्रिश्री**सोम**कुलावतंस ठक्कुरश्री-
आसराजनन्दनौ **कुमारदेवी**कुक्षिसरोवरराजहंसौ श्री**वस्तुपाल-तेजःपालौ** श्री**शत्रुञ्जय-गिरिनारा**दितीर्थयात्रायै प्रस्थितौ। **हडाला**ग्रामं गत्वा यावत्स्वां विभूतिं[4] चिन्तयतस्तावल्लक्षत्रयं सर्वस्वं जातम्। ततः **सुराष्ट्रा**स्वास्थ्यमाकलय्य लक्षमेकमवन्यां निधातुं निशीथे महाऽश्वत्थतलं खानयामासतुः। तयोः खानयतोः कस्यापि प्राक्तन कनकपूर्णः शौल्वकलशो निरगात्। तमादाय श्री**वस्तुपालस्तेजःपाल**जायाम**नुपमादेवीं** मान्यतयाऽपृच्छत्-क्वैतन्निधीयत[2] इति। तयोक्तम्-गिरिशिखर एवैतदुच्चैः स्थाप्यते यथा प्रस्तुतनिधिवन्नान्यसाद्भवति। तच्छ्रुत्वा श्रीव**स्तुपाल**स्तद् द्रव्यं श्री**शत्रुञ्जयोज्जयन्ता**दावव्ययत्। कृतयात्रो व्यावृत्तो **धवलक्क**पुरमगात्।

अत्रान्तरे **महणदेवी** नाम **कन्यकुब्जे**श्वरसुता, [या] जनकात् कञ्चुलिकापदे **गूर्जर**धरित्रीमवाप्य तदाधिपत्यं भुक्त्वा मृता सती तत्रैव देशाधिष्ठात्री देवता समजनि। सैकदा स्वप्ने **वीरधवल**नृपस्याचीकथत्-यद्वस्तुपाल-तेजः**पालौ** राज्यचिन्तकमाग्रहरौ विधाय सुखेन राज्यं शाधि। इत्थं कृते राज्य-राष्ट्रवृद्धिस्तव भवित्री-इत्यादिश्य स्वं च 20 प्रकाश्य तिरोदधे देवी। प्रातरुत्थाय नृपतिर्**वस्तुपाल-तेजःपाला**वाहूय सत्कृत्य च ज्यायसः **स्तम्भतीर्थ-धवलक्क**योराधिपत्यमदात्। **तेजःपाल**स्य तु सर्वराज्यव्यापारमुद्रां ददौ। ततस्तौ षड्दर्शनदान-नानाविधधर्मस्थानविधापनादिभिः सुकृतशतानि चिन्वन्तौ निन्यतुः समयम्।

तथा हि-लक्षमेकं सपादं जिनबिम्बानां कारितम्। अष्टादश कोट्यः षण्णवतिर्लक्षा श्री**शत्रुञ्जयतीर्थे** द्रविणं व्ययितम्। द्वादश कोट्योऽशीतिर्लक्षा श्री **उज्जयन्ते**। द्वादशकोट्यस्त्रिपञ्चाशल्लक्षा **अर्बुदशिखरे लूणिगवसत्याम्**। 25 नवशतानि चतुरशीतिश्च पौषधशालाः कारिताः। पञ्चशतानि दन्तमयसिंहासनानाम्, पञ्चशतानि पञ्चोत्तराणि समवसरणानां जादरमयानाम्। ब्रह्मशालाः सप्तशतानि सप्तदशानि। सत्राकाराणां सप्तशती। तपस्वि-कापालिकमठानां सर्वेषां भोजननिर्वापादिदानं कृतम्। त्रिंशच्छतानि द्व्युत्तराणि माहेश्वरायतनानाम्। त्रयोदशशतानि चतुरुत्तराणि शिखरबद्धजैनप्रासादानाम्। त्रयोविंशति शतानि जैनचैत्योद्धाराणाम्। अष्टादशकोटिसुवर्णव्ययेन सरस्वतीभाण्डागाराणां स्थानत्रये भरणं कृतम्। पञ्चशती ब्राह्मणानां नित्यं वेदपाठं करोति स्म। वर्षमध्ये संघपूजात्रितयम्। पञ्चदशशती 30

---

1 Pa छत्रीस°। 2 Pa नास्ति, B चन्द्रपात्मज। 3 B चन्द्रप्रसा°। 4 C 'विभूतिं' नास्ति।

श्रमणानां गृहे नित्यं विहरति स । तटिक-कार्पटिकानां सहस्रं साधिकं प्रत्यहमभुङ्क्त । त्रयोदश तीर्थयात्राः संघपतीभूय कृताः । तत्र प्रथमयात्रायां चत्वारि सहस्राणि पञ्चशतानि शकटानां सशय्यापालकानां, सप्तशती सुखासनानां, अष्टादशशती वाहिनीनां, एकोनविंशतिः शतानि श्रीकरीणां, एकविंशतिः शतानि श्वेताम्बराणां, एकादशशती दिगम्बराणां, चत्वारि शतानि सार्धानि जैनगायनानां, त्रयस्त्रिंशच्छती वन्दिजनानां, चतुरशीतिस्तडागाः सुबद्धाः, चतुःशती
5 चतुःषष्ट्यधिका वापीनां, पाषाणमयानि त्रिंशद्-द्वात्रिंशद्दुर्गाणि, दन्तमयजैनरथानां चतुर्विंशतिः, विंशं शतं शाकघटितानां, सरस्वतीकण्ठाभरणादीनि चतुर्विंशतिर्विरुदानि श्री**वस्तुपाल**स्य । चतुःषष्टिर्मसीतयः कारिताः । दक्षिणस्यां **श्रीपर्वतं** यावत्, पश्चिमायां **प्रभासं** यावत्, उत्तरस्यां **केदारं** यावत्, पूर्वस्यां **वाराणसीं** यावत् तयोः कीर्तनानि । सर्वाग्रेण त्रीणि कोटिशतानि चतुर्दश लक्षा अष्टादश सहस्राणि अष्टशतानि लोष्टिकत्रितयोनानि द्रव्यव्ययः । त्रिषष्टिवारान् संग्रामे जैत्रपत्रं गृहीतम् । अष्टादश वर्षाणि तयोर्व्याप्टतिः ।

10 एवं तयोः पुण्यकृत्यानि कुर्वतोः कियताऽपि कालेन श्री**वीरधवल**नृपः कालधर्ममवापत्[1] । ततस्तत्पट्टे तदीयस्तनयः श्रीमान् **वीसलदेव**स्ताभ्यां मन्त्रिप्रवराभ्यां राज्येऽभिषिक्तः । सोऽपि समर्थः सन् क्रमेण दुर्मदः सचिवान्तरं विधाय मन्त्रि**तेजःपाल**मपाचकार । तदवलोक्य राज्ञः पुरोधाः **सोमेश्वर**नामा महाकविर्नृपमुद्दिश्य साक्षेपं नव्यं काव्यमपठत् । तथा–

मासान्मांसलपाटलपरिमलव्यालोलतोलम्बतः प्राप्य प्रौढिमिमां समीर महतीं पश्य त्वया यत्कृतम् ।
15 सूर्याचन्द्रमसौ निरस्ततमसौ दूरं तिरस्कृत्य यत् पादस्पर्शसहं विहायसि रजः स्थाने तयोः स्थापितम् ॥ १ ॥

इत्यादि । तयोः पुरुषरत्नयोर्वृत्तशेषमादित उत्पत्तिस्वरूपं च लोकप्रसिद्धित एवावगन्तव्यम् ।

गीताद्वायनवर्येण **सूडा**द्विज्ञाय कीर्तिता । कीर्तनानामियं संख्या श्रीमतोर्मन्त्रिमुख्ययोः ॥ १ ॥
यदध्यासितमर्हद्भिस्तद्धि तीर्थं प्रचक्षते । अर्हन्तश्च तयोश्चित्तमध्यवात्सुरहर्निशम् ॥ २ ॥
तत्तीर्थरूपयोर्युक्त्या पुरुषश्रेष्ठयोस्तयोः । कीर्तनोत्कीर्तनेनापि न्याय्या कल्पकृतिर्न किम् ॥ ३ ॥
20 इत्यालोच्य हृदा कल्पलेशं मन्त्रीशयोस्तयोः । एतं विरचयां चक्रुः श्री**जिनप्रभ**सूरयः ॥ ४ ॥

॥ श्रीमहामात्यवस्तुपालतेजःपालकीर्तनसंख्याकल्पः ॥

॥ ग्रं० ५३, अ० ६ ॥

---

1 C अगात् ।

४३. ढिंपुरीतीर्थकल्पः ।

श्रीपार्श्वं[1] चेल्लणामिल्य ध्यात्वा श्रीवीरमप्यथ । कल्प श्रीढिंपुरी[2]तीर्थस्याभिदध्मे यथाश्रुतम् ॥ १ ॥

पारेतजनपदप्रान्तश्चर्मणवत्यास्तटे महानद्याः । नानाधनवनगहना[3] जयत्यसौ ढिंपुरीति पुरी ॥ २ ॥

अत्रैव भारते वर्षे विमलयशा नाम भूपतिरभूत् । तस्य सुमङ्गलादेव्या सह विषयसुखमनुभवत क्रमाज्जातमपत्ययुगलम् । तत्र पुत्र पुष्पचूलः, पुत्री पुष्पचूला । अनर्थसार्थमुत्पादयत पुष्पचूलस्य कृत लोकै- 5 र्वङ्कचूल इति नाम । महाजनोपालम्भेन[4] राज्ञा रुषितेन नि सारितो नगराद्वङ्कचूलः । गच्छंश्च पथि पतितो भीषणायामटव्या सह निजपरिजनेन स्वस्रा च स्नेहवशया । तत्र च क्षुत्पिपासार्दितो दृष्टो भिल्लै । नीत स्वपल्लीम्, स्थापितश्च पूर्वपल्लीपतिपदे पर्यपालयद्राज्यम्, अलुण्टयद्ग्रामनगरसार्थादीन् ।

अन्यदा सुस्थिताचार्या अर्बुदाचलादष्टापदयात्रायै प्रस्थितास्तामेव सिंहगुहानामपल्लीं सगच्छा प्रापु । जातश्च वर्षाकाल , अजनि च पृथ्वी जीवाकुला । साधुभि सहालोच्य मार्गयित्वा वङ्कचूलाद्वसतिं स्थितास्तत्रैव 10 सूरय । तेन च प्रथममेव व्यवस्था कृता—मम सीमान्तर्धर्मकथा न कथनीया । यतो युष्मत्कथायामहिंसादिको धर्म , न चैव मल्लोको निर्वहति । एवमस्तु इति प्रतिपद्य तस्थुरुपाश्रये गुरव । तेन चाहूय सर्वे प्रधानपुरुषा भणिता —अद्य राजपुत्रस्तनो मत्समीपे ब्राह्मणादय आगमिष्यन्ति । ततो भवद्भिर्जीववधो मांसमद्यादिप्रसङ्गश्च पल्ल्या मध्ये न कर्तव्य । एव च कृते यतीनामपि भक्तपानमजुगुप्सित कल्पत इति । तैस्तथैव कृत यावच्चतुरो मासान् । प्राप्तो विहारसमय । अनुज्ञापितो वङ्कचूलः सूरिभि —'समणाण सउणाण'मित्यादि वाक्यै । ततस्तै सह चलितो वङ्कचूलः । स्वसीमा 15 प्राप्तया तेन विज्ञप्तम्[5]—वय परकीयसीमाया न प्रविशाम इति । भणित सूरिभि —वय सीमान्तरमुपेता , तत्किमुपदिश्या- मस्तुभ्यम् ?'। तेनोक्तम्—यन्मयि निर्वहति, तदुपदेशेनानुगृह्यतामय जन । तत सूरिभिश्चत्वारो नियमा दत्तास्तद्यथा— अज्ञातफलानि न भोक्तव्यानि, सप्ताष्टानि पदान्यपसृत्य घातो देय । पट्टदेवी नाभिगन्तव्या । काकमांस च न भक्ष- णीयमिति । प्रतिपन्नाश्च[6] तेन ते । गुरून् प्रणम्य स स्वगृहानागमत् ।

अन्यदा गत सार्थस्योपरि धाट्या । शकुनकारणान्नागत सार्थ । त्रुटित च तस्य पथ्यदनम् । पीडिता क्षुधा 20 राजन्या । दृष्टश्च तै किंपाकतरु फलित । गृहीतानि फलानि । न जानन्ति ते तन्नामधेयमिति तेन न भुक्तानि । इतरै सर्वैर्बुभुजिरे । मृताश्च ते किंपाकफलै । तनश्चिन्तित तेनाहो ! नियमाना फलम् । तत एकाक्येवागत पल्लीम् । रजन्या प्रविष्ट स्वगृहम् । दृष्टा पुष्पचूला दीपालोकेन पुरुषनेपथ्या निजपत्न्या सह प्रसुप्ता । जातस्तस्य कोपस्तयोरुपरि । द्वावप्येतौ खड्गप्रहारेण छिनद्मीति यावदचिन्तयत्तावत्स्मृतो नियम । तत सप्ताष्टपदान्यपक्रम्य घात ददत्[7] खात्कृत- मुपरि खड्गेन । व्याहृत स्वस्रा 'जीवतु वङ्कचूल' इति तद्वच श्रुत्वा रञ्जितोऽसावपृच्छत् किमेतदिति[8] । सापि 25 [9]नटवृत्तान्तमचीकथत् ।

कालक्रमेण तस्य तद्राज्य शासतस्तत्रैव पल्ल्या तस्यैवाचार्यस्य शिष्यो धर्मऋषि-धर्मदत्तनामानौ कदाचि- द्वर्षारात्रमवास्थिपाताम् । तत्र तयोरेक साधुस्त्रिमासक्षपण विदधे । द्वितीयश्चतुर्मासक्षपणम् । वङ्कचूलस्तु तद्दत्तनिय- मानामायतिशुभ[9]फलतामवलोक्य व्यजिज्ञपत्—भदन्तौ ! मदनुकम्पया कमपि पेशल धर्मोपदेश दत्तम् । ततस्ताभ्या चैत्य- निधापनदेशना क्लेशनाशिनी विदधे । तेनापि शराविकापर्वतसमीपवर्तिन्या तस्यामेव पल्ल्या चर्मणवतीसरित्तीरे 30 कारितमुच्चैस्तर चारुचैत्यम् । स्थापित तत्र श्रीमन्महावीरबिम्बम् । तीर्थतया च रूढ तत् । तत्र यान्ति स्म चतुर्दिग्भ्य सङ्घा ।

---

1 Pa पार्श्व° । 2 Pa °पुर° । 3 Pa °वहना । 4 Pa °पालम्भेन । 5 Pa विज्ञप्ति । 6 Pa प्रपन्नास्तेन । 7 B ददात् । 8 B तद् । 9 Pa °फलभुमता° ।

कालान्तरे कश्चिन्नैगमः सभार्यः सर्वर्द्ध्या तद्यात्रायै प्रस्थितः । प्राप्तः क्रमेण **रन्तिनदीम्** । नावमारूढौ च दम्पती चैत्यशिखरं व्यलोकयताम् । ततः सरभसं सौवर्णकच्चोलके कुङ्कुमचन्दनकर्पूरं प्रक्षिप्य जले[1] क्षेप्तुमारब्धवती नैगमगृहिणी । प्रमादान्निपतितं तदन्तर्जलतलम् । ततो भणितं वणिजा—अहो ! इदं कच्चोलकं नैककोटिमूल्यरत्नखचितं राज्ञा ग्रहणकेऽर्पितमासीत् । ततो राज्ञः कथं छुटितव्यमिति चिरं विपद्य **वङ्कचूलस्य** पल्लीपतेर्विज्ञापितं तत् ।
5 यथाऽस्य राजकीयवस्तुनो विचितिः कार्यताम् । तेनापि धीवर आदिष्टस्तच्छोधयितुं प्राविशदन्तर्नदम् । विचिन्वता चान्तर्जलतलं दृष्टं तेन हिरण्मयरथस्थं जीवन्तस्वामिश्री**पार्श्वनाथ**बिम्बम् । यावत्पश्यति स स बिम्बस्य हृदये तत्कच्चोलकम् । धीवरेणोक्तम्—धन्याविमौ दम्पती यद्भगवतो वक्षसि घुसृणचन्दनविलेपनार्हे स्थितमिदम् । ततो गृहीत्वा तदर्पितं नैगमस्य । तेनापि दत्तं तस्मै बहुद्रव्यम् । उक्तं च बिम्बस्वरूपं नाविकेन । ततो **वङ्कचूलेन** श्रद्धालुना तमेव प्रवेश्य निष्काशितं तद्बिम्बम् । कनकरथस्तु तत्रैव मुक्तः । निवेदितं हि स्वप्ने प्राग् भगवता[2] नृपतेः, यत्र
10 क्षिप्ता सती पुष्पमाला गत्वा तिष्ठति तत्र बिम्बं शोध्यमिति । तदनुसारेण बिम्बमानीय समर्पितं राज्ञे **वङ्कचूलाय** । तेनापि स्थापितं श्री**वीरस्य** बिम्बस्य बहिर्मण्डपे यावत्किल नव्यं[3] चैत्यमस्मै कारयामीत्यभिसन्धिमता । कारिते च[4] चैत्यान्तरे यावत्तत्र स्थापनार्थमुत्थापयितुमारभन्ते राजकीयाः पुरुषास्तावत्तद्बिम्बं नोत्तिष्ठति स्म । देवताधिष्ठानात्तत्रैव स्थितमद्यापि तथैवास्ते । धीवरेण पुनर्विज्ञप्तः पल्लीपतिः—यत्तत्र देव ! मया नद्यां प्रविष्टेन बिम्बान्तरमपि दृष्टम्, तदपि बहिरानेतुमौचितीमञ्चति । पूजारूढं हि भवति । ततः पल्लीश्वरेण पृष्टा स्वपरिषत्—भो ! जानीते कोऽप्यनयोर्बिम्बयोः
15 संविधानकम् ? । केन खल्वेते नद्यान्तर्जलतले[5] [6]न्यस्ते ? । इत्याकर्ण्यैकेन पुराविदा स्थविरेण विज्ञप्तम्—देवैकस्मिन्नगरे पूर्वं नृपतिरासीत् । स च परचक्रेण समुपेयुषा सार्द्धं योद्धुं सकलचमूसमूहसन्नहनेन गतः । तस्याग्रमहिषी च निजं सर्वस्वमेतच्च बिम्बद्वयं कनकरथस्थं विधाय जलदुर्गमिति कृत्वा **चर्मणवत्यां** कोटिंबके प्रक्षिप्य स्थिता[7] । चिरं युद्धवतस्तस्य कोऽपि खलः किल वार्तामानैषीत्—यदयं नृपतिस्तेन परचक्राधिपतिनृपतिना व्यापादित इति । [8]तच्छ्रुत्वा देवी तत्कोटिंबकमाक्रम्यान्तर्जलतलं प्राक्षिपत् । स्वयं च परासुतामासदत् । स च नृपतिः परचक्रं निर्जित्य यावन्निजनगरमा-
20 गमत् तावद् देव्याः प्राचीनं वृत्तमाकर्ण्य भवाद्विरक्तः पारमेश्वरीं दीक्षां कक्षीचक्रे । तत्रैकं बिम्बं देवेन बहिरानीतं पूज्यमानं चास्ति । द्वितीयमपि चेन्निःसरति तदोपक्रम्यतामिति । तदाकर्ण्य **वङ्कचूलः** परमार्हत[9]चूडामणिस्तमेव धीवरं तदानयनाय नद्यां प्रावीविशत् । स च तद्बिम्बं कटीदघ्नवपुर्जलतलेऽवतिष्ठमानं बहिस्थशेषाङ्गं चावलोक्य निष्काशनोपायाननेकानकार्षीत् । न च तन्निर्गतमिति दैवतप्रभावमाकलय्य समागत्य च विशामीशाय न्यवेदयत्तत्स्वरूपम् । अद्यापि तत्किल तथैवास्ते । श्रूयतेऽद्यापि केनापि धीवरस्थविरेण नौकास्तम्भे जाते तत्कारणं विचिन्वता तस्य [10]हिरण्मयरथस्य
25 कीलिका लब्धा । तां कनकमयीं दृष्ट्वा लुब्धेन तेन व्यचिन्ति—यदिमं रथं क्रमात्सर्वं गृहीत्वा ऋद्धिमान् भविष्यामीति । ततश्च स रात्रौ निद्रां न लेभे । उक्तश्च केनाप्यदृष्टपुरुषेण—यदिमां तत्रैव विमुच्य सुखं[11] स्वपेयाः, नो चेत्सद्य एव त्वां हनिष्यामीति । तेन भयार्तेन तत्रैव मुक्ता युगकीलिका इत्यादि । किं न सम्भाव्यते दैवताधिष्ठितेषु पदार्थेषु ।

श्रूयते च, सम्प्रति काले कश्चिन्म्लेच्छः पाषाणपाणिः श्री**पार्श्वनाथ**प्रतिमां भङ्क्तुमुपस्थितः स्तम्भितबाहुर्जातः । महति पूजाविधौ कृते सज्जतामापन्न इति । श्री**वीर**बिम्बं महत्तदपेक्षया लघीयस्तरं श्री**पार्श्वनाथ**बिम्बमिति**महावीर**-
30 स्यार्भकरूपोऽयं देव इति मेदाश्**चेल्लण** इत्याख्यां प्राचीकशन् । श्रीम**च्चेल्लणदेवस्य** महीयस्तममाहात्म्यनिधेः पुरस्ताभ्यां महर्षिभ्यां सुवर्णमुकुटमन्त्राम्नायः समा[रा]धितः प्रकाशितश्च भव्येभ्यः । सा च **सिंहगुहा**पल्ली कालक्रमा**द्विपुरी**त्याख्यया प्रसिद्धा नगरी संजाता । अद्यापि स भगवान् श्री**महावीरः** स **चेल्लणपार्श्वनाथः** सकलसंघेन तस्यामेव पुर्यां यात्रोत्सवैराराध्येते इति ।

---

1 Pb C जलं । 2 Pa-b भवगता । 3 B नान्यं । 4 B नास्ति 'च' । 5 Pa °जलं । 6 B न्यास्ते । 7 Pa स्थितासीत् । 8 B 'तत्' नास्ति । 9 B Pa परमार्हतः चूलामणि° । 10 B हि रथस । 11 Pa नास्ति 'सुखं' ।

अन्यदा **वङ्कचूल** उज्जयिन्या रात्रपातनाय चौर्यवृत्त्या कस्यापि श्रेष्ठिन सद्मनि गत । कोलाहल श्रुत्वा [1]वलित । ततो **देवदत्ताया** गणिकाया गाणिक्यमाणिक्यभूताया गृह प्राविशत् । दृष्टा सा कुष्ठिना सह प्रसुप्ता । ततो नि सृत्य गत पुर श्रेष्ठिनो वेश्म । तत्रैकविंशोपको लेख्यके त्रुट्यतीति परपरुषाभिर्निर्भर्त्स्य नि सारितो गेहात् पुत्र श्रेष्ठिना । निरराम च यामिनी । यावद्राजकुल यामीत्यचिन्तयत्, तावदुज्जगाम धामनिधि । पल्लीशश्च नि सृत्य नगराद्गोधा गृहीत्वा तरुतले दिन नीत्वा पुना रात्रावागात् । राजभाण्डागाराद्बहिर्गोधापुच्छे विलग्य प्राविशत्कोशम् । दृष्टो 5 राजाग्रमहिष्या रुष्टया, पृष्टश्च कस्त्वमिति । तेनोचे चौर इति । तयोक्तम्–मा भैषी , मया सह सङ्गम कुरु । सोऽवादीत्–का त्वम् [2] । साऽप्यूचेऽग्रमहिष्यहमिति । चौरोऽवादीद्यद्येव तर्हि ममाम्बा भवसि, अतो यामीति निश्चिते तया स्वाङ्ग नखैर्विदार्य पूत्कृतिपूर्वमाहूता आरक्षका । गृहीतस्तै । राज्ञा चानुनयार्थमागतेन तद्दृष्टम् । राज्ञोक्ता स्वपौ(पु)रुषा – मैन गाढ कुर्याध्वमिति । ते रक्षित । प्रात पृष्ट क्षितिभृता । तेनाप्युक्तम्–देव ! चौर्यायाह प्रविष्ट । पश्चाद्देवभाण्डागारे देव्या दृष्टोऽसि । यावदन्यन्न कथयति तावत्तुष्टो विदितवेद्यो नरेन्द्र स्वीकृत पुत्रतया, स्थापितश्च सामन्त- 10 पदे । देवी च विडम्ब्यमाना रक्षिता **वङ्कचूलेन** । अहो ! नियमाना शुभफलमित्यनवरतमयमध्यासीत् । प्रेषितश्चान्यदा राज्ञा **कामरूप**भूपसाधनार्थम् । गतो युद्धे । घातैर्जर्जरितो विजित्य तमागमत् स्वस्थानम् । व्याहृता च राज्ञा वैद्या । यावद्वद्धोऽपि घातव्रणो विकसति । तैरुक्तम्–देव ! काकमासेन शोभनो भवत्ययम् । तस्य च **जिनदास**श्रावकेण सार्द्ध प्रागेव मैत्र्यमासीत् । ततस्तदानयनाय प्रेषित पुरुष पुरुषाधिपतिना, येन तद्वाक्यात्काकमास भक्षयतीति । तदाहूतश्च **जिनदासो**ऽवन्तीमागच्छन्नुभे दिव्ये सुदत्यौ रुदत्यावद्राक्षीत् । तेन पृष्टे–कि रुदिथ [2] । ताभ्या- 15 मुक्तम्–अस्माक भर्ता सौधर्माच्युत । अतो राजपुत्र **वङ्कचूल** प्रार्थयावहे । पर त्वयि गते स मास भक्षयिता ततो गन्ता दुर्गतिं तेन रुदिव । तेनोक्तम्–तथा करिष्ये यथा तन्न भक्षयिता । गतश्च तत्र । राजोपरोधाद्वङ्कचूलमवोचत्–गृहाण वलिभुक्पिशितम् । पट्टभूत सन् प्रायश्चित्त चरे । **वङ्कचूलो**ऽवोचत्–जानासि त्व यदाचर्याप्यकार्यं प्रायश्चित्त ग्राह्यम्, तत प्रागेव तदनाचरण श्रेय इति । 'प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शन वरम् ।' इति वाक्यान्निषिद्धो नृपति । विशेषप्रतिपन्ननिवहश्चाऽच्युतकल्पमगमत् । वलमानेन **जिनदासेन** ते देव्यौ तथैव रुदत्यौ दृष्ट्वा प्रोक्तम्– 20 किमिति रुदिथ [2] । न तावत्स मास प्राहित । ताभ्यामभिदधे–स ह्यधिकाराधनावशादच्युत प्राप्तस्ततो नाऽभवदस्मद्भर्तेति । एव जिनधर्मप्रभाव सुचिर परिभाव्य **जिनदासः** स्वावासमाससादेति । एव चास्य निर्मापयिता **वङ्कचूल** एवाजनि जनितजगदानन्द ॥

ढिंपुरीतीर्थरत्नस्य कल्पमेत यथाश्रुतम् । किञ्चिद्विरचया चक्रु श्रीजिनप्रभसूरय ॥ १ ॥

॥ इति श्रीचेल्लणपार्श्वनाथस्य कल्पः ॥

॥ ग्र० ११६, अ० २६ ॥

---

1 B वलित । 2 D 'ढ' नास्ति ।

४४. ढिंपुरीस्तवः[†] ।

उत्तुङ्गैर्विविधैर्नगैरुपलसच्छायैरभिभ्राजिता,
श्रीवीरप्रभुपार्श्व-सुव्रत-युगादीशादिविम्बैर्युता ।
पल्ली भूतलविश्रुता नियमिनः श्रीवङ्कचूलस्य या,
सा भूत्या चिरमद्भुतां कलयतु प्रौढिं पुरी **ढिंपुरी** ॥ १ ॥
व्योमचुम्बिशिखरं मनोहरं **रन्तिदेव**[1]तटिनीतटस्थितम् ।
अत्र चैत्यमवलोक्य यात्रिकाः शैत्यमाशु ददति स्वचक्षुषोः ॥ २ ॥
मूलनायक इहान्त्यजिनेन्द्रश्चारुलेपघटितोद्भटमूर्तिः ।
दक्षिणे जयति **चेल्लणपार्श्वो** भात्युदक् तदपरः फणिकेतुः ॥ ३ ॥
एकत **आदिजिनो** वृजिनो ऽतोऽन्यत्र[2] पुन**र्मुनिसुव्रत**नाथः ।
[3]एवमनेकजिनेश्वरमूर्तिः स्फूर्तिमदभ्रचकास्ति जिनोकः[4] ॥ ४ ॥
अत्रा**म्बिका** द्वारसमीपवर्तिनी श्री**क्षेत्रपालो** भुजपट्कभास्वरः ।
सर्वज्ञपादाम्बुजसेवना[5]ऽलिनौ संघस्य विघ्नौघमपोहतः क्षणात् ॥ ५ ॥
यात्रोत्सवानिह[6] क्षितौ [7]महसो दशम्यामालोक्य लोकसमवाय[8]विधीयमानान् ।
संभावयन्ति भविकाः कलिकालगेहे प्राघूर्णकं कृतयुगं ध्रुवमभ्युपेतम् ॥ ६ ॥
अमरमहितमेतत् तीर्थमाराध्य भक्त्या, फलितसकलकामाः सर्वमीतीर्जयन्ति ।
वहलपरिमलाढ्यं चन्दनं प्राप्य यद्वा क इव सहतु तापव्यापमालिङ्गिताङ्गम् ॥ ७ ॥
वन्द्या नन्द्यादघहतिदृढा **ढिंपुरी**तीर्थरत्नम्,
यामध्यास्ते सुरतरुरिव प्रार्थितार्थप्रदायी ।
पद्मावत्या भुजगपतिना चाविमुक्तांह्रिपार्श्वः,
कायोत्सर्गस्थित[9]वपुरयं **चेल्लणः पार्श्वनाथः** ॥ ८ ॥
शशधरहृषीकाक्षिक्षोणीमिते (१२५१) शकवत्सरे,
गृहमणिमहे संघान्वीता उपेत्य पुरीमिमाम् ।
मुदितमनसस्तीर्थस्यास्य प्रभावमहोदधे-
रिति विरचयां चक्रुः स्तोत्रं **जिनप्रभसूरयः** ॥ ९ ॥

॥ इति ढिंपुरीस्तोत्रम् ॥

॥ ग्रं० १६ ॥

---

† Pa C ढिंपुरीस्तवस्त्वयम् । 1 B रन्तिदेवकीर्तितटिनी° । 2 Pa नान्यात्र । 3 Pa एक° । 4 C जनौकः ॥ 5 Pa °केशना° । 6 C यात्रोत्सवानिहि । 7 B Pa सहसो । 8 Pa समवायि° । 9 Pa स्थिति° ।

४५. चतुरशीतिमहातीर्थनामसङ्ग्रहकल्पः ।

पर्युपास्य परमेष्ठिपञ्चकं कीर्तयामि कृतपापनिग्रहम् ।
तन्त्रवेदि[1]विदितं चतुर्युताशीतितीर्थजिननामसङ्ग्रहम् ॥ १ ॥

तथा हि–श्रीशत्रुञ्जये भुवनदीपः श्रीवैरस्वामिप्रतिष्ठितः **श्रीआदिनाथः**[2] । तथा, श्रीमूलनायकः **पाण्डवस्थापितो**[3] नन्दिवर्धनयुगादिनाथः । श्रीशान्तिप्रतिष्ठितः **पुण्डरीकः** श्रीकलशः, द्वितीयस्तु[4] **श्रीवैर-** 5 **स्वामिप्रतिष्ठितः पूर्णकलशः** । सुधाकुण्डजीवितस्वामी **श्रीशान्तिनाथः** । **मरुदेवास्वामिनी** प्रथमसिद्धा ।

श्रीउज्जयन्ते पुण्यकलश-मदनमूर्तिः **श्रीनेमिनाथः** । **काञ्चनबलानके** अमृतनिधिः **श्रीअरिष्ट-नेमिः** । **पापामठे** अतीतचतुर्विंशतिमध्यात् अष्टौ पुण्यनिधयः **श्रीनेमीश्वरादयः** ।

१ **काशहृदे**[5] त्रिभुवनमङ्गलकलशः श्रीआदिनाथः । **पारकरदेशे** श्रीआदिनाथः । **अयोध्यायां** श्रीऋ-षभदेवः । **कोल्लापुरे** वज्रमृत्तिकामयः श्री**भरतेश्वर**पूजितो भुवनतिलकः श्रीआदिनाथः । **सोपारके** जीवन्त[6]स्वा- 10 मिश्रीऋषभदेवप्रतिमा । **नगरमहास्थाने** श्रीभरतेश्वरकारितः श्रीयुगादिदेवः । **दक्षिणापथे गोमटदेवः** श्रीबाहुबलिः । **उत्तरापथे कलिङ्गदेशे** गोमटः श्रीऋषभः । **गङ्गारगढे** श्री**उग्रसेन**पूजितो मेदिनीमुकुटः श्रीआदिनाथः । **महानगर्यां** उद्दण्डविहारे श्रीआदिनाथः । **पुरिमताले** श्रीआदिनाथः । **तक्षशिलायां** बाहु-बलिविनिर्मितं धर्मचक्रम् । **मोक्षतीर्थे** श्रीआदिनाथपादुकाः । [7]**कोल्लपाक**पत्तने माणिक्यदेवः श्रीऋषभो मन्दोदरी-देवतावसरः । **गङ्गा-यमुनयोर्वेणी**सङ्गमे श्रीआदिकरमण्डलम् । 15

२ श्री**अयोध्यायां** श्रीअजितस्वामी । **चंदेर्यां** अजितः । **तारणे** विश्वकोटिशिलायां श्रीअजितः । **अंग-दिकायां** श्रीअजितः शांतिदेवताद्वयं श्रीब्रह्मेन्द्रदेवतावसरः ।

३ **श्रावस्त्यां** श्रीसंभवदेवो जाङ्गुलीविद्याधिपतिः ।

४ [8]**सेगमतीग्रामे** श्रीअभिनन्दनदेवः । **नर्मदा** तत्पादेभ्यो निर्गता ।

५ **क्रौंचद्वीपे सिंहलद्वीपे हंसद्वीपे** श्रीसुमतिनाथदेवपादुकाः । [9]**आम्बुरिणि**ग्रामे श्रीसुमतिदेवः । 20

६ **माहेन्द्रपर्वते कौशाम्ब्यां** च श्रीपद्मप्रभः ।

७ **मथुरायां** महालक्ष्मीनिर्मितः श्रीसुपार्श्वस्तूपः[10] । श्री**दशपुरनगरे** श्रीसुपार्श्वः सीतादेवी[11]देवतावसरः ।

८ **प्रभासे** शशिभूषणः श्रीचन्द्रप्रभश्चन्द्रकान्त[12]मणिमयः श्रीज्वालामालिनीदेवतावसरः । श्रीगौतमस्वामिप्रति-ष्ठितो **वलभ्यागतः** श्रीनन्दिवर्धनकारितः श्रीचन्द्रप्रभः । **नासिक्यपुरे** श्रीजीवितस्वामी त्रिभुवनतिलकः श्रीचन्द्र-प्रभः । **चन्द्रावत्यां** मन्दिरमुकुटः श्रीचन्द्रप्रभः । **वाराणस्यां** विश्वेश्वरमध्ये श्रीचन्द्रप्रभः । 25

९ **कायाद्वारे** श्रीसुविधिनाथः ।

१० **प्रयागतीर्थे** श्रीशीतलनाथः ।

११ **विन्ध्याद्रौ मलयगिरौ** च श्रीश्रेयांसः ।

१२ **चम्पायां** विश्वतिलकः श्रीवासुपूज्यः ।

१३ **काम्पील्ये** गङ्गामूले, श्री**सिंहपुरे** च श्रीविमलनाथः । 30

१४ **मथुरायां** यमुनाहृदे, समुद्रे **द्वारवत्यां, शाकपाणि**मध्ये श्रीअनन्तः ।

---

1 B वेद° । 2 Pa पूर्णकलश । 3 B °स्थापित° । 4 Pa द्वितीयो । 5 Pa काशद्रहे । 6 Pa जीवत° । 7 Pa b कोलपाक°, B कोल्पापाक° । 8 Pa सग° । 9 Pa आवुरणि° । 10 Pa °स्तम । 11 Pa सीतादेवता° । 12 B Pb °कान्ति° ।

१५. **अयोध्यासमीपे रत्नवाहपुरे** नागमहितः श्रीधर्मनाथः ।

१६. **किष्किन्धायां लंकायां पातालंकायां[1] त्रिकूटगिरौ** श्रीशान्तिनाथः ।

१७-१८. **गङ्गा-यमुनयोर्वेणीसंगमे** श्रीकुंथुनाथारनाथौ ।

१९. **श्रीपर्वते** मल्लिनाथः ।

5 २०. **भृगुपत्तने** अनर्घ्यरत्नचूडः श्रीमुनिसुव्रतः । **प्रतिष्ठानपुरे अयोध्यायां विन्ध्याचले माणिक्यदंडके** मुनिसुव्रतः ।

२१. **अयोध्यायां** मोक्षतीर्थे नमिः ।

२२. **शौर्यपुरे शङ्खजिनालये पाटलानगरे मथुरायां द्वारकायां सिंहपुरे स्तम्भतीर्थे** पाताललिङ्गाभिधः श्रीनेमिनाथः ।

10 २३. **अजागृहे** नवनिधिः श्रीपार्श्वनाथः । **स्तंभनके** भवभयहरः । **फलवर्द्धिकायां** विश्वकल्पलताभिधः । **करहेटके** उपसर्गहरः । **अहिच्छत्रायां** त्रिभुवनभानुः । **कलिकुण्डे नागह्रदे** च श्रीपार्श्वनाथः । **कुक्कुटेश्वरे** विश्वगजः । **माहेन्द्रपर्वते** छायापार्श्वनाथः । **ओंकारपर्वते** सहस्रफणी पार्श्वनाथः । **वाराणस्यां** दण्डखाते भव्यपुष्करावर्तकः । **महाकालान्तरा** पातालचक्रवर्ती । **मथुरायां** कल्पद्रुमः । **चम्पायाम**शोकः । **मलयगिरौ** श्रीपार्श्वः ।

15 २४. **श्रीपर्वते** घण्टाकर्णमहावीरः । **विन्ध्याद्रौ** श्रीगुप्तः[2] । **हिमाचले** छायापार्श्वो मन्त्राधिराजः श्रीस्फुलिङ्गः । **श्रीपुरे** अन्तरिक्षः श्रीपार्श्वः । [3]**डाकुली-भीमेश्वरे** श्रीपार्श्वनाथः । **भाइल[4]स्वामिगढे** देवाधिदेवः । **श्रीरामशयने** प्रद्योतकारि[5]श्रीवर्धमानः । **मोढेरे वायडे खेडे[6] नाणके पल्ल्यां मतुण्डके मुण्डस्थले श्रीमालपत्तने उपकेशपुरे कुण्डग्रामे सत्यपुरे टङ्कायां गङ्गाह्रदे सरस्थाने वीतभये चम्पायां [7]अपापायां पुंड्रपर्वते नन्दिवर्द्धन-कोटिभूमौ** वीरः । **वैभाराद्रौ राजगृहे कैलासे श्रीरोहणाद्रौ**

20 श्रीमहावीरः ।

अष्टापदे चतुर्विंशतिस्तीर्थकराः । **संमेतशैले** विंशतिर्जिनाः । **हेमसरोवरे** द्वासप्ततिजिनालयः । **कोटिशिला** सिद्धि[8]क्षेत्रम् ।

इति जैनप्रसिद्धानां तीर्थानां नामपद्धतेः । सङ्ग्रहोऽयं स्फुटीचक्रे श्री**जिनप्रभ**सूरिणा ॥ १ ॥

*किञ्चिदत्र यथा दृष्टं किञ्चिचापि यथा श्रुतम् । स्वतीर्थनामधेयानां पद्धतौ लिखितं मया ॥ २ ॥

25 **॥ समाप्तस्तीर्थनामधेयसंग्रहकल्पः† ॥**

॥ ग्रं० ४९, अ० २१ ॥

---

1 P विहाय नारत्यन्यत्र । 2 B श्री गुप्तिः । 3 P व्याकुली°; Pc 'डाकुली चन्द्रावत्यां मंदिरमुकुटभीमेश्वरे' एतादृशः पाठः । 4 Pa भालय° । 5 P °कारितः । 6 B Pa नास्ति 'खेडे' । 7 Pa विहाय 'अपापायां' नास्ति । 8 P Pa सिद्ध* ।

* इदं पद्यं नास्ति P आदर्शे । † P इति सर्वचतुरशीतिमहातीर्थनामसङ्ग्रहकल्पः ।

४६. समवसरणरचनाकल्पः ।

नमिऊण जिणं वीरं कप्पं सिरिसमवसरणरयणाए । पुव्वायरिअकयाहिं गाहाहिं चेव जंपेमि ॥ १ ॥
वाऊ-मेहा कमसो जोअणमूमीहिं-सुरहिजलवुट्ठी । मणिरयणभूमिरयणं कुणंति पुण कुसुमवुट्ठि वणा ॥ २ ॥
पायारतिअं कमसो कुणंति वररुप्पकणयरयणमयं । कंचणमणिमणिकविसीससोहिअं भवण-जोइ-वणा ॥ ३ ॥
गाउअमेगं छस्सयधणुहपरिच्छिन्नमंतरं तेसिं । अट्ठंगुलीकरयणी तित्तीस धणुच्चवाहल्लं ॥ ४ ॥ 5
पंचसयधणुच्चत्तं चउदारविराइआण वप्पाण । सव्वप्पमाणमेयं निअनिअहत्थेण य जिणाण ॥ ५ ॥
सोवाणदससहस्सा भूमीओ गंतु पढमपायारो । पण्णासधणुहपयरो पुणो वि सोवाणपणसहस्सा ॥ ६ ॥
तत्थ विअ बीअवप्पो पुव्वुत्तविही तयंतरे नेया । तत्तो तईओ एवं वीससहस्सा य सोवाणा ॥ ७ ॥
दस पंच पंच सहस्सा सव्वे हत्थुच्च-हत्थवित्थिन्ना । बाहिर-मज्झ-ब्भिंतरवप्पाण कमेण सोवाणं ॥ ८ ॥
तम्मज्झे मणिपीढं भूमीओ सड्ढदुन्निकोसुच्चं । दोधणुसयवित्थिण्णं चउदारं जिणधणुसमुच्चं ॥ ९ ॥ 10
सिंहासणाइ चउरो मणिपट्टिआइ तेसु चउरूवो । पुव्वमुहो ठाइ सयं छत्ततयभूसिओ भयवं ॥ १० ॥
समहिअजोअणपिहुलो तहा असोगो दुसोलसधणुच्चो । पडिबिंबतियपमुहं निच्चं तु कुणंति वंतरिआ ॥ ११ ॥
परिसाअग्गे आइसु मुणिवर-वेमाणिणीओ समणीओ । भवण-वण-जोइदेवी देवा वेमाणिअ-नरित्थी ॥ १२ ॥
जोअणसहस्सदंडो धम्मज्झओ कुडहिकेउसंकिन्नो । दो जक्ख चामरधरा जिणपुरओ धम्मचक्कं च ॥ १३ ॥
ऊसिअमय-मणितोरण-अडमंगल-पुण्णकलस-दामाइं । पंचालिअ-छत्ताइं पइदारं धूवघडिआओ ॥ १४ ॥ 15
हेम सिअ-रत्त सामरुवण्णा सुरवण य जोइ-भवणवई । पइदारं वसु वप्पे पुव्वाइसु ठंति पडिहारा ॥ १५ ॥
जयविजयाजिअ-अवराजिअगोरा रत्तकणयनीलाभा । देवी पुव्वकमेण सकच्छग ठंति कणयमए ॥ १६ ॥
जडमउडमंडिआ तह तुंबरु-खट्टंग-पुरिससिरिमाली । बहिवप्पदार दोसु वि पासेसु ठंति पइवप्पं ॥ १७ ॥
बहिवप्पे जाणाइं बीए सत्तू वि मित्तमावगया । तिरिआ मणिमयछंदे इसु पुण रयणवप्पमहिं ॥ १८ ॥
बहिवप्पदारमज्झे दो दो वावीओ हुंति वट्टम्मि । चउरससमोसरणे इग इग वावी उ कोणेसु ॥ १९ ॥ 20
दरिसिंति सीहनायं कल्लाणसद्देण सव्वओ मघं । तित्थयरपायमूले करिंति देवा निवयमाणा ॥ २० ॥
चेइद्दुम पीढछंदग-आसण-छत्तं च चामराओ अ । जं चण्णं करणिज्जं करंति तं वाणमंतरिआ ॥ २१ ॥
साहारणओसरणे एवं जत्थिड्ढिमंतु ओसरइ । इक्कु च्चिअ तं सव्वं करेइ भयणाउ इअरेसिं ॥ २२ ॥
"सूरुदयपच्छिमाए ओगाहंतीइ पुव्वओ एइ । दोहिं पउमेहिं पाया मग्गेण य हुंति सत्तन्ने ॥ २३ ॥
आयाहिणपुव्वमुहो तिदिसिं पडिरूवगाउ देवकया । जिट्ठगणी अन्नो वा दाहिणपुव्वे अदूरंमि ॥ २४ ॥ 25
जे ते देवेहिं कया तिदिसिं पडिरूवगा जिणवरस्स । तेसिं पि तप्पभावा तयाणुरूवं हवइ रूवं" ॥ २५ ॥
इत्थ महड्ढिअ पणिवयंति ठिअमवि "वयंति पणमंता । न वि जंतणा न विकहा न परप्परमच्छरो न भयं ॥ २६ ॥
तिपयगाम काउ करेइ साहारणेण सद्देण । सव्वेसिं सन्नीणं जोअणनीहारिणा भयवं ॥ २७ ॥
तत्थ अपुव्वोसरणं अदिट्ठपुव्वं च जेण समणेण । बारसहिं जोअणेहिं सो एइ अणागमो लहुआ ॥ २८ ॥
साहारणागमत्ते सदुवओगो अगाहगगिराए । नय निव्विज्जइ सोआ किढिवाणिअ-दासिआहरणा ॥ २९ ॥ 30
सव्वाउअं पि सोआ "खविज्ज जइ हु सययं जिणो कहइ । सीउण्हखुप्पिवासापरिस्समभए अविगणंतो ॥ ३० ॥

---

1 C °ओहिया । 2 Pb °ओहिय च कप्पे इ° । 3 B दुमसुरे । 4 C पव्वाइसु Pb पुव्वाइसु वाइसु । 5 B सापदरा । 6 C ठवी । 7 Pb-c ठरे इंगे । 8 C उच्छिड्ढ° । 9 Pa C जयिड्ढि°, Pb जयड्ढि° । 10 Pa सूरदय°, C सूरिदय° । 11 Pa इंत । 12 Pa वदी, C वडी । 13 Pa पुव्वत C पुव्व व । 14 Pb समरेण । 15 C °णमत्ते । 16 B सद-हिप्पमइ । 17 C सं भमइअबिअमइ ।

वित्तीओ सुवण्णस्सावारस अद्धं[1] च सयसहस्साइं । तावइअं चिअ कोडी पीईदाणं तु चक्किस्स ॥ ३१ ॥
एअं चेव पमाणं नवरं रययं तु केसवा दिंति । मंडलिआण सहस्सा पीईदाणं सयसहस्सा ॥ ३२ ॥
भत्तिविभवाणुरूवं अन्नेवि य दिंति इब्भमाईआ । सोऊण जिणागमणं निउत्तमणिओइएसुं वा ॥ ३३ ॥
रायावरायमच्चो तस्सासइ पवरजणवओ वावि । दुब्बलि खंडिअ बलि छडिअ तंदुलाणाढगं कलमा ॥ ३४ ॥
5 भाइअमुणाणिआणं अखंडफुडिआण[2] फलगसरिआणं । कीरइ बली सुरावि अ तत्थेव छुभंति गंधाई ॥ ३५ ॥
बलिपविसण[3]समकालं पुव्वद्दारेण ठाइ परिकहणा । तिगुणं पुरओ पाडण तस्सद्धं अवडिअं देवा ॥ ३६ ॥
अद्धद्धं अहिवइणो अवसेसं होइ पागयजणस्स । सव्वामयप्पसमणी[4] कुप्पइ नण्णो य छम्मासा ॥ ३७ ॥
राओवणीअसीहासणोवविट्ठो व पायपीढंमि । जिट्ठो अन्नयरो वा गणहारि करेइ बीआए[5] ॥ ३८ ॥
इअ समवसरणरयणाकप्पो सुत्ताणुसारओ लिहिओ । लेसुद्देसेण इमो **जिणपह**सूरिहिं पढियव्वो ॥ ३९ ॥

10 **॥ इति समवसरणरचनाकल्पः ॥**

॥ ग्रं० ४३ । आदितः ३२०८ ॥

आदितः सर्वकल्पेषु ग्रन्थाग्रमिह जातवान् । अनुष्टुभामष्टयुता दशनप्रमिताः शताः ॥

श्री**धर्मघोष**सूरयोऽप्येवं समवसरणरचनास्तवमाहुः—"थुणिमो केवलिवत्थं० ।" ग्रं० २३, अ० १३ ॥

---

४७. कुडुंगेश्वरनाभेयदेवकल्पः ।

15 श्वेताम्बरेण चारणमुनिनाचार्येण **वज्रसेनेन** ।

शक्रावतारतीर्थे श्री**नाभेयः** प्रतिष्ठितो जीयात् ॥ १ ॥

[6]**कुडुंगेश्वर**नाभेयदेवस्यानल्पतेजसः । कल्पं जल्पामि लेशेन दृष्ट्वा शासनपट्टिकाम् ॥ २ ॥

पूर्वं [7]**लाटदेशमण्डनभृगुकच्छपुरालङ्कारे शकुनिकाविहारे** स्थिताः श्री**वृद्धवादि**सूरयो 'यो येन निर्जीयते तेन तस्य शिष्येण भाव्य'मिति प्रतिज्ञां विधाय वादकरणार्थं **दक्षिणापथा**यातं कर्णाट[8]भट्टदिवाकरं
20 निर्जित्य व्रतं ग्राहयां चक्रिरे । **सिद्धसेनदिवाकरे**त्यभिधयाऽभ्यधुः । ततः कतिचिद्दिनैर्निःशेषानप्यागमानध्यजीगपत् । अन्यदा तु सकलानप्यागमान् संस्कृतानहं करोमीति तेन वचनमिदमूचे । ततः पूज्या अपीदमभिदधिरे—किं संस्कृतं कर्तुं न जानन्ति श्रीमन्तस्तीर्थङ्करा गणधरा वा यदर्द्धमागधेनागमानक्लृपत । तदेवं जल्पतस्तव महत्प्रायश्चित्तमापन्नम् । किमेतत्तवाग्रतः कथ्यते । स्वयमेव जानन्नसि । ततो विमृश्याभिदधे—भो भगवन् ! आश्रितमौनो द्वादशवार्षिकं पाराञ्चितं नाम प्रायश्चित्तं गुप्तमुखवस्त्रिकारजोहरणादिलिङ्गः प्रकटितावधूतरूपश्चरिष्यामीत्यावश्यकम् । उपयुक्त इति गुरुभिरभिहित-
25 माकर्ण्य देशान्तरग्रामनगरादिषु पर्यटन् द्वादशे वर्षे श्रीम**दुज्जयिन्यां कुडुंगेश्वर**देवालये शेफालिकाकुसुमरंजिताम्बरालङ्कृतशरीरः समागत्यासांचक्रे । ततो देवं कस्मान्न नमस्यतीति लोकैर्जल्प्यमानोऽपि नाजल्पत् । एवं च[9] जनपरम्परया श्रुत्वा, सर्वत्रानृणीकृतविश्वविश्वंभराङ्कितनिजैकवत्सरः श्री**विक्रमादित्य**देवः समागत्य जल्पयांचकार—क्षीरलिलिक्षो भिक्षो[10] ! किमिति त्वया देवो न नमस्यते[11] ? । ततस्त्विदमवादि वादिना—मया नमस्कृते देवे लिङ्गभेदो भवतामप्रीतये भविष्यति । राज्ञोचे—भवति (°तु ?) क्रियतां नमस्कारः । तेनोक्तम्—श्रूयतां तर्हि । ततः पद्मासनेन भूत्वा
30 [12]द्वात्रिंशद्-द्वात्रिंशिकाभिर्देवं स्तोतुमुपचक्रमे । तथा हि—

---

1 C अट्ठं । 2 Pa °फुरिआण । 3 Pa °पवसण° । 4 C °प्पसवणी । 5 B बीआ य । 6 P कुडंगेश्वर° । 7 Pa ललाट° । 8 C °पट्ट° । 9 B नास्ति 'च' । 10 P नास्ति । 11 C देवो न मंस्यते; Pa न नमस्यंते । 12 P B नास्ति 'द्वात्रिंशद्' ।

स्वयमुव भूतसहस्रनेत्रमनेकमेकाक्षरभावलिङ्गम् । अव्यक्तमव्याहतविश्वलोकमनादिमध्यान्तमपुण्यपापम् ॥ १ ॥

इत्यादि प्रथम एव[1] श्लोके प्रासादस्थितात् शिखिशिखाग्रादिव लिङ्गाद्धूमवर्तिरुदस्थात् । ततो जनैर्वचनमिदमूचे–अष्टविधेशाधीश फालाग्निरुद्रोऽय भगवान्तृतीयनेत्रानलेन भिक्षु भस्मसात्करिष्यति । ततस्तडिद्बीज इव सतडत्कार प्रथम ज्योतिर्निर्गत्याप्रतिचक्रातात्म्नमानमिथ्यादृष्टिदेवतमामूलाल्लिङ्ग द्विधा भित्त्वा प्रादुरास पद्मासनासीन स्वयमूर्भगवान्नाभिसूनुः । तदनया दर्शनप्रभावनया तीर्णं पाराञ्चिताम्भोनिधिरिति विमुच्य रक्ताम्बराणि, प्रकटीकृत्य मुखवस्त्रिका- 5
रजोहरणादिलिङ्गानि, महाराज धर्मलाभाक्षरैराशीर्वादव्याचक्रे वादीन्द्र । ततो विनयपुरस्सरम्–

सूरये **सिद्धसेनाय** दूरादुच्छ्रितपाणये । धर्मलाभ इति प्रोक्ते ददौ कोटिं नराधिप ॥ १ ॥

तत प्रभून् क्षमयित्वा नृपति स्तुतिमकार्षीत् । यथा–

उद्व्यूढपाराञ्चित**सिद्धसेनदिवाकराचार्य**कृतप्रतिष्ठ ।

श्रीमान् **कुडुङ्गेश्वरनाभिसूनु**र्देव शिवायास्तु जिनेश्वरो व ॥ १ ॥ 10

ततो भगवतो भट्टश्रीदिवाकरसूरेर्देशनया [2]सञ्जीविनीचारिचरकन्यायेन स्वाभाविकभद्रकतया विशेषत सम्यक्त्वमूला देशविरतिं प्रत्यपादि श्री**विक्रमादित्य** । ततश्च **गोहृद**मण्डले च **सांबद्रा**[3] प्रभृतिग्रामाणामेकनवतिं, **चित्रकूट**मण्डले **वसाड**प्रभृतिग्रामाणा [†]चतुरशीतिं, तथा [4]**घुटारसी**प्रभृतिग्रामाणा चतुर्विंशतिं, **मोहडवासक**मण्डले **ईसरोडा**प्रभृतिग्रामाणा[†] षट्पञ्चाशत श्री**कुडुङ्गेश्वरऋषभदेवाय** शासनेन स्वनि श्रेयसार्थमदात् । तत शासनपट्टिका
'श्रीमदु**ज्जयिन्यां**, सवत् १, चैत्रसुदि १, गुरौ, [5]भाटदेशीयमहाक्षपटलिकपरमार्हतश्वेताम्बरोपासकब्राह्मण- 15
गौतमसुतकात्यायनेन राजाऽलेखयत् ।' तत श्री**कुडुङ्गेश्वर**ऋषभदेवप्रकटीभवनदिनात् प्रभृति सर्वात्मना मिथ्यात्वोच्छेदेन सर्वानपि जटाधरादीन् दर्शनिन श्वेताम्बरान् कारयित्वा परिमुक्तमिथ्यादृष्टिदेवगुरु सकलामप्यवनीं जैनमुद्राङ्किता चकार । तत परितुष्टे श्री**सिद्धसेन**सूरिरिमिदधे वसुधाधव ।

पुण्णे वाससहस्से सयमि अहियमि नवनवइकलिए । होही **कुमरनरिंदो** तुह **विक्कमराय** ! सारिच्छो ॥ १ ॥

इत्थ ख्यातिं सर्वजगत्पूज्यता चोपगत श्री**कुडुङ्गेश्वरयुगादिदेव** इति । 20

कुडुङ्गेश्वरदेवस्य कल्पमेत यथाश्रुतम् । रुचिर रचया चक्रु श्री**जिनप्रभ**सूरय ॥ १ ॥

॥ इति कुडुङ्गेश्वरयुगादिदेवकल्पः ॥

॥ ग्र० ५५, अ० १८ ॥

---

1 C नास्ति 'एव'। 2 B P सञ्जीव°। 3 B सावदा, P सावदा। † एतदन्तर्गत पाठ नास्ति P आदर्शे। 4 C घटारसी। 5 B C भाट°।

४८. व्याघ्रीकल्पः ।

यः स्यादाराधको जन्तुः श्रेयस्तत्कीर्तनाद् ध्रुवम् । इत्यालोच्य हृदा किंचिद्व्याघ्रीकल्पं वदाम्यहम् ॥ १ ॥
श्रीशत्रुञ्जयनाभेयचैत्यवप्रस्य कर्हिचित् । प्रतोलीद्वारमावृत्य काचिद्व्याघ्री समास्थिता ॥ २ ॥
निरीक्ष्य निश्चलाङ्गीं तामातङ्कातुरमानसाः । जनाः श्राद्धा जिनं नन्तुं वहिस्तो न ढुढौकिरे ॥ ३ ॥
5 राजन्यः साहसी कोऽपि तस्याः पार्श्वमुपासृपत् । सा तु तं प्रति नाकार्षीत् हिंसाचेष्टां मनागपि ॥ ४ ॥
विश्वस्य बाहुजस्तस्य कुतोऽप्यानीय तत्पुरः । आमिषं मुमुचे सा च दृशापि न तदस्पृशत् ॥ ५ ॥
अथ श्राद्धजनोऽप्येत्य त्यक्तभीस्तत्पुरः क्रमात् । तरसा सरसं भक्ष्यं[1] पानीयं चोपनीतवान् ॥ ६ ॥
तदप्यनिच्छन्तीं दृष्ट्वा तां दध्यौ जनता हृदि । नूनं जातिस्मरैषाऽत्र तीर्थेऽनशनमाददे ॥ ७ ॥
श्लाघ्यस्तिर्यग्भवोऽप्यस्याश्चतुर्धाऽऽहारमुक्तितः । एकाग्रचक्षुषा चैषा देवमेव निरीक्ष्यते[2] ॥ ८ ॥
10 अभ्यर्च्य[3] गन्धपुष्पाद्यैः श्राद्धाः साधर्मिकीधिया । सम्भावयां बभूवुस्तां स्फीतसङ्गीतकोत्सवैः ॥ ९ ॥
निराकारं प्रत्याख्यातं तेऽथ[4] तस्या अचीकरन् । मनसैव श्रद्दधाना सा स्वीचक्रे च तन्मुदा ॥ १० ॥
इत्थं सा तीर्थमाहात्म्यात्समृध्यच्छुद्धवासना । दिनानुपोष्य सप्ताष्टान्नष्टपापा ययौ दिवम् ॥ ११ ॥
चन्दनागरुभिस्तस्या वपुः संस्कार्य संज्ञिनः । प्रतोल्या दक्षिणे पक्षे शैलीं मूर्तिं न्यवीविशन् ॥ १२ ॥
तीर्थचूडामणिर्जीयात्सैष श्रीविमलाचलः । भवेयुर्यत्र तिर्यञ्चोऽप्येवमाराधिकाग्रिमाः ॥ १३ ॥
15 व्याघ्रीकल्पमिमं कृत्वा श्रीजिनप्रभसूरयः । पुण्यं यदार्जयंस्तेन श्रीसङ्घोऽस्तु सुखास्पदम् ॥ १४ ॥

॥ इति व्याघ्रीकल्पः ॥

॥ ग्रं० १४ ॥

---

1 B C भक्ष्यं । 2 C निरीक्षते । 3 B अभ्यर्च्य । 4 B ते च; C तथा ।

४९. अष्टापदगिरिकल्पः ।

अट्ठावयदेहपह भवकरिअट्ठावय नमिय उसहं । अट्ठावयस्स गिरिणो जंपेमि समासओ कप्पं ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दक्खि(°क्खि)णभरहद्धमज्झे नवजोअणविच्छिन्ना बारसजोअण-दीहा अउज्झा नाम नयरी । सा य सिरिउसभ-अजिअ-अभिनंदण-सुमइ-अणंताइजिणाण जम्मभूमी । तीसे अ उत्तरदिसाभाए[1] बारसजोअणेसु अट्ठावओ नाम केलासापरामिहाणो रम्मो[2] नगवरो अट्ठजोअणुच्चो सच्छ- 5 फालिहसिलामओ, इत्तुच्चिअ लोगे धवलगिरिति पसिद्धो । अज्जावि अउज्झापरिसरवत्तिउड्डयकूडोवरि[3] ठिएहिं निम्मले नहयले धवला सिहरपरंपरा तस्स दीसइ । सो पुण महासरोवरघण[4]सरसपायवनिज्झरवारिपूरकलिओ परिपाससं-चरंतजलहरो मत्तमोराइविहगकुलकलयलमुहलो किंनरखेअररमणीरमणिज्जो चेइअवंदणत्थमागच्छंतचारणसमणाइलोगो आलोअमित्तेण पि खुहापिवासावहरणो आसन्नवत्तिमाणससरोवरविराइओ अ । एअस्स उवच्चयासु साकेअवासिणो जणा नाणाविहकीलाहिं कीलंति म्ह । तस्सेव य सिहरे उसभसामी चउदसमभत्तेण पज्जंकासणट्ठिओ अणगाराणां 10 दसहिं सहस्सेहिं समं माहबहुलतेरसीए अभीइरिक्खे पुव्वण्हे निव्वाणमणुपत्तो । तत्थ सामिणो देहं सक्कारिय सक्काइएहिं । पुव्वदिसाए सामिणो चिया, दक्खिणदिसाए इक्खागुवंसीण, पच्छिमदिसाए सेससाहूण । तम्मि चियाठाणतिगे देवेहिं थूभतिगं कयं । भरहचक्कवट्टिणा य सामिसक्कारासन्नभूयले जोअणायामो तदद्धपिहुलो तिगाउअसमूसिओ सिंहनिसिज्जा नामधिज्जो पासाओ रयणोवलेहिं वड्ढइरयणेण कारिओ । तस्स चत्तारि दुवाराणि फालिहमयाणि । पइदारं उभओ पासेसु सोलस रयणचंदणकलसा । पइदारं सोलस रयणमया तोरणा । दारे दारे सोलस अट्ठमंगलाइं । तेसु दुवारेसु चत्तारि 15 विसाला मुहमंडवा । तेसिं मुहमंडवाण पुरओ चत्तारि पेक्खामंडवा । तेसिं पेक्खामंडवाण मज्झभागेसु वइरामया अक्खवाडा । अक्खाडे अक्खाडे मज्झभागे रयणसिंहासणं । पत्तेअं[5]पेक्खामंडवग्गे मणिपीढिआओ । तदुवरि रयणमया चेइअथूभा । तेसिं चेइअथूभाण पुरओ पत्तेअं पइदिसं महइमहालिआ मणिपीढिआ । तदुवरि पत्तेअं चेइअपायवा । पंचसयधणुप्पमाणाओ चेइयथूभसमुहीओ सव्वगरयणनिम्मिआ †उसभा वद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा नामिगाओ† पलिअंकासणनिसण्णाओ मणोहराओ सासयजिणपडिमाओ नंदीसरदीवचेइअमज्झे व हुत्था । तेसिं च 20 चेइअथूभाण पुरओ पत्तेअं चेइअपायवा । तेसिं चेइअपायवाण पुरओ पत्तेअं मणिपीढिआओ, तासिं च उवरिं पत्तेअं इंदज्झओ । इंदज्झयाण पुरओ पत्तेअं नंदापुक्खरिणी त्ति सोवाणा सतोरणा सच्छसीअलजला पुण्णा विचित्त-कमलसालिणी मणोहरा [6]दहिमुहाधारपुक्खरिणीनिभा । सीहनिसिज्जामहाचेइअमज्झभागे महइमहालिआ मणिपी-ढिआ । तीए उवरिं चित्तरयणमओ देवच्छंदओ । तदुवरि नाणावण्णसुगमओ उल्लोओ । उल्लोअस्स अंतरे [7]पासओ अ वइरामया अंकुसा । तेसु अंकुसेसु ओलंबिया कुंभमिज्जआमलगथूलमुत्ताहलमया हारा । हारपंतेसु अ विमलाओ 25 मणिमालिआओ । *मणिमालिआण पंतेसु वइरमालिआओ* । चेइअभित्तीसु विचित्तमणिमया गवक्खा डज्झमाणागरु-धूमसमूहवमालिआ । तम्मि देवच्छंदे रयणमईओ उसभाइचउवीसजिणपडिमाओ निअनिअसंठाण-माण-वण्णधराओ ‡कारियाओ भरहचक्किणा । तत्थ सोलस पडिमाओ‡—उसभ-अजिअ-संभव-अभिनंदण सुमइ-सुपास-सीअल-सिज्जंस-विमल अणंत-धम्म-संति-कुंथु-अर-नमि-महावीराणं सुवण्णमईओ । मुणिसु-व्वय-नेमीण रायावट्टमईओ । चंदप्पह-सुविहीण फलिहमईओ । मल्लि-पासनाहाण वेरुलिअमईओ । 30 पउमप्पह-वासुपुज्जाण पउमरायमईओ । तासिं च सव्वासिं पडिमाणं लोहिअक्खपडिसेगा, अंकरयणमया नहा । पडिसेगो नाम नहपज्जंतेसु जावयरसु व लोहिअक्खमणिरससेगो जं दिज्जइ । नाही-केसंतभूमी-जीहा-तालु-सिरीवच्छ चूचु-

---

1 P भागे । 2 P आदर्शे एवैतत्पदम् । 3 Pa B उड्डयज्झाडोवरि । 4 'घण' नास्ति P । 5 B P दिक्खा° ।
† P उसभवद्धमाण-चंदाणण-वारिसेणनामिगाओ । 6 P दिहि° । 7 P पासाओ । * एतदन्तर्गतं वाक्यं नोपलभ्यते Pa आदर्शे ।
‡ एतदन्तर्गता पंक्ति P आदर्शे एव प्राप्यते ।

ग-हत्थ-पायतलानि[1] तवणिज्जमयाणि । नयणपम्हाणि, कणीणिगाओ, मंसू, भमुहाओ, रोमाणि, सिरकेसा रिट्ठरयणमया । उट्ठा विद्दुममया । फालिहमया दंता । वयरमईओ सीसघडीओ । अंतो लोहिअक्खपडिसेगाओ, सुवण्णमईओ नासिआओ । लोहिअक्खपडिसेगपंताइं अंकमयाइं लोअणाइं । तासिं च पडिमाणं पिट्ठे पत्तेअं इक्किक्का रयणमई मुत्ता-पवाल-जाल-कंस-कोरण्ट-मल्लदामं फालिहमणिदंडं सिआयवत्तं धारिंती छत्तहरपडिमा । तासिं च उभयपासे पत्तेअं उक्खित्तमणिचाम-5 राओ रयणमईओ चमरधारपडिमाओ । पडिमाणं च अग्गे पत्तेअं दो दो नागपडिमाओ, *दो दो जक्खपडिमाओ, दो दो भूअपडिमाओ,* दो दो कुंडधारपडिमाओ कयंजलीओ रयणमईओ सव्वंगुज्जलाओ पज्जुवासिंति । तहा देवच्छंदे चउवीसं रयणघंटाओ, चउव्वीसं माणिक्कदप्पणा, तहेव ठाणट्ठिअदीविआओ सुवण्णमईओ; तहा रयणकरंडगाइं, पुप्फचंगेरिआओ, लोमहत्थाइं, पडलीओ, आभरणकरंडगाइं, कणगमयाणि, धूवदहणाणि, आरत्तिआणि, रयणमंगलदीवा, रयणभिंगारा, रयणत्थालाणि, तवणिज्जपडिग्गहा, रयणचंदणकलसा, रयणसिंहासणाणि, रयणमयाणि अट्ठमंगलाणि, सुवण्णमया 10 तिल्लसमुग्गया, कणगमयाणि धूवभंडाणि, सुवण्णमया उप्पलहत्थगा । एअं सव्वं पत्तेअं पडिमाणं पुरओ हुत्था । तं चेइअं चंदकंतसालसोहिअं, ईहामिग-उसभ-मगर-तुरंगम-नर-किंनर-विहग-वालग-रुरु-सरभ-चमर-गय-वणलयाविचित्तं रयणथंभसमाउलं, पडागारमणिज्जं, कंचणधयदंडमंडिअं, ओअट्टिअकिंकिणीसद्दमुहलं, उवरि पउमरायकलसविराइअं, गोसीसचंदणरसघासय (?) लंछिअं । माणिक्कसालमंजिआहिं विचित्तचिट्ठाहिं अहिट्ठिअनिअंवं, बारदेसमुभयओ चंदणरसलित्तकलसजुअलंकिअं, तिरियं वद्धोलंविअधूवियसुरहिदामरम्मं, पंचवण्णकुसुमरइयघरतलं, कप्पूरागरुमिगमयधूवधूमं-15 धारियं, अच्छरगणसंकिण्णं, विज्जाहरीपरिअरिअं, अग्गओ पासओ पच्छा य चारुचेइअपायवेहिं मणिपीढिआहिं च विभूसिअं **भरह**स्स आणाए जहाविहि वड्ढइरयणेण निप्पाइअं । तत्थेव दिव्वरयणसिलामईओ नवनवइभाऊणं पडिमाओ कारिआओ, अप्पणो अ पडिमा सुस्सूसमाणा कारिआ । चेइआओ बाहिं एगं भगवंतस्स **उसभ**सामिणो थूभं, एगूणं च सयं भाउगाणं थूभे कारविंसु । इत्थ गमणागमणेणं नरा पुरिसा मा आसायणं काहिंति त्ति लोहजंतमया आरक्खगपुरिसा कारिआ । तेण तं अगम्मं जायं । गिरिणो अ दंता दंडरयणेणं छिन्ना । अओ सो गिरी अणारो-20 हणिज्जो जाओ । जोअणंतराणि अ अट्ठपयाणि मेहलारूवाणि माणुसअलंघणिज्जाणि कारिआणि । अओ चेव **अट्ठावओ** त्ति नामं पसिद्धं ।

तओ कालक्कमेण चेइअरक्खणत्थं सट्ठिसाहस्सीए **सगर**चक्कवट्टिपुत्ताणं दंडरयणेण पुढविं खणित्ता वोले (?) सहस्सजोअणा परिहा कया, दंडरयणेण **गंगा**तडं विदारित्ता जलेणं पूरिआ । तओ **गंगा** खाइअं पूरित्ता, अट्ठावयासण्णगामनगरपुराइअं पलावेउं पउत्ता । पुणो दंडरयणे आयड्ढिअ **कुरूणं** मज्झे, **हत्थिणाउरं** दक्खिणेण, **कोसलदेसं** 25 पच्छिमेण, **पयागं** उत्तरेण, **कासिदेस**स्स दक्खिणेणं, **वज्झ**मज्झे दक्खिणेणं, **मगहाणं** उत्तरेणं, मग्गनईओ कड्ढंती **सगरा**इट्ठेण **जण्हु**पुत्तेणं **भगीरह**कुमारेणं पुव्वसमुद्दमोआरिआ । तप्पभिइ **गंगासागर**तित्थं जायं ।

इत्थेव य पव्वए अट्ठ उसभसामिणो नत्तुआ, नवनउई **बाहु-बलि**प्पमुहा पुत्ता य सामिणा सद्धिं, एवं अट्ठुत्तरसयं एगसमएण उक्कोसोगाहणाए अच्छेरयभूआ सिद्धा ।

इत्थ पव्वए ससत्तीए आरोढुं जो मणुओ चेइयाइं वंदए सो मुक्खं इहेव भवे पाउणइ त्ति सिरि**वद्धमाण**-30 सामिणा सयं वण्णिओ एसो । तं सोउं भयवं **गोअमसामी** लद्धिनिही इमं नगवरमारूढो । चेइआइं वंदित्ता असोगतरुतले वेसमणस्स पुरओ साहूणं तवकिसिअंगत्तणं वक्खाणंतो सयं च उवचिअसरीरो वेसमणस्स-'अहो ! अन्नहावाई-कारि'त्ति विअप्पनिवारणत्थं 'पुंडरीयज्झयणं' पण्णविंसु । **पुंडरीओ** किल पुट्ठसरीरो वि भावसुद्धीए सव्वट्ठसिद्धिं गओ । **कंडरीओ** उण दुव्वलदेहो वि सत्तमपुढवीए । तं च पुंडरीअज्झयणं वेसमणसामाणिएणं अवधारिअं **गोअमगुहाओ** सोऊणं । सो अ **तुंबवण**सन्निवेसे **धणगिरि**पत्तीए **सुनंदाए** गब्भे उववज्जिअ दसपुव्वधरो

---

1 B °तलाणि । * एतदन्तर्गता पंक्तिर्नास्ति Pa ।

वइरसामी जाओ। अट्ठावयाओ ओअरमाणेण च **गोअम**सामिणा **कोडिन्न-दिन्न-सेवालि**तावसा तिउत्तर-पनरससयसंखा दिक्खिया। ते खलु जणपरंपराए इत्थ तित्थे चेइअवंदगो सिवं इहेव पावइ त्ति **वीर**वयणं सुच्चा पढम-बीअ-तइअमेहलासु जहासंखं **कोडिन्ना**इआ आरूढा अहेसि। तओ परं गंतुमचयंता **गोअम**सामिं अप्पडिह-यमुत्तरंतं दट्ठु विम्हिअ पडिबुद्धा निक्खंता य।

तत्थेव पव्वए **भरह**चक्कवट्टिपमुहाओ अणेगा महरिसिकोडीओ सिद्धाओ। तत्थेव य **सुबुद्धी** नाम **सगर**-5 चक्किमहामच्चो **जन्हु**माईण सगरसुआण पुरओ, **आइच्चजसाओ** आरब्भ पचासलक्खे कोडिसागरोवमकालमज्झे **भरह**महारायनससमुब्भूआण रायरिसीण चित्ततरगंडियाए सव्वट्ठसिद्धि†गइं मुक्खगइं च वाहरित्था।

इत्थेव पव्वए पवयणदेवयानीयाए **वीरमईए**† चउवीसजिणपडिमाण भाले सुवण्णमया रयणखचिया तिलया दिन्ना। तओ तीए धूसरीभवं जुगलधम्मिभवं देवभवं च लद्धूण **दमयंतीभवे** सपत्ते तिमिरपहयरावहारिभालयले साभाविअं तिलयं संजायं।

इत्थेव पव्वए **वालिमहरिसी** कयकाउस्सग्गो ठिओ। अह विमाणखलणकुविएण **दसग्गीवेण** पुव्ववेरं सरं-तेण[1] तल्भूमिं खणित्ता, तत्थ पविसिअ एअं निअवेरिणं सह **अट्ठावयगिरिणा** उप्पाडिअ **लवणसमुद्दे** खिवामि त्ति बुद्धीए विज्जासहस्सं सुमरित्ता उप्पाडिओ गिरी। तं च ओहिनाणेण नाउं चेइअरक्खानिमित्तं पायगुट्ठेण गिरिमत्थयं सो रायरिसी चंपित्था। तओ संकुचिअगत्तो दसाणणो मुहेण रुहिरं वमंतो आरावं मिल्हित्था। तत्तुच्चिअ **रावणु** त्ति पसिद्धो। तओ मुक्को दयालुणा महरिसिणा पाएसु पडित्ता खामित्ता य सट्ठाणं गओ। इत्थेव **लंकाहिवई** जिणाणं 1[~] पुरओ पिक्खणयं करिंतो दिव्वसेण वीणातन्तीए तुट्टाए मा पिक्खणयरसभंगो होउ त्ति निअभुआउ्हारु कड्ढित्तु वीणाए लाइ। अन (एव[2]) भुअवीणावायणए भत्तिसाहसतुट्ठेण **धरणिंदेण** तित्थवंदणागएण **रावणस्स** अमोह-विजया सत्तिरूवकारिणी विज्जा दिन्ना।

तत्थेव पव्वए **गोअम**सामिणा सिंहनिसिज्जाचेइअस्स दक्खिणदुवारे पविसंतेण पढमं चउण्ह संभवाईण पडि-माओ वंदिआओ, तओ पयाहिणेण पच्छिमदुवारेसु पासाईण अट्ठण्ह, तओ उत्तरदुवारे धम्माईण दसण्ह, तओ पुव्व-20 दुवारे दो चेव उसभ-अजिआण ति।

जं[3] तित्थमिणमगम्मं ता[4] फलिहं[5]वणगहणसमरवालेहिं[6]। जलपडिर्निनियचेईअज्झयकलसाइ पि जं पिच्छे ॥ १ ॥

भविओ विसुद्धभावो पूआण्हवणाइ तत्थ वि कुणंतो। पावइ जत्ताइफलं जं भावोचिअ फलं दिसइ ॥ २ ॥

भरहेसरनिम्मिविआ चेइअथूभे इह पडिमजुत्ते। जे पणमंति महंति अ ते धन्ना ते सिरीनिल्या ॥ ३ ॥

इअ अट्ठावयकप्पं **जिणपह**सूरीहि निम्मिअं भव्वा। भाविंति निअमणे[6] जे तेसिं कल्लाणमुल्लसइ ॥ ४ ॥ 25

अष्टापदस्तवे पूर्वं योऽर्थः संक्षिप्य कीर्तितः। विस्तरेण स एवास्मिन् कल्पेऽस्माभिः प्रकाशितः ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीअष्टापदकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० ११८ ॥

---

† एतदन्तर्गता पंक्ति पतिता B P Pa आदर्शेषु। 1 P खरितेन। 2 'व' नास्ति P Pa B। 3 B तो, Pa b यावत्। 4 Pa फलिह°। 5 P Pb °वालेहिं। 6 Pa नियमेण।

५०. हस्तिनापुरतीर्थस्तवनम् ।

अभिवन्द्य जगद्वन्द्यान् श्रीमतः **शान्ति-कुन्थ्वरान्** ।
स्तुत्यं वास्तोष्पतिस्तोमैः स्तौमि तीर्थं **गजाह्वयम्** ॥ १ ॥

शतपुत्र्यामभून् **नाभिसूनोः** सूनुः **कुरुर्नृपः** । **कुरुक्षेत्र**मिति ख्यातं राष्ट्रमेतत्तदाख्यया ॥ २ ॥
5 कुरोः पुत्रोऽभवद् **हस्ती** तदुपज्ञमिदं पुरम् । **हस्तिनापुर**मित्याहुरनेकाश्चर्यसेवधिम् ॥ ३ ॥
श्री**युगादि**प्रभोराद्या चोक्षैरिक्षुरसैरिह । **श्रेयांस**स्य गृहे पञ्चदिव्याढ्याऽजनि पारणा[1] ॥ ४ ॥
जिनास्त्रयोऽत्राजायन्त **शान्ति-कुन्थुरर**स्तथा । अत्रैव सार्वभौमर्द्धिं[2] बुभुजुस्ते महीभुजः ॥ ५ ॥
मल्लिश्च समवासार्षीत्तेन चैत्यचतुष्टयी । अत्र निर्मापिता श्राद्धैर्वीक्ष्यते महिमाद्भुता ॥ ६ ॥
भासतेऽत्र जगन्नेत्रपवित्रीकारकारणम् । भवनं चा**ऽम्बिका**देव्या यात्रिकोपप्लवच्छिदः ॥ ७ ॥
10 **जाह्नवी** क्षालयत्येतच्चैत्यभित्तीः स्ववीचिभिः । कल्लोलोच्छालितैर्भूयो भक्त्या स्नात्रचिकीरिव ॥ ८ ॥
सनत्कुमारः [3]**सुभूमो महापद्म**श्च चक्रिणः । अत्रासन् **पाण्डवाः** पञ्च मुक्तिश्रीजीवितेश्वराः ॥ ९ ॥
गङ्गदत्तः कार्तिकश्च श्रेष्ठिनौ **सुव्रत**प्रभोः । शिष्यावभूतां **विष्णुश्च नमु**चेरत्र शासिता ॥ १० ॥
कलिदर्पद्रुहं स्फीतसङ्गीतां सद्वसुव्ययाम् । यात्रामासूत्रयन्त्यत्र भव्या निर्व्याजभक्तयः ॥ ११ ॥
शान्तेः कुन्थोऽरव (रस्य) चतुष्कल्याणी चात्र पत्तने । जज्ञे जगज्जनानन्दा **सम्मेताद्रौ** च निर्वृतिः ॥ १२ ॥
15 भाद्रस्य[4] सप्तमी श्यामा नभसो नवमी शितिः । द्वितीया फाल्गुनस्यांत्या तिथ्योऽमूर्वो दिवश्च्युतेः ॥ १३ ॥
ज्येष्ठे त्रयोदशी कृष्णा माधवे च चतुर्दशी । मार्गे च दशमी शुक्ला तिथयो जनुषस्तु वः ॥ १४ ॥
शुक्रे चतुर्दशी श्यामा राधे बहुलपञ्चमी । महस्येकादशी शुभ्रा जज्ञुर्दीक्षादिनानि च ॥ १५ ॥
पौषस्य नवमी श्येनी तृतीया धवला मधोः । ऊर्जस्य द्वादशी श्वेता ज्ञानोत्पत्तेरहानि वः ॥ १६ ॥
शुक्रे त्रयोदशी कृष्णा वैशाखे पक्षतिः[5] शितिः । मार्गे वलक्षा दशमी मुक्तेर्वस्तिथयः क्रमात् ॥ १७ ॥
20 भवादृशानां पुरुषरत्नानां जन्मभूरियम् । स्पृष्टाऽप्यनिष्टं शिष्टानां पिनष्टि किमुत स्तुता ॥ १८ ॥

तादृग्विधैरतिशयैः पुरुषप्रणीतै-र्विभ्राजितं जिनपतित्रितयी[6]महैश्च ।
भागीरथीसलिलसङ्गपवित्रमेत-ज्जीयाच्चिरं **गजपुरं** भुवि तीर्थरत्नम् ॥ १९ ॥
इत्थं **पृषत्कविषयार्कमिते शकाब्दे** वैशाखमासशितिपक्षगषष्ठतिथ्याम् ।
यात्रोत्सवोपनतसंघयुतो यतीन्द्रः स्तोत्रं व्यधाद् **गजपुरस्य जिनप्रभाख्यः** ॥ २० ॥

25 **॥ इति श्रीहस्तिनापुरस्तवनम्, कृतिः श्रीजिनप्रभसूरीणाम् ॥**

॥ ग्रं० २१, अ० १६ ॥

---

1 Pa पारणे । 2 Pa C आ महिमाद्भुवैभौमर्द्धि । 3 P Pa सनत्कुमारसुभूमौ । 4 Pa भाद्रपदस्य । 5 Pa-c पक्षितिः । 6 B Pa त्रितयैः; C तृतीयैः ।

५१. कन्यानयमहावीरकल्पपरिशेषः।

अह विज्जातिलयमुणी आएसा संघतिलयसूरीण। परिसेसलव जपइ कनाणयवीरकप्पस्स ॥ १ ॥

तहा हि–भट्टारया सिरिजिणप्पहसूरिणो सिरिदउलतावादनयरे साहु पेथड–साहु सहजा–ठ० अचलकारिअचेइआण तुरुकेहिं[1] कीरमाण भग फुरमाणदसणपुव्व निवारिता, सिरिजिणसासणपभावणातिसय कुणता, पाडिच्छगाण सिद्धतवायण दिंता, तवस्सीण अगाणगपविट्ठागमतवाइ कारिंता, विणेयाण अवरगच्छय[2]मुणीण पि 5 पमाण-वागरण कव्व-नाडयालकाराइ सत्थाइ भणता, उब्भडवायभडगायाण वाइविंदाण अणप्पदप्पमवहरता, सानसेस वच्छरतिगमइक्कमति।

इओ अ सिरिजोगिणिपुरे सिरिमहम्मदसाहिसगाहिराओ कहिंचि अवसरे पत्थुआए पडिअगुट्ठीए सत्थवियारससयमावन्नो सुमरेइ गुरूण गुणे, भणइ अ–जइ ते भट्टारया सपय मह सहालकरण हुता ता मज्झ मणोगयसमत्थससयसल्लुद्धरणे हेलाए खमता। नूण विहप्पई तब्बुद्धिपराजिओ चेव भूमिमुज्झिअ सुन्न गयणदेसमल्लीणो। 10 इत्थ गुरूण भूवइकिज्जमाणगुणवन्नणावसरे, अवसरन्नू तकाल[3] दउलतावादादागओ ताजलमलिको [†]भूमिअलमिलिअभालवट्टो विन्नवेइ–महाराय! सति ते तत्थ महप्पाणो। पर तन्नयरनीरमसहमाणा किसिअगा गाढ वट्टंति। तओ समरिअगुरुगुणपब्भारेण भूमिनाहेण सो चेव मीरो आइट्ठो[†]–भो मलिक! सिग्घ गतूण दुवीरखाने लिहावेसु फुरमाण। पेसेसु तत्थ। जहा तारिससामग्गीए चेव भट्टारया पुण इत्थ इति। तओ तेण तहेव कए, पेसिअ फुरमाण। कमेण पत्त सिरिदउलतावाददीवाणे। भणिय च सविणय नयरनायगेण सिरिकुतुलखानेण भट्टारयाण सिरिपातसाहिफुरमाणागमण ढिल्लीपुर पइ पत्थाण चाइट्ठ। तओ दिणदसगब्भतरे सन्नहिऊण जिट्ठसिअबारसीए रायजोगे 15 संघसत्थिअपरिसाए अणुगम्ममाणा पत्थिआ महयाविच्छड्डेण गुरुणो। कमेण ठाणे ठाणे महूसवसयाइ पाउब्भावयता, विसमदूसमादप्प दलता, सयलतरालजणवयजणनयणकोऊहलमुप्पाअयता, धम्मट्ठाणाइ उद्धरता, दूरओ उक्कठाविसट्टलसमागच्छतआयरियवग्गेहि वदिज्जमाणा, पत्ता रायभूमिमडण सिरिअल्लावपुरदुग्ग। तओ तारिसपभावणापगरिसासहिष्णुमिलक्खुकय विप्पडिवत्तिं मुणिऊण, ताण चेव गुरूण सीसुत्तमेहि रायसमामडणेहि गुरुगुणालकिअ- 20 देहेहि सिरिजिणदेवसूरीहिं विन्नत्तेण भूवइणा सम्मुह पविट्ठाविएण सबहुमाण फुरमाणेण मलिकपचप्पिअसयलसत्थिअवत्थुणो विसेसओ जिणसासण पभावयता, सड्ढ मास अच्छिअ, पत्थिआ अल्लावपुराओ। पुणो वि धरणीनाहेण सिरिसिरोहमहानयरे समुहपेसिअमसिणसिणिद्धदेवदूसप्पायनत्थदसगेण अलकरिआ, जाव हम्मीरवीररायहाणीपरिसरदेसेसु सपत्ता।

इओ चिरोवचिअमचिराएण अभिमुहमागएहिं दसणनिमित्तओ वि अमयकुडण्हाएहि व धन्नमप्पाण मन्नमा- 25 णेहिं आयरियजदसयभावयविंदेहिं परिअरिआ भद्दवयसीअबीआए जाया रायसभामडण जुगप्पहाणा। तक्खण आणदभरनिब्भरेहिं नयणेहिं अब्भुत्थाणमिवायरतेण सिरिमहम्मदपातसाहिणा पुच्छिआ कोमलगिराए कुसलपउत्तिं। चुबिओ अ ससिणेह गुरूण करो धरणिराएण, धरिओ अ हिअए अचतादरपरेण। गुरूहि पि तक्कालकविअअहिनवासीवयणदाणेण चमक्कारिअ नरेसरमाणस। पेसिआ य महामहसार विसालसाल पोमहसाल। आइट्ठा य महीनाहेण गुरूण सह गमणाय पहाणपुरिसा हिंदुअरायाणो, सिरिदीनारपमुहा महामलिका य। पणमति सयसा- 30 हस्सा चिरकठिआ सावयलोआ। मिलिआ य चिरदसणरालसा नायरलोआ। सगया य कोऊहलेण पगइजाणवयजणा। तओ वदिविंदेहिं मोगावलीहि थुवता, भूवालप्पसाइअभूरिभेरीवेणुवीणामद्दलमुइगपडुपडहअमलसखमुगलाइ[4]निउलवाइअरवेण दिअनराल मुहल विणिम्मविंता, विप्पवग्गेहिं वेअज्झुणीहिं थुणिज्जता, गधव्वेहि सूहवाहि व गाइज्जमाणमगला, पत्ता

1 Pa C तुरुकेहिं 2 Pa अवरगच्छमु°। 3 B तक्काले। † एतदन्तर्गत पाठ पतित Pa आदर्शे। 4 P1 °मुगला°, C मुगला°।

तक्कालं सिरि**सुरताणसराइ**पोसहसालं। कया य वद्धावणयमहूसवा संघपुरिसेहिं। वाइओ अ भद्दवयसिअतइआदिणे सयलसंघकारिअमहूसवसारं सिरि**पज्जोसवणाकप्पो**। पत्ता य ठाणे ठाणे आगमणप्पभावणालेहा। रंजिआ सयलदेससंघा। मोइआ अणेगे रायवंदिवद्धा रायदिज्जसयसाहस्सा सावया। इअरलोगा य करुणाए उम्मोइआ कारा-हिंतो। दिन्ना दाविआ य अपइट्ठाणं पइट्ठा। कया य काराविआ य अणेगसो जिणधम्मप्पभावणा।

5 एवं णिच्चं रायसभागमणपंडिअवाइअविंदविजयपुव्वं पभावणाए पयट्टमाणाए, कमेण वासारत्तचउमासीए वइक्कंताए, अन्नया फग्गुणमासे **दउलतावादा**ओ आगच्छंतीए **मगदूमई जहां**[1] नामधिज्जाए निअजणणीए संमुहं पट्ठिएण चउरंगचमूसमूहसन्नद्धेण सुरत्ताणेण अब्भत्थणापुरस्सरं चालिआ गुरुणो अप्पणा समं। **वडथूण**ठाणे भिट्टिआ जणणी। महाराएण दिन्नं सव्वेसिं महादाणं। परिधाविआ सव्वे पहाणकवाइ[2]वत्थाइं। कमेण पत्तो महूसवमइं रायहाणिं। सम्माणिआ गुरुणो वत्थकप्पूराईहिं। तओ चित्तसिअदुवालसीए रायजोगे महारायाणमापुच्छिअ पातसाहिदत्तसाइवा-

10 ण[3]छायाए कया नंदी। तत्थ दिक्खिआ पंच सीसा। मालारोवण-संमत्तारोवणाईणि अ धम्मकिच्चाइं कयाणि। विच्चिअं वित्तं **थिरदेवनंदणेण ठ० मदनेन**। आसाढसुद्धदसमीए अ पइट्ठिआणि अहिणवकारिआणि तेरस बिंबाणि, महावित्थरेणं। तत्थ विच्चिअं बिंबकारावएहिं बहुअं वित्तं। विसेसओ साहु**महाराय**तणएण **अजयदेवेण** त्ति।

तहा अन्नया नरिंदेण दूरओ निच्चं समागमणे गुरूणं कट्ठं ति चिंतिऊण पदिन्ना सयमेव निअपासायपासे सोहंतभवणराई अभिणवसराई; आइट्ठा य वसिउं तत्थ सावयसंघा। **'भट्टारयसराइ'** त्ति कयं से सयं नरिंदेण

15 नामं। कारिओ तत्थेव **वीर**विहारो पोसहसाला य पातसाहिणा। तओ **तेरसयनवासिअ**वरिसे आसाढकिण्हसत्तमीए सुमह(°मुहु)त्ते महीवइसमाइट्ठगीयनट्टवाइअसंपदाए पयडिज्जमाणअमाणमहूसवसारं, सयं नरिंदेण दाविज्जमाण-मंगलं, पविट्ठा पोसहसालं भट्टारया। संतोसिआ पीइदाणेणं विउसा। उद्धरिआ दाणेणं दीणाणाहाइलोआ।

चालिआ पुणऽन्नया मग्गसिरमासे पुव्वदिसजयजत्तापत्थिएण अप्पणा सह नरिंदेण। कारिआ ठाणे ठाणे वंदि-मोअणाइणा जिणधम्मप्पभावणा। उद्धरिअं सिरि**महुरातित्थं**। संतोसिआ दाणाईहिं दिअवराइणो। निच्चं पवासूणं

20 खंधावारे कट्ठं ति मन्नमाणेण महीनाहेण **खोजे जहांमलिकेण** सद्धिं **आगरा**नगराओ पडिपेसिआ रायहाणिं पइ सच्चपइन्ना गुरुणो। गहिऊण सिरि**हत्थिणाउर**जत्ताफुरमाणं समागया निअट्ठाणे मुणिवइणो। तओ मेलिऊण चउव्विहं संघं काऊण य पुत्त [4]**चाहड**सहिस्स साहु**बोहित्थ**स्स संघवइत्ततिलयं। पट्ठिआ सुमुहुत्ते सायरियाइपरिवारा सिरि**हत्थिणाउर**जत्तं गुरुणो। विहिआ ठाणे ठाणे संघवइ**बोहित्थे**ण महूसवा। संपत्ता तित्थभूमिं, कयं च वद्धावणयं। ठाविआणि तत्थ गुरूहिं अहिणवकारिअपइट्ठिआणि सिरि**संति-कुंथु-अर**जिणबिंबाणि, **अंबिआ**पडिमा

25 य चेइअट्ठाणेसु। कया य संघवच्छल्लाइमहूसवा संघवइणा संघेण य। पूइआ वत्थभोअणतंबोलाईहिं वणीमगसत्था। आगयमित्तेहिं जत्ताओ गुरूहिं वइसाहसुद्धदसमीदिणे तं चेव दूरीकयसयलदुरिअडिंबं[5] सिरि**महावीर**बिंबं ठाविअं महूसवसारं, साहिरायकारिअविहारे, तहेव पूइज्जइ संघेण। विसेसओ दिसिजत्ताओ समागए महाराए पवट्टंति ऊसवा चेइयवसहीसु। संमाणेइ गुरुणो उत्तरोत्तरमाणदाणेण सिरिसव्वभोमो। वज्जंति पइदिसं सूरिसव्वभूमाणं पभावणा-सारा जसपडहा। विहरंति निरुवसग्गं[6] सव्वदेसेसु सेअंवरा दिअंवरा य रायाहिरायदिन्नफुरमाणहत्था। **खरतरग**च्छा-

30 लंकारगुरुप्पसायाओ सगसिन्नपरिभूए वि दिसिचक्के कयाइं गुरूहिं फुरमाणगहणेण [7]अकुदोभयाइं सिरि**सित्तुज्जगिरिनार-फलवद्धि**प्पमुहतित्थाइं। उज्जोइआ इच्चाइकिच्चेहिं सिरि**पालित्तय-मल्लवाइ-सिद्धसेणदिवायर-हरिभद्दसूरि-हेमचंदसूरि**प्पमुहा पुव्वपुरिसा। किं बहुणा सूरिचक्कवट्टीणं गुणेहिं आवज्जिअस्स नरिंदस्स पयडा एव पयट्टंति सयलधम्मकज्जारंभा। वाइज्जंति पइ पच्चूसं चेइअवसहीसु जमलसंखा। किज्जंति धम्मिएहिं **वीरविहारे** वज्जंतगुहिरमद्दलमुइंगमुगलतालपिक्खणयसारं महापूआओ। वासिंति सिरि**महावीर**पुरओ भविअलोअउग्गाहिज्जमाण-

---

1 Pa मगदूमइं जहा; D मगदूमइ जहा। 2 C °कवान्नत्थाइं। 3 Pa सायवाण°; C °साइवाणसालयाए। 4 C बाहड-सहस्स। 5 C विडिंवं। 6 B °सग्गा। 7 Pa अकुतो°।

कप्पूरागुरुपरिमलुग्गारा दिसिचक्क । संचरति हिंदुअरज्जे इव, दूसमसूसमाए इव, अणज्जरज्जे वि दूसमाए जिणसासण-प्पभावणापरायणा सिच्छाए मुणिणो । किं च, लुढति गुरूण पायवीढे किंकरा इव पच्चदसणिणो सपरिवारा । पडि-च्छति पडिच्छगा इव गुरुवयण । सेवति अ निरतर दारदेसट्ठिआ गुरुदसणूसुगा इह-परलोअकज्जत्थिणो परतित्थिणो । निवअब्भत्थणाओ गच्छति निच्च रायसभाए गुरुणो । मोआविंति बदिवग्ग । उप्पायति जिणुत्ताणुसारिजुत्तिजुत्तवय-णेहिं निरतर रायमणे कोउहल्ल । महल्लचरिआ सुचारित्तिणो पवट्टति पए पए पभावण । गगोदयसच्छचित्ता धव- 5
लिंति निअजसचदिमाएहिं अतरालाइ । उज्जीविंति वयणामएहिं जीवलोग । सदसणिणो परदसणिणो अ वहति सिर-ट्ठिअ[1] आण समग्गवावारेसु । वक्खाणिंति अणन्नासाहारणभगीए स-परसिद्धत जुगप्पहाणा । एआरिसा पभावणापगा-रिसा, पयड चेव परिभाविज्जमाणा, निच्च पि वट्टमाणा किंचिअमित्ता अप्पमईहिं कहेउ सक्का । केवल जीवतु वच्छर-कोडीओ, पभावयतु सिरिजिणसासण सुचिर इमे सूरिवरा ।

सिरिजिणपहसूरीण गुणलेसथुई पभावणग ति । परिसेसे परिकहिआ कन्नाणयवीरकप्पस्स ॥ १ ॥ 10

॥ इति कन्यानयश्रीमहावीरकल्पपरिशेषः ॥

॥ ग्र० १०८ ॥

---

५२ कुल्यपाकस्थऋषभदेवस्तुतिः ।

श्रीकुल्यपाक[2]प्रासादाभरण शरण सताम् ।
माणिक्यदेवनामानमानमामि जिनर्षभम् ॥ १ ॥ 15

श्रीमाणिक्यदेवनमस्कारः ।

श्रीकुल्यपाकपुरलक्ष्मीशिरोऽवतस-प्रासादमध्यमनिमेष्यमधिष्ठितस्य ।
माणिक्यदेव इति य प्रथित पृथिव्याम्, तस्याङ्घ्रियुग्ममभिनौमि जिनर्षभस्य ॥ १ ॥
तीर्थेशिना समुदयो मुदितेन्द्रचन्द्र-कोटीरकोटितटघृष्टपदासनानाम् ।
मह्यु मदारणदुरल्पवनशाखिलेखा-पेषाय मत्तकरिण करिण दधातु ॥ २ ॥ 20
हेतूपपत्तिसुनिरूपितवस्तुतत्त्वम्, स्याद्वादपद्धतिनिवेशितदुर्नयौघम् ।
सत्सिद्धवल्लिविपिन भुवनैकपूजा-पात्र जिनेन्द्रवचन शरण प्रपद्ये ॥ ३ ॥
आरुह्य खे चरति खेचरचक्रिण या, नाभेयशासनरसालवनान्यपुष्टा ।
चक्रेश्वरी रुचिरचक्रविरोचिहस्ता, शस्ताय साऽस्तु नवविद्रुमकायकान्ति ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीमाणिक्यदेवऋषभस्तुतयः ॥ 25

---

1 B सिरिट्ठि । 2 Pa कुल्यपाद° ।

५३. आमरकुण्डपद्मावतीदेवीकल्पः ।

आमरकुण्डकनगरे तिलङ्गजनपदविभूषणे रुचिरे ।
गिरिशिखरभुवनमध्यस्थिता जयति पद्मिनीदेवी ॥ १ ॥

अस्ति [1]स्वस्तिकरसमस्तगुणगणनीरन्ध्रेपु अन्ध्रेष्वामरकुण्डं नाम नगरमभ्रंलिहरम्यहर्म्यश्रेणिविश्राणितनयनान-
5 न्दं[2] स्निग्धनानाविधच्छायातरुपरिष्कृतं मञ्जुगुञ्जन्मधुकरनिकरपरिकरितकुसुमसौरभसंरम्भ[3]सुरभीकृतदिग्वलयं विमलबहल-
सलिलकलिलसरित्सरोवरशोभितं दुर्गमदुर्गतया विपक्षपक्षैरक्षोभितम् । किं वा तस्य पुरवरस्य वर्णयामः ?—यत्र करवीरसुमन-
सोऽपि मृगमदगन्धयः । विशिष्टेक्षुयष्टि-विपुलकदलीफल-चङ्गनारङ्ग-नैकप्रकारसहकार-सरसपनस-पुन्नाग-नागवल्ली-पूग-स्वा-
दुच्च(त्व)शालिनालिकेरफलप्रभृतीनि हृद्यखाद्यानि; फलन्ति प्रतिऋतु सौरभ्यभरनिर्भरवासितदिक्पालयः शालयः, वीक्ष्यन्ते
परीक्षकैर्विपणिषु पट्टांशुकप्रमुखासिचयनिचयमौक्तिकरत्नादीन्यगण्यानि पण्यानि । इत एव निष्पन्नसुरंगलव्यपदेशपेश-
10 लमेकशिलापत्तनम् । तत्समीपभूमिमलंकरिष्णुर्विष्णुपदचुम्बिशिखरपरम्पराशेखरितः सर्वतो रमणीयः पर्वतः पा-
तयितुमीश्वरः सौन्दर्यगर्वतः पर्वतराजमास्ते । तदुपरि परिणाहारोहशालिश्रीऋषभ-शान्तिनाथादिजिनप्रतिमालङ्कृताः
कृतजनमनःप्रसादाः प्रासादाः[4] शोभन्ते शुभंयवः । तत्रैकत्र पवित्रतरे पारगतसद्मनि छद्मनिर्मुक्तमना मनागपि न[5] विषय-
सुखैः क्षुभितहृदयः *सहृदयहृदयाह्लादिदयोदयः* प्रतिवसति स जितसरो विसरयकारिचरणचर्यावशीकृतपद्मावती-
देवीलब्धप्रतिष्ठो मेघचन्द्रनामा दिगम्बरः [6]व्रतिपतिरेकोऽनेकान्तिपरपरिषदन्वासितपदः । स चैकदा श्रावकगोष्ठी-
15 मनुज्ञाप्य प्रतस्थे स्थानान्तरविहरणाय । यावत्कियतीमपि भुवमगमत्, स्वहस्ताभरणं नाद्राक्षीत् पुस्तकम् । ततश्चाहो
नः प्रमद्वरता येन स्वपुस्तकमपि व्यस्मार्ष्मेति क्षणं विमृश्य सद्यश्छात्रमेकं क्षत्रियजातीयं माधवराजनामधेयं न्यावर्त-
यत् पुस्तकानयनाय । स च[7] छात्रो वलित्वा मठमशठमतिर्यावत्प्रविशति तावदपश्यदेकयाऽद्भुतरूपधेयश्रिया स्त्रिया तं
पुस्तकमूरूपरि न्यस्तम् । यावन्निर्भीकमक्षुब्धचेतास्तदूरोर्ग्रहीतुं प्रवृत्तस्तं तावत्सा वरवर्णिनी तत्पुस्तकं स्वस्कन्धदेशस्थमदी-
दृशत् । तदनु स छात्रो मात्रोत्तीर्णवैया[8]त्यात्तदूरौ चरणं दत्वा स्कन्धादपि तद्ग्रहीतुं प्रावृतत् । ततस्तया राज्यार्होऽय-
20 मिति विमृश्य विधृतः करे, अभिहितश्च—वत्स ! किमपि वृणु, तत्तुभ्यमहं प्रयच्छामि । तुष्टाऽसि तव साहसिक्येन ।
तदनन्तरं शिष्येण निजगदे—जगदेकवन्द्यो मद्गुरुः सर्वं मह्यमभिरुचितमर्थं प्रदातुं समर्थ एवास्ति । तत्किमहं शुभवति !
भवतीं प्रार्थये इत्यभिधाय छात्रः पुस्तकमादाय च स्वाचार्यसविधमागच्छत् । तदखिलमपि स्वरूपं निवेद्य पुस्तक-
माचार्याय समार्पिपत् । क्षपणकगणाधिपतिरवोचद्—भद्र ! सा न स्त्रीमात्रं, किन्तु भगवती पद्मावती देवता सा ।
तद्गच्छ, लिखितहृद्यपद्यमिदं पत्रं तस्यै दर्शयेति । गुर्वादेशं तथेति प्रतिपद्य सद्य एव विनेयो व्याघुट्य तं मठं गत्वा
25 तस्यै तत्पत्रं समर्प्य पुरस्तस्थौ । देव्यप्यवाचयत्; यथा—

अष्टौ दन्तिसहस्राणि नव कोट्यः पदातयः । रथाश्वा लक्षसंख्याश्च कोशश्चास्मै प्रदीयताम् ॥ १ ॥

भगवत्यपि पद्यार्थमवधार्य तस्मादन्तेवासिने चतुरगस्तुरगः प्रददे । जगदे चासौ—यदेनमधिरुह्य व्रजतु
भवान् । यत्पत्रे लिखितमास्ते तत्सर्वं त्वत्पृष्ठत एव समेष्यति । केवलं गिरिवराऽध्वना त्वया गन्तव्यम्, पृष्ठतश्च नावलो-
क्यम्—इति तद्वचनं तथेत्युरीकृत्य कृत्यवित्तद्गिरिविवरमनुप्रावीविशदश्वम् । यावद् द्वादश योजनान्यत्राजीद्वाजी । ततः पश्चा-
30 दागच्छदतुच्छकरिघटाघण्टाटणत्कारतुमुलमतुलमुभाकर्ण्य समाकर्ण्य कुतूहलोत्तालतया स छात्रः सपदि पश्चाद्भागं
सिंहावलोकितन्यायेन निभालयांबभूव । यावदवैक्षिष्ट करितुरगादिसमूहसङ्कुलां सेनाम् । तस्मिंश्च विस्मयरसमयहृदयीभूते
तत्रैव द्वादशयोजनान्ते स तदधिष्ठितस्तुरङ्गमपुङ्गवोऽवास्थित । तदनु च स माधवराजः परमजैनस्तया पृतनया परिवृ-
तस्तत्रैव नगरं निवेश्य तत्र देव्या भवनं च विधाप्य पुनरानमत्कुण्ड(आमरकुण्ड ?) नगरमागत्य राज्यलक्ष्मी

---

1 C स्वस्ति समस्त° । 2 C नयानन्दं । 3 'संरंभ' नास्ति B । 4 B 'प्रासादाः' नास्ति । 5 'न' नास्ति Pa ।
* C नास्ति वाक्यमिदम् । 6 Pa व्रतपति° । 7 'च' नास्ति Pa । 8 C वैयावृत्यात्त° ।

[1]पर्यपालयद्भूपालमौलिलालितशासन । प्रासाद चाभ्रकषशिखर हिरण्मयदण्डकलशध्वजभ्राजिष्णुमचीकरत् । प्रत्यतिष्ठिपच्च तत्र विनीयमाणनमस्कुर्वाणमनुष्यचेतस श्रीपद्मावतीं देवीम् । पर्यपूपुजच्च पर्याप्तभक्तितरङ्गितमनास्त्रिपवणमष्टविधपूजया । विद्यते च तदद्यापि भुवनोदरव्यापिमाहात्म्य भगवत्या मन्दिरममन्दलक्ष्मीक भव्यजनतया पर्युपास्यमानम् । तस्य च गिरिविवरस्य[2] द्वारि विपुलशिलापट्टमद्यापि दत्तमस्ति, यथा तेन पथा सर्वोऽपि न प्रविशति । तत्र हि शिलामुद्घाट्य महतीं पूजा कृत्वा प्रविश्य प्रथम लुठना गन्तव्य कियतीमपि कलाम्, तदग्रे चोपविष्टैश्चलनीयम्, अग्रेतरा च महत्य- 5 वकाशे ऊर्ध्वर्जुभिरेव यावद्देवीसदन किल गन्तव्यमिति । प्रत्यूहव्यूहसमानतया कष्टमयाच न कश्चिदायस्थद्विवरद्वारमुद्घाटयितु पाटवमसाहसिक कल्पयतीति शिलापिहितद्वारि विवरस्थान एव सर्वेऽपि श्रद्धालव पद्मावत्याः पूजा कुर्वते, प्राप्नुवन्ति च विघ्नध्रीचीरभिरुचितार्थसिद्धी । माधवराजस्य कंकतिग्रामवास्तव्यत्वाद्वशजा पुरटिरित्तमराज-पिण्डिकुण्डिमराज[3]-प्रोल्लराज-[4]रुद्रदेव-[5]गणपतिदेवाः । गणपतिदेवपुत्री च रुद्रमहादेवी पञ्चत्रिंशद्वर्षकृतराज्यस्तत श्रीप्रतापरुद्रः । एते काकतीया इति प्रसिद्धा ॥ 10

श्रीमदाराम (०द्दामर ?) कुण्डाख्यपद्मावत्या यथाश्रुतम् । अजल्पि कल्पलेशोऽय श्रीजिनप्रभसूरिभि ॥१॥

॥ इति श्रीआमरकुण्ड[6]पद्मावतीदेवीकल्पः ॥

॥ ग्र० ५९, अ० २२ ॥

५४. चतुर्विंशतिजिनकल्याणककल्पः ।

इअ तीअवट्टमाणाणागयचउवीसजिणवरिंदाण । उसप्पिणिओसप्पिणिभवाण अणुलोम-पडिलोमा ॥ १ ॥ 15
[7]सग्गाइअमहिवल्या पचसु भरहेसु एरवयपणगे । कल्लाणयमाससतिहीओ सासया नय विदेहेसु ॥ २ ॥
इगमत्तिनिविअआयामखमणमिगदु त्ति पचकल्लाणे । इअ सलेसतवेण आराहह पचकल्लाणे ॥ ३ ॥
वित्थरओ अ चउत्थ चुइ-जमेसु करिज्ज पत्तेअ । जिणचिण्णेण तवसा दिक्खाइतिग तु आराहे ॥ ४ ॥
सुमइऽत्थ निच्चभत्तेण निग्गओ वासुपुज्ज चउत्थेण । पासो मल्ली वि अ अट्ठमेण सेसाओ छट्ठेण ॥ ५ ॥
अट्ठमभत्तसी नाणमुसभ-मल्लि-नेमि-पासाण । वसुपुज्जस्स चउत्थेण छट्ठभत्तेण सेसाण ॥ ६ ॥ 20
चउदसमेण उसभो वीरो छट्ठेण मासिए भत्ते । सिद्धा वयमि सुमइन्नुववासो निच्चभत्ते वि ॥ ७ ॥
काउ कल्लाणतव उज्जमण जो करिज्ज विहिपुव्व । जिणपहआराहणओं परमपय पावए स कमा ॥ ८ ॥
चुइ-जम्म-दिक्ख-केवल-सिवाइ कल्लाणयाइ पचेव । सव्वजिणाण छ पुणो वीरस्स सगब्भहरणाई ॥ ९ ॥
इह खित्तभवजिणाण जो आराहेइ पचकल्लाण । ते दसखित्त-तिकालिअअरिहाण उवासिआ तेण ॥ १० ॥
पणकल्लाणयकप्प गमीण पूरिसमणिट्ठसकप्प । जो पढइ सुणइ भव्वो सयनरा तम्स सिद्धिसिरी ॥ ११ ॥ 25

॥ ग्र० १३, अ० १५ ॥

५५ तीर्थंकरातिशयविचारः ।

प्रथम चत्वार सहजातिशया, ततो घातिकर्मक्षयादेकादशातिशया । एकोनविंशति सुरकृतातिशया । एव ३४ । तत्रापि—अवायावगमातिसओ नाणाइसओ वयणाइसओ पूआइसओ त्ति ।

॥ ग्र० २, अ० ७ ॥ 30

1 Pa परिपालय० । 2 Pa ०विवरस्य । 3 B पिण्डकुण्डिमराज Pa ०कुण्डिद्दिमराज । 4 P1 प्रोल्लराज० । 5 C रुद्रगणपति० । 6 Pb आराम०, C आराम० । 7 Pa सग्गाइअमहिवल्ल्या०।

५६. पञ्चकल्याणकस्तवनम् ।

नमि वि जिण ताण कित्तेमि कल्लाणए, पंच चुइ जंमु वउ नाण निव्वाणए ।
नाणु कत्तिअकसिणपंचमिहिं संभवे, वारिसिहिं नेमि चुइ पउम जंमो भवे ॥ १ ॥
तेरसिहिं पउमवउ वीर सिवु पंनरसी, मागसिअ तीइ सुविहिस्स अर वारसी ।
5 मग्गसिरकसिणपंचमि सुविहि जंमए, छट्ठिं सुविहिस्स वीरस्स दसमी वए ॥ २ ॥
मुक्खु इक्कारसिहिं एउ पउमप्पहे. सुद्धदसमी अर मुक्खु जंमणमहे ।
पंच इक्कारसिहिं अरवयं निम्मलं, जंमु वउ नाणु मल्लिस्स नमि केवलं ॥ ३ ॥
चउदसिहिं जंमु पुंनिम वयं संभवे, वहुलपोसे दसमि पास जंमूसवे ।
गहिअ इक्कारसिहि पासदिक्खागमो, वारसिहिं जंमु ससि तेरसिहि संजमो ॥ ४ ॥
10 नाणु उप्पन्नु चउदसिहिं सीअलजिणे, विमल सिअ छट्ठि संतिस्स नवमीदिणे ।
गहिअ इक्कारसिहिं चउदसिहिं अभिनंदणे, पुंनिमिहि नाणु धंमे जणाणंदणे ॥ ५ ॥
माहकसिणाइ छट्ठीइ पउमो चुउ, सीअलो वारसिहि जंम-दिक्खाजुओ ।
रिसहजिणु तेरसिहिं पत्तु निव्वुइपए, नाणु सेअंसजिण मावसा गिज्जए ॥ ६ ॥
सुद्ध वीआइ पुण दुन्नि कल्लाणए, जम्मु अभिनंदणे नाणु वसुपुज्जए ।
15 धम्म-विमलाइ तइआइ जाया जिणे, विमल वउ चउत्थि अजिअट्ठमी जंमणे ॥ ७ ॥
अजिअ वउ नवमि वारसिहिं अभिनंदणे, तेरसिहिं धम्मदिक्खा पसिद्धा जिणे ।
फग्गुणे कसिणछट्ठीइ नाणुज्जलं, मुक्खु सत्तमि सुपासस्स ससि केवलं ॥ ८ ॥
सुविहि चुइ नवमि केवलमुसभिगारसी, जंमु सेअंस केवलु सुवय वारसी ।
गहिउ सेअंसि तेरसिहिं चारित्तयं, जंमु चउदसिहि वसुपुज्जमावसि वयं ॥ ९ ॥
20 सुद्धवीआइ अर चविउ जिणपुंगवो, चउथि मल्ली चविउ अट्ठमी संभवो ।
वारसिहिं सुमइ वउ मल्लिजिण निव्वुई, चउथि चित्ताइ पासस्स नाणं चुई ॥ १० ॥
पंचमिहिं चवणु चंदप्पहे जिणवरे, अट्ठमिहि जंमु दिक्खा य रिसहेसरे ।
सुद्धतइआइ कुंथुस्स नाणूसवो, सिद्धु पंचमिहिं णंतोऽजिउ संभवो ॥ ११ ॥
सुमइ मुक्खो नवमि नाणुमेगारसी, वीरनाहस्स जंमूसवो तेरसी ।
25 पुंनिमाए तु पउमाभ केवलगुणो, वहुलवइसाहपडिवइ सिवं कुंथुणो ॥ १२ ॥
सीअलो नाहु वीआइ परिनिव्वुउ, कुंथु वउ पंचमिहिं छट्ठि सीअल चुउ ।
दसमि नमि मुक्खु तेरसिहिं णंतब्भवो, चउदसिहिं ऽणंतजिण केवलं तह तवो ॥ १३ ॥
जाउ चाउद्दसिहि कुंथु निम्मलमणो, चविउ सुद्धे चउथीइ अभिणंदणो ।
चवणु सत्तमिहिं धम्मंमि तित्थेसरे, सिद्धु अभिनंदणो अट्ठमीवासरे ॥ १४ ॥
30 अट्ठमिहिं जंमु नवमी वयं सुमइणो, केवलं पत्तु दसमीइ वीरो जिणो ।
विमलजिण वारसिहिं अजिउ तेरसि चुउ, जिट्ठवहुलाइ सेअंसु छट्ठिहिं चुउ ॥ १५ ॥
अट्ठमी जंमु नवमी सिवं सुव्वए, जंमु सिवु तेरसिहिं संति चउदसि वए ।
सुद्धपंचमिहिं धम्मस्स निव्वाणयं, नवमि वसुपुज्जजिण चवणकल्लाणयं ॥ १६ ॥
जंमु वारसि सुपासस्स तेरसि वयं, वहुलआसाढचउथी उसभ चवणयं ।
5 विमल सिव सत्तमिहिं दिक्ख नवमिहिं नमी, वीर सिअछट्ठि चुइ नेमि सिवु अट्ठमी ॥ १७ ॥

पतु वसुपुज्जु चउदसिहिँ सिद्धासए, सावणे बहुलतिइ सिद्धि सेअसए ।
सत्तमिहि णत चुइ जसु अट्ठमि नमी, नवमि चुइ कुंथु सिअबीअ सुमई समी ॥ १८ ॥
पचमिहिँ जमुछवि नेमि दिक्खारई, पास सिवु अट्ठमिहिँ सुवय पुनिम चुई ।
भद्दवइसत्तमिहि सति चुइ ससि सिवे, चवणु अट्ठमिहि सुपासस्स तित्थाहिवे ॥ १९ ॥
सुद्धनवमीइ सुविही जिणो निव्वुउ, केवली नेमि आसो अमावसि हुउ । 5
पुनिमासीइ नमि तित्थनाहो चुउ, कुणइ मह मगल सोमसूरी थुउ ॥ २० ॥

॥ इति श्री[सोमसूरिकृत]कल्याणिकस्तवन समाप्तम् ॥

॥ ग्रं० काव्य २० ॥

---

५७. कोलपाकमाणिक्यदेवतीर्थकल्पः ।

सिरिकोल्लपाकपुरवरमडणमाणिक्कदेवरिसहस्स । 1
लिहिमो जहासुअ किंचि कप्पमप्पेण गथेण[1] ॥ १ ॥

पुव्व किर अट्ठावयनगवरे सिरिभरहेसरेण निअनिअवण्ण-पमाण-सठाणजुत्ताओ सीहनिसिज्जायणे चउवी-सजिणाण पडिमाओ रयणमईओ कारिआओ । ताओ अ मणुआण अगम्माओ होहिति त्ति परिभाविअ एगा उसभ-सामिपडिमा पुढो चेव लोआणुग्गहत्थ तेण चेव कारिआ 'सच्छमरगयमणिमई, जडाजुअल खधेसु, चिबुगे[2] दिवायरो, भालयले चदो, नाहीए सिवलिंग । अओ चेव माणिक्कदेवु त्ति विक्खाया । सा य कालतरे जवागणेहि खेअरेहि । दिट्ठा । अउव्वरूवि त्ति विम्हिअमणेहि विमाणे ठाविऊण 'वेअड्ढगिरिं नीआ दक्खिणसेढीए । तेहिँ[3] भत्तिभरभरिअ-चित्तेहिँ पूइज्जइ । अन्नया भमतेण नारयरिसिणा वेअड्ढागएण त पडिम दट्ठूण पुच्छिआ विज्जाहरा–कुओ एस त्ति[4] । तओ तेहिँ वुत्त–अट्ठावयाओ आणिअ त्ति । जप्पभिई एसा अम्हेहि पूइउ पवत्ता तप्पभिई अम्हे दिणे दिणे वड्ढिआ इड्ढीए[5] । त सोउ नारओ सग्गे इदस्स तप्पडिममाहप्प कहेइ । इदेणावि सग्गे आणाविआ भत्तीए पूइउमाढत्ता, जाव मुणिसुव्वय-नमिनाहाण अतराल । इत्थतरे लंकाए तेलुक्ककटओ रावणो उप्पन्नो । तस्स भज्जा मदोअरी परमसम्मदिट्ठी । तीए त रयणबिंबमाहप्प नारयाओ सोऊण तप्पूअणे गाढाभिग्गहो गहिओ । त वुत्तत मुणित्ता महारायरावणेण इदो आराहिओ । तेणावि तुट्ठेण समप्पिआ सा पडिमा महादेवीए । तीए तुट्ठाए तिकाल पूइज्जइ । अन्नया दसग्गीवेण सीआदेवी अवहरिआ । मदोअरीए अणुसिट्ठो वि त न मुचइ । तओ मुणिणे पडिमाअहिट्ठायगेण रावणविणासो लकाभगो अ अक्खिओ मदोअरीए । तओ तीए बिंब सायरे खित्तिअ । तत्थ सुरेहिँ पूइज्जइ । 25

इओ अ कन्नाडदेसे कल्लाणनयरे संकरो नाम राया जिणभत्तो हुत्था । तत्थ केणावि मिच्छद्दिट्ठिणा वतरेण सुविण्ण मारी विउव्विआ । अदण्णो राया । त दुक्खिअ नाउ देवी पउमावई रत्तिं सुमिणे भणइ–नइ महाराय ! रयणायराओ माणिक्कदेव निअपुरिं आणित्ता पूएसि तो सिव होइ । तओ राया सायरपासे गतूण उव-वासं करेइ । रयणायरिवो संतुट्ठो होऊण पयडी रायाण भणइ–गिण्हह जहिच्छाए रयणाइ । रण्णा विन्नत्त–न मे रयणाईएहिँ कज्ज, मदोअरीठविअ बिंब देहि त्ति । तओ सुरेण बिंब कड्ढिऊण अप्पिअं रण्णो, भणिअं च–तुह देसे 30 सुहा होओ होही । पर पहे गच्छतस्स जत्थ ससओ होही तत्थेव बिंब ठाहि त्ति । तओ चलिओ पच्छिओ सन्निओ । देव-

---

1 Pa गथ्थेन । † ? Pa आदर्शे । 2 P ? । 3 Pa C वेअड्ढ° । 4 B Pa ? । 5 Pa रिद्धीए ।

यापभावेण [1]तण्णयजुअलखंधट्टियसगडारोविअं बिंबं मग्गओ आगच्छइ । दुग्गं मग्गं लंघित्ता राया संसयं मणे धरइ–किं आगच्छइ नवि त्ति । तओ सासणदेवीए **तिलंगदेसे कोल्लपाकनयरे दक्खिणवाणारसि** त्ति पंडिएहिं वण्णिज्जमाणे पडिमा ठाविआ । पुव्विं अइनिम्मलमरगयमणिमयं आसि बिंबं । चिरकालं खारोअहिनीरसंगेण कढिणंगं[2] जायं । एगारसलक्खा असीइ सहस्सा नवसयाइं पंचुत्तराइं वरिसाइं सग्गाओ आणिअस्स भगवओ **माणिक्कदेवस्स**
5 संवुत्ताइं । तत्थ राया पवरं पासायं कारवेइ । किं च दुवालसगामे देवपूअट्ठं देइ । तम्मि भयवं अंतरिक्खे ठिओ **छसयाइं असीआइं विक्कमवरिसाइं** । तओ मिच्छपवेसं नाउं सीहासणे ठिओ । निअकंतीए भविआणं लोअणेसु[3] अमयरसं वरिसेई–[†]किमेसा पडिमा टंकेहिं उक्किन्ना, खाणीओ वा आणिआ, किं सप्पिणा घडिआ, वज्जमई वा नीलमणिमई वि त्ति न निच्छिज्जइ, रंभाखंभनिभेव दीसेइ[†] । अज्ज वि किर भगवओ ण्हवणोदगेण दीवो पज्जलइ । *अज्ज वि अंधा ण्हवणमट्टियाए लोयणेसु वंधियाए सलोयणा हवंति* । अज्ज वि तित्थाणुभावओ चेइअमंडवाओ झरंता
10 जलसीअरा जत्तिअजणाणं वत्थाइं उल्लिंति । §पुरओ सप्पदट्ठो उट्ठेइ । एवं अणेगविहप्पभावभासुरस्स महातित्थस्स[4] **माणिक्कदेवस्स** जत्तामहूसवं पूअं च जे करिंति कारविंति अणुमोअंति अ ते इहलोअ-पारलोइअसुहसिरिं पाविंति ।

माणिक्कदेवकप्पो इअ एसो वण्णिओ समासेणं । सिरि**जिणपह**सूरीहिं भविआणं कुणउ कल्लाणं ॥ १ ॥

॥ इति श्रीमाणिक्यदेवतीर्थकल्पः ॥

॥ ग्रं० ४४, अ० ५ ॥

15

५८. श्रीपुर-अन्तरिक्षपार्श्वनाथकल्पः ।

पयडपहावनिवासं **पासं** पणमित्तु **सिरिपुरा**भरणं । कित्तेमि **अंतरिक्ख**ट्ठिअतप्पडिमाइ कप्पलवं ॥ १ ॥

पुव्वं **लंका**पुरीए **दसग्गीवेण** अद्धचक्किणा **मालि-सुमालि**[5]नामाणो निअगा ओलगा केणावि कत्थवि पेसिआ । तेसिं च विमाणारूढाणं नहपहे वच्चंताणं समागया भोयणवेला । फुल्लवडुएण चिंतिअं–मए ताव अज्ज जिण-पडिमाकरंडिआ ऊसगत्तेण घरे विसारिआ । एएसिं च दुण्ह वि पुन्नवंताणं देवपूआए अकयाए न कत्थ वि भोअणं ।
20 तओ देवयावसरकरंडिअमदट्ठुं महोवरि एए रूसिस्संति त्ति । तेण विज्जाबलेण पवित्तवालुआए अहिणवा भाविजिण-**पासनाह**पडिमा निम्मविआ । **मालि-सुमाली**हि तं पूइत्ता भोअणं कयं । तओ तेसु नहमग्गे पट्ठिएसु[6] सा पडिमा आसन्नसरोवरजलमज्झे वडुएण निक्खित्ता । सा य देवयाणुभावेण सरोवरमज्झे अखंडिअरूवा चेव तत्थ ट्ठिआ । कालक्कमेण तस्स सरोवरस्स जलं अप्पीहूअं । जलभरिअं खड्डुगं[7] व दीसइ । तं तओ कालंतरेण **विं(चिं?)गउल्ली**देसे **विं(चिं?)गउल्लं**[8] नयरं तत्थ **सिरपालो** नाम नरवई हुत्था । सो अ गाढकोढविहुरिअसव्वंगो अन्नया पारहिहेउं
25 बाहिं गओ । तत्थ पिवासाए लग्गाए तम्मि खड्डुगे कमेणं पत्तो । तत्थ पाणिअं पीअं, मुहं हत्था य पक्खालिआ । तओ ते अंगावयवा जाया नीरोगा कणयकमलुज्जलच्छाया । तओ घरं गयस्स रन्नो महादेवी तमच्छेरं दट्ठुं पुच्छित्था–सामि ! कत्थ वि तुम्हेहिं अज्ज ण्हाणाइ कयं । रायणा जहट्ठिए वुत्ते देवीए चिंतिअं–अहो ! सादिव्वं ति । बीअदिणे राया तत्थ नीओ । तीए सव्वंगं पक्खालिअं । जाओ पुणण्णवसरीरावयवो राया । तओ देवीए बलिपूआइअं काऊण भणिअं–जो इत्थ देवयाविसेसो चिट्ठइ सो पयडेउ अप्पाणं । तओ घरं पत्ताए देवीए सुमिणंतरे देवयाए भणिअं–
30 इत्थ भावितित्थयर**पासनाह**पडिमा चिट्ठइ । तस्स पभावेणं रन्नो आरुग्गं संजायं । एयं च पडिमं सगडे आरोविऊण सत्तदिणजाए तण्णए जुत्तिता आमसुत्ततंतुमित्तरस्सीए रन्ना सयं सारहीहूएणं सट्ठाणं पइ चालेअव्वा इमा । जत्थेव

---

1 Pa भयजुअल°; C भण्णइय° । 2 Pa कढिणंगं । 3 B लोआण° । † एतदन्तर्गतः पाठः P आदर्शे नास्ति । * P विहायान्यत्र नोपलभ्यते वाक्यमिदम् । § P आदर्श एव लभ्यते वाक्यमिदम् । 4 पदमिदं नास्ति Pa । 5 B नास्ति 'सुमालि' । 6 Pa नास्ति पदमेतत् । 7 B खुडगं । 8 Pa विंगल्लिं ।

जिणो पच्छाहुत्तं पलोइस्सइ तत्थेव पडिमा ठाहिइ । तओ नरनाहेण तं तणुगजन्नोवइ(डि)ऊण सा पडिमा रुद्धा । तेण तहेव काउं पडिमा चालिया । किंचिअ वि भूमिं गंतूण रन्ना, किं पडिमा एइ नवि त्ति सिंहावलोइअं कयं । पडिमा तत्थेव अंतरिक्खे ठिआ । सगडो अग्गओ हुत्तं नीसरिओ । रन्ना पडिमा अद्दूण अधिईए गते तत्थेव सिरि-पुरं नाम नयरं निअनामोवलक्खिअं निवेसिअं, *चेइअं च तहिं कारिअं । तत्थ पडिमा अणेगमहूसवपुव्वं ठाविआ । पूअइ अ पुरनिवई तिकालं । अज्जवि सा पडिमा तहेव अंतरिक्खे चिट्ठइ । पुव्विं किर सघडिअं घडं सिरम्मि वहंती उ नारी पडिमाए हिट्ठा सीहासणतले संचरिंसु । कालेण भूमिरयणचडणेण वा मिच्छाइदूसिअकालाणुभावेण वा अहो अहो दीसंती जाव संपइ उत्तरीअं पि पडिमाए हिट्ठे संचरइ । पईवप्पहा य सीहासण-भूमिअंतराले दीसइ । जया य सा पडिमा सगडमारोविआ तया अंबादेवी खित्तवालो अ सहेव पडिमा । उम्मग्गेण सिद्ध-बुद्धाण अण्णयरो पुत्तो अंबाए गहिओ । अन्नो अ पच्छा ठिओ । तओ खित्तवालस्स आणत्ती दिन्ना, जहा एस दारओ तए आणे-अव्वो । तेणावि अइउक्कड चलणेण सो आणीओ । तओ देवीए दुवण्ण गयए आहओ । अज्जवि तहेव खित्त-वालसीसे दीसइ । एवं अंबादेवी-खित्तवालेहिं सेविज्जमाणा धरणिंद-पउमावईहिं च कयपाडिहेरा सा पडिमा भवलोएहिं पूइज्जइ, जविअलोआ य जत्तामहूसवं कुणंति । तीए ण्हवणसलिलेण सित्त पि आरत्तिअं न विज्जइ । ण्हवणोदगेण अहिसित्तगत्ताण दद्दु-खस-कुट्ठाइरोगा उवसमंति ।

सिरिअंतरिक्खट्ठिअपासनाहकप्पं जहासुअं किं पि । सिरिजिणपहसूरीहिं लिहिओ सपरोवयारकए ॥ १ ॥

॥ इति अंतरिक्ख(क्ष)पार्श्वनाथकल्पः ॥

॥ ग्रं० ४१, अ० ८ ॥

५९. स्तम्भनककल्पशिलोञ्छः ।

थंभणयकप्पमज्झे जं संगहिअं न वित्थरभएण । तं सिरि**जिणपह**सूरी सिलुंछमिव कं पि[1] जंपेइ ॥ १ ॥

ढंकपव्वए रणसीहरायउत्तस्स **भोपल**नामिअं धूअं रूवलावण्णसंपन्नं दट्ठूण जायाणुरायस्स तं सेवमाणस्स **वासुगिणो** पुत्तो **नागज्जुणो** नाम जाओ । सो अ जणएण पुत्तसिणेहमोहिअमणेण सव्वासिं महोसहीणं फलाइं मूलाइं दलाइं च भुंजाविओ । तप्पभावेण सो महासिद्धीहिं अलंकिओ **'सिद्धपुरिसु'**त्ति विक्खाओ पुहविं विअरंतो **सालाहणरन्नो** कलागुरू जाओ । सो अ गयणगामिणिविज्जाअज्झयणत्थं **पालित्तय**पुरे सिरि**पालित्तायरिए** सेवेइ । अन्नया भोयणावसरे पायप्पलेवबलेण गयणे उप्पइए पासइ । **अट्ठावया**इतित्थाणि नमंसिअ सट्ठाणमुवागयाण तेसिं पाए पक्खालिऊण सत्तुत्तरसयमहोसहीणं आसायण-वण्ण-गंधाईहिं नामाइं निच्छइऊण गुरुवएसं विणावि पायलेवं काउं कुक्कुडप्पोउ व्व उप्पयंतो अवडतडे निवडिओ । वणजज्जरिअंगो गुरूहिं पुट्ठो—किमेअं ति ? । तेण जहट्ठिए वुत्ते तस्स कोसल्लचमक्किअचित्ता आयरिआ तस्स सिरे पउमहत्थं दाउं भणंति—सट्ठिअतंदुलोदगेण ताणि ओसहाणि वट्टित्ता[2] पायलेवं काउं गयणे वच्चिज्जासि त्ति । तओ तं सिद्धिं पाविअ परितुट्ठो ।

पुणो कयावि गुरुमुहाउ सुणेइ, जहा—सिरि**पासनाह**पुराओ साहिज्जंतो सव्वइत्थीलक्खणोवलक्खिअमहासईविलयाए अ मद्दिज्जंतो रसो कोडिवेही हवइ । तं सोऊण सो **पासनाह**पडिमं अन्नेसिउमारद्धो । इओ अ **बारवईए समुद्दविजय**दसारेण सिरि**नेमिनाह**मुहाओ महाइसयं नाऊण रयणमई सिरि**पासनाह**पडिमा पासायंमि ठवित्ता पूईआ[†] । **बारवई**दाहाणंतरं समुद्देण पाविआ सा पडिमा तहेव समुद्दमज्झे ठिआ । कालेण **कंती**वासिणो **धणवइ**नामस्स संजत्तिअस्स जाणवत्तं देवयाइसयाओ खलिअं । इत्थ जिणबिंबं चिट्ठइ त्ति दिव्ववायाए निच्छिअं । नाविए तत्थ पक्खिविअ सत्तहिं आमतंतूहिं संदाणिअ उद्धरिआ पडिमा । निअनयरीए नेऊण पासायंमि ठाविआ । चिंताइरित्तलाभपहिट्ठेण पूइज्जइ पइदिणं । तओ सव्वाइसाइ तं बिंबं नाऊण **नागज्जुणो** सिद्धरससिद्धिनिमित्तं अवहरिऊण **सेढीनई**ए तडे ठाविंसु । तस्स पुरओ रससाहणत्थं सिरि**सालवाहणरन्नो चंदलेहा**भिहाणिं महासइं देविं सिद्धवंतरसन्निज्झेण तत्थ आणाविअ पइनिसं रसमद्दणं कारेइ । एवं तत्थ भुज्जो भुज्जो गयागएणं तीए बंधु त्ति पडिवन्नो । सा तेसिं ओसहाणं मद्दणकारणं पुच्छेइ । सो अ कोडिरसवेहवुत्तंतं जहट्ठिअं कहेइ । अन्नया दुण्हं निअपुत्ताणं तीए निवेइअं—जहा एअस्स रससिद्धी होहिइ त्ति । ते रसलुद्धा निअरज्जं मुत्तुं **नागज्जुण**पासमागया । कइअवेणं तं रसं घित्तुमणा पच्छन्नवेसा, जत्थ **नागज्जुणो** भुंजइ तत्थ रससिद्धिवुत्तं पुच्छंति । सा य तज्जाणणत्थं तद्दट्ठं सलूणं रसवइं साहेइ । छम्मासे अइक्कंते खार त्ति दूसिआ तेण रसवई । तओ इंगिएहिं रसं सिद्धं नाऊण पुत्ताण निवेइअं तीए । तेहिं च परंपराए नायं जहा—**वासुगिणा** एअस्स दब्भंकुराओ मच्चू कहिओ त्ति । तेणेव सत्थेण **नागज्जुणो** निहओ । जत्थ य रसो थंभिओ तत्थ **थंभणयं** नाम नयरं संजायं । तओ कालंतरेण तं बिंबं वयणमित्तवज्जं भूमिअंतरिअंगं संवुत्तं ।

इओ अ **चंदकुले** सिरि**वद्धमाणसूरि**-सीस**जिणेसरसूरी**णं सीसो सिरि**अभयदेवसूरी गुज्जरत्ताए** [3]**संभायण**ठाणे विहरिओ । तत्थ महावाहिवसेण अईसाराइरोगे जाए पच्चासन्ननगर-गामेहिंतो पक्खिअपडिक्कमणत्थमागंतुकामो विसेसेण आहूओ मिच्छदुक्कडदाणत्थं सव्वोवि सावयसंघो । तेरसीअड्ढरत्ते अ भणिआ पहुणो सासणदेवयाए—भयवं ! जग्गह सुअह वा ? । तओ मंदसरेणं वुत्तं पहुणा—कओ मे निद्दा । देवीए भणिअं—एआओ नवसुत्तकुक्कुडीओ उम्मोहेसु । पहुणा भणिअं—न सक्केमि । तीए भणिअं—कहं न सक्केसि ? । अज्जवि वीरतित्थं चिरं पभावेसि, नवंगवित्तीओ अ काहिसि । भयवया भणिअं—कहमेवंविहसरीरो काहामि ? । देवयाए वुत्तं—**थंभणयपुरे सेढीनई**उवकंठे

1 B किं पि । 2 Pa वट्टित्ता । † एतदन्तर्गता पंक्तिर्न लभ्यते A आदर्शे । 3 A संभाणय° ।

संखरपलासमज्झे सयंभू सिरिपासनाहो अच्छइ । तस्स पुरो देवे वंदेह । जेण सुत्थसरीरा होह । तओ गोसे आहूअ-सावयसंघेण वंदिआ पहुणो । पहुणा भणिअं-थंभणए पासनाहं वंदिस्सामो । संघेण चिंतिअं-नूणं कोइ उवएसो पहुणं, ता एवं आइसंति । तओ भणिअं संघेण-अम्हे वि वंदिस्सामो । तओ वाहणेण गच्छंतस्स पहुणो मणयं सरीरं सुत्थं जायं । अओ धवलक्कयाओ परओ चरणचारेण विहरंता पत्ता थंभणपुरं । गुरुसावया सव्वत्थ पासनाहमवलोइंता गुरुणा भणिआ-खखरपलासमज्झे पलोएह । तेहिं तहाकए दिट्ठं सिरिपासनाहपडिमामुहं । तत्थ य पइदिणं एगा धेणू 5 आगम्म पडिमामत्थए खीरं झरइ । तओ पहिट्ठेहिं सावएहिं जहादिट्ठं निवेइअं गुरुणो । अभयदेवसूरी वि तत्थ गंतुं मुहदंसणमित्तेण थोउमाढत्तो-'जयतिहुअणवरकप्परुक्ख' इच्चाइतक्कालिअवित्तेहिं । तओ सोलससु वित्तेसु कएसु पच्चक्खीहूआ सव्वंग पडिमा । अओ चेव 'जय ! पच्चक्खजिणेसर' त्ति सत्तरसमे वित्ते पढिअं । तओ बत्तीसाए पुण्णाए अतिमवित्तदुगं अईव देवयाइड्ढिकरं ति नाऊण देवयाए विन्नत्त-भयवं ! तीसाए वि वित्तेहिं सन्निज्झं करिस्सामि, अतिमवित्तदुगं ओसारेह । मा अम्ह कलिजुगे आगमणं दुक्खाय होउ त्ति । पहुणा तहा कयं । सं- सह चिइवंदणा कया । तत्थ संघेण उत्तुंगं देवहरयं कारिअं । तओ उवसंतरोगेण पहुणा ठाविओ सिरिपाससामी । तं च महातित्थं पसिद्धं । कालाइक्कमेण कया ठाणाइनवंगाणं वित्ती । आयारंग-सूअगडाणं तु पुव्विं पि सीलंकायरिएण कया आसि । तओ परं चिरं वीरतित्थं पभाविअं पहुणं त्ति ॥

॥ इति श्रीस्तम्भनककल्पशिलोञ्छः ॥

॥ ग्रं० ६७ ॥

६०. फलवर्द्धिपार्श्वनाथकल्पः ।

सिरिफलवद्धिअचेईअपरिट्ठिअं पणमिऊण पासजिणं । तस्सेव वेमि कप्पं जहासुअं दलिअकलिदप्पं ॥ १ ॥

अत्थि सवालक्खदेसे मेडत्तयनगरसमीवट्ठिओ वीरभवणाइ-नाणाविहदेवालयाभिरामो फलवद्धी नाम गामो । तत्थ फलवद्धिनामधिज्जाए देवीए भवणमुत्तुंगसिहरं चिट्ठइ । सो अ रिद्धिसमिद्धो वि कालक्कमेण उव्वसप्पाओ संजाओ । तहावि तत्थ किंचिआ वि वाणिअगा आगंतूण अवसिंसु । तेसु वि एगो सिरिसिरिमाल-20 वंसमुत्तामणी धम्मिअलोअगामगामणी धंधलो नाम परमसावओ हुत्था । बीओ अ तारिसगुणो चेव उवएसवाल-कुलनहयलनिसाकरो सिवंकरो नाम । ताणं दुण्हंपि पभूआओ गावीओ आसि । तासिं मज्झे एगा धंधलस्स धेणू पइदिणं दुज्झंती वि दुद्धं न देइ । तओ धंधलेण गोवालो पुच्छिओ-किमेसा धेणू तुमए चेव बाहिरे दुज्झइ अन्नेण वा केणावि, जेणेसा दुद्धं न देइ । तओ गोवालेण सवहाइ काऊण अप्पा निरवराही कओ । तओ गोवालेण सम्मं निरिक्खंतेण एगया 'उच्चरडयस्स उवरिं बोरितरु'समीवे चउहिं वि थणेहिं खीरं झरंती दिट्ठा सा सुरही । एवं 25 पइदिणं पिच्छंतेण दंसिआ धंधलस्स । तेण वि चिंतिअं नूणं इत्थ कोइ जक्खाई देवयाविसेसो भविस्सइ भूमिम-ज्झट्ठिओ । तओ गिहमागएण तेण सुहपसुत्तेण रत्तीए सुमिणओ उवलद्धो, जहा एगेण पुरिसेण वुत्तं-इत्थ रडए भयवं पासनाहो गब्भहरदेवलिआमज्झे चिट्ठइ । तं बाहिं निक्कासिऊण पूएहि । तओ धंधलेण पहाए वुद्धेण सिवं-करस्स निवेइओ सुमिणवुत्तंतो । तओ दोहिं पि कोउहलाऊरिज्जमाणमेहिं बलिपूआविहाणपुव्वं उक्खेहिं रडयभूमिं खणा-विता कड्ढिओ गब्भहरदेउलिआमहिओ सत्तफणिफणामंडिओ भयवं पाससामी । पइदिअहं पूयंति महया 30 इड्ढीए ते दो वि । एवं पूइज्जंते भुवणनाहे पुणो वि अहिट्ठायगेहिं सुमिणे आइट्ठं तेसिं, जहा-तत्थेव पएसे चेईअं कारावेह त्ति । तओ तेहिं परिट्ठचित्तेहिं दोहिं वि निअविहवाणुसारेण चेईअं काराविउमाढत्तं । पयट्टिआ सुत्तहारा

1 Pa निरिक्खंतेन । 2 Pa उच्चरडय° । 3 B °बदरस त° । 4 P पुच्छंतेन । 5 Pa C दोहिं । 6 B महिआ ।

[1]कम्मट्ठाएसु । जाव अग्गमंडवे निप्पन्ने तेसिं [2]अप्पड्ढिअत्तेण दविणविढवणअसमत्थयाए निअत्तो कम्मट्ठाओ । तओ धणिअं अधिइमावन्ना दो वि परमोवासया । तयणंतरं रयणीए पुणो वि अहिट्ठायगसुरेहिं सुमिणे भणिअं; जहा–अइप्पभाए[3] अलवंतेसु काएसु देवस्स अग्गओ दम्माणं सत्थिअं पइदिणं पिच्छिस्सह । ते दम्मा चेईअकज्जे वइयव त्ति । तेहिं तहेव दिट्ठे, ते दम्मे घित्तूण सेसकम्मट्ठायं कारवेउमाढत्तं । जाव पडिपुण्णा पंच वि मंडवा य, लहुमंडवा य,[4]
5 तिहुअणजणचित्तचमुक्कारकारए । बहुनिप्पन्नंमि चेईअंमि तेसिं पुत्तेहिं चिंतिअं–कत्तो एअं दव्वं संपज्जइ, जं अविच्छेएण कम्मट्ठायं उस्सप्पइ त्ति । अह एगंमि दिणे अइप्पहाए चेव थंभाइअंतरिआ होऊण निहुअं दट्ठुमारद्धा । तम्मि दिवसे देवेहिं न पूरिअं दम्माणं सत्थिअं । आसन्नं च मिच्छरज्जं नाऊण पयत्तेण आराहिआ वि अहिट्ठायगा न पूरिंसु दव्वं ति । ठिओ तदवत्थो चेव चेईअकम्मट्ठाओ । **एगारससएसु इक्कासीइसमहिएसु विक्कमाइवरिसेसु** अइक्कंतेसु **रायगच्छमंडणसिरिसीलभद्दसूरि**पट्टपइट्ठिएहिं महावाइदिअंबर**गुणचंद**विजयपत्तपइट्ठेहिं सिरि-
10 **धम्मघोससूरीहिं पासनाह**चेईअसिहरे चउविहसंघसमक्खं पइट्ठा किआ । कालंतरेण, कलिकालमाहप्पेणं केलिप्पिआ वंतरा हवंति, अथिरचित्ता य त्ति पमायपरव्वसेसु अहिट्ठायगेसु **सुरताणसाहावदीणेण** भग्गं मूलबिंबं । पुणरवि सावहाणीभूएसु अहिट्ठायगसुरेसु मिच्छरन्नो मिच्छाणं च अंधत्तरुहिरवमणाइचमुक्कारा दंसिआ । तओ[5] **सुरताणेण** दिन्नं फुरमाणं; जहा–एअस्स देवभवणस्स केणावि भंगो न कायव्वो त्ति । अन्नं च बिंबं किर भयवओ अहिट्ठायगा न सहंति त्ति संघेण [6]बिंबंतरं न ठाविअं । विलंगिअंगस्स वि भगवओ महंताइं माहप्पाइं उवलब्भंति । पइव-
15 रिसं च पोसबहुलदसमीए जम्मकल्लाणयदिणे चाउद्दिसाओ[7] सावयसंघा आगंतूण ण्हवण-गीअ-नट्ट-वाइअ-कुसुमाभरणारोवण-इंदधयाईहिं मणहरं जत्तामहिमं कुणंता, संघपूआईहिं सासणं पभाविंता, निद्दलंति दुसमासमयविलसिआइं, विढवंति गुरुअं [8]सुकयसंभारं । इत्थ य चेईए **धरणिंद-पउमावई-खित्तवाला** अहिट्ठायगा संघस्स [9]विग्घपब्भारं उवसामिंति, पणयलोआणं मणोरहे[10] अ पूरिंति । इत्तो च्चिअ थिरपईवहत्थं पुरिसं चेईअमज्झे संचरंतं पासंति समाहिअमणा इत्थ रत्तिं वुत्था भविअजणा । एअंमि महातित्थभूए **पासनाहे** दिट्ठे **कलिकुंड-कुक्कुडेसर-**
20 **सिरिपव्वय-संखेसर-सेरीसय-महुरा-वाणारसी-अहिछत्ता-थंभणय-अज्जाहर-पवरनयर-देवपट्टण-करहेडय-नागद्दह-सिरिपुर-सामिणि-चारूप-ढिंपुरी-उज्जेणी-सुद्धदंती-हरिकंखी-लिंबोड-**याइठाणवट्टमाण**पासनाह**पडिमाणं किरि जत्ता कया हवइ त्ति संपदायपुरिसाणं उवएसो ।

इअ **फलवद्धिपुरट्ठिअपास**जिणिंदस्स कप्पमवि[11]अप्पं । निसुणंताणं भव्वाण होउ कल्लाणनिप्पत्ती ॥ १ ॥

इत्याप्तजनस्य मुखात् किमप्युपादाय संप्रदायलवम् ।
25 व्यधित **जिनप्रभसूरिः**[12] कल्पं **फलवर्द्धिपार्श्व**विभोः ॥ २ ॥

॥ इति फलवर्द्धिपार्श्वनाथकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० ५५, अ० २ ॥

---

1 Pa C कम° । 2 P अप्पिड्ढि° । 3 B °प्पभावे । 4 P Pa नास्ति 'लहुमंडवा य' । 5 B Pa C ततः । 6 B बिंबं । 7 B °दिसाओ वि । 8 B C सुकृत° । 9 B विग्घस्स विग्घप° । 10 B मणोहरे । 11 Pa कप्पं । 12 Pa सूरिभिः ।

६१. अम्बिकादेवीकल्पः ।

सिरिउज्जयंतगिरिसिहर[1]सेहर पणमिऊण नेमिजिणं । [2]कोहंडिदेविकप्पं लिहामि वुड्ढोवएसाओ ॥ १॥

अत्थि सुरट्ठाविसए धणकणयसपन्नजणसमिद्धं कोडीनारं नाम नयरं । तत्थ सोमो नाम रिद्धिसमिद्धो छकम्मपरायणो वेआगमपारगो बंभणो हुत्था । तस्स घरिणी अंबिणीनामा[3] महग्घसीलालंकारभूसिअसरीरा आसि । तेसिं विसयसुहमणुहवंताणं उप्पन्ना दुवे पुत्ता । पढमो सिद्धो बीओ बुद्धु त्ति । अन्नया समागए पिअरपक्खे भट्ट-सोमेण निमंतिआ बंभणा सद्धदिणे । कत्थ वि ते वेअमुच्चारंति, कत्थ वि आढवंति पिंडप्पयाणं, कत्थ वि होमं करिंति, वइसदेवं च । संपाडिआ सालिदालिवंजणपक्कन्नमेअखीरिखंडपमुहा जेमणारा अंबिणीए अ । सासुआ ण्हाणं काउं पयट्टा । तंमि अवसरे एगो साहू मासोववासपारणए तंमि घरे भिक्खट्ठा संपत्तो । तं पलोइत्ता हरिसभरनिब्भरपुलइअंगी उट्ठिआ अंबिणी । पडिलाभिओ तीए मुणिवरो भत्तिबहुमाणपुव्वं अहापवित्तेहिं[4] भत्तपाणेहिं । जाव गहिअभिक्खो साहू वलिओ, ताव सासुआ वि ण्हाऊण रसवईठाणमागया । न पिच्छइ पढमसिहं । तओ तीए कुविआए पुट्ठा बहुआ । तीए जहट्ठिए वुत्ते, अनाडिआ सा अज्जूए, जहा–पावे ! किमेअं तए कयं ? । अज्ज वि कुलदेवया न पूईआ, अज्ज वि न भुंजाविआ विप्पा, अज्ज वि न भरिआइं पिंडाइं, अग्गसिहा तए किमत्थं साहुणो दिन्ना ? । तओ तीए भणिओ सव्वो वि वइअरो सोमभट्टस्स । तेण रुट्ठेण अप्पच्छंदिअ त्ति निक्कालिआ गिहाओ सा। परिभवदूमिआ सिद्धं करंगुलीए धरित्ता बुद्धं च कडीए चडावित्ता चलिआ नयराओ बाहिं । पथे तिसाभिभूएहिं दारएहिं जलं मग्गिआ, जाव सा अंसुजलपुण्णलोअणा संवुत्ता, ताव पुरओ ठिअं सुक्कसरोवरं तस्सा[5] अणग्घेण सीलमाहप्पेण तक्खणं जलपूरिअं जायं । पाइआ दो वि सीअलं नीरं । तओ छुहिएहिं भोअणं मग्गिआ बालएहिं । पुरओ ठिओ सुक्कसहयारतरू तक्खणं फलिओ । दिन्नाइं फलाइं अंबिणीए तेसिं । जाया ते सुत्था ।

जाव सा चूअच्छायाए वीसमइ ताव जं जायं तं निसामेह । तीए जे बालयाई पढमं जेमाविआ तेसिं भुत्तुव्वरं पत्तलीओ तीए बाहिं उज्झिआओ आसि, ताओ सीलमाहप्पा कंपिअमणाए सासणदेवयाए सोवण्णथालकच्चोलयरूवाओ कयाओ । जे अ उच्छिट्ठसित्थकणा भूमीए पडिआ ते मुत्तिआइं संपाइआइं । अग्गिसिहा य पिढरेसु[6] तहेव दंसिआ । एयमच्चु(च्च)ब्भुअं सासूए दट्ठूण निवेइअं सोमविप्पस्स । सिट्ठं च, जहा–वच्छ ! सुलक्खणिआ पइभया य एसा वहू । ता पच्चाणेहि एअं कुलहरं ति जणणीपेरिओ पच्छायावानलडज्झंतमाणसो गओ वहुअं वालेउं सोमभट्टो । तीए पिट्ठओ आगच्छंतं दिअवरं निअवरं दट्ठूण दिसाओ पलोईआओ । दिट्ठओ अग्गओ मग्गकूवओ । तओ जिणवरं मणे अणुसरिऊण सुपत्तदाणं अणुमोअंतीए अप्पा कूवंमि झंपाविओ । सुहज्झवसाणेण पाणे चईऊण उप्पन्ना कोहंड-विमाणे सोहम्मकप्पहिट्ठे चउहिं जोअणेहिं अंबिअदेवी नाम महड्ढिआ देवी । विमाणनामेण कोहंडी वि मन्नइ । सोमभट्टेण वि तीसे महासईए कूवे पडणं दट्ठु अप्पा तत्थेव झंपाविओ । सो अ मरिऊण तत्थेव जाओ देवो । आभिओगिअकम्मुणा सिंहरूवं विउव्वित्ता तीसे चेव वाहणं जाओ । अन्ने भणंति–अंबिणी रेवयसिहराओ अप्पाणं झंपावित्था, तप्पिट्ठओ सोमभट्टो वि तहेव मओ । सेसं तं चेव ।

सा य भगवई चउब्भुआ दाहिणहत्थेसु अंबलुंबिं पासं च धारेइ । वामहत्थेसु पुण पुत्तं अंकुसं च धारेइ । उत्ततकणयसवण्णं च वण्णमुव्वहइ सरीरे । सिरिनेमिनाहस्स सासणदेवयं त्ति निवसइ रेवइगिरिसिहरे । मउडकुंडलमुत्ताहलहाररयणकंकणनेउराइसव्वंगीणाभरणरमणिज्जा पूरेइ सम्मदिट्ठीण मणोरहे, निवारेइ विग्घसंघायं । तीए मंतमंडलाईणि[7] आराहिंताणं भविआणं दीसंति अणेगरूवाओ रिद्धिसिद्धीओ । न पहवंति भूअपिसायसाइणी-

---

1 Pa °सिहरे । 2 A कोहंडि° । 3 P Pa नाम । 4 A अहापसंतेहिं, B P °पवत्तेहिं । 5 A Pa B तिस्सा° । 6 Pa सिहरेसु । 7 Pa °मंडलाईणि ।

विसमग्गहा, संपज्जंति पुत्तकलत्तमित्त[1] धणधन्नरज्जसिरीओ त्ति ।

अंबिआमंता इमे—

[2]वयवीयमकुलकुल[3]जलहरिहयअक्कंततत्तपेआइं[4] । पणइणिवायावसिओ **अंबिअ**[5]देवीइ[6] अह मंतो ॥ १ ॥

धुवभुवण[7]देवि[8] संबुद्धि पास अंकुस तिलोअ पंचसरा । णहसिहिकुलकलअब्भासिअमायापरपणामपयं ॥ २ ॥

5 वागुब्भवं [9]तिलोअं पाससिणीहाओ तइअवन्नस्स । कूडं च अंबिआए नमु[10]त्ति आराहणामंतो ॥ ३ ॥

एवं अन्नेवि **अंबादेवी**मंता अप्परक्खा-पररक्खा[11]विसया सुमरणाजुग्गा मग्गखेमाइगोअरा य बहवो चिट्ठंति । ते अ, तहा मंडलाणि अ, इत्थ न भणिआणि गंथवित्थरभएणं ति गुरुमुहाओ नायव्वाणि ।

एअं **अंबियदेवी**कप्पं अविअप्पचित्तवित्तीणं । वायंतसुणंताणं पुज्जंति समीहिआ अत्था ॥ १ ॥

॥ इति श्रीअंबिकादेवीकल्पः समाप्तः ॥

10 ॥ ग्रं० ४७, अ० ५ ॥

---

६२. पञ्चपरमेष्ठिनमस्कारकल्पः*।

तथा पुण्यतमं मन्त्रं जगत्त्रितयपावनम् । योगी पञ्चपरमेष्ठिनमस्कारं विचिन्तयेत् ॥ १ ॥

अष्टपत्रे सिताम्भोजे कर्णिकायां कृतस्थितिम् । आद्यं सप्ताक्षरं मन्त्रं पवित्रं चिन्तयेद्बुधः ॥ २ ॥

सिद्धादिकचतुष्कं च दिक्पत्रेषु यथाक्रमम् । चूलापदचतुष्कं च विदिक्पत्रेषु चिन्तयेत् ॥ ३ ॥

15 त्रिशुध्द्या चिन्तयन्नस्य शतमष्टोत्तरं मुनिः । भुञ्जानोऽपि स लभते चतुर्थतपसः फलम् ॥ ४ ॥

एतमेव महामन्त्रं समाराध्येह योगिनः । त्रिलोक्याऽपि महीयन्तेऽधिगताः परमं पदम् ॥ ५ ॥

कृत्वा पापसहस्राणि हत्वा जन्तुशतानि च । अमुं मन्त्रं समाराध्य तिर्यञ्चोऽपि दिवं गताः ॥ ६ ॥

गुरुपञ्चकनामोत्था विद्या स्यात् षोडशाक्षरा । जपन् शतद्वयं तस्याश्चतुर्थस्याप्नुयात् फलम् ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीपञ्चपरमेष्ठिनमस्कारकल्पः ॥

---

1 Pa °मित्त° नास्ति । 2 Pa चय° । 3 A P °कुल° नास्ति । 4 P °तत्तणयाइं । 5 A अंबया° । 6 Pa देवी इह । 7 P भुवणे । 8 A Pa देव° । 9 Pa वागुब्भं चिंति° । 10 A नमो । 11 B P नास्ति–'पररक्खा' ।

*चतुरशीतिमहातीर्थनामसङ्ग्रहकल्पानन्तरम् P सञ्ज्ञके आदर्शे एष कल्पो लिखितो लभ्यते । अन्यसर्वादर्शेष्वनुपलम्भादत्र ग्रन्थान्तेऽस्माभिरयं स्थापितः ।

६३ ग्रन्थसमाप्तिकथनम् ।

*आदितः सर्वकल्पेषु ग्रन्थमानमजायत ।
अनुष्टुभां पञ्चत्रिंशच्छती षष्ट्यधिका स्थिता† ॥ १ ॥

क्वार्थी सजेत्[1] ? किं प्रतिषेधवाचि
पदं ? ब्रवीति प्रथमोपसर्गः ।
कीदृग् निशा ? प्राणभृतां प्रियः कः ?
को ग्रन्थमेतं[2] रचयांचकार ? ॥ २ ॥
—जिनप्रभसूरय ।

नन्दा-ऽनेकप-शक्ति-शीतगुमिते श्रीविक्रमोर्वीपते-
र्वर्षे भाद्रपदस्य मासवरजे सौम्ये दशम्यां तिथौ ।
श्रीहम्मीरमहम्मदे प्रतपति क्ष्मामण्डलाखण्डले[3]
ग्रन्थोऽयं परिपूर्णतामभजत श्रीयोगिनीपत्तने ॥ ३ ॥
तीर्थानां तीर्थभक्तानां कीर्तनेन पवित्रितः ।
कल्पप्रदीपनामाऽयं ग्रन्थो विजयतां चिरम् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकल्पप्रदीपग्रन्थः समाप्तः ॥

॥ ग्रथाग्र ३५६०§ ॥

---

* P आदर्शे निम्नप्रकारेण पाठभेदो लभ्यतेऽस्मिन् पद्ये-
आदित [:] सर्वमध्ये (?) कल्पेषु ग्रन्थमानमिह जानत । अनुष्टुभामष्टचुता द्यधनप्रमिताः शता ॥
† C गमधिका त्रिभि, Pa षष्ट्यधिका त्रिभिः। 1 A गत्वेत्, P सत्वेत्। 2 Pa °मेतं, A C °मेव। 3 Pa °मण्डलेऽखण्डले। § Pa C ३५०३, B ३५६०।

A. D. P. सञ्ज्ञकादर्शेषु प्रतिलेखयित्रादिसूचका निम्नस्वरूपा उल्लेखा विद्यन्ते ।

A आदर्शस्थ उल्लेखः—

श्रीमालीवंशमुक्तातः सञ्जातो विवहारिकः ।
देवा इत्यभिधानस्तत्पत्नी हासलदेव्यभूत् ॥ १ ॥
तयोर्जाता पु(सु)ता एते प्रथमो मांडणाह्वयः ।
पद्मसिंहो द्वितीयोऽभूत् मालदेवस्तृतीयकः ॥ २ ॥
लिखापितः प्रमोदात्तैस्तीर्थकल्पोऽयमुत्तमः ।
स्वकीयमातृपितॄणां श्रेयार्थं पुण्यवृद्धये ॥ ३ ॥
षट्षष्टिवत्सरे ज्ञाते चतुर्दशशताधिके ।
श्रीविक्रमभूपालात् भाद्रशुद्धजयातिथौ ॥ ४ ॥

D आदर्शगत उल्लेखः—

अकब्बरोर्वीरमणप्रदत्तजगद्गुरुख्यातिधरो बभूव ।
श्रीहीरसूरिर्विजयं दधानः श्रीवर्द्धमानप्रभुशासनेऽस्मिन् ॥ १ ॥
तदीयपट्टाम्बरभानुमाली सूरीश्वरः श्रीविजयादिसेनः ।
तपागणं यः प्रथितं चकार विजित्य भूपालसभे द्विजौघम् ॥ २ ॥
श्रीविजयतिलकसञ्ज्ञे सूरिवरे तत्पदे श्रियं श्रयति ।
वैराग्यवासितान्तःकरणैः शुद्धोपदेशरतैः ॥ ३ ॥
हैमगुरुवृत्तिकाव्यप्रकाशमणिमुख्यशास्त्रनिष्णातैः ।
श्रीविजयसेनसूरीश्वरशिष्यै रामविजयबुधैः ॥ ४ ॥
पञ्चदशलक्षपुस्तकचित्को [शो] ज्ञानभक्तये विहितः ।
आचन्द्रार्कं नन्दतु विज्ञजनैर्वाच्यमानोऽसौ ॥ ५ ॥

P आदर्शस्थित उल्लेखः—

॥ संवत् १५६९ वर्षे चैत्रादौ संवच्छरे । आषाढमासे । शुक्लप्रतिपद्दिने । सोमवासरे । पुनर्वसुनक्षत्रे । वैरिसिंहपुरे । श्रीमालज्ञातीय । बहकटा गोत्रे । महं० जिणदत्तपुत्रप्रवरप्रासादपौषधशालादि पुण्यकार्यकरण सावधानचित्त । सप्तक्षेत्रसफलकृत निजवित्त । धर्मधुरंधर । महं० भोजा भार्या वइजलदे पुत्र । एकांतदेवगुरुभक्त । श्रीशांतिनाथचरणकमलार्चनासक्त । महं० रायमल भार्या सरसतिपुत्र चिरं० लषणसी महणसी द्वि० भा० करमाई प्रमुष पुत्र परिवारसहितेन महं० रायमलसुश्रावकेण सर्वतीर्थकल्पग्रंथो लेष (ख) यित्वा दत्तः । श्रीखरतरगच्छे । पूज्य म० श्रीजिनभद्रसूरिपदे श्रीजिनचंद्रसूरिशिष्य श्रीजिनेश्वर सूरिशिष्य वा० साधुकीर्तिगणीनां समर्पितश्च ॥ सकलसंघस्य शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ छ ॥

A. सञ्झकादर्शप्रान्ते
निम्नोद्धृता ग्रन्थगतसर्वकल्पानामनुक्रमणिका लिखिता लभ्यते।

(१) श्रीशत्रुंजयकल्पः। ग्र० १३४।
(२) श्रीरैवतकल्पः।
(३) श्रीउज्जयंतस्तवः।
(४) श्रीउज्जयतमहातीर्थकल्पः।
(५) श्रीरैवतककल्पः। ग्रं० १६१ अक्षर २७, चतुःकल्पसंख्या।
(६) श्रीपार्श्वनाथकल्पः संक्षेपः। ग्र० ९२।
(७) श्रीअहिच्छत्राक०। ग्र० ३६ अ० १२।
(८) श्रीअर्बुदकल्पः। ग्रं० ५२ अ० १६।
(९) श्रीमथुराकल्पः। ग्रं० ११३ अ० २९।
(१०) श्रीअश्वावबोधक०। ग्रं० ८२ अ० २०।
(११) श्रीवैभारकल्पः। ग्रं० ३१ अ० २।
(१२) श्रीकौशाम्बीकल्पः। ग्रं० १८ अ० २१।
(१३) श्रीअयोध्याकल्पः। ग्र० ४४ अ० ९।
(१४) श्रीअपापाकल्पः। ग्रं० १० अ० २१।
(१५) श्रीकलिकुडकुर्कुटेश्वरकल्पः। ग्रं० ३५।
(१६) श्रीहस्तिनापुरकल्पः। ग्रं० २४ अ० ११।
(१७) श्रीसत्यपुरकल्पः। ग्रं० १६१ अ० ३।
(१८) श्रीअष्टापदकल्पः। ग्र० ३० अ० २२।
(१९) श्रीमिथिलातीर्थक०। ग्रं० २४ अ० १८।
(२०) श्रीरत्नपुरतीर्थकल्पः। ग्र० ३२ अ० २३।
(२१) श्रीअपापाबृहद्दीपोत्सवः। ग्र० ४१६।
(२२) श्रीकन्यानयनीय। ग्रं० ७७ अ० १५।
(२३) श्रीप्रतिष्ठानपत्तन०। ग्रं० १९।
(२४) श्रीनन्दीश्वरकल्पः। ग्रं० ४९।
(२५) श्रीकाम्पिल्यपुरकल्पः। ग्रं० ३३ अ० ७।
(२६) श्रीअरिष्टनेमिकल्पः। ग्र० ३३।
(२७) श्रीशङ्खपुरकल्पः। ग्रं० २२ अ० २४।
(२८) श्रीनाशिक्यपुरक०। ग्रं० ५९ अ० २७।
(२९) श्रीहरिकंपीपार्श्वनाथः। ग्रं० २५।
(३०) श्रीकपर्दियक्षकल्पः। ग्रं० ४२।
(३१) श्रीशुद्धदंतीपार्श्वनाथकल्पः। ग्रं० १८।
(३२) श्रीअभिनन्दनक०। ग्रं० ५३ अ० १८।
(३३) श्रीप्रतिष्ठानकल्पः। ग्रं० ४७ अ० १८।
(३४) श्रीपरसमये सातवाहनकल्पः। ग्रं० ११६ अ० ९।
(३५) श्रीचम्पाकल्पः। ग्रं० ४७।
(३६) श्रीपाटलिपुरकल्पः। ग्रं० १२५ अ० १९।
(३७) श्रीश्रावस्तिकल्पः। ग्रं० ४२।
(३८) श्रीवाणारसीक०। ग्रं० ११३ अ० १३।
(३९) श्रीवीरगणधरकल्पः। ग्रं० ६८ अ०।
(४०) श्रीकोकापार्श्वनाथक०। ग्रं० ४।
(४१) श्रीकोटिशिलातीर्थक०। ग्रं० २४ अ० ६।
(४२) श्रीवस्तुपालतेजपालकल्पः। ग्रं० ५३।
(४३) श्रीचिल्लणपार्श्वनाथकल्पः। ग्रं० ११४ अ० २६।
(४४) श्रीढिपुरीस्तोत्र। ग्रं० १६।
(४५) श्रीतीर्थसंग्रहकल्पः। ग्रं० ४९ अ० २२।
(४६) श्रीसमवसरणस्तवनं। ग्रं० ४३।
(४७) श्रीकुडुंगेश्वरपार्श्व०। ग्रं० ५५ अ० १८।
(४८) श्रीव्याघ्रीकल्पः। ग्रं० १४ अ० ४।
(४९) श्रीअष्टापदकल्पः। ग्रं० ११८।
(५०) श्रीहस्तिनापुरस्तवन। ग्रं० २१ अ० १६।
(५१) श्रीकन्नाणयवीरकल्पः। ग्रं० १०८।
(५२) श्रीकुल्यपाकनमस्कार। ग्र० १।
(५३) श्रीमणिकदेवरिषभस्तुतिः। ग्रं० ४।

॥ श्रीसमग्रग्रन्थाग्रं० ३९६० शुभम् ॥

विविधतीर्थकल्पग्रन्थागत-
विशेषनाम्नां सङ्ग्रहः ।

विविधतीर्थकल्पग्रन्थान्तर्गत-विशेषनाम्नां सङ्ग्रहः ।

✲ अकाराद्यनुक्रमेण ✲

[सङ्केत सूचना-(प्रा०)=प्राकृतभाषाशब्द', (स०)=संस्कृतभाषाशब्द', (या०)=यावनीभाषाशब्द' ।]

अ

विविधतीर्थकल्पग्रन्थान्तर्गत-विशेषनाम्नां सङ्ग्रहः ।

⁂ अकाराद्यनुक्रमेण ⁂

[सङ्केत सूचना–(प्रा०)=प्राकृतभाषाशब्दः, (स०)=संस्कृतभाषाशब्द , (या०)=यावनीभाषाशब्दः ।]